२ ॥ रहस्यं अखंड अखंड अनाव्रत देव धरी सुदयाल
कटाने: आप निरंजन श्रीतरिआइ उ संतनको सुषस
रूप समाने जिहाजा तीरा रहि निज अकसुदायी हटैपोत
हां संघ दिषाने: अैसे दयालु निहालक रै मम गो मद दान
छोटे जब षाने ॥ हरि बिन बैल बिराने कै हैं चारि पाछे
सी नागुना मुष नबके से गुन गैहो टेक

॥ श्री रामजी सीतै सहाइ ॥ दादूदयालजी का ग्रंथ [illegible]
रुदेव को अंग लिख्यते ॥ [illegible] ॥ दादू
नमो नमो निरंजनं नमस्कार गुरदेवतह ॥ वंदनं सर्व साध
वा ॥ प्रणामं पारंगतह ॥ १ ॥ दादू गैब मांहि गुरदेव मिल्या ॥ पाया
हम परसाद ॥ मसतकि मेरे कर धर्या ॥ दष्या अगम अगाध ॥
२ ॥ दादू सतगुर सहज में ॥ कीया बहु उपगार ॥ निरधन धन
वंत करि लीया ॥ गुर मिलिया दातार ॥ ३ ॥ दादू सतगुर सूं सह
जैं मिल्या ॥ लीया कंठि लगाइ ॥ दया भई दयाल की ॥ तब दी
पक दीया जगाइ ॥ ४ ॥ दादू देषु दयाल की ॥ गुरू दिषाई बाट ॥
ताला कूंची लाइ करि ॥ षोले सबै कपाट ॥ ५ ॥ दादू सतगुर
अंजन बाहि करि ॥ नैन पटल सब षोले ॥ बहरे कानौं सुनणे
लागे ॥ गूंगे मुष सौं बोले ॥ ६ ॥ सतगुर दाता जीव का ॥ श्रव
न सीस कर नैन ॥ तन मन सौंज संवारि सब ॥ मुष रसना अ
रु बैन ॥ राम नाम उपदेस करि ॥ अगम गवन यहु सैन ॥ दादू
सतगुर सब दीया ॥ आप मिलाये ऐन ॥ ७ ॥ सतगुर कीया
फेरि करि ॥ मन का औरै रूप ॥ दादू पंचौं पलटि करि ॥
कैसे भये अनूप ॥ ८ ॥ साचा सतगुर जे मिलै ॥ सब साज सं
वारै ॥ दादू नाव चढाइ करि ॥ ले पारि उतारै ॥ ९ ॥ सतगुर
पसू मांणस करै ॥ मांणस थैं सिध सोइ ॥ दादू सिध थैं देवता
देव निरंजन होइ ॥ १० ॥ दादू काढे काल मुषि ॥ अंधे लोच
न देइ ॥ दादू ऐसा गुर मिल्या ॥ जीव ब्रह्म करि लेइ ॥ ११ ॥ दादू
काढे काल मुषि ॥ श्रवणौं सबद सुणाइ ॥ दादू ऐसा गु
र मिल्या ॥ मृतक लीये जिलाइ ॥ १२ ॥ दादू काढे काल मु
षि ॥ गूंगे लीये बुलाइ ॥ दादू ऐसा गुर मिल्या ॥ सुष में रहै स
माइ ॥ १३ ॥ दादू काढे काल मुषि ॥ महर दया करि आइ ॥
दादू ऐसा गुर मिल्या ॥ महिमा कही न जाइ ॥ १४ ॥ सतगु
र काढे केस गहि ॥ डूबत इहि संसार ॥ दादू नाव चढाइ कै

कीए पैली पार॥१५॥ ओसा गर मैं न्हवनां॥ सतगुर काटै आ
ड॥ दादू षेवट गुर मिल्या॥ लीये नाव चढाइ॥१६॥ दादू उस
गुरदेव की॥ मैं बलिहारी जांउं॥ जहां आसण अमर अले
ष था॥ ले राषे उस ठांउं॥१७॥ आतम मांहैं ऊपजै॥ दादू पं
गुल ग्यांन॥ कृतम जाइ उलंघि करि॥ जहां निरंजन थांन॥
१८॥ आतम बोध बंझ का बेटा॥ गुरमुषि उपजै आइ॥ दादू पंगु
ल पंच बिन॥ जहां राम तहां जाइ॥१९॥ साचा सहज ले मि
लै॥ सबद गुरू का ग्यांन॥ दादू हम कूं ले चल्या॥ जहां प्री
तम का असथांन॥२०॥ दादू सबद बिचारि करि॥ लागि
रहै मन लाइ॥ ग्यांन गहै गुरदेव का॥ दादू सहजि समाइ॥
२१॥ दादू कहै सतगुर सबद सुणाइ करि॥ भावै जीव
जगाइ॥ भावै अंतरि आप कहि॥ अपणै अंगि लगाइ॥
२२॥ दादू बाहरि सारा देषिये॥ भीतरि कीया चूर॥ स
तगुर सबदौं मारिया॥ जाण न पावै दूरि॥२३॥ दादू सतगु
र मारे सबद सूं॥ निरषि निरषि निज ठौर॥ राम अकेला र
हि गया॥ चीति न आवै और॥२४॥ दादू हम कूं सुष भया॥
साध सबद गुर ग्यांन॥ सुधि बुधि सोधी समझि करि॥ पाया
पद निरबांण॥२५॥ दादू सबद बांण गुर साध के॥ दूरि दि
संतरि जाइ॥ जिहि लागे सो ऊबरे॥ सूते लीए जगाइ॥२६
॥ सतगुर सबद मुष सूं कह्या॥ क्या नेडै क्या दूरि॥ दादू सि
ष श्रवण सूं सुण्यां॥ सुमिरण लागा सूर॥२७॥ सबद दूध
घृत राम रस॥ मथि करि काढै कोइ॥ दादू गुर गोब्यंद बि
न॥ घटि घटि समझि न होइ॥२८॥ सबद दूध घृत राम रस
कोई साध बिलोवणहार॥ दादू अमृत काढिले॥ गुर
मुषि गहै बिचार॥२९॥ घीव दूध मैं रमि रह्या॥ ब्यापक स
बही ठौर॥ दादू बकता बहुत हैं॥ मथि काढै ते और॥३
०॥ कांम धेनु घटि घीव है॥ दिन दिन दुरबल होइ॥ गो

ध्यानतनकपजे मधिनदीछायालोइ ॥ १ ॥ तबासेमहू
गुरमिल्या तितितनदीयाबताइ दादूमोटामहाबली
घटिघतमकरि बाइ ॥ मधिकरिदीपक कीजि
थे सबघटिलियाउकास दादूदीवाहाथिकरिगया
निरंजनपास ॥ ३ ॥ दीवेदीवाकीजिये गुरमुखिमार
गजाइ दादूअपणेपीवकादरसनदेखैआइ ॥ ४ ॥ दा
दूदीवाहैभला दीवाकरोसबकोइ घरमेंधरयानपा
ईये जेकरदीवनहोइ ॥ ५ ॥ निरमलगुरक्याध्यानय
हि निरमलभगतिविचार निरमलपायाप्रेमरस
छूटेसकलविकार निरमलतनमनआतमा निरम
लमनसासार निरमलप्राणीपंचकरि दादूलंघेपार
॥ ७ ॥ परापरीपासैंरहै को ईनजाणैताहि सतगु
रदीयादिखाइकरि दादूरह्यालैलाइ ॥ ८ ॥ जिनिह
मसिरजेसोकहां सतगुरदेहुदिखाइ दादूदिलअ
रवाहका तहांमालिकल्यौलाइ ॥ ९ ॥ मुझहीमेंमेरा
धणी पड़दाषोलिदिखाइ आतमसौंपरआतमा
प्रगटआणिमिलाइ ॥ १० ॥ भरिभरिप्यालाप्रेमरस अपणै
हाथिपिलाइ सतगुरकेसदिकैकीया दादूबलिबलि
जाइ ॥ ११ ॥ सरवरभरियादहदिसा पंषीप्यासाजा
इ दादूगुरपरसादबिन क्यूंजलपीवै आइ ॥ १२ ॥ मान
सरोवरमांहिजल प्यासापीवैआइ दादूदोसनदी
जिये घरिघरिकहणनजाइ ॥ १३ ॥ दादूगुरगरवामि
ल्या तातैंसबगमिहोइ लोहापारसपरसतां स
हजसमानासोइ ॥ १४ ॥ दीनगरीबीगहिरह्या गरवा
गुरगंभीर सूषिमसीतलसुरतिमति सहजदयागु
रधीर ॥ १५ ॥ सोधीदातापलकमैं तिरैतिरावणजो
गा दादूऐसापरमगुर पाया किहिंसंजोग ॥ १६ ॥ दा

सतगुर ऐसा कीजिये। रांमरसि माता॥ पारि उतारे प
लक मैं। दरसन का दाता॥४४॥ देवै किरका दरद का। टूटा
जोड़ै तार॥ दादू सांधे सुरति कौं। सो गुर पीर हमार॥४५॥
दादू घाइ लषै रहै। सतगुर के मारे॥ दादू अंगि लगाइ करि
भौसागर तारे॥४६॥ दादू साचा गुर मिल्या। सा
चा दीया दिषाइ॥ साचे कूं साचा मिल्या। साचा रह्या समाइ॥
४७॥ सांचा सतगुर सोधि ले। सांचे लीजै साध॥ सांचा सा
हिब सोधि करि। दादू भगति अगाध॥४८॥ सनमुष सतगुर
साध सौं। सांई सूं राता॥ दादू प्याल्या प्रेम का। महारसि माता॥
४९॥ सांई सौं साचा रहै। सतगुर सौं सूरा॥ साधौं सौं सनमु
ष रहै। सो दादू पूरा॥५०॥ सतगुर मिले तब पाईये। भगति
मुकति भंडार॥ दादू सहजै देषिये। साहिब का दीदार॥
५१॥ दादू सांई सतगुर सेविये। भगति मुकति फल हो
इ॥ अमर अभै पद पाइये। काल न लागै कोइ॥५२॥ इक ल
ष चंदा आंणि घरि। सूरज कोटि मिलाइ॥ दादू गुर गोब्यं
द बिन। तौ न्नाति मरन जाइ॥ अनेक चंद उदै करै।
असंष सूर प्रकास॥ येक निरंजन नांउ बिन। दादू नहीं उ
जास॥५३॥ दादू कदि यहु आपा जाइगा। कदि यहु बि
सरै और॥ कदि यहु सूषिम होइगा। कदि यहु पावै ठौर॥
५४॥ दादू बिषम दुहेला जीव कूं। सतगुर थैं आसांन॥
जब दरवै तब पाइये। नेडा ही अस थांन॥५५॥ दादू नैन
न देषै नैन कूं। अंतर भी कुछ नांहि॥ सतगुर दरपन करि
दीया। अरस परस मिलि मांहि॥५६॥ घटि घटि रांम रत
न है। दादू लषै न कोइ॥ सतगुर सबद हैं पाईये। सहजैं ही
गमि होइ॥५७॥ जब ही कर दीपक दीया। तब सब सू
कन लागा॥ यूं दादू गुर ग्यांन थैं। रांम कहत जन जागा॥
५८॥ दादू मन माला नहीं फेरिये। जहां दिवस न परसे

रात॥ तहाँ गुरि बानां दीया सहजैं जपिये तात॥८॥ दादू
मन माला तहाँ फेरिये जहाँ प्रीतम बैठे पास॥ आगम
गुर थैं गमि भया पाया नूर निवास॥९॥ दादू मन माला त
हाँ फेरिये जहाँ आपै एक अनंत॥ सहजैं सो सतगुर मि
ल्या जुगि जुगि फाग बसंत॥१०॥ दादू सतगुर माला मू
न दीया पवन सुरति सौं पोइ॥ बिन हाथूं निस दिन जपै
परम जाप यूं होइ॥११॥ दादू मन फकीर माँहैं हूवा भी
तरि लीया भेष॥ सबद गहै गुरदेव का माँगै भीष अलेष॥
॥१२॥ दादू मन फकीर सतगुर कीया कहि समझाया
ग्यान॥ निहचल आसणि बैसि करि अकल पुरिस
का ध्यान॥१३॥ दादू मन फकीर जग थैं रह्या सतगुर ली
या लाइ॥ अहनिसि लागा एक सूं सहज सुंनि रस षाइ
॥१४॥ दादू मन फकीर ऐसैं भया सतगुर के परसाद॥
जहाँ का था लागा तहाँ छूटे बाद बिबाद॥१५॥ नां घरि र
ह्या न बनि गया नां कुछ कीया [illegible] क्लेस॥ दादू म
नहीं मन मिल्या [illegible] सतगुर के उपदेस॥१६॥ दादू य
ऊ मसीति यहु देहुरा सतगुर दीया दिषाइ॥ भीतरि सेवा
बंदिगी बाहरि काहे जाइ॥१७॥ दादू मंझे चेला मंझि गु
र मंझे ही उपदेस॥ बाहरि ढूंढै बावरे जटा बधाये के
स॥१८॥ मन का मसतक मूंडिये काम क्रोध के केस॥
दादू बिषै बिकार सब सतगुर के उपदेस॥१९॥ दादू प
डदा भरम का रह्या सकल घट छाइ॥ गुर गोबिंद कृ
पा करैं तौ सहजैं ही मिटि जाइ॥२०॥ जिहि मति
साधू ऊधरे सो मत लीया सोधि॥ मन लै मारग मूल गहि
यहु सतगुर का प्रमोध॥२१॥ दादू सोई मारग मन गह्
या जिहि मारग मिलिये जाइ॥ बेद कुरांनूं नां क
ह्या सो गुरि दीया दिषाइ॥२२॥ दादू मन नैन मय बि

पगस्या॥ निरविष करं सोम होइ॥ दादू मिल्या गुर गारडी॥ नि
रविष कीया सोइ॥७७॥ येता कीजे आपथैं॥ तन मन उनमन ला
इ॥ पंच समाधी राषिये॥ दूजा सहज सुभाइ॥७८॥ दादू जीव जं
जाल पड़ि गया॥ उलझ्या नौ मण सूत॥ कोई एक सुलझै
सावधान॥ गुर बाइक अवधूत॥७९॥ चंचल चहूं दिस जात है
गुर बाइक सौं बंधि॥ दादू संगति साध की॥ पारब्रह्म सौं संधि
॥८०॥ गुर अंकुस मानैं नहीं॥ उदमदि माता अंध॥ दादू मन
चेतै नहीं॥ काल न देषै फंध॥८१॥ दादू मांस्यो बिन मानै नहीं
इस्यू कू मन हरि की आंन॥ ग्यान षड़ग गुरदेव का॥ ता सं
गि सदा सुजांन॥८२॥ जहां थैं मन उठि चलै॥ फेरि तहां ही
राषि॥ तहां दादू लैलीन करि॥ साध कहै गुर साषि॥८३॥
दादू मन हीं सौं मल ऊपजै॥ मन हीं सौं मल धोइ॥ सीष च
ली गुर साध की॥ तौ तूं निरमल होइ॥८४॥ दादू कछव अ
पने करि लीये॥ मन इंद्री निज ठौर॥ नांउ निरंजन लागि
रह्या॥ प्रांणी परिहरि और॥८५॥ मन के मतै सब कोई षेलै
गुरमुषि बिरला कोइ॥ दादू मन की मानैं नांही॥ सतगुर
का सिष सोइ॥८६॥ सब जीवौं कूं मन ठगै॥ मन कूं बिरला
कोइ॥ दादू गुर के ग्यान सूं॥ सांई सनमुष होइ॥८७॥ दादू ये
कसूं लैलीन रहु॥ [illegible] सबै सयांनप छेद॥ सतगुर साधू क
हत हैं॥ परमतत जपि लेह॥८८॥ सतगुर सबद बमेक
बिन॥ संजम रह्या न जाइ॥ दादू ग्यान बिचार बिन॥ बि
षै हलाहल षाइ॥८९॥ घरि घरि घट कोल्हू चलै॥ अमी
महारस जाइ॥ दादू गुर के ग्यान बिन॥ बिषै हलाहल
षाइ॥९०॥ सतगुर सबद उलंघि करि॥ जिनि कोई सि
ष जाइ॥ दादू पग पग काल है॥ जहां जाइ तहां षाइ॥९१॥
सैन गुर बरजै सिष करै॥ क्यूं करि बंचै काल॥ दहदिसि
देषत बहि गया॥ पांणी फोड़ी पाल॥९२॥ दादू सतगुर

कहै सु सिष करै सब सिधि कारिज होइ॥ अमर अभै प
पाईये। काल न लागै कोइ॥८०॥ दादू जे साहिब कौं
नहीं सोहम थैं जिनि होइ। सतगुर लाजै आपणां साध
न मानै कोइ॥८१॥ दादू हूं की ठाहर है कहौ। तन की ठा
हर तूं री कहौ बाहरजी कहौ। ग्यान गुरू का यो॥८२॥ दादू पं
च सवादी पंच दिसि पंचै पंचूं बाट। तब लग कह्या न की
जियो गहि गुर दिषाया घाट॥८३॥ दादू पंचूं येक मत पं
चूं पूर्‍या साथ। पंचूं मिलि सनमुष भये तब पंचूं गुर की
बात॥८४॥ दादू ताता लोहा तिणसूं क्यूं रिप कड्या जाइ
गह न गति सूझै नहीं गुर नहीं बूझै आइ॥८५॥ दादू औगु
ण गुण करि मानै गुर के सोई सिष सुजांण। सतगुर औ
गुण क्यूं करै समझै सोई सयांण॥८६॥ सोनैं सेती बैर क्या
मारे घण कै घाइ। दादू काटि कलंक सब राषै कंठि लगा
इ॥८७॥ पाणी मांहै राषिये कनक कलंक न जाइ। दादू
गुर के ग्यांन सूं ताइ अगनि मैं बाहि॥८८॥ दादू मांहै मी
ठा हेत करि ऊपरि कड़वा राषि। सतगुर सिष कूं सीष
दे सब साधूं की साषि॥८९॥ दादू कहै सिष भरोसै आप
णों ह्वै बोली ऊंसियार। कहैगा सो बहैगा हम पहली
करैं पुकार॥९०॥ दादू कहि कहि सतगुर कहै सु का जियै जे
तूं सिष सुजांण। जहां लाया तहां लागि रहु बूझै कहा
अजांण॥९१॥ गुर पहली मन सौं कहै पीछै नैन की सैन। दा
दू सिष समझै नहीं कहि समझावै बैन॥९२॥ कहै लषै सो
मांनवी सैन लषै सो साध। मन की लषै सु देवता। दादू अग
अगाध॥९३॥ दादू कहि कहि मेरी जीभ रही सुणि सुणि
तेरे कांन। सतगुर बपुरा क्या करै जे चेला मूढ अजा[illegible]
॥९४॥ येक सबद सब कछु कह्या सतगुर सिष समझाइ।
जहां लाया तहां लागै नहीं फिरि फिरि बूझै आइ॥९५॥

ग्यान लीयां सब साध सुणि ॥ मन का मैल न जाइ ॥ गुर बिचा
र क्या करै ॥ सिष बिषै हनो हलघाइ ॥१६॥ गुर अपंग पंग
पंष बिन ॥ सिष साषा का सा ॥ दाहु ॥ बैठ नाद बिन ॥ क्यु
उतरै गे पार ॥१७॥ दाहु ॥ संसा जीव का ॥ सिष साषा का सं
ला ॥ इन्हूं कूं लारा पडी ॥ कैम कौंण हवाल ॥१८॥ अंधे अं
धा मिलि चले ॥ दाहु ॥ बंधि कतार ॥ कूप पडे हम देषतां ॥ अं
धे अंधा लार ॥१९॥ सो षीन हो सरीर की ॥ औरो कूं उपदेस
दाहु ॥ अचिरज देषिया ॥ ये जांहिंगे किस देस ॥२०॥ दाहु ॥ सो
षीन हो सरीर की ॥ कहै अगम की बात ॥ जान कहावें बा
वरे ॥ आवध लीयां हाथ ॥२१॥ दाहु ॥ माया मांहे काढिक
रि ॥ फिरि माया मैं दीन्ह ॥ दोऊ जन समझै नहीं ॥ येको
काज न कीन्ह ॥२२॥ दाहु ॥ कहै सो गुर किस काम का ॥ गहि
भरमावै आंन ॥ तत बतावै निरमला ॥ सो गुर साध सुजा
ण ॥२३॥ हूं मेरा हूं तेरा ॥ गुर सिष कीया मंत ॥ इन्हूं भूले जा
त हैं ॥ दाहु ॥ बिसरया कंत ॥२४॥ डहिड हिंपा वे गवाल गु
रा ॥ सिष है छेलीगा ॥ इ यऊ औसर यू गया ॥ दाहु ॥ कहि
समझाइ ॥२५॥ सिष गोरू गुर गवाल है ॥ रष्या करि करि
लेइ दाहु ॥ राषै जतन करि ॥ आंणि धणी कूं देइ ॥२६॥ कूवे
अंधे गुर घणां ॥ भरम दिढावे काम ॥ बंधे माया मोह सों
दाहु ॥ मुष सो रांम ॥२७॥ झूठे अंधे गुर घणें ॥ भटकै घर घ
र बार ॥ कारिज को सीझै नहीं ॥ दाहु ॥ माथै मारि ॥२८॥ ज
ग तें कहावै आपकों ॥ सग तिन जानै भेव ॥ सुपनें ही
समझै नहीं ॥ कहां बसै गुरदेव ॥२९॥ भरम करम जग बं
धिया ॥ पंडित दीया भुलाइ ॥ दाहु ॥ सत गुर नां मिले ॥ मा
रग देइ दिषाइ ॥३०॥ दाहु ॥ पंथ बतावै पाप का ॥ भरम
करम बेसास ॥ निकटि निरंजन जे रहै ॥ क्यों न बतावै ता
सा ॥३१॥ दाहु

आपासुरकैसुरक्षिया यकगुरग्यानविचार
धूकाअंगनिरमला तामैंमलनसमाय। परमगुरु
गटकहै तायैदाइतइ रामनांमगुरसबदसों
मनपेलिसरंम निहिंकरमासोंमनमिल्या दाइकाटि
रम दाइबिनपांइनकापंथहै क्यूंकरिपऊंचैप्रा
बिकटघाटओघटघरे मांहिं सिषरअसमान मनत
जीचेतनिचटै त्योकीकरैलगांम सबदगुरूकाताउ
नां कोईपऊंचैसाधसुजांण सांझैसुमिरणसोकु
स्या जिहिंसुमिरणआपाभूल दाइगहिगंभीरगुरचे
तनिआनंदमूल आपसवारथसबसगे प्रांणस
नेहीनांहिं प्रांणसनेहीरांमहै केसाधूकलिमांहिं
जिहिमतिसाधउधरे सोमतलीयासोध मनले
ड मारगमूलगहि सतगुरकाप्रमोध सुषकासाथी
जगतसब दुषकानांहीकोइ दुषकासाथीसांईआ
दाइसतगुरहोइ सगेहमारेसाधहैं सिरपरिसिर
जणहार दाइसतगुरसोसगा दूजाधंधबिकार
दाइकैदूजानहीं येकैआतमरांम सतगुरसिरपरि
साधसब प्रेमभगतिबिस्रांम दाइउधबुधआत
मां सतगुरबसेआइ दाइभृंगीकीटज्यूं देषतहीह्वै
जाइ दाइभृंगीकीटज्यूं सतगुरसेतीहोइ आ
पसरीषेकरिलीये दूजानांहीकोइ दाइकछ
बराषैदृष्टिमैं कूंजोंकेमनमांहिं सतगुरराषेआ
पणा दूजाकोईनांहिं बचौकेमातापिता दूजा
नांहींकोइ दाइनिपजेभावसों सतगुरकेघटहो
इ येकैसबदअनंतसिष जबसतगुरबोले दा
इजडेकपाटसब देकैचीषोले बिनहींकीया
होइसब सनमुषसिरजनहार दाइकरिकरिकोम

रे॥ सिष साषा सिरि भार॥९३॥ सूरज सनमुष आरसी॥
पावक कीया प्रकास॥ दादू साईं साध बिचि॥ सहजै नि
पजै दास॥९४॥ दादू पंचौं ये परमोधले॥ इनहीं कौं उपदेस
प। इ मन अपनां हाथि करि॥ तौ चेला सब देस॥९५॥ अ
मैं भये गुर ग्यांन सौं॥ केते इहि कलि मांहिं॥ दादू गुर
के ग्यांन बिन॥ केते मरि मरि जांहिं॥९६॥ औषदि षाइ
न पछि रहै॥ बिषम ब्याधि क्यूं जाइ॥ दादू रोगी बावरा
दोस बैद कौं लाइ॥९७॥ बैद बिथा कहै देषि करि॥ रो
गी रहै रिसाइ॥ मन मांहैं लीयें रहै॥ दादू ब्याधि न जाइ॥९८॥
दादू बैद बिचारा क्या करै॥ रोगी रहै न साच॥ षाटा मीठा
चरपरा॥ मांगै मेरा बाछ॥९९॥ दादू उलम दुरस न धका
उलम गुर उपदेस॥ उलम करिबा कठिन है॥ उलम
प्रस अलेष॥१००॥ दादू अबिचल मंत्र॥ अमर मंत्र॥ अ
षै मंत्र॥ अभै मंत्र॥ रांम मंत्र निज सार॥ सजीवनि मंत्र॥
सबीरज मंत्र॥ सुंदर मंत्र॥ सिरोमनि मंत्र॥ निरमल मं
त्र निराकार॥ अलष मंत्र॥ अकल मंत्र॥ अगाध मंत्र॥ अपा
र मंत्र॥ अनंत मंत्र राय॥ नूर मंत्र॥ तेज मंत्र॥ जोति मंत्र॥
प्रकास मंत्र॥ परम मंत्र पाया उपदेस दई॥१०१॥ दादू स
बही गुर कीये॥ पसु पंषी बनराइ॥ तीनि लोक गुन पंच
सौं॥ सबही मांहि षुदाइ॥१०२॥ जे पहली सतगुर कह्या
सो नैंनहुं देष्या आइ॥ अरस परस मिलि येक रस॥ दादू र
हे समाइ॥१०३॥ ८ ॥ सुमिरण कौ अंग लिषते॥
दादू नमो नमो निरंजनं॥ नमसकार गुरदेवतह॥ बंद
नं सर्व साधवा॥ प्रणांमं पारंगतह॥१॥ येकै अषिर पीव
का॥ सोई सति करि जांणि॥ रांम नांम सतगुर कह्या
॥त्रि॥

दादूनीकानांउहै आपकहैसमझाइ॥ औरआरंभसबछाडिदे राममनाम॥
लाइ॥३॥ दादूनीकानांउहै तीनिलोकततसार॥
हेवसरहिबोकरी रमतयहै बिचार॥४॥ दादूनीकानांउ
है हरिहिरदैनबिसारि मूरतिमनमांहैं बसे सांसेसांस
सेतारि॥५॥ दादूसांसैसाससंभालतां इकदिनमिलिहै
आइ सुमिरणपैंडासहजका सतगुरिदीयाबताइ
॥६॥ दादूनीकानांउहै सोतूं हिरदैराखि पाखंडपर
पंचहरिकरि सुमिरसाधूजनकोसाखि॥७॥ रामभजनका
सोचक्या करतांहोइसुहोइ॥ दादूरामसंभालिये फि
रिबूझियेनकोइ॥८॥ दादूकहैरामउचारेनांउबिना
जेसुमिरिकसेओर तोइम अपराधीजीवकोतीनि
लोककतगौर॥९॥ दादूछिनरामसंभालतां जेजीव
जाइतजाइ आतमकेआधारकूं नाहीआनउपाइ
॥१०॥ एकमहूरतमनरहै नांउनिरंजनपास दादूत
बहीदेखतां सकलकरमकानास॥११॥ सहजेहीसब
होइगा गुनइंद्रीकानास दादूरामसंभालतां कटे
करमकेपास॥१२॥ एकरामकेनांउबिन जीवकीजल
निजाइ दादूकेतेपचिमूये करिकरिबहुतउपा
इ॥१३॥ दादूएकरामकीटेकगहि दूजासहजसुभा
इ रामनांमछाडैनहीं दूजाआवैजाइ॥१४॥ दादूरा
म अगाधहै परमितिनांहीपार अबरनबरनजानिये
दादूनांउअधार॥१५॥ दादूरामअगाधहै अविगतल
खैनकोइ निरगुनसगुनकाकहै नांइबिलंबनहोइ
॥१६॥ दादूरामअगाधहै बेहदलख्यानजाइ
आदिअंतनहींजांणिये नांउनिरंतरगाइ॥१७॥ दादू
रामअगाधहै अकलअगोचरयेक दादूनांउबिल
बिये साधुकहैअनेक॥१८॥ दादूएकेअलहरामहै

हो
ाइसुइ॥१८॥ दादूअगुनसिरगुनहै रहै जैसाहैतैसा
कीन हरिसुमिरनल्योलाइयै काजानोकाकोन॥१९॥
दादूसिरजनहारके केतेनाउअनंत॥ चितिआवैसो
लीजिये यसाधसुमिरेसंत॥२०॥ दादूजिनिप्रानप
िंडहमकोदीया॥ अंतरिसेवैताहि॥ जेआवैओसाण
सिरि सोईनाउसंबाहि॥२१॥ दादूओसाकोनअभागि
या कछूदिढावैओर॥ नाउबिनापगधरनकों कोठौक
नहीगेर॥२२॥ दादूनिमषनन्याराकीजिये॥ अंतरथैउ
रिनांम॥ कोटिपतितपांवनभये॥ केवलकहतांराम॥२३॥
॥ दादूजेतैइबजाणपानही॥ रांमनांमनिजसार॥ फिरिपी
छैपछिताहिगा॥ रेमनमूढगवार॥२४॥ दादूरामसंभालि
ले॥ जबलगसुषीसरीर॥ फिरिपीछैपछिताहिगा॥ जबत
नमनधरैनधीर॥२५॥ दुषदरियासंसारहै॥ सुषकासाग
रराम॥ सुषसागरचलिजाइये॥ दादूतजिबेकाम॥२६॥ दादू
दरियायहुसंसारहै॥ तामैरांमनांमनिजनाउ॥ दादूढील
नकीजिये॥ यहुओसरयहुडाव॥२७॥ दादूमेरेसंसाको
नही॥ जीवनमरनकाराम॥ सुपिनैहीजिनिबीसरै॥ मुषहि
रदैहरिनांम॥२८॥ दादूदुषियातबलगी॥ जबलगनाउन
लेह॥ तबहीपाउनपरमसुष॥ मेराजीवनियेह॥२९॥ क
छूनकहावैआपकों॥ सांईकोसेवै॥ दादूदूजाछाडिस
ब॥ नाउनिजलेवै॥३०॥ जेचितचडैरांमसों॥ सुमिर
नमनलागै॥ दादूआतमजीवका॥ संसासबभागै॥३
१॥ दादूपीवकानाउलै॥ तौमिटैसिरिसाल॥ घडीमहू
रतचालणा॥ कैसीआवैकालि॥३२॥ दादूओसरजी
वतै॥ कह्यानकेवलराम॥ अंतकालिहमकहैंगे॥ जमबै
रीसोंकाम॥३३॥ दादूअैसेमहगेमोलका॥ येकसास
जेजाइ॥ चोदहलोकसमानसो॥ काहेरेतमिलाइ॥

सोईसासस्रुजांननर सांईसेतीलाइ करिसाटासरज
हारसौं जमहंगैमोलिविकाइ जतनकरैनहीजी
वका तनमनपवनांफेरि दादूमहंगैमोलका दोइदो
वटीयेकसेर दादूरावतराजारामका कदेनबिसा
रीनांउ आतमरांमसंभालिये तौसूवसकायागांउ
दादूअहनिसमदासरीरमें हरिचिंततदिनजाइ प्रेमम
गनलैलीनमंन अंतरिगतिल्योलाइ निमषयेकन्यारा
नहीं तनमनमंझिसमाइ येकअंगिलागारहै ताकोंका
लनषाइ दादूपिंजरपिंडसरीरका सूवटासहं
जिसमाइ रमितासेतीरमिरहै बिमलिबिमलिजसगाइ
अविनासीसौंयेकह्वै निमषनइतउतजाइ बहुतबिल
ईक्याकरै ऊटरिहरिसबदसुणाइ दादूजदादरहै
नहारामसौं भावैंकंदलिजाइ भावैगिरपवतरहौ भा
जाइ वैगेहवसाइ भावैंजलहरिरहौ भावैसीसनवाइ
हो जहांतहांहरिनांउसौं हिरदैहेतलगाइ दादूरांमकहै
सबरहतहै नषसिषसकलसरीर रांमकहैबिनजातहै समं
झीमनवांबीर दादूरांमकहैसबरहतहै लाहामूल
सहेत रांमकहैबिनजातहै मूरषमनचेत दादूराम
कहैसबरहतहै आदिअंतिलौंसोइ रांमकहैबिनजातहै
यहुमनबहुरिनहोइ दादूरांमकहैसबरहतहै जीव
ब्रह्मकीलार रांमकहैबिनजातहै रेमनहोहुसियार
हरिभजिसाफिलजीवणां परउपगारसमाइ दादू
मरणांतहांभला जहांपसुपंषीषाइ दादूरांमसबद
मुषिलेरहै पीछैलागाजाइ मनसावाचाकरमनां तिि
ततिसहजिसमाइ दादूचिमचिलागेनांउसौं रातै
तेहोइ देषैगेदीदारकौं सुषपावैंगेसोइ दादूसां
ईसेवैं सबभले बुरानकहियेकोइ सारौंमांहैसोबु

इजिसघटिनांवनहोइ॥४७॥ दादूजीयरारामबिन॥दुषिया
इहिंसंसार॥उपजैबिनसैषपिमरै।सुषदुषबारंबार॥४८
रामनांमरुचिउपजै।लेवैहितचितलाइ।दादूसोईजीय
रा।काहेजमपुरिजाइ॥४९॥ दादूनीकीबरियांआइकरि
रामजपिलीन्हों।आतमसाधनसोधिकरि।कारिजभलूकी
न्हो॥५०॥ दादूअगमबसनपानैपडी।राषी मंझिछिपा
इ।छिनछिनसोईसंभालिये।मतिवैबीसरिजाइ॥५१॥दा
दूउजलनिरमला।हरिरंगराताहोइ।काहेदादूपचिमरै
पांणीसेतीधोइ॥५२॥सरीरसरोवररांमजल।मांहैसंजम
सार॥दादूसहजैसबगये।मनकेमैलबिकार॥५३॥दादूरां
मनांमजलंकृत्वा॥स्नानंसदाजितः॥तनमनआत्मांनिरम
ले॥पंचभूपापंगतः॥५४॥दादूउतिमइंद्रीनिग्रहं।मुचि
तेमायामनः।परमपुरषपुरातनं।च्यंततेसदातनः॥५
५॥दादूसबजगबिषभर्या।निरबिषबिरलाकोइ।सोई
निरबिषहोइगा।जाकैनांउनिरंजनहोइ॥५६॥दादूनिर
बिषनांउसौं।तनमनसहजैंहोइ।रांमनिरोगाकरैगा।दूजा
नांहीकोइ॥५७॥ब्रह्मभगतिजबउपजै।तबमायाभग
तिबिलाइ।दादूनिरमलमलगया।ज्यूंरबितिमरनसाइ
॥५८॥ दादूबिषेबिकारसौं।जबलगमनराता॥तबलग
चीतिनआवई।त्रिभुवनपतिदाता॥५९॥दादूकाजांनौं
कबहोइगा।हरिसुमिरनइकतार।काजांनौंकबछाडि
है।यहुमनबिषेबिकार॥६०॥हैसोसुमिरनहोतानहीं
नहींसुकीजैकाम।दादूयहुतनयूंगया।क्यूंकरिपाइ
येराम॥६१॥दादूरांमनांमनिजओषदी।काटैकोटिबिका
र।बिषमब्याधिथैऊबरै।कायाकंचनसार॥६२॥दादूरां
मनांमनिजमोहना।जिनिमोहेकरतार।सुरनरसंकरमुनि
जनां।ब्रह्मासिष्टिबिचार॥६३॥ दादूनिरबिकारनिजनांउ

ले जीव निरंतर पाइ । दादू किंतन मकाल है ताके निकटि
न जाइ ॥ ॥ मन पवन गहि सुरति सौं दादू पावै स्वाद सुमि
रन मांहै सुष घणा छाडि देऊ बकवाद ॥ ॥ नांउ सपीड
ली जिये प्रेम मगन गुन गाइ ॥ दादू सुमिरन प्रीति सौं हेत म
हित ल्यौ लाइ ॥ ॥ ग्यांन कवल मुषि राम कहि मन पवन
मुषि राम । दादू सुरति मुषि राम कहि ब्रह्म सुंनि निज ठाम
॥ ॥ दादू कहतां सुनतां राम कहि लेतां देतां राम । षात
पीवतां राम कहि आतम कवल बिसराम ॥ ॥ दादू राम
नांम मे पैसि करि रांम नांम ल्यौ लाइ । यहु इकत तीय लोक
मैं अनंत काहे कौ जाइ ॥ ॥ दादू जल पैसे दूध मैं ज्यूं पां
म णी मैं लूंण । ऐसैं आतम रांम सौं मन हठ साधे कौंण ॥ ॥ नां
घ रत लान बन सलाज ह्यांन ही निज नांउ दादू उनमन मन
रहै सत्ता त सोई ठांव ॥ ॥ निरगुण नांम मई रिदै साव प
रवर तत अरमे करमे के स्ति बिष माया मोह कै पित का
जाल से चित स्यांने कै जम क्यं करै हरि षमुदित संत गुर
दादू अबिगत हरस नै ॥ ॥ दादू सब सुष ग्रापस्याल के तो
लित राज बाहि हरि सुष ऐक पलक का तास मिक स्यान जा
ब इ ॥ ॥ दादू रांम नांम सक कौ कहै कहिबे बहुत बमेक
येक अनेक कौं फिरि मिले येक समानां येक ॥ ॥ दादू अपनी
अपनी हदि मैं सब कौ लेवै नांउ जे लागे बेहद सौं तिनकी
मैं बलि जाउं ॥ ॥ दादू कौन पटंतर दीजिये दूजा नांही कोइ
इ रांम सरीषा राम है सुमिरयां ही सुष होइ ॥ ॥ अपनी
जानैं आप गति और न जानैं कोइ सुमिरि सुमिरि रसपी जिये
दादू आनंद होइ ॥ ॥ दादू सबही बेद पुरांन पढि नेटि नां
व निरधार सब कुछ इस ही मांहि है क्या करियै बिस्तार
॥ ॥ पढि पढि थाके पंडिता किनहू न पाया पार क
थि कथि थाके मुनिजनां दादू नांउ अधार ॥ ॥ दादू

नामसौं अगम विचारिये तऊ पार न आवै ताथैं सेवग क्या
करै सुमिरन ल्यौ लावै ॥ ॥ दादू अलिफ एक अलाह का
जे पढि जांणैं कोइ ॥ कुरांण कतेबां इलम सब पढि करि पूरा
होइ ॥ ॥ दादू यहु तन पिंजरा मांहैं मन सूवा ये केनां
उ अलाह का पढि हाफिज हूवा ॥ ॥ दादू नांउ लीया तब जा
णियें जे तन मन रहै समाइ ॥ आदि अंति मधि ये करसा कब
हूं भूलि न जाइ ॥ ॥ दादू एकै दसा अनिन की दूजी दसा न जा
इ ॥ आपा भूलै आंन सब ये कै रहै समाइ ॥ ॥ दादू पीवै एक र
स ॥ बिसरि जाइ सब और ॥ अबिगति यहु गति कीजिये ॥ मन
राखौं इहि ठौर ॥ ॥ आतम चेतनि कीजिये प्रेम रस पीवै ॥ दा
दू भूलै देह गुन ॥ ऐसैं जन जीवै ॥ ॥ कहि कहि केते थाके
दादू सुणि सुणि कहि क्या लेइ ॥ लूंण मिलै गलि पांणियां ता
सनि चित यौं देइ ॥ ॥ दादू हरि रस पीवतां रती बिलंब न ला
इ ॥ बारंबार संभालिये मति वै बीसरि जाइ ॥ ॥ नांउ न आवै
तब दुखी ॥ आवै सुख संतोष ॥ दादू सेवग रांम का दूजा हरि
ष न सोग ॥ ॥ दादू जागत सुपिनां ह्वै गया ॥ चिंतामणि जब
जब जाइ ॥ तब ही साचा होत है ॥ आदि अंति उर लाइ ॥ ॥
मिलै त सब सुख पाइये ॥ बिछुरै बहु दुख होइ ॥ दादू सुख दुख रा
म का ॥ दूजा नांही कोइ ॥ ॥ दादू हरि का नांउ जल मैं मीन ता
मांहि ॥ संगि सदा आनंद करै ॥ बिछुरत ही मरि जांहि ॥ ॥ दा
दू रांम बिसारि करि जीवैं किहि आधार ॥ ज्यूं चात्रग जल बूं
द कौं करै पुकार पुकार ॥ ॥ हम जीवैं इहि आसिरै सुमि
रन के आधार ॥ दादू छिटकैं हाथ थैं तौ हम कौं वार न पार
॥ ॥ दादू नांव निमित्त रांम हि भजै भगति निमित्त भजि सो
इ ॥ सेवा निमित्त सांईं भजै सदा सजीवनि होइ ॥ ॥ दादू
रांम रसांइन नित चवै हरि है हीरा साथि ॥ सो धन मेरे सांइयां
अलख खजीनां हाथि ॥ ॥ हिरदै रांम रहै जा जन कै ता

केतुराकौं नकहै अठसिधिनौनिधिताकैआगे
धरहै बेहितीनिलोकआडुरा कैसैदरस लहैनातेति
सोनसकलजगातपरि दादूदेषतहै ।१६। दादूसबजगनी
धना धनवंतानहींको~इ सोधनवंताजाणिये जाकैराम
प दारथहोइ ।१७। दादूआनंदआतमा अविनासीकै
साथ प्राननाथहिरदैबसै तौसकलपदारथहाथि चिंता
दादूसबहीलागासबनकै रामनामकेसाथि ।१८। दादूसा
मरिहिरिदैबसै तौसकलपदारथहाथि सेसरसातलागान
बैतहांछिपाइये सावनछानाहोइ
प्रगटकहिये सोइ ।२०। दादूकहांथानारदमु
निकहांभगतप्रहलाद प्रगटतीनलोकमें सकल
पुकारैसाध ।२१। दादूकहांसिवबैठाध्यानधरि कहां
कबीरानाम सोक्योंछानाहोइगा जेरुकहैगाराम ।२२।
दादूकहांलीनसुषदेवथा कहांपीपारैदास दादूसा
चाकूंछिपै सकललोकप्रकास ।२३। दादूकहांथागो
रषभरथरी अनंतसिधोंकामत प्रगटगोपीचंदहै द
त्तकहैसबसंत ।२४। अगमअगोचरराषिये करिकि
कोटिजतन दादूछानाक्यूंरहै जिसघटिरामरतन
।२५। दादूस्वर्गपयालमें साचालेवैनांउ सकललो
सिरिदेषिये प्रगटसबहीठांउ ।२६। सुमिरनकास
रहा पछितावामनमांहि दादूमीठारामरस स
पीयानांहि ।२७। दादूजैसानांवथा तैसालीयानां
होंसरहीयहुजीवमें पछितावामनमांहि ।२८।
इसिरिकरवतबहै बिसरैआतमराम मांहिक
काटिये जीवनहीं बिश्राम ।२९। दादूसिरिकर
रामरिदैथैंजाइ माहिकलेजाकाटिये काल
जाइ ।३०। दादूसिरिकरवतबहै आपासमन

ांहिकलेजाकाटिरो।यहुबिथानजानैंकोइ॥११२॥दाइ।
सरिकरवनवहै।नैनहु निरषैनांहि।मांहिकलेजाका
टिये।सालरद्यामनमांहि॥११३॥जेतापापसबजगकरै
तेतानांउबिसारेंहोइ॥दाइरांमसंभालिये।तोयेताडारै
धोइ॥११४॥दाइजबहीरांमबिसारिये।तबहीमोटीमार॥
षंडषंडकरिनांषिये।बीजपड़ैतिहिंबार॥११५॥दाइजब
हीरांमबिसारिये।तबहीकंधकाल॥सिरऊपरिकरव
तबहै।आइपडैजमजाल॥११६॥दाइजबहीरांमबिसा
रिये।तबहीकंधबिनास॥पगिपगिपरलैपिंडपडै।प्रा
णीजाइनिरास॥११७॥दाइजबहीरांमबिसारिये।तबहीहां
नांहोइ॥प्रांनपिंडसबसगया।सुषीनदेष्याकोइ॥११८॥
साहिबजीकेनांउमां।बिरहापीडपुकार।तालाबेलीरो
वणां।इहैदीदार॥११९॥साहिबजीकेनांउमां।भावभगति
बेसास।लेसमाधिलागारहै।दाइसांईपास॥१२०॥साहिब
जीकेनांउमां।मतिबुधिज्ञानबिचार।प्रेमप्रीतिसनेहसु
ष।दाइजोतिअपार॥१२१॥साहिबजीकेनांउमां सबकुछ
भरेभंडार।नूरतेजअनंतहै।दाइसिरजनहार॥१२२॥जि
समैंसबकुछसोलीया।निरंजनकानांव।दाइहिरदैराषी
ये।मैंबलिहारीजांव॥१२४॥साषीअंग॥२॥बिरहकोअं
गलिष्यते॥दाइनमोनमोनिरंजनं नमस्कारगुरुदेवत।
ह।बंदनंसबसाधवा।प्रणामंपारंगतह॥१॥रतिवंतीआर
तिकरै।रांमसनेहीआव।दाइऔसरिअबमिलै।यहु
बिरहनिकासाव॥२॥पीवपुकारैबिरहनी।निसदिनर
हैउदास।रांमरांमदाइकहै।तालाबेलीप्यास॥३॥म
नचितचातृगज्यूंरटै।पीवपीवलागीप्यास।दाइदरसनका
रनैं।पुरवहुमेरीआस॥४॥सबदतुम्हारा उजला।चि
रियाक्यूंकारी।तुहीतुहीनिसदिनकरौ

तन मन तु मपरिवारतौ करिहिजेकेबार जेऔसी बि
रघाईये तौ लीजे सिरजनहार ॥ दादूदातउ नोसदके
करौ दुकदेषनदेहीदार ॥ तनमनसौ छिनछिन करौं भि
सदी जगसीदार ॥ दादूहमउषियादीदारके देदिलषे
हरिनहोइ सावै हमकौं जानिदे ॥ फंणा है सो होइ ॥ दादू
करैजेऊछदीया मुझकौं सोमवडमहीलेऊ ॥ उमबिनमनमां
नैनहीं ॥ दरसआपणांदेऊ ॥ इजाकछु मारौंनहीं ॥ हमकौं
दैदीदार ॥ तूंहैतबलगयेकटंग ॥ दादूकेदिलदार ॥ दा
इकहै तूंहैतैसाभगतिदे ॥ तूंहैतैसाप्रेम ॥ तूंहैतैसासुरतिदे
तूंहैतैसाषेम ॥ दादूसदिकैकरौंसरीरकौं ॥ बेरबेरबहुते
त सावसगतिहितप्रेमस्यों ॥ षरापियाराकंत ॥ दादूहद
रसनकौंरली हमकौंबहुतअपार ॥ क्याजांनौंकबहूंमि
लै मेराप्रानअधार ॥ दादूकारनिकंतके ॥ षराउषीबे
हाल मीरांमेरामिहरकरि ॥ देदरसनदरहाल ॥ दादूत
लाबेलीप्यासबिन ॥ क्यूंरसपीयाजाइ ॥ बिरहादरसनदरद
सौं हमकौंदेऊदाइ ॥ तालाबेलीपीडसौं ॥ बिरहाप्रे
मपियास ॥ दरसनसेतीदीजिये ॥ बिलसैदादूदास ॥ दादूक
हे हमकौं अपनां आपदे ॥ इसकमहबतिदरद ॥ सेजसुहागसुष
प्रेमरस ॥ मिलिषेलैंलापद ॥ दादूप्रेमभगतिमातारहै
तालाबेलीअंग ॥ सदासपीडामनरहै ॥ रांमरमैंउनसंग
॥ दादूप्रेमभगतिरसपाईये ॥ भगतिहेतरुचिभाव ॥ बिर
हबिसासनिजनांवसौं ॥ देवदयाकरिआव ॥ गईदसा
सबबाउडै ॥ जेउमपरगटआइ ॥ दादूऊजडसबबसै ॥ द
रसनदेहदिषाइ ॥ दादूकहै हमकसियेक्याहोइगा
बिछुरंतुम्हाराजाइ ॥ पीछैहीपछिताउगे ॥ तापैपरगटआ
इ ॥ दादूतोपीवपाईये ॥ करिमंझैबिलाप ॥ सुनिहैक
बहुंचितधरि ॥ परगटहोवैआप ॥ दादूतोपीवपाये

गावैप्रीतिलगाव॥दैजैहरीबुलाइये॥मोहनमंदिरआव
५५॥ दादूतौपीवपाइये॥करिसांईकीसेव॥कायामांहि
लषाइसी॥घटहीभीतरिदेव॥५६॥दादूतौपीवपाईये॥
ऊसमलहैसोजाइ॥निरमलमनकरिआरसी॥मूरतिमांहि
लषाइ॥५७॥मींयांमेंराआवघरि॥वांढीवतांलोइ॥डुषांडे
मुहिंडेगरहिं॥मरांविछोहेरोइ॥५८॥देसोनिक्षिनहीपाई
या॥नहीसुहेनरपूर॥दादूमनमांनेनहीं॥नाथेमरियेझूरि
५९॥ जिसघटिइसकअलाहका॥तिसघटिलोहीनमास
दादूजियरेजकनहीं॥ससकैसांसैसास॥६०॥रतीरबुनबि
सरे॥मरैसभालिसंभालि॥दादूसुहदापीरहै॥आसिकअ
लहनालि॥६१॥दादूआसिकरबदा॥सिरभीडेवेलाहि
अलहकारनिआपकोसाडेअंदरिताहि॥६२॥भोर
भोरैतनकरै॥वंडेकरिकुरवांण॥मिठाकौडानालगै
दादूतैंहूंसाण॥६३॥दादूजबलगसीसनसौंपिये॥तबलग
इसकनहोइ॥आसिकमरणैनांडरै॥पीयापियालासोइ
६४॥तैंडीमेंडीईसनु॥जेडायेंदादारके॥जेजलहंदाअलु
पसाई॥दोपाणके॥६५॥बिचोसजो दूरिकरि॥अंदरि
बियानपाइ॥दादूरताहिकदा॥मनमहबतिलाइ॥
६६॥दादूइसकमहबतिमसतमन॥तालिबदरिदीदार
दोसतदिलहरदमहजूरि॥यादिगारहुसियार॥६७
आसिकएकअलाहके॥फारिकदुनीयांदीन॥तारि
कइसअजूदथैं॥दादूपाकअकीन॥६८॥आसिकार
हकबजकरदा॥दिलवजोरफदंदा॥अलहआलेनूर
रहीदमा॥दिलहदादूवंदा॥६९॥दादूइसकअवाज
सौं॥ऐसेकहैनकोइ॥दरदमहबतिपाईये॥साहि
बहामिलहोइ॥७०॥
मारअपनैंसाथ॥कहांआलम

वोकी बात ॥ ॥ दादू इसक अलह का जे कबहूं प्र
गटै आइ। तौ तन मन दिल अरवाह का सब पडदा जलि
जाइ ॥ ॥ अरवाह सिजदा कुनंद औजूद रा चिका
र। दादू नूर दादनी आसिकां दीदार ॥ ॥ बिरह अ
गिन तन जालिये ग्यान अगिनि दौं लाइ। दादू नष सिष पर जा
लै तब राम बुझावै आइ ॥ ॥ बिरह अगनि में जा
लिबा दरसन के तांई। दादू आतुर रोइबा ॥ दूजा क
छु नांहीं ॥ ॥ साहिब सौं कछु बल नहीं। जिनि हठ
साधे कोइ। दादू पीड पुकारिये रोवत होइ सु होइ ॥
॥ ग्यान ध्यान सब छाडि दे। जप तप साधन जोग। दा
दू बिरहा ले रहै। छाडि सकल रस भोग ॥ ॥ जहां बि
रहा तहां और क्या सुधि बुधि नाठे ग्यान। लोक बेद मार
ग तजे। दादू एकै ध्यान ॥ ॥ बिरही जन जीवै नहीं। जे
कोटि कहैं समझाइ। दादू गहिला ह्वै रहै कै तलफि तल
फि मरि जाइ ॥ ॥ दादू तलफै पीड सौं बिरही जन तेरा।
ससकै सांई कारनैं मिलि साहिब मेरा ॥ ॥ दादू बिरहा
पीड सौं पड्या पुकारै मीत। राम बिना जीवै नहीं पीव मि
लन की चीत ॥ ॥ पड्या पुकारै पीड सौं। दादू बिरही जन।
राम सनेही चित बसै और न भावै मन ॥ ॥ जिस घटि
बिरहा राम का उस नींद न आवै। दादू तलफै बिरहनी
उस पीड जगावै ॥ ॥ सारा सूरा नींद भरि सब कोई
सोवै। दादू घाइल दरदवंद जागै अरु रोवै ॥ ॥ पीड
पुरांणी ना पडै जे अंतरि बेधा होइ। दादू जीवन मरन
लौं पड्या पुकारै सोइ ॥ ॥ जे कबहूं बिरहनि मरै तौ
सुरति बिरहनी होइ। दादू पीव पीव जीवतां मूवां भी
टेरै सोइ ॥ ॥ दादू अपणी पीड पुकारिये पीड पराई
नांहि। पीड पुकारै सो भला जाके करक कलेजे मांहि

८७॥ अजीवतमृतककारनैं॥गतकरिनाषेआप॥पूंव
स्का रनिरांमकें॥बिरहीकरैबिलाप॥८८॥दादूतलफित
लफिबिरहनिमेरे॥करिकरिबहुतबिलाप॥ बिरह
अगनिमेंजलिगई॥पीवनपूछैबात॥९०॥दादूकहांजाकं
कौनपैपुकारों॥पीवनपूछैबात॥पीवबिनचैननआव
ई॥क्यूंतरौंदिनरात॥९१॥दादूबिरहबियोगनसहिसकों
मोपैसह्यानजाइ॥कोईकहौमेरेपीवकों॥दरसदिखावैआ
इ॥९२॥दादूबिरहबियोगनसहिसकों॥निसदिनसालै
मोहि॥कोईकहौमेरेपीवकों॥कबमुषदेषौंतोहि॥९३॥
दादूबिरहबियोगनसहिसकों॥तनमनधरैनधीर॥कोई
कहौमेरेपीवकों॥मेटैमेरीपीर॥९४॥दादूकहैसाधदुषी
संसारमें॥रामबिनरह्यानजाइ॥औरोंकेआनंदहै॥
सुषसोंरैनिबिहाइ॥९५॥ दादूलाइकहमनही॥हरि
केदरसनजोग॥बिनदेषेंमरिजाहिंगे॥पीवकेबिरहबि
योग॥९६॥दादूसुषसांईसों॥औरसबैहीदुष॥देषौ
दरसनपीवकौ॥तिसहीलागेसुष॥९७॥दादूसुषसांई
सौं॥औरसबहीदुष॥देषौंदरसनपीवका॥तिसही
लागेसुष॥९८॥ चंदनसीतलचंदमा॥जलसीतलसब
कोइ॥दादूबिरहीरामका॥इनसौंकदेनहोइ॥९९॥दादूघा
इलदरदवंद॥अंतरिकरैपुकार॥सांईसुणैसबलोकमें
दादूयहुअधिकार॥१००॥दादूजागैजगतगुर॥जगसग
लासोवै॥बिरहीजागैपीडसौं॥जेघाइलहोवै॥१०१॥
बिरहअगनिकादागदे॥जीवतमृतकगोर॥ दादूप
हलीघरकीया॥आदिहमारीगोर॥१०२॥दादूदेषेकाअ
चिरजनहीं॥आगादेषेकाहोइ॥देषेऊपरिदिलनही॥
आगादेषेकोरोइ॥१०३॥दादूपहलीआगमबिरहका
पीछैप्रीतिप्रकास॥प्रेममगनलै॰

नकीआस ॥१०४॥ बिरहबियोगी मन रहै ना सांईका बैरा
सहजसंतोषीपाईये दादूमोटासारा ॥१०५॥ दादूचूबि
नांतनिप्रीतनऊपजै सीतलनिकटिजलधरिया ज
नमलगैजीवगुणगानपीवै निरमलदहदिसभरिया
॥१०६॥ दादूधुधाबिनांतनिप्रीतिनऊ पजै बहुबिधि
भोजननेरा जनमलगैजीवरतीनचाषै पाकपूरिबहु
तेरा ॥१०७॥ दादूतपतबिनांतनिप्रीतिनऊपजै संग
हींसीतलछाया जनमलगैजीवजांणैनाहीं तरवरत्रू
भवनराया ॥१०८॥ दादूचोटबिनांतनिप्रीतिनऊ पजै
ओषदअंगरहंत जनमलगैजीवपलकनपरसै बूटी
अमरअनंत ॥१०९॥ दादूचोटनलागीबिरहकी पीड
नऊपजीआइ जागिनरोवेधाहदे सोवतगईबिहाइ
॥११०॥ दादूपीडनऊपजी नांहमकरीपुकार ता
थैसाहिबनांमिल्या दादूबीतीबार ॥१११॥ अंदरिपी
डनऊपरे बाहरिकरैपुकार दादूसोक्यूंकरिलहै
साहिबकादीदार ॥११२॥ मनहीमांहैझूरणां रोवै म
नहीमांहि मनहीमांहैधाहदे दादूबाहरिनांहि
॥११३॥ बिनहीनैनहूंरोवणां बिनमुखपीडपुकार
बिनहीहाथोंपीटणां दादूबारंबार ॥११४॥ प्रीतिनऊप
जैबिरहबिन प्रेमभगतिक्यूंहोइ सबझूठीदादूभाव
बिन कोटिकरैजेकोइ ॥११५॥ दादूबातोंबिरहनऊ
पजै बातोंप्रीतिनहोइ बातोंप्रेमनपाईये जिनि
रपतीजेकोइ ॥११६॥ दादूजाकैजैसीपीडहै सोतैसी
करैपुकार कोसूषिमकोसहजमैं कोमृतकतिहि
बार ॥११७॥ दरदहिंबूझैदरदवंद जाकेदिलहो
वै क्याजांणैदादूदरदकी नींदभरिसोवै ॥११८॥ दा
दूकोर बिनसर बिनकमांण बिन मारैखैचिकसी

लागीचोटसरीरमे॥नषसिषसालैसीस॥११९॥दादून
लकामारेसेदसौ॥सालैमंझिपरांण॥ मारणहाराजांणि
है।केजिहिलागेबांण॥१२०॥दादूसोसरदमकोमारिले
जिहि मरिमिलियेजाइ॥ निसदिनमारगदेषिये॥कब
हूंलागेआइ॥१२१॥जिहिंलागासोजांणिहै॥ बेध्याक
रैपुकार॥दादूपंजरिपीडहै॥सालैबारंबार॥१२२॥बिर
हीसमकेपीडसौं॥जूघाइलरणमांहि॥प्रीतममारेबां
णनरि॥दादूजीवेनांहि॥१२३॥दादूबिरहजगावेदरदको
दरदजगावैजीव॥जीवजगावैसुरतिकौं॥पंचपुकारे
पीव॥१२४॥ दादूसहजैमनसामंनसधे॥सहजैपवना
सोइ॥सहजैपंचौंथिरभये॥चोटबिरहकीहोइ॥१२५
दादूमारेप्रेमसौं॥बेधेसाधसुजांण॥ मारणहारेकौमि
ले॥दादूबिरहीबांण॥१२६॥दादूमारणहाराहरिग
या॥जिहिलागीसोनांहि॥कबहूंसोदिनहोइगा॥यऊ
मेरेमनमांहि॥१२७॥प्रीतममारेप्रेमसौं॥तिनकौंक्यामा
रे॥दादूजारेबिरहके॥तिनकौंक्याजारे॥१२८ कायामां
हैकूरह्या॥बिनदेषेदीदार॥दादूबिरहीबावरा॥मरे
नहीतिहिंबार॥१२९ बिनदेषेजीवैनही॥बिरहकास
हिनांण॥ दादूजीवैजबलगैं॥तबलगबिरहनजांण
१३०॥ रोमरोमरसप्यासहै॥दादूकरहिपुकार॥राम
घटादलउमंगिकरि॥बरसहु सिरजनहार॥१३१॥प्री
तिजुमेरेपीवकी॥पैठीपंजरमांहिं॥रोमरोमपीवपी
वकरै॥दादूदूसरनांहि॥१३२सब घटिश्रवनांसुरति
सौं॥सबघटिरसनांबैन॥ सबघटिनैनांह्वैरहे॥दा
दूबिरहाश्रैन॥१३३रातिदिवसकारोवणा॥पद
पलककानांहिं॥रोवतरोवतमिलिगया॥दादूस
हिबमांहिं॥१३४॥दादूनैनदमारेबावरे॥रोवेनही

नरात ॥ साई संगि न जागही ॥ पीव क्यूं पूछै बात ॥२२॥
इ नैनहुं नीर न आइया ॥ क्या जाणै ये रोइ ॥ तैसै ही का
रोईये ॥ साहिब नैनहुं जोइ ॥२३॥ दादू नैन हमारे ढीठ
हैं ॥ नाले नीर न जाहिं ॥ सूके सरां सहेत वे ॥ करंक भये
गलि मांहि ॥२४॥ दादू बिरह प्रेम की लहरि में ॥ यहु म
न पंगुल होइ ॥ राम नाम मैं गलि गया ॥ बूझै बिरला कोइ
॥२५॥ बिरह अगनि मैं जलि गये ॥ मन के मैल बिका
र ॥ दादू बिरही पीव का ॥ देखैगा दीदार ॥२६॥ बिरह अग
नि मैं जलि गये ॥ मन के विषै बिकार ॥ ताथै पंगुल है र
ह्या ॥ दादू दरि दीदार ॥२७॥ दादू जब बिरहा आया दर
द सौं ॥ तब मीठा लागा राम ॥ काया लागी काल है ॥ क
डे लागे काम ॥२८॥ जब राम अकेला रहि गया ॥ त
न मन गया बिलाइ ॥ दादू बिरही जब सुखी ॥ जब दर
स परसि जाइ ॥२९॥ दादू पड़दा पलक का ॥ येता अंत
र होइ ॥ दादू बिरही राम बिन ॥ क्यूं करि जीवै सोइ ॥३०॥
जे हम छाडैं राम कौं ॥ तौ राम न छाडै ॥ दादू अमली
अमल थै ॥ मन क्यूं करि काढै ॥३१॥ बिरहा पारस ज
ब लहै ॥ तब बिरहनि बिरहा होइ ॥ दादू परसै बिरह
नी ॥ पीव पीव टेरै सोइ ॥३२॥ आशिक मासूक है गया
इसक कहावै सोइ ॥ दादू उस मासूक का ॥ अलह
आसिक होइ ॥३३॥ राम बिरहनी है रह्या ॥ बिरहनि
है गई राम ॥ दादू बिरहा बापुड़ा ॥ ऐसे करि गया का
म ॥३४॥ बिरह बिचारा ले गया ॥ दादू हमकौं आइ ॥
जहां अगम अगोचर राम था ॥ तहां बिरह बिना को
इ ॥३५॥ बिरहा बपुरा आइ करि ॥ सोवत जगावै जी
व ॥ दादू अंगि लगाइ करि ॥ ले पहुंचावै पीव ॥३६॥
बिरहा मेरा मीत है ॥ बिरहा बैरी नांहि ॥ बिरहीं कौं

बेरी कहै सो दादू किस .. मांहि ॥१४०॥ दादू इसक अ
लह की जाति है ॥ इसक अलह का अंग ॥ इसक अ-ल
ह औजूद है ॥ इसक अलह का रंग ॥१४१॥ दादू पीव मूके
पग प्रसियें ॥ मुझ देषन का चाव ॥ तहां ले सीस नवाइये
जहां धरे थे पाव ॥१४२॥ दादू बाट बिरह की सोधि करि
पंथ प्रेम का लेहु ॥ लै के मारग जाइये ॥ दूसर पाव न देहु
॥१४३॥ बिरहा बेगा भ्रम गमि तिसहू जमें ॥ आगें पीछे जाइ
थोरे मांहें बहुत है ॥ दादू रह्या लाइ ॥१४४॥ बिरहा बे
गा ले मिलै ॥ तालाबेली पीर ॥ दादू मन घाइल भया सा
लै सकल स.रीर ॥१४५॥ आपा अपरंपार की ॥ बसि अं
बर सरतार ॥ हरे पटंबर पहरि करि ॥ धरती करै सिं
गार ॥ बसुधा सब फूलै फलै ॥ पृथी अनंत अपार ॥
ग..गन गरजि जल थल भरै ॥ दादू जै जैकार ॥१४७॥ दादू
काल सुकाल करि काल का ॥ सांई सदा सुकाल ॥ मेघ तुम्हा
रे घरि घणां ॥ बरसहु दीनदयाल ॥१४८॥ बिरह का
अंग संपूर्ण ॥ सोषी ॥ ५२०॥ अथ परचा
कौ अंग लिषंतं ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गु
रदेवतः ॥ बंदनं सर्व साधवा ॥ प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू निरं
तर पीव पाइया ॥ तहां पंषी उनमन जाइ ॥ सप्तौ मंडल भेदि
या अष्टै रह्या समाइ ॥२॥ दादू निरंतर पीव पाइया ॥ जहां नि
गम न पहुंचै बेद ॥ तेज सरूपी पीव बसै ॥ कोई बिरला जाणै
भेद ॥३॥ दादू निरंतर पीव पाइया ॥ तीनि लोक भरपूरि ॥
सब सेजौं सांई बसै ॥ लोग बतावैं दूरि ॥४॥ दादू निरंतर पीव
पाइया ॥ जहां आनंद बारह मास ॥ हंस सौं परमहंस षेलै ॥
तहां सेवग स्वामी पास ॥५॥ दादू रंग भरि षेलौं पीव सौं ॥
तहां बाजै बेन रसाल ॥ अकल पाट परि बैठा स्वामी ॥ प्रेम पि
लावै लाल ॥६॥ दादू रंग भरि षेलौं पीव सौं ॥ सेती दीनदय

ल ॥ निस बासुर नहीं तहां बसै मांनसरोवर पाल ॥१६॥
रंग भरि षेलौं पीव सौं तहां कबहूं न होइ बियोग ॥ आदि पु
रिस अंतरि मिल्या कछु पूरबले संजोग ॥१७॥ दादू रंग भ
रि षेलौं पीव सौं तहां बारहमास बसंत ॥ सेवग सदा अनंद
है जुगि जुगि देषौं कंत ॥१८॥ दादू काया अंतरि पाइया त्रि
कुटी केरै तीर ॥ सहजैं आप लषाइया ब्याप्या सकल सरीर
॥१९॥ दादू काया अंतरि पाइया निरंतर निरधार ॥ सहजैं
आप लषाइया ऐसा समृथ सार ॥२०॥ दादू काया अंतरि
पाइया अनहद बेन बजाइ ॥ सहजैं आप लषाइया सुंनि
मंडल मैं जाइ ॥२१॥ दादू काया अंतरि पाइया सब देवनि का
देव ॥ सहजैं आप लषाइया ऐसा अलष अभेव ॥२२॥
दादू भंवर कंवल रस बेधिया सुष सरवर रस पीव ॥ तहां हं
स मोती चुणैं पीव देषैं सुष जीव ॥२३॥ दादू भंवर कंवल रस बे
धिया गहे चरण कर हेत ॥ पीव जी परसत ही भया रोम रोम
सब सेत ॥२४॥ दादू भंवर कंवल रस बेधिया अनत न भ
रमैं जाइ ॥ तहां बास बिलंबिया मगन भया रस षाइ ॥२५॥
दादू भंवर कंवल संबेधिया गही जु पीव की वोट ॥ तहां द
लि भंवरा रहै कौंण करै सर चोट ॥२६॥ दादू षोजि तहां पी
व पाइये सबद ऊपनै पास ॥ तहां एक एकांत है तहां जो
ति प्रकास ॥२७॥ दादू षोजि तहां पीव पाइये जहां चंद न ऊ
गै सूर ॥ निरंतर निरधार है तेज रह्या भरपूर ॥२८॥ दादू
षोजि तहां पीव पाइये जहां बिन जिभ्या गुन गाइ ॥ तहां
आदि पुरिस अलेष है सहजैं रह्या समाइ ॥२९॥ दादू षो
जि तहां पीव पाइये जहां अजरा अमर उमंग ॥ जरा मरण
भौ भाजसी राषै अपणैं संग ॥३०॥ दादू गाफिल छो वं
तैं आहे मंझि अलाह ॥ पिरी पांण जो पांण सें लहैं स
भोई साव ॥३१॥ दादू गाफिल छो वतें आहे मंझि मुकां

हरि हमैं दीठा नैन। पसेन बैठे पाण॥२३॥ दादू माफि
लक्षे वृते॥ अे हरि विरा पसु॥ तब तर बानी बिच मैं फिरे
तिन्ही वसु॥२४॥ हरि च्यंतामणि चिंतता॥ च्यंता चित की
जाइ॥ चिंतामणि चित मैं मिल्या॥ तहां दादू रया लुभाइ
२५॥ अपने नैन हों आपकों॥ जब आतम देषे॥ त
हां दादू परआतमा॥ ताही कों पेषे॥२६॥ दादू बिन रसना
जहां बोलिये॥ तहां अंतरजामी आप॥ बिन श्रवणा कुं
सांई सुणै॥ जे कछु कीजे जाप॥२७॥ ग्यांन लहरि जहां थें
ऊठे॥ वाणी का परकास॥ अनभै जहां थें ऊपजे॥ सबदे
किया निवास॥ सो घर सदा बिचार का॥ तहां निरंजन वास
तहां तूं दादू षोजि ले॥ ब्रह्म जीव के पास॥२८॥ जहां तन म
न का मूल है॥ ऊपजे ॐकार॥ अनहद सेझा सबद का॥ आ
तम करै बिचार॥ भाव भगति ले ऊपजे॥ सो ठाहर निज
सार॥ तहां दादू निधि पाइये॥ निरंतर निरधार॥२९॥ येक
ठौर सूझे सदा॥ निकट निरंतर ठांउं॥ तहां निरंजन पूरि
ले॥ अजरावर तिहिं नांउं॥ साधू जन क्रीडा करैं॥ सदा
सुषी तिहिं गांउं॥ चलु दादू उस ठौर की॥ मैं बलिहारी जांउं
३०॥ दादू पसु पिरंम के॥ पैठि मंझि कलूब॥ बैठा आ
है बिच मैं॥ पाण जो महबूब॥३१॥ नैन कंवल निरषि करि
दादू घाले हाथ॥ तब ही पावें मधन॥ निकट निरंजन ना
थ॥३२॥ नैन कौं बिन सूझै नहीं॥ भूला कत कौं जाइ॥
दादू धन पावे नहीं॥ आया मूल गवाइ॥३३॥ जहां आत
म तहां राम है॥ सकल रह्या भरपूर॥ अंतर गति ल्यौ ला
इ रहु॥ दादू सेवग सूर॥३४॥ पहली लोचन दीजिये॥ पी
छै ब्रह्म दिषाइ॥ दादू सूझै सार सब॥ सुष मैं रहै समाइ
॥३५॥ दादू पा
३॥ ता सौं मन लागा रहे॥ मैं बलिहारी

ल्या चावे प्रेम रस ॥ आलम अंगि लगाइ ॥ हिजे कौं गहि रह
हौ ॥ एकरूप नगेध समाइ ॥ नांही ह्वै करि नांउ ले ॥ कछु न
कहांई रे ॥ साहिब जी की सेज परि ॥ दादू जाई रे ॥ जहां र
म तहां मैं नहीं ॥ मैं तहां नांही राम ॥ दादू महल बारीक है
द्वै कौं नांही ठांम ॥ मैं नांही तहां मैं गया ॥ येकै इसरन ना
हिं ॥ नांही कौं ठाहर घणी ॥ दादू निज घर मांहि ॥ मैं नाही
तहां मैं गया ॥ आगे येक अलाह ॥ दादू ऐसी बंदगी ॥ हिज
नांही आव ॥ दादू आपा जब लगै ॥ तब लगि दूजा हो
इ ॥ जब यहु आपा मिटि गया ॥ तब दूजा नांही कोइ ॥
दादू है कौं भै घणां ॥ नांही कौं कछु नांहि ॥ दादू नांही होइ
रहु आपणे साहिब मांहि ॥ दादू तीनि सुंनि आकार
की चौथी निरगुण नांउं ॥ सहज सुंनि मैं रमि रह्या ॥ जहां
तहां सब ठांउं ॥ पांच तत के पांच है ॥ आठ तत के आठ
आठ तत का येक है ॥ तहां निरंजन हाट ॥ दादू जहां म
न माया ब्रह्म था ॥ गुण इंद्री आकार ॥ तहां मन बिरचै सब
निर्धार ॥ रचि रहु सिरजनहार ॥ काया सुंनि पंच
का बासा ॥ आतम सुंनि प्राण प्रकासा ॥ परम सुंनि ब्रह्म सौं
मेला ॥ आगै दादू आप अकेला ॥ जहां ऐसे सब रूप
जे ॥ चंद सूर आकास ॥ पाणी पवन पावक कीये ॥ धरती का
प्रकास ॥ काल करम जीव ऊपजे ॥ माया मन घट सास
तहां रहिता रमता राम है ॥ सहज सुंनि सब पास ॥
सहज सुंनि सब ठौर है ॥ सब घट सबही मांहि ॥ तहां निर
जंन रमि रह्या ॥ कोई गुण व्यापै नांहि ॥ दादू तिस सर
वर के तीर ॥ सो हंसा मोती चुणैं ॥ तहां पीवै नीझर नीर ॥ सो
है हंसा सो सुणैं ॥ दादू तिस सरवर के तीर ॥ जप तप
संजम कीजिये ॥ तहां सनमुख सिरजनहार ॥ प्रेम पिल
[illegible] ॥ दादू तिस सरवर के तीर ॥ संगी सबै सुहा

वणों नहीं बिन करबा जैबेन। जिभ्या हीणे गावणे॥
॥ दादू तिस सरवर के तीर। चरण कवल चित
लाँया। तहां आदि निरंजन पीव। सागि हमारे आइया
॥ दादू सहज सरोवर आत्मा। हंसा करैं कलो
ल। सुखसागर सूभर भस्या। मुकताहल मन मोल॥
॥ दादू हरि सरवर पूरण सबै। जित तित पांणी पी
व। जहां तहां जल अंचता। गई तृषा सुख जीव॥
सुखसागर सूभर भस्या। उजल निरमल नीर। प्या
स बिनां पीवै नहीं। दादू सागर तीर॥ सुंनि सरो
वर हंस मन। मोती आप अनंत। दादू चुणि चुणि चं
च भरि। यूं जन जीवैं संत॥ सुंनि सरोवर मीन मन।
नीर निरंजन देव। दादू यहु रस बिलसियें। ऐसा अ
लख अभेव॥ सुंनि सरोवर मन भवर। तहां क
वल करतार। दादू परिमल पीजियें। सनमुख सिरज
नहार॥ सुंनि सरोवर सहज का। तहां मरजीवा
मन। दादू चुणि चुणि ले गया। मोती रतन अमोलक॥
दादू मैं किसरोवर बिमल जल। हंसा केलि कराहिं॥
मुकताहल मुकता चुगें। तिहिं हंसा डरनाहिं॥ अ
गंड सरोवर अथघ जल। हंसा सरवर न्हांहि। निरभै
पाया आपघर। इब उडि अनत न जांहि॥ दादू दरि
या प्रेम का। तामें झूलै दोइ। येक आतम परआतमा। ए
कमेक रस होइ॥ दादू हिरण दरियाव। मांणिक
मिं केई टुबी देई पाणमें। डिगो हजै ई॥ परआ
तम सौं आतमा। ज्यूं हंस सरोवर मांहिं। मिलि मिलि
षेलै पीव सौं। दादू दूसर नांहिं॥ दादू सरवर सहज
का। तामें प्रेम तरंग। तहां मन झूलै आतमा। अपणें
सांई संग॥ दादू देषौ निजपीव कौं। इसरि देषौ ना

सबैदिसासो स्रोखिकरि पायाघटहीमांहि दादूदे
षोंनिजपीवकों औरनदेषैकोइ पूरादेषोंपीवकों
बाहरिभीतरिसोइ दादूदेषोंनिजपीवकों देषत
हीदुषजाइ हौंतोदेषोंपीवकों सबमेंरह्यासमाइ
दादूदेषोंनिजपीवकों सोईदेषणजोग प्रगटदे
षोंपीवकों कहांबतावैलोक दादूदेषुदयालकों
सकलरह्याभरपूर रोमरोममेंरमिरह्या तूंजिनिजा
णेंदूरि दादूदेषुदयालकों बाहरिभीतरिसो
इ सबदिसिदेषोंपीवकों दूसरनांहीकोइ दा
दूदेषुदयालकों सनमुषसांईसार जीधरिदेषोंनैनभ
रि तीधरिसिरजनहार दादूदेषुदयालकों रो
किरह्यासबठौर घटिघटिमेरासांईयां तूंजिनिजांणै
और तनमनमांहीमेंनाही नहीमायानहींजी
व दादूयेकेदेषिये दादूदिसिमेरापीव सदालीं
ब नआनंदमें सहजरूपसबठौर दादूदेषैयेककों दूजा
नांहीऔर दादूजहांतहांसाषीसंगिहै मेरेस
दाआनंद नैनबैनहिरदैरहै पूरणपरमानंद
जागतजगपतिदेषिये पूरणपरमानंद सोवतभीसांई
मिलै दादूअतिआनंद दहदिसदीपकतेजके
बिनबातीबिनतेल चहूंदिसिसूरिजदेषिये दादू
अदभुतषेल सूरिजकोटिप्रकासहै रोमरोम
कीलार दादूजोतिजगदीसकी अंतनआवैपार
ज्यूंरविएकअकासहै ऐसेसकलभरपूर
दादूतेजअनंतहै अलाआलेनूर सूरिजनहीं
तहांसूरिजदेष्या चंदनहींतहांचंदा तारेनहींतहां
झिलिमिलिदेष्या दादूअतिआनंदा बादल
नहींतहांबरिषतदेष्या सबदनहीगरजंदा बीज

नहींतहांचेमकतदेष्या दाइप्रमानंदा दाइजोति
चमकै झिलिमिलै तेजपुंजप्रकास अंमृतझरैरस
पीजिये अमरबेलिआकास दाइअविनासी
अंगतेजका असातत्अनूपसोहमदेष्यानैंनभरि
सुंदरसहजसरूप प्रमतेजप्रगटनया तहांमनंया
समाइ दाइषेलेपीवसोनहींआवेनजाइ निरा
धारनिजदेषियेनैंनऊंलागाबंद तहांमनषेलेपीव
सों दाइसदाआंनंद असायेकअनूंपफल
बीजबाऊलानांहिं मीठानिरमलयेकरस दाइनैंन
ऊंमाहिं हीरेहीरेतेजकेसोनिरषेत्रयलोइ
कोईयेकदेषेसंतजंन औरनदेषेकोइ नैनह
मारेनूरमां तहांरहेल्योलाइ दाइसदादारकों नि ३
सदिननिरषतजाइ नैनऊंआंगेदेषिये आ
तमअंतरिसोइ तेजपुंजसबभरिरह्या झिलिमिलि
झिलिमिलिहोइ अनहदबाजेबाजिये अ
मरापुरिबास जोतिसरूपीजगमगै निरषेनिजदा
स परमतेजतंहांमेनरहे परमनूरनिजदेषे प
रमजोतितहांआतमषेलै दाइजीवनिलेषे जरै
सुजोतिसरूपहै जरैसुतेजअनंत जरैसुझिलिमि
लिनूंरहै जरैसुपुंजरहंत दाइअलषअलाह
का कऊंकैसाहैनूर दाइवेहदहदनहीं सकलर
या भरपूर वोरपारनहींनूरका दाइतेजअनं
त कीमतिनहींकरतारकी असाहैभगवंत
२ निरसंधअपारहै तेजपुंजसबमांहि दाइजोतिअनं
तहै आगोपीछोनांहि सदवसुनिअनां
हकलमयेकैनूर जहांतहांहोनें
रघर परमतेजप्रकासहै

मजोतिआनंद मैं हंसा दादू दास ॥९७॥ नूरसरीषा नूर
है तेजसरीषा तेज जोतिसरीषी जोति है दादू षेलै सज
॥९८॥ तेजपुंजकी सुंदरी तेजपुंजका कंत तेजपुंजकी से
ज परि दादू बन्या बसंत ॥९९॥ पहुप प्रेम बरिषै सदा
हरिजन षेलैं फाग ऐसा कौतिग देषिया दादू मोटे भा
ग ॥१००॥ अमृत धारा देषिये पारब्रह्म बरिषंत तेजपुं
ज झिलिमिलि झरै को साधू जन पीवंत ॥१०१॥ रस ही मैं
रस बरिषि है धारा कोटि अनंत तहां मन निहचल रा
षिये दादू सदा बसंत ॥१०२॥ घन बादल बिन बरिषि है नी
झर निरमल धार दादू भीजै आतमा को साधू पीवणहा
र ॥१०३॥ ऐसा अचिरज देषिया बिन बादल बरिषै
मेह तहां चित चात्रिग ह्वै रह्या दादू अधिक सनेह ॥१०४॥
महारस मीठा पीजिये अबिगत अलष अनंत दादू
निरमल देषिये सहजैं सदा झरंत ॥१०५॥ कामधेनु दु
हि पीजिये अकल अनूपम येक दादू पीवै प्रेम सो नि
रमल धार अनेक ॥१०६॥ कामधेनु दुहि पीजिये ताकौ ल
षै न कोइ दादू पीवै प्यास सौं महारस मीठा सोइ ॥१०७॥
॥१०८॥ कामधेनु दुहि पीजिये अलष रूप आनंद दादू
पीवै हेत सौं सुषमन लागा बंद ॥१०९॥ कामधेनु दुहि पी
जिये अगम अगोचर जाइ दादू पीवै प्रीति सौं तेज
पुंज की गाइ ॥११०॥ कामधेनु करतार है अमृत सरवै
सोइ दादू बछरा दध कौं पीवै तो सुष होइ ॥१११॥ ऐसी
येके गाइ है दूझै बारह मास सो सदा हमारे संग है
दादू आतम पास ॥११२॥ तरवर साषा मूल बिन धर
ती परि नांही अबिचल अमर अनंत फल सो दादू
षांही ॥११३॥ तरवर साषा मूल बिन धर अंबर न्यारा
अबिनासी आनंद फल दादू का प्यारा ॥११४॥ तरव

साषामूलबिनरजबीरजरहता॥ अजराअमरअती
तफल॥ सोदाइगहता॥१६॥ तरवरसाषामूलबिन
उतपतिपरलैनांहिं॥ रहितारमतारामफल॥ दाइनै
नकौमांहिं॥१७॥ प्राणतरवरसुरतिजड॥ ब्रह्मतेमि
तामांहिं॥ रसपीवैफूलैफलै॥ दाइसूकैमांहिं॥
॥१८॥ ब्रह्मसुंनितहांक्यारहै॥ आतमकेअसथान
कायाअसथलिक्याबसै॥ सतगुरकहैसुजाण॥
॥ कायाकेअसथलिरहै॥ मनराजापंचप्रधान॥ प
चीसप्रकीरतितीनिगुंण॥ आपब्रह्ममान॥ ॥ आ
तमकेअसथांनिहै॥ ग्यांनध्यांनबिसवास॥ सहजसी
लसंतोषसत॥ भावभगतिनिधिपास॥२०॥ ब्रह्मसुं
नितहांब्रह्महै॥ निरंजननिराकार॥ नूरतेजतहां
जोतिहै॥ दाइदेषणहार॥ ॥ मोजूदषबरमाबूद
षबर॥ अरवाहषबरओजूद॥ मुकांमेचवीजहसि
हाद नीसजूद॥ ॥ ओजूदमुकांमेंहसि॥ नफसगा
लिब किबरकाबिज॥ गुसामनीपेस॥ हईदरोगहि
र सकुजित॥ नावनेकीनेस॥ ॥ अरवाहमुका
मेहसि॥ इसकइबादतिबंदिगी॥ इगांनोषलास॥ मि
हरमहबतिषैरषूबी॥ नावनेकीपास॥ ॥ माबूदमु
कांमेंहसि॥ हकैनूरषूबषूबी॥ दीदनीहैरान॥ अज
बचीजबरहनी॥ प्यालेमसतान॥ ॥ हैवानआ
लम गुमराहगाफिल॥ अवलिसरीयतपद॥ हला
लहरांमनेकीबदी॥ डर सदा नसबंद॥ ॥ ऊलि
फारिकतरकदुनियां॥ दरोजहदमयाद॥ अलहआ
लेइसकआसिक ॥ हरूनेकिरिया॥ द
॥ ॥ आवमर तसअरसऊरसी॥ नूरतेसुब
हांन॥ सिररसिफताकरदहूद॥

दर्द सिलन्नूर दीदम॥ करारेम करद दादू॥ दीदार दरिया
अरवाह आमद॥ मौजूद है मौजूद॥१२९॥ चू दारमजल
बयान गुफतम॥ दसत कर दादू॥ पीरां मुरीदां षबरक
रदा॥ राहे मारूद॥१३०॥ पहली प्राण पसू नर कीजे॥ सा
च कहत संसार॥ नीति अनीति भला बुरा॥ सुन अरु मति
रधार॥१३१॥ सब तजि देषि बिचारि करि॥ मेरा नाहीं को
इ॥ अनदिन राता राम सौं॥ भाव भगति रत होइ॥१३२॥
अंबर धरती सूर ससि॥ सांई सब लै लाये आगि॥ जसु की
रति करुणा करै॥ तन मन लागा रंग॥१३३॥ प्रम तेज तहां
गया॥ नैन अंदेष्या आइ॥ सुष संतोष पाया घणा॥ जोति
हिं जोति समाइ॥१३४॥ अरथ चारि अस्थान का॥ गुर सि
ष कह्या समझाइ॥ मारग सिरजनहार का॥ भाग बडे सो
जाइ॥१३५॥ अरवाहे सिजदा कुनंद॥ औजूद रा चिकार
दादू नूर दादनी॥ आसिकां दीदार॥१३६॥ आसिकां रह
कबज करदा॥ दिल वजौर फतंद॥ अलह आले नूर दी
दम॥ दिल ह दादू बंद॥१३७॥ आसिकां मस तान आल
म॥ षुरदनी दीदार॥ चंद रह चिकार दादू॥ यार मा दिल
दार॥१३८॥ दादू दया दयाल की॥ सो क्यूं छानी होइ॥ प्रेम पु
लक मुकत रहै॥ सदा सुहागनि सोइ॥१३९॥ दादू बिग
सि बिगसि दरसन करै॥ पुलकि पुलकि रस पान॥ म
गन गलित माता रहै॥ अरस परस मिलि प्रान॥१४०॥
दादू देषि देषि सुमिरण करै॥ देषि देषि लै लीन॥ देषि दे
षि तन मन बिलै॥ देषि देषि चित दीन॥१४१॥ दादू निर
षि निरषि निज नांव ले॥ निरषि निरषि रस पीव॥ निरषि
निरषि निरषि पीव कौं मिलै॥ निरषि निरषि सुष जीव॥१४२॥ तन सौं सु
मिरण सब करै॥ आतम सुमिरण एक॥ आतम आ
गै एक रस॥ दादू बडा बमेक॥१४३॥ दादू मांही

के सु काम का। सब को जाणौं जाप॥ एक आध अखर राह का
बिरला आपै आप॥ १४४॥ दादू जब लग अस थल देह
का। तब लग सब व्यापै॥ निरभै अस्थल आतमा। आ
गै रस आपै॥ १४५॥ जब नांही सुरति सरीर की॥ बिसरै
सब संसार॥ आतम न जाणै आपको॥ तब एक रह्या
निरधार॥ १४६॥ तन सौं सुमिरण कीजिये। तब लग त
न नीका। आतम सुमिरण ऊपजै॥ तब लागै फीका॥
आगै आपै आप है॥ तहां क्या जीव का॥ १४७॥ चम दिष्टी
देखे बहुत करि॥ आतम दिष्टी एक॥ ब्रह्म दिष्टि परचे
भया। तब दादू बैठा देख॥ १४८॥ आंधी के आनंद वा
नैन ऊंस रूप ण लागा॥ दरसन देखै पीव का॥ दादू मो
टे भाग॥ १४९॥ एई नैनां देह के॥ एई आतम होइ॥ ए
ई नैनां ब्रह्म के॥ दादू पलटै दोइ॥ १५०॥ घट परचे सब
घट लखै॥ प्राण परचे प्राण॥ ब्रह्म परचे पाइए॥ दादू है है
रान॥ १५१॥ दादू जल पाषाण ज्यूं॥ सेवै सब संसार॥
दादू पाणी लूण ज्यूं॥ कोई बिरला पूजणहार॥ १
५२॥ अलख नांव अंतरि कहै॥ सब घटि हरि हरि हो
इ। दादू पाणी लूण ज्यूं॥ नांउ कहीजै सोइ॥ १५३॥ छाडै सु
रति सरीर कौं॥ तेज पुंज मैं आइ॥ दादू ऐसे मिलि रहै
ज्यूं जल जलहि समाइ॥ १५४॥ सुरति रूप सरीर का
पीव के परसै होइ॥ दादू तन मन एक रस॥ सुमिरण क
हिये सोइ॥ १५५॥ राम कहत राम हि रह्या॥ आप बिसर
जन होइ॥ मन पवन नां पचौं बिलै॥ दादू सुमिरण सोइ
१५६॥ जहां आतम राम संभालिये॥ तहां दूजा नां
ही और॥ दूजा आगै अगम है॥ दादू सूक्षम ठौर॥
१५७॥ पद आतम सौं आतमा॥ ज्यूं पांणी मैं लूण॥ दादू
तन

मनविलैयंकीजिये॥ज्यंघृतलागैघांम॥आतमकवल
जहांवदगी॥तहांदादूपरगटरांम॥ ॥ दादूतनमनवि
लैयंकीजिये॥ज्यंपांणीमैंलूण॥जीवसयैकैतया॥ व्र
तवहूज्ञाकहियेकौंण॥ ॥ कोमलकवलतहांपेसि
करि॥जहांनदेषैकोइ॥मनथिरसुमिरणकीजियै॥तव
दादूदरसनहोइ॥ ॥ नषसिषसव सुमरणकरै ऐसा
कहिए जाप॥ अंतरि विगसै आतमा॥ तवदा
दूपरगटैआप॥ ॥ अंतरिगतिहरिहरिकरै॥तवमुष
कीहाजतिनांहि॥ सहजैधुनिलागीरहै॥दादूमनहीमं
हि॥ ॥ दादूसहजैसुमिरण होतहै॥ रोमरोमरमि
रांम॥ चितचकोरत्यंचितसों॥ यूंलीजैहरिनांम॥ ॥ दा
दूसुमिरणसहजका॥ दीन्हांआपअनंत॥ अरसप
रसनसयेकसौं॥ षेलैसदावसंत॥ ॥ दादूसवदअ
नाहदहमैसुण्यां॥ नषसिषसकलसरीर॥ सवघटि
हरिहरि होतहै॥ सहजैहीमनथीर॥ ॥ दादूग
दिलदगाहिकसांमेकौयेहातानि॥ दादूकमिछु
दादूदेवेगहीहैराति॥ ॥ दादूमालासवआका
रकी॥कोसाधूसुमिरैरांम॥ करणीगरतैक्याकी
या॥ ऐसातेरानांम॥ ॥ सवघटमुषरसनाकरै
रटैरांमकानांम॥ दादूपीवैरांमरस॥ अगमअगो
चरठांम॥ ॥ दादूमनचितअसथिरकीजिये॥
तौनषसिषसुमरणहोइ॥ श्रवणनेत्रमुषनासिका
पंचौपूरैसोइ॥ ॥ रांमजपैरुचिसाधकों॥ साधज
पैरुचिरांम॥ दादूदन्यूंयेकटग॥ यहआरंभयह
कांम॥ ॥ आत्मआसणरांमका॥ तहांवसैभगवा
६ न॥ दादूदन्यूंपरसपर॥ हरिआतमकाथांन॥ ॥ जहां
रांमतहांसंतजन॥ जहांसाधूतहांरांम॥ दादूदन्यूये

कहै॥ अरस बस बिश्रांम॥१७२॥ दादू हरि साधू यूं पाइये अबिगत के आराध॥ साधू संगति हरि मिलै॥ हरि संगति ये साध॥१७४॥ दादू रांम नांम सौं मिलि रहै॥ मन के छाडि बिकार॥ तौ दिल ही मांहैं देषिये॥ दोन्यूं का दीदार॥१७५॥ साध समाणां रांम मैं॥ रांम रह्या भरपूर॥ दादू येक रस॥ क्यूं करि कीजै दूरि॥१७६॥ दादू सेवग साईं का भया॥ तब सेवग का सब कोइ॥ सेवग साईं कौं मिल्या॥ तब साईं सरीषा होइ॥१७७॥ मिसरी मांहै मेलि करि मोलि बिकांनां बंस॥ यूं दादू महिंगा भया॥ पारब्रह्म मिलि हंस॥१७८॥ मीठे मांहैं राषिये॥ सो काहे न मीठा होइ॥ दादू मीठा हाथि ले॥ रस पीवै सब कोइ॥१७९॥ मीठे सौं मीठा भया॥ षारे सौं षारा॥ दादू ऐसा जीव है॥ यहु रंग हमारा॥१८०॥ मीठे मीठे करि लीये॥ मीठा मांहैं बाहि॥ दादू मीठा ह्वै रह्या॥ मीठे मांहि समाइ॥१८१॥ रांम बिनां किस कांम का॥ नहीं कौडी का जीव॥ सांईं सरीषा ह्वै गया॥ दादू परसें पीव॥१८२॥ मीरां कीया मिहर सौं॥ परदे थैं लापरद॥ राषि लीया दीदार मैं॥ दादू भूला दरद॥१८३॥ दादू नैंन बिन देषिबा॥ अंग बिन पेषिबा॥ रसन बिन बोलिबा ब्रह्म सेती॥ श्रवण बिन सुनिबा॥ चरण बिन चालिबा॥ चित बिन चितबा॥ सहज येती॥१८४॥ दादू देष्या येक मन॥ सो मन सब ही मांहि॥ तिहि मन सौं मन मांनिया॥ दूजा भावै नांहि॥१८५॥ दादू जिहि घटि दीपक रांम का॥ तिहि घटि तिमर न होइ॥ उस उजियारे जोति कै॥ सब जग देषै सोइ॥१८६॥ दादू दिल अरवाह का॥ सो अपणां ईमान॥ सोई साबति राषिये॥ जहां देषै रहिमान॥१८७॥ अलाअ पई मांन है॥ दादू के दिल मांहि॥ सोई साबति राषिये॥ दूजा कोई नांहि॥१८८॥ पांणी पवन ज्यूं पतंगा॥ काया करै

कमाइ ॥ दादू सब संसार मैं कोई गया न जाइ ॥ ॥ नूर
तेज जहं जोति है पांणी पंडू होइ ॥ द्रिष्टि मुष आवै नहीं सा
हिब के बसि सोइ ॥ ॥ काया सूषिम करि मिलै ऐसा को
ई येक ॥ दादू आतम लै मिलै ऐसे बहुत अनेक ॥ ॥ आ
डा आतम तन धरै आप रहै ता मांहि ॥ आप षेलै आप सैं
जीवनि सेती नांहि ॥ ॥ दादू अनभै पै आनंद भया पाया
निरभै नांउ निहंचल निरमल निरबांण पद ॥ अगम अगो
चर ठांम ॥ ॥ दादू अनभै बांणी अगम की ले गई संगि ल
गाइ ॥ अगह गहै अकह कहै अभेद भेद लहाइ ॥ ॥ जे कुछ
बेद कुरांन थैं अगम अगोचर बात ॥ सो अनभै साचा कहै
यहु दादू अकह कहात ॥ ॥ दादू जब घट अनभै ऊपजै
तब कीया करम का नास ॥ भै भरम भागै सबै पूरण ब्रह्म प्र
कास ॥ ॥ दादू अनभै काटै रोग कौं अनहद उपजै आ
इ ॥ सेझे का जल निरमला पीवै रुचि ल्यो लाइ ॥ ॥ दादू बा
णी ब्रह्म की अनभै घटि प्रकास ॥ राम अकेला रहि गया
सबद निरंजन पास ॥ ॥ जे कबहूं समझै आतमा तौ दि
ढ गहि राषै मूल ॥ दादू सेझा राम रस अंमृत काया कूल
॥ ॥ दादू मुझ ही मांहै मैं रहौं मैं मेरा घरबार ॥ मुझ ही मां
है मैं बसौं आप कहै करतार ॥२००॥ दादू मैं ही मेरा अरस
मैं मैं ही मेरा थांन ॥ मैं ही मेरी ठौर मैं आप कहै रहिमांन
॥२०१॥ दादू मैं ही मेरे आसिरै मैं मेरे आधार ॥ मेरे तकियै मैं
रहौं कहै सिरजनहार ॥२०२॥ दादू मैं ही मेरी जाति मैं मैं ही
मेरा अंग ॥ मैं ही मेरा जीव मैं आप कहै प्रसंग ॥२०३॥ दादू
सबै दिसा सो सारिषा ॥ सबै दिसा मुष बैन ॥ सबै दिसा श्रवणहुं
सुणै ॥ सबै दिसा कर नैंन ॥ सबै दिसा पग सीस है ॥ सबै दिसा म
न चैन ॥ सबै दिसा सनमुष रहै ॥ सबै दिसा अंग ऐन ॥२०४॥ बिन
श्रवणहुं सब कुछ सुणै ॥ बिन नैंनहुं सब देषै ॥ बिन रस

नांमुषसबकुछबोलैयहदादूअचिरजपेषे॥२०५॥सबअंग
सबहीठौरसब।सरबंगीसबसार।कहेगहेदेषेसुणै।दा
दूसबहीदार॥२०६॥कहैसबठौरगहैसबठौर।रहैसबठौ
र।जोतिपछानें।नैनसबठौरबैनसबठौर।स्रैंनसबठौर।
सोईभलजांनें।सीससबठौर।श्रवणसबठौर।चरनसब
ठौर।कोईयहुमांनैं।अंगसबठौरसंगसबठौर।सबैसब
ठौरदादूध्यांनैं॥२०७॥तेजहीकहणां।तेजहीगहणां।तेज
हीरहणांसारे।तेजहीबैनां।तेजहीनैनां।तेजहीस्रैंनहमा
रे।तेजहीमेला।तेजहीषेला।तेजअकेला।तेजहीतेजस
वारे।तेजहीलेवे।तेजहीदेवे।तेजहीषेवे।तेजहीदादूता
२ रे॥२०८॥नूरहीकाघर।नूरहीकाधर।नूरहीकाबरू मेरा
नूरहीमेला।नूरहीषेला।नूरअकेला।नूरहीमंझिबसे
रा।नूरहीकाअंग।नूरहीकासंग।नूरहीकारंगनेरा।नू
रहीरातानूरहीमाता।नूरहीषाता।दादूतेरा॥२०९॥दादू
नूरीदिलअरवाहका।तहांबसेमाबूद।तहांबंदेकीबं
दगीजहांरहेमौजूद॥२१०॥दादूनूरीदिलअरवाहका
तहांषालिकभरपूर।आलेनूरअलाहका।षिजमतिगा
रहजूर॥२११॥दादूनूरीदिलअरवाहका।तहांदेष्याक
रतार।तहांसेवगसेवाकरै।अनंतकलारविसार॥२१२॥
दादूनूरीदिलअरवाहका।तहांनिरंजनबास।तहांजन
तेराऐकपग।तेजपुंजप्रकास॥२१३॥दादूतेजकवलदिल
नूरका।तहांरांमरहिमांन।तहांकरिसेवाबंदिगी।जेतूं
चतुरसयांन॥२१४॥तहांहजूरीबंदिगी।नूरीदिलमेंहो
इ।तहांदादूसिजदाकरे।जहांनदेषेकोइ॥२१५॥दादूदेही
मांहैंदोइदिल।इकषाकीइकनूर।षाकीदिलसूझैनहीं
नूरीमंझिहजूर॥२१६॥दादूहौदहजूरीदिलहीभीतरि
गुसलहमारासार।

वाजगुजार॥२१९॥ दादू काया मसीति करि पंचजमाती मं
नहीमुलांइमांमं आपअलेखइलाही आगें तहांसिज
दाकरैंसलांम॥२२०॥ दादू सबतन तसबीकहैंकरीमं ऐस
करिलेजाप रोजायेकइरिकरिइज्या कलमांआयेआप
॥२२१॥ अठेपहरअलहकेआगे इकटगरहिबाध्यांनं
आपैंआपअरसकेऊपरि जहांरहैरहिमांन॥२२२॥ अठे
पहरइबावती जीवनमरणनिबाहि साहिबदरिसेवैखडा
दादूछाडिनजाइ॥२२३॥ अठेपहरअरसमैं ऊनाईआहे
दादूपसेतिनके अलागाल्हाय॥२२४॥ अठेपहरअर
समैं बैठाषिरीपसंनि दादूपसेतिनके जेदीदारलहंनि
॥२२५॥ अठेपहर अरसमैं जिन्हीरूहरहंनि दादू
पसेतिनके मुजूगाल्हीकंनि॥२२६॥ अठेपहरअरसमैं
लुडदाआहीन दादूपसेतिनिके असांवझिडीन्ह॥२२७॥
अठेपहरअरसके वंजीजेगाहीन दादूपसेतिनिकेकि
तेईआहीन॥२२८॥ प्रेमपियालानूरका आसिकभरिदी
या दादूदरिदीदारमें मतिवालाकीया॥२२९॥ इसक
सलोनांआसिकां दरगहथैंदीया दरदमहबतिप्रेम
रस प्याला भरिपीया दादूदिलदीदारथैं मतिवाला
कीया जहां अरसइलाहीआपथा अपणाकरिलीं
या॥२३०॥ दादू प्यालानूरदा आसिकअरसिपीवंनि अ
ठेपहरअलाहदा मुंहदिठेजीवंनि॥२३१॥ आसिक
अमलीसाधसब अलखदरीबेजाइ साहिबदरदीदा
रमें सबमिलिबैठेआइ रातेमातेप्रेमरस भरिभरिदेइ
खुदाइ मसतांनमालिककरिलीये दादूरहे ल्योलाइ
॥२३२॥ दादू जगतिनिरंजनरांमकी अबिचलअबि
नासी सदासजीवनिआतमां सहजैप्रकासी॥२३३॥ दादू
जैसारांमअपारहै तैसीजगतिअगाध इनदून्यूंकीमति

नहीं संकलप्रकारैं साध॥२३२॥दादूजैसाअविगतरा
मरै तैसीभगतिअलेष॥इनदून्यूंमितिनहीं सहंसमुषां
कहैसेष॥२३३दादूजैसानिरगुणरामहै तैसीभगतिनिर
जनजांणि॥इनदून्यूंकीमितिनहीं संतकहैंपरवांणि॥२३४
दादूजैसापूरारामहै तैसीपूरणभगतिसमान॥इनदून्यूं
कीमितिनहीं दादूनांहींआन॥२३५दादूजबलगरामहै त
बलगसेवगहोइ॥अषंडितसेवाएकरसा दादूसेवगसोइ
२३६॥दादूजैसारामहै तैसीसेवाजांणि॥पावैगातबकरैगा
॥दादूसोपरवांणि॥२३७दादूसांईसरीषासुमिरणकीजे सां
ईसरीषागावै॥सांईसरीषीसेवाकीजै तबसेवगसुषपावै॥
२३८॥दादूसेवगसेवाकरिडरै हमथैंकछूनहोइ॥तूंहैतै
सीबंदिगी करिनहींजांणैकोइ॥२३९दादूजैसादिवमांनि
नहीं॥तकनछाडौसेव॥इहिअवलंबनिजीजिये साहिब
अलषअभेव॥२४०आदिअंतिआगैरहै एकअनूपम
देव॥निराकारनिजनिरमला कोईनजांणैभेव॥अविनासी
अपरंपरा वारपारनहींछेव॥सोतूंदादूदेषिलै उरअंतरि
करिसेव॥२४१दादूभीतरिपैसिकरि घटकेजड़ेकपाट॥सां
ईकीसेवाकरै दादूअविगतघाट॥२४२घटपरचैसेवाक
रै॥प्रतषिदेषैदेव॥अविनासीदरसनकरै दादूपूरीसेव॥
२४३॥तूंजणहारेपासिहै रहिमांहैंदेव॥दादूताकौं
छाडिकरि बाहरिमांडीसेव॥२४४दादूरमितारामसौं षेलै
अंतरिमांहिं॥उलटिसमानांआपमैं सोसुषकतहूंनांहिं
२४५॥प्रगटषेलैपीवसौं अगमअगोचरठांउं॥एक
पलककादेषणां जीवणमरणकानांउं॥२४६आतममां
हैं [illegible] पूजाताकीहोइ॥सेवावंदनआरती साधकरै
सबकोइ॥
इ७ सषसादकौ॥महिमाकही

जनदेवहै माहै सेवा होइ माहिं उतारैं आरती दादू सेवग सो
इ ॥२४९॥ संत उतारैं आरती तन मन मंगलचार दादू बलि ब
लिवारणै तुम्ह परि सिरजनहार ॥२५०॥ दादू अबिचल आर
ती जुगि जुगि देव अनंत सदा अषंडत येकरस सकल उता
रैं संत ॥२५१॥ दादू माहै कीजे आरती माहै पूजा होइ माहै सत
गुर सेविये बूझै बिरला कोइ ॥२५२॥ सति राम आतमा बैसनौं
बुधि भोमि संतोष थांन मूलमंत्र मन माला गुर तिलक
सति संजम सील सुच्या ध्यान धोवती काया कलस प्रेम ज
ल मनसा मंदिर निरंजन देव आतमा पाती पुहुप प्रीति
चेतनां चंदन नवधा नांव भाव पूजा मति पात्र सहज सम
र्पन सबद घंटा आनंद आरती दया प्रसाद अन्यन
येक दसा तीरथ सतसंग दान उपदेस ब्रत सुमिरण षटगु
ण ग्यांन अजपा जाप अनसे आचार मुजा दाराम फल दर
सन अभि अंतरि सदा निरंतर सति सो जन दादू बरतते आ
तमा उपदेस अंतर गति पूजा ॥२५३॥ पीव सो षेलै प्रेमरस तौ
जीयरे जक होइ दादू पावै सेज सुष पड़दा नांही कोइ ॥२५४॥
सेवग बिसरै आपकों सेवा बिसरि न जाइ दादू पूछै राम कों
सो तत कहि समझाइ ॥२५५॥ ज्यूं रसिया रस पीवतां आपा
भूलै और यौं दादू रहि गया येकरस पीवत पीवत ठौर ॥
२५६॥ जहां सेवग तहां साहिब बैठा सेवग सेवा मांहि दादू
सांई सब करै कोई जांणै नांहि ॥२५७॥ दादू सेवग सांई बसि कि
या सौंप्या सब परिवार तब साहिब सेवा करै सेवग के दर
बार ॥२५८॥ तेज पुंज कौ बिलसनां मिलि षेलैं इक ठांउं भरि
भरि पीवै राम रस सेवा इस कानांउं ॥२५९॥ अरस परस मिलि
षेलिये तब सुष आनंद होइ तन मन मंगल चहुं दिसि भ
ये दादू देषै सोइ ॥२६०॥ मस्तक मेरे पांव धरि मंदिर मांहै
आव संईया सोवै सेज परि दादू चंपै पांव ॥२६१॥ ये चार्‍यूं प

रूपलिंगकै।सांईकी सुषसेज॥ दादू इनपरिबैसिकरि।सांई
सेतीहेत॥२६२॥ प्रेमलहरिकीपालकी।आतमबैसेआइ॥ दा
दूषेलैपीवसों।यहु सुषकह्यानजाइ॥२६२॥ दादूदेवनिरंज
नपूजिये।पातीपंचचढाइ॥ तनमनचंदनचरचिये।सेवा
सुरतिलगाइ॥२६३॥ जगतिजगतिसबकोकहै।जगतिन
जांणैकोइ॥ दादूजगतिजगवंतकी।देहनिरंतरहोइ॥२६४॥
देहीमांहैदेवहै।सबगुणथैंन्यारा॥ सकलनिरंतरभरिरह्या
दादूकाप्यारा॥२६५॥ जीवपियारेरांमकौं।पातीपंचचढाइ॥
तनमनमनसासौंपिसब।दादूबिलंबनलाइ॥२६६॥ सबदसु
रतिलैसौंनिचित।तनमनमनसामांहि॥ मतिबुधिपंचौंआ
तमा।दादूअनतनजांहि॥२६७॥ दादूतनमनपवनांपंचगा
हि।लेराषैनिजठौर॥ जहांअकेलाआपहै।दूजानांहीऔ
र॥२६८॥ दादूयहुमनसुरतिसमेटिकरि।पंचअपूठेआंणि॥
निकटिनिरंजनलागिरहु।संगिसनेहीजांणि॥२६९॥ मनचि
तमनसाआतमा।सहजसुरतितामांहि॥ दादूपंचौंपूरिले
जहांधरतीअंबरनांहि॥२७०॥ दादूभीगेप्रेमरस।मनपंचौं
कासाथ॥ मगनभयेरसमैंरहै।तबसनमुषत्रिभवननाथ॥
॥२७१॥ दादूसबदैसबदसमाइले।परआतमसौंप्रांण॥ यहु
मनमनसौंबंधिले।चितैचितसमांन॥२७२॥ दादूसहजैंस
हजसमाइले।ग्यानैबंध्याग्यांन॥ सूत्रैसूत्रसमाइले।ध्यांनै
बंध्याध्यांन॥२७३॥ दादूदिष्टैदिष्टसमाइले।सुरतैंसुरतिस
माइ॥ समझैसमझिसमाइले।लैसौंलैलैलाइ॥२७४॥ दादू
भावैभावसमाइले।भगतैभगतिसमांन॥ प्रेमैप्रेमसमाइले
प्रीतैप्रीतिरसपांन॥२७५॥ दादूसुरतैसुरतिसमाइरहु।अरु
बैनऊंसौंबैन॥ मनहीसौंमनलाइरहु।अरुबैनऊंसौंनैं
न॥२७६॥ जहांरांमतहांमनगया।मनतहांनैनांजाइ॥

जहां मैं नां त्हां आतमा दादू सहज समाइ प्राणनबे
लै प्राणसौं मननबे लै मन सबदनबे लै सबदसौं दादू राम
रतन चितनबे लै चितसौं नैननबे लै नैन नैननबे लै
नैनसौं दादू उगटै न पाकनबे लै पाकसौं सारनबे
लै सार सूबनबे लै सूबसौं दादू अगम अपार नूरनबे
लै नूरसौं तेजनबे लै तेज जोतिनबे लै जोतिसौं दादू येके
सेज पंचप्रदारथ मनरतन पवना माणिक होइ आ
तम हीरा सुरतिसौं मनसा मोती पोइ अजब अनूप मदा
रहै सांईं सरीषा सोइ दादू आतमराम गलि जहां न दूवै
कोइ दादू पचौं संगी संगि ले आये आकासा आसण
अमर अलेष का निरगुण नित बासा प्राण पवन मन म
गन कै संगि सदा निवासा पचा प्रम दयालसौं सहजै सुष
वासा दादू प्राण पवन मन मणि बसै त्रिकुटी के स
धि पंचौ इंद्री पीवसौं लै चरनौं बंधि प्राण हमारा पी
वसौं यूं लागा सहिये फूल बास घृत दूध मैं अब कासौं
कहिये पाहण लोह बिचि बासदेव ऐसैं मिलि रहिये
सूहद दीन दयालसौं संग ही सुष लहिये दादू
ऐसा बड़ा अगाध है सूषिम जैसा अंग पुहुप बास थैं पत
ला सो सदा हमारे संग दादू जब दिल मिली दयालसौं
तब अंतर कछू नांहि ज्यूं पाला पाणी कौं मिल्या त्यूं हरिज
न हरि मांहि दादू जब दिल मिली दयालसौं तब सब
पड़दा दूरि ऐसे मिलि येकै नयां ब्रूं दीपक पावक पू
रि दादू जब दिल मिली दयालसौं तब अंतर नाहीं
रेष नांना बिधि बहु भूषणां कनक कसौटी येक
दादू जब दिल मिली दयालसौं तब पलक न पड़दा को
इ डाल मूल फल बीज में सब मिलि येकै होइ

फलपाकाबेलीतजी॥ छिटकायामुषमांहि॥ सांई अपनै
करिलीया॥ सो फिरि करै नांहि॥२६१॥ दादू काया
कटोरा दूधमन॥ प्रेमप्रीतिसौं पाइ॥ हरिसाहिब इहि
विधि अंचवै॥ वेगा बारन लाइ॥२६२॥ टगाटगी जीवन म
रण॥ ब्रह्म बराबरि होइ॥ परगट षेलै पीवसौं॥ दादू बिर
ला कोइ॥२६३॥ दादू निबरा नांर है॥ ब्रह्म सरीषा होइ
लैसमाधि रस पीजियै॥ दादू जब लग होइ॥२६४॥ दादू
बेधुदषबर कुसियार बासद॥ शुदषबरपै माल॥ बे
कीमति मसतान गलतान॥ नूर प्याले ष्याल॥२६५॥ दा
दू माता प्रेमका॥ रसमैं रह्या समाइ॥ अंत न आवै जब
लगै॥ तब लग पीवता जाइ॥२६६॥ पीया तेता सुष भ
या॥ बाकी बहु बैराग॥ ऐसे जन थाकै नहीं॥ दादू उ
नमन लागा॥२६७॥ निकटि निरंजन लागि रहु॥ जब ल
ग अलष अभेव॥ दादू पीवै राम रस॥ निहिकामी नि
ज सेव॥२६८॥ राम रटणि छाडै नहीं॥ हरि लै लागा जा
इ॥ बीचै ही अटकै नहीं॥ कला कोटि दिषलाइ॥२६९॥
॥दादू हरि रस पीवतां॥ कबहुं अरुचि न होइ॥ पीव
त प्यासी नित नवा॥ पीवणहारा सोइ॥२७०॥ दादू जैसे
श्रवणा दोइ है॥ ऐसे हूंहि अपार॥ राम कथा रस पी
जियै॥ दादू बारंबार॥२७१॥ दादू जैसे नैना दोइ है॥ ऐ
से हूंहि अनंत॥ दादू चंद चकोर ज्यूं॥ रस पीवै भगवंत
॥२७२॥ ज्यूं रसनां मुष येक है॥ ऐसे हूंहि अनेक॥ तौ र
स पीवै सेस ज्यूं॥ यूं मुष मीठा येक॥२७३॥ ज्यूं घट आत
म येक है॥ ऐसे हूंहि असंष॥ भरि भरि राषै राम रस
दादू येकै अंग॥२७४॥ ज्यूं ज्यूं पीवै राम रस॥ त्यूं त्यूं ब
धै पियास॥ ऐसा कोई येक है॥

राता माता राम का मतिवाला मैमंत। दादू पी
वताकूं रहै अजुगजांदि अनंत॥ दादू निरमल जो
ति जल बरिषा बारह मास। तिहि रसि राता प्राणीयां
माता प्रेम पियास॥ रोम रोम रस पीजिये ये ती र
सना होइ। दादू प्यासा प्रेम का यूं बिन त्रिपति न होइ॥
तन गृह छाडै लाज पति जब रस माता होइ।
जब लग दादू सावधान कदे न छाडै कोइ॥ आंग
णि येक कलाल के मतिवाला रस मांहि। दादू देख्या नै
न भरि ताके दुबिधा नांहि॥ दादू अंतरि आ
तमां पीवै हरि जल नीर। सौंज सकल ले उधरै निरम
ल होइ सरीर॥ पीवत चेतन जब लगै तब लग ले
वै आइ। जब माता दादू प्रेम रस तब काहे कौं जाइ॥
दादू मीठा राम रस येक घूंट करि जाउ। पुण
ग न पीछै कौ रहै सब हिरदा मांहि समाउ॥ चिड़ी चंच भ
रि लेगई नीर निघटि नहीं जाइ। ऐसा बासण नां की
या सब दरिया मांहि समाइ॥ दादू अमली राम का
रस बिन रह्या न जाइ। पलक येक पावै नहीं तो तबही
तलफि मरि जाइ॥ दादू राता राम का पीवै प्रेम
अघाइ। मतिवाला दीदार का मांगै मुकति बलाइ॥
उज्जल भंवरा हरि कवल रस रुचि बारह मास।
पीवै निरमल बासना सो दादू निज दास॥ नैन
ऊं सौं रस पीजिये दादू सुरति सहेत। तन मन मंगल
होत है हरि सौं लागा हेत॥ पावै पिलावै राम
रस माता है ऊ सियार। दादू पीवै रस घणां औरों
कौं उपगार॥ नाना बिधि पीया राम रस केती
ति अनेक। दादू बहुत विवेक सौं आतम अविगति

रोक॥२४॥ प्रेमै का पैवै मरस॥ जे कोई पीवै॥ मति वाला माता
रहै॥ ऐ दादू जीवै॥२४॥ प्रेमै का पैवै मरस॥ पीवै दिन चितल
इ॥ मनसा बाचा करमना॥ दादू काल न षाइ॥२५॥ प्रेमै पी
वै रांमरस॥ जुगि जुगि अस्थिर होइ॥ दादू अविचल आ
तमा॥ काल न लागै कोइ॥२६॥ प्रेमै पीवै रांमरस॥ सो अवि
नासी अंग॥ काल मीच लागै नहीं॥ दादू सांई संग॥२७॥
प्रेमै पीवै रांमरस॥ सुष मैं रहै समाइ॥ मनसा बाचा करम
दादू काल न षाइ॥२८॥ प्रेमै पीवै रांमरस॥ राता सिरजन
हार॥ दादू कछू व्यापै नहीं॥ ते छूटे संसार॥२९॥ दादू अं
म्रत सो जन रांमरस॥ काहे न विलसै षाइ॥ काल विचारा
क्या करै॥ रमि रमि रांम समाइ॥३०॥ दादू जीव अज्या वि
घ काल है॥ छेली जाया सोइ॥ जब कछू बस नहीं काल
का॥ तब मीनी का मुष होइ॥३१॥ दादू मन लोभ कै व
स है॥ उनमन चढै आकास॥ पगरहै पूरे साच कै॥ रोपि रहे
[illegible]
[illegible]
सबद [illegible] सुनहां सब मारि॥ मन मीडक [illegible]
ये सबद अयनिवारि॥३४॥ दादू [illegible]
[illegible] रांम [illegible]
॥३५॥ दादू [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बदन अबसाधका प्राणिमथारगन ॥१॥ कोसाधुराषे
रामधन गुरबाइक बन बिचार गहिल्ला दादू क्यूरहै
अकट हाथिगवार ॥२॥ दादू मन हीमाहै समझि करि
मन हीमाहिं समाइ मन हीमाहै राषिये बाहरि कहि
न जाइ ॥३॥ जिनि षोवै दादू रामधन रिदै राषि जिनि
जाइ रतन जतन करि राषिये चिंतामणि चलि जाइ
॥४॥ दादू समझि समाइ रह्यो बाहरि कहि न जाइ
दादू अद्भुत देषिया तहां ना को आवै जाइ ॥५॥ क
हि कहि का दिषलाइये साई सब जानै दादू प्रगट का
कहै ऊंडा समझि सयानै ॥६॥ दादू मन हीमाहै ऊप
जै मन हीमाहिं समाइ मन हीमाहै राषिये बाहरि क
हि न जणाइ ॥७॥ लै बिचार लागा रहै दादू जरता जा
इ कबहू पेट न आफरै भावै तेता षाइ ॥८॥ सोई
सेवग सब जरै जेती उपजै आइ कहि न जणावै औ र
कौं दादू माहिं समाइ ॥९॥ सोई सेवग सब जरै
जेता रस पीया दादू गूझ गंभीर का प्रकास न कीया
॥१०॥ सोई सेवग सब जरै जे अलष लषावै
दादू राषै रामधन जेता ऊंडा पावै ॥११॥ सोई सेवग
सब जरै प्रेमरस षेला दादू सो सुष कस कहै जहां
आप अकेला ॥१२॥ सोई सेवग सब जरै जेता घटि
प्रकास दादू सेवग सब लषै कहि न जणावै दास
॥१३॥ अजर जरै रसना झरै घटमाहिं समावै दादू
सेवग सो भला जे कहि न जणावै ॥१४॥ अजर जरै
रस ना झरै घट अपणा भरि लेइ दादू सेवग सो भला
जारै जाण न देइ ॥१५॥ अजर जरै रस ना झरै जेता स
ब पीवै दादू सेवग सो मतवाला गंभीर सजीवै

अजर जरै रसनां झरै ॥ पावन थाकै नांहिं ॥ दादू सो पूगा सो
नला ॥ नरि राखै घट माहिं ॥ ११ ॥ अरस मां जोगी जुगि जुगि
जीवै [illegible] ॥ दादू जोगी गुरमुषी [illegible]
[illegible] अरस मां जोगी [illegible]
गी गुरमुषी ॥ सहजि समानां मांइ ॥ १३ ॥ अरस मां जोगी थि
र रहै ॥ झरणां घट फूटै ॥ दादू जोगी गुरमुषी ॥ काल न षू
टै ॥ १४ ॥ अरस मां जोगी जगपती ॥ अविनासी अवधूत ॥ दा
दू जोगी गुरमुषी ॥ निरंजन का पूत ॥ १५ ॥ दादू जैसे नाथ
निरंजन बाबा ॥ जैसे सु अलष अतीत ॥ जैसे सु जोगी [illegible]
जीवनि जैसे सु अगम है ॥ १६ ॥ दादू जैसे सु [illegible]
[illegible] जैसे सु [illegible] जैसे सु [illegible]
[illegible] जैसे सु [illegible] जैसे सु [illegible]
[illegible] जैसे सु [illegible] जैसे सु [illegible]
[illegible]

यवनां पांणी सब पीया धरती अरु आकास चंद सूर पावक
मिले पंचौ येक गरास चौदह तीनूं लोक सब ठूंसे सासै
सास दादू साधू सब जरे सतगुर के बेसास ॥२४॥
[illegible] ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नम
स्कारं गुरदेवतः बंदनं सर्वसाधवा प्रणामं पारंगतः
॥१॥ रतन येक बहु पारिखू सब मिलि करै विचार गूंगे ग
हिलेवा है दादू वार न पार ॥२॥ केते पारिख जौंहरी पं
डित ग्याता ध्यांन जांण्यां जाइ न जांणिये का कहि कथि
ये ग्यांन ॥३॥ केते पारिख पचि मूये कीमति कही न जाइ
दादू सब हैरान हैं गूंगे का गुड़ खाइ ॥४॥ सब ही ग्यां
नी पंडिता सुर नर रहे उरझाइ दादू गति गोव्यंद की
क्यूं ही लखी न जाइ जैसा है तैसा नांउ तुम्हारा ज्यूं है त्यूं
कहि सांई तूं आपै जांणै आपकौं तहां मेरी गमि नां
हीं ॥५॥ केते पारिख अंत न पावैं अगम अगोचर मांहीं
दादू कीमति कोइ न जांणै खीर नीर की नांई ॥६॥ जीव
ब्रह्म सेवा करै ब्रह्म बराबरि होइ दादू जांणै ब्रह्म कौं
ब्रह्म सरीषा सोइ ॥७॥ वार पार को ना लहै कीमति
लेषा नांहिं दादू येकै नूर है तेज पुंज सब मांहिं ॥८॥ ह
स्त पावन ही भी समुद्र श्रवणां नेत्र कऊ कैसा दादू
सब देषै सुणै कहै गहै ऐसा ॥१०॥ पाया पाया सब क
है केतक देहु दिखाइ कीमति किन हीं नां कही दादू
रह्या ल्यौ लाइ ॥११॥ आपणां नजरि भरि लीया उ सां
नांही जांणि आपणीं आपणीं सब कहैं दादू दिढ़ करि
राखि ॥१२॥ पावन देवै आपणां गोपि कुमन मांहिं
दादू कोई नां है। केते आवा है जांहि ॥१३॥ गूंगे का गुड़
का कहूं मन जांणत है खाइ तूं राम रसाइन पीवतां

॥ सुषक्यानजाइ॥१४॥ दादू ये कजीनकेताकहौं॥ पू
ण ब्रह्म अगाध॥ बेदकतेबा मितिनहीं॥ थकितभयेसब
साध॥१५॥ दादू मेरा येक मुष॥ कीरति अनंत अपार॥ गुण
तेघ मितिनहीं॥ रहे बिचारि बिचारि॥१६॥ सकल सिरोमणि बिचा
गावहीं॥ तहैतैसानाहि॥ दादू कोई ना लहै॥ केते आवै जा
हि॥१७॥ दादू केते कहि गये॥ अंत न आवै ओर॥ हम हूं
कहते जात हैं॥ केते कहिसे होर॥१८॥ दादू मैं का जाणौं
का कहूं॥ उस बलिये की बात॥ क्या जाणौं क्यूं ही रहै॥ मो
पै लष्या न जात॥१९॥ दादू केते चलि गये॥ थके बहुत सु
जाण॥ बातौं नांव न निकलै॥ दादू सब हैरान॥२०॥ ना क
ही दिखाना सुण्या॥ ना को आषणहार॥ ना को उत ही थै
फिर्या॥ ना उरवार न पार॥२१॥ नहीं मृतक नहीं जीवता
नहीं आवै नहीं जाइ॥ नहीं सूता नहीं जागता
नहीं भूषा नहीं षाइ॥२२॥ न तहां चुप न बोलणां॥ मैं तैं ना
हीं कोइ॥ दादू आपा पर नहीं॥ न तहां येक न दोइ॥२३॥ ये
क कहूं तौ दोइ है॥ दोइ कहूं तौ येक॥ यूं दादू हैरान है॥
ज्यूं है त्यूं ही देष॥२४॥ देषि दिवाने ह्वै गये॥ दादू षरे सया
न॥ वार पार कोना लहै॥ दादू है हैरान॥२५॥ दादू करणा
हार जे कुछ कीया॥ सोई है करि जाणि॥ जे तूं चतुर स
याना जानराइ॥ तौ याही परवाणि॥२६॥ दादू जिन मो
हनि बाजी रची॥ सो तुम पूछौ जाइ॥ अनेक येक तैं क्यूं
किये॥ साहिब कहि समझाइ॥२७॥ घट परचै सब घट लषै॥
प्राण परचै प्राण॥ ब्रह्म परचै पाइये॥ दादू है हैरान॥२८॥
तन मन दृष्टि देषि बंतकरि॥ आतम दृष्टी येक॥ ब्रह्म दृष्टि प
रचै भया॥ तब २९॥ ये ये ई आ
न न होइ॥ ये

दादू मो नमो
जनं नमसकार गुरदेवतह बंदनं अबसाधवा प्रणाम
रंगतह ।।१।। दादू लै लागी नवज़ा तिंये जेकब के छूटि
जाइ जीवतहं लागी रहै मंवां मांकिं समाइ ।।२।। दादू जे
रप्रांणी लै गता सोई गत होइ जाइ जे नर प्रांणी लै रता
सोलद्दे जे रहै समाइ ।।३।। सबतजि गुण आकार के निहि
चलमन ल्यौ लाइ आतम चेतनि प्रेम रस दादू रहै समा
इ ।।४।। तनमन पवना पंचगहि निरंजन ल्यौ लाइ जहं
आतम तहां प्रआतमा दादू सहज समाइ ।।५।।
अरथ अनूपम आप है और अनरथ भाई दादू अैसी जा
निकरि तासौं ल्यौ लाई ।।६।। ग्यान लगति मन मूलगा
हि सहज प्रेम ल्यौ लाइ दादू सब आरंभ तजि जिनिका
सिगि जाइ ।।७।। दादू जोग समाधि सुख सुरति सौं सहजै
सहजै आव मुकता द्वारा महल का इहै भगति का भा
व ।।८।। दादू सहजं सुंनि मन राखिये इन दन्युं के माहिं
लै समाधि रस पीजिये तहां काल भै नाहिं ।।९।। दादू छिन
इनको पण है क्कक रिपड द्वे प्रांरा विकट घाट औ
हरवरे मांहिं सिठर असमांन ।।१०।। मन ताजी चेतनि
है ल्यौ की करै लगाम सबद गुरु का ताजणा कोइ प
चै साध सुजांणा ।।११।। किहिं मारग के आइया किहि
गके जाइ दादू कोई नां जहै कैते करै उपाइ ।।१२।। सुन
ारग आइया सुंनहिं मारग जाइ चेत निपैडा सुर
ा दादू रज्ञ ल्यौ लाइ ।।१३।। दादू पारब्रह्म पैडा दीया
नसुति लै सार मनका मारग मांहिं घर संगी सिरजं है
र ।।१४।। रांम कहै जिस ग्यांन सौं अमृत रस पीवै दा
न छाडि सब लै लागा जीवे ।।१५।। रांम रसाइनं

वतांजी रब्रह्म के जाइ॥ दादू ग्यान मगन मसों सदा रहै लो
लाइ॥१६॥ सुरति समाइ सनमुख रहै जुगि जुगि जन
पूरा॥ दादू प्यास प्रेम का रस पीवै सूरा॥१७॥ दादू जहां
जगत गुर रहत है तहां जे सुरति समाइ॥ तौ इन दोनैन
ऊलटि करि कौतिग देषै आइ॥१८॥ ऐसे पसा के
पिरी सिर ऊलथो मंझि जिते ब्रैंगा पिरी॥ निहारींदो
हुजा॥१९॥ दादू ऊलटि अपूठा आप मैं अंतरि सोधि सु
जांण॥ सो ढिग नेरी बावरे न जि बाहरि कीबांणि॥२०॥ सुर
ति अपूठी फेरि करि आतम मांहे आंणि॥ लागि रहै गुर
देव सौं दादू सोई स्यांन॥२१॥ जहां आतम तहां राम है
सकल रह्या भरपूर॥ अंतरगति ल्यौ लाइ रहु दादू सेवग
सूर॥२२॥ दादू अंतरगति ल्यौ लाइ रहु सदा सुरति सौं
गाइ॥ यहु मन नाचै मगन ह्वै भावै ताल बजाइ॥२३॥ दा
दू गावै सुरति सौं बांणी बाजै ताल॥ यहु मन नाचै प्रेम सौं
आगैं दीनदयाल॥२४॥ दादू सब बातन की एक है दुनी
यां सौं दिल दूरि॥ सांई सेती संग करि सहज सुरति लै पू
रि॥२५॥ दादू एक सुरति सौं सब रहै पंचौं उनमनि ला
गि॥ यहु अनभै उपदेस यहु यहु परम जोग बैराग॥२६
॥ दादू सहजैं सुरति समाइ लै पारब्रह्म के अंग॥ अरस
परस मिलि एक ह्वै सनमुख रहिबा संग॥२७॥ सुरति स
माइ सनमुख रहै जहां तहां लै लीन॥ सहज रूप [illegible] सु
मिरण करि निहकरमी दादू दीन॥२८॥ सुरति सदा स्या
बति रहै तिनके मोटे भाग॥ दादू पीवै राम रस रहै नि
रंजन लागि॥२९॥ दादू सेवा सुरति सौं प्रेम प्रीति सौं ला
इ॥ जहां अविनासी देव है तहां सुरति बिना को जाइ
॥३०॥ दादू ज्यूं वै बरत गगन थैं रि—

ता ॥ ३१॥ कहां थां मन लागी सुरति अंग थें छूटै सो कतनी
वेर मन ॥ ३२॥ सहज जोग सुष मैं रहै दादू निरगुण जाणि
गंगा उलटी फेरि करि जमनां मांहै आणि ॥ ३३॥ प्रथ्यातम
सों आतमा ज्यूं जल जलहि समान तन मन पांणी लूंण
ज्यूं पावै पद निरबाण ॥ ३४॥ मन ही सों मन सेविये ज्यूं ज
ल जलहि समाइ आतम चेतनि प्रेम रस दादू रहु ल्यो
लाइ ॥ ३५॥ छाडै सुरति सरीर कों तेज पुंज में आइ दा
दू ऐसे मिलि रहै ज्यूं जल जलहि समाइ ॥ ३६॥ यूं मन तजै
सरीर कों ज्यूं जागत सो जाइ दादू बिसरै देषतां सहज
सदा ल्यौ लाइ ॥ ३७॥ जिहिं आसणि पहली प्राण थे
तिहिं आसणि ल्यौ लाइ जे कुछ था सोई भया कछू न
व्यापै आइ ॥ ३८॥ तन मन अपणा हाथि करि ताही सौं
ल्यौ लाइ दादू निरगुण राम सौं ज्यूं जल जलहि समा
इ ॥ ३९॥ येक मना लागा रहै अंति मिलैगा सोइ दादू ज
के मनि बसै ताकौं दरसन होइ ॥ ४०॥ दादू निबहै त्यूं च
लै धीरै धीरज मांहि परसेगा पीव येक दिन दादू थाकै
नांहि ॥ ४१॥ जब मन मृतक ह्वै रहै इन्द्री बल भागा का
या के सब गुण तजै निरंजन लागा ॥ आदि अंति मधि
येक रस टूटै नहीं धागा दादू येकै रहि गया तब जा
णी जागा ॥ ४२॥ जब लग सेवग तन धरै तब लग दूसर आ
हिं ॥ येक मेक ह्वै मिलि रहै तौ रस पावै थें जाइ येइ नु
ऐसो कहै कीजै कौण उपाइ ना मैं येक न दूसरा
॥ साषी ७१॥
दादू रहु ल्यो लाइ ॥ ४३॥
॥ अथ पतिव्रता को अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नम
सकार गुरदेवतः बंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारंग
तः ॥ १॥ येक तुम्हारे आसि दादू इहि बेसास सी

म॰ रोसानोरहै॥नहीकरणीकीआस॥२॥रहणीराज
सऊयजैकरणीआपाहोइ॥सबथैदादूनिरमला॥सु
मिरणलागासोइ॥३॥दादूमनअपणांलैलीनकरि
करणीसबजंजाल॥दादूसहजैनिरमला॥आपामेटि
सभालि॥७॥दादूसिधिहमारेसांईयां॥करामातिकर
तार॥रिधिहमारेरांमहै॥आगमअलषअपार॥८॥गोब्य
दगुसांई॥ तुम्हे॰ अंचागुरू॥तुम्हे॰अम॰चाग्यान॥तुम्हे॰ ६
अम॰चादेव॥तुम्हे॰अम॰चाध्यांन॥९॥तुम्हे॰अम॰चीपूजा
तुम्हे॰ अंचीपाती॥तुम्हे॰अंचातीरथ॥तुम्हे॰अंचाजाती मं मं
॥१०॥तुम्हे॰अमं॰चानाद॥तुम्हे॰अमं॰चाभेद॥तुम्हे॰अ
मं॰चापुराण॥तुम्हे॰अमं॰चावेद॥११॥तुम्हे॰अमं॰चीजु
गति॥तुम्हे॰अमं॰चाजोग॥तुम्हे॰ अंचाबैराग॥-तुम्हे॰ मं
अमं॰चाभोग॥१२॥तुम्हे॰अमं॰चीजीवनि॥तुम्हे॰अमं॰
चाजप॥तुम्हे॰अमं॰चासाधन॥तुम्हे॰अमं॰चातप॥१३॥तु
म्हे॰अमं॰चासील॥तुम्हे॰अमं॰चासंतोष॥तुम्हे॰अमं॰
चीमुकति॥तुम्हे॰अमं॰चामोष॥१४॥तुम्हे॰अमं॰सिव च
तुम्हे॰अमं॰चीसकति॥तुम्हे॰अमं॰चाआगम॥तुम्हे॰अ
मं॰चीउकति॥१५॥निमति निरअविगत॥निरअपरपार
निराकार॥तुम्हे॰ अंचानांम॥दादूचाविश्राम॥दे॰ऊ दे॰ऊ
अविलंबेनराम॥१६॥दादूरामकहूंतेजोडिवा॥रांमक
हूंतेसाषि॥रांमकहूंतेगाइबा॥रामकहूंतेराषि॥१७
॥दादू … कुलहमारेकेसवा॥सगातसिरजनहार॥जा
तिहमारीजगतगुर॥परमेसुरपरिवार॥१८॥दादूयेक
सगासंसारमें॥जिनिहमसिरजेसोइ॥मनसावाचा
क्रमना॥औरनदूजाकोइ॥१९॥सा
मंरतांसनमुषहोइ॥दादूजीव

साहिब मिल्या तें सब मिले। तेरे टैले टारिः
निकोइ ॥ ॥ साहिब र
साहिब रह्या तो सब रहे नहीं तो नांही कोइ ॥ ॥ साहिब राखिये
रहतां सब रहे साहिब जातां जाइ दादू साहिब राखिये
इजा सहज सुभाइ ॥ ॥ सब सुष मेरे साईयां मंगल
अति आनंद दादू सजन सब मिले जब भेटे परमानंद
दादू रीझे राम पर अनत न रीझे मन मीठा भावे
ऐकरस दादू सोई जन ॥ ॥ दादू मेरे हिरदे हरि बसे
इजा नांही और कहो कहां धौं राखिये नहीं आन को
ठौर ॥ ॥ दादू नारी पुरुष की जाने नांव बसै मन नांही माहि न राइ
हिरदा माहैं हरि बसै आतम येक समाइ ॥ ॥ ध्रमकथ
उस येक की इजा नांही आंन दादू तन मन मेरा पीव सों येक
सदा सुरति रस पांन ॥ २९ ॥ दादू तन मन मेरा पीव सों एक
मे सुख सोइ गहिला लोक न जांनही पचि पचि आप
ठौर ॥ ॥ दादू येक हरि बसै इजा मेल्या हरि इजा
बत जाइ गायेकरह्या तरपूर ॥ ॥ नि हचल का नि हचल
लरहै चंचल का चलि जाइ दादू चंचल काहि
सब नि हचल सो ल्यौ लाइ ॥ ॥ मन चित मनसा दा
अन कैसे साईं इस निरलेप नि हकामी निरबैसदा दा
जीव निसोइ ॥ ॥ जहां ना वैतहां ना नि चाहिये सा
राम का राज निरबिकार तन मन सदा दादू सीके का
॥ ॥ जिसका था तिस सब सोईं बस ना रि दा
हरि बसो लष सिष साज सहारि दादू पंच
पीव करि सो लहै सब ही वांउ सुंदरि ऊजसे गाइ
लैलै पीव का नांउ ॥ ॥ यह जग तसु दरि ले रहे तें
सुहागनि होइ दादू भावै पीव कौं तासमि औ
॥ ॥ साहिब जी का नांव तां कोई करै कलि

मनसा बाचा क्रमनां ॥ दादू घटि घटि नांहिं ॥ ३६ ॥ दादू आप
मांहैं बैसे क्यों ॥ आप्पा आवै जाइ ॥ आप्पा मांहैं लेवै देवै ॥
आप्पा पर हैं बास ॥ आप नांहैं बाहरि भीतरि ॥ आप्पा
रहै समाइ ॥ आपा मांहैं तन मन राषै ॥ दादू रहै ल्यो लाइ ॥
॥ ३७ ॥ पतिब्रता ग्रह आपणे ॥ करै षसम की सेव ॥ ज्यूं रा
षै त्यूं ही रहै ॥ आग्याकारी टेव ॥ ३८ ॥ दादू नीच ऊंच कुल
सुंदरी सेवा सारी होइ ॥ सोई सुहागनि कीजिये रूप न पी
जै धोइ ॥ ३९ ॥ दादू जब तन मन सौंप्या रांम कौं ॥ ता सनि का व्यि
भचार ॥ सहज सील संतोष सत ॥ प्रेम भगति लै सार ॥ ४० ॥ पर पु
रिषा सब परहरै ॥ सुंदरि देषै जागि ॥ अपणां पीव पिछांणि
करि ॥ दादू रहिये लागि ॥ ४१ ॥ आन पुरिष हौं बहनडी
परम पुरिष भरतार ॥ हौं अबला समझौं नहीं ॥ तूं जांणै
करतार ॥ ४२ ॥ जिसका तिसकौं दीजिये ॥ सांई सनमुष आ
इ ॥ दादू नष सिष सौंपि सब ॥ जिनि यहु बंट्या जाइ ॥ ४३ ॥
सारा दिल सांई सौं राषै ॥ दादू सोई सयांन ॥ जे दिल बंटै आ
पणां ॥ सो सब मूढ अयांन ॥ ४४ ॥ दादू सारा सौं दिल तोरि क
रि ॥ सांई सौं जोरै ॥ सांई सेती जोरि करि ॥ काहे कौं तोरै ॥ ४५ ॥
साहिब देवै राषणां ॥ सेवग दिल चोरै ॥ दादू सब धन साह
का ॥ भूला मन थोरै ॥ ४६ ॥ दादू मनसा बाचा क्रमनां ॥ अंत
रि आवै येक ॥ ता कौं प्रतषि रांम जी ॥ बातैं और अनेक ॥
॥ ४७ ॥ दादू मनसा बाचा क्रमनां ॥ हिरदै हरि का भाव ॥ अल
ष पुरिष आगै षडा ॥ ता कै त्रिभवन राव ॥ ४८ ॥ दादू मनसा
बाचा क्रमनां ॥ हरि जी सौं हित होइ ॥ साहिब सनमुष सं
गि है ॥ आदि निरंजन सोइ ॥ ४९ ॥ दादू मनसा बाचा क्रम
नां ॥ आतुर कारणि [illegible] रै ॥ [illegible] पू
रै कांम ॥ ५० ॥ नारी पु [illegible]

सतिकरिजांणि दादू इजा क्याकरै जिनि येकलीया
चाणि ॥८१॥ दादू कोइ बाछै मुकतिफल कोइ अमर
पुरि बास कोई बाछै परमगति दादू राममिलनकी
प्यास ॥८२॥ तुम हरि हिरदै हेत सौं प्रगट करु मान
ट दादू देषै नैन भरि तब केता होइ आनंद ॥८३॥ प्रेम
पियाला राम रस हमकौं भावै येह रिधि सिधि मांगै मुक
तिफल चाहै तिनकौं देइ ॥८४॥ कोटि बरस क्या जीव
णा अमर भये क्या होइ प्रेम भगति रस राम बिन कां
दादू जीवन सोइ ॥८५॥ कछू न कीजै कामना अगु
ण सगुण होइ पलटि जीव थै ब्रह्म गति सब मिलि
मानै मोहि ॥८६॥ घट अजरावर ह्वै रहै बंधन नांही कोइ
मुकता चौरासी मिटै दादू संसै सोइ ॥८७॥ निकटि नि
रंजन लागि रहु जब लग अलष अभेव दादू पीवै राम
रस निहकामी निजसेव ॥८८॥ दादू सालोक संग
ति रहै सामीप सनमुख सोइ सारूप सारीषा भया
साजुज्य येकै होइ ॥८९॥ राम रसिक बाछै नहीं परम प
दारथ चार अठसिधि नौ निधि का करै राता सिर
जनहार ॥९०॥ स्वारथि सेवा कीजिये तार्थें भला न हो
इ दादू ऊसर बाहि करि कोठा भरै न कोइ ॥९१॥ सुत
बित मांगहि बावरे साहिब सा निधि मेल्हि दादू वै नि
रफल गये जैसे नागर बेलि ॥९२॥ फल कारणि सेवा
करै जाचै त्रिभुवन राव दादू सो सेवग नहीं षेलै अ
पणा डाव ॥९३॥ सहकामी सेवा करै मांगै मुगध गंवा
र दादू ऐसे बहुत है फल के भूचे गाहार
॥९४॥ तन मन ले लागा रहै राता सिरजनहार दादू
कुछ मांगै नहीं ते बिरला संसार ॥९५॥ राम नाम गुर

साचराम बिना भरिम रि उभम रै न मिल
रै।। सांचाराम न जानै रे मन भूल ग मषा नैरे
रे।। कू ठे देवा कू ठी सेवा।। कू ठा करे पसारा।।
कू जा कू ठ पाती।। कू ठा कू जणहारा।। कू ठा
कर रे षोटी।। कू ठा भोग लगावे।। कू ठा
पड़दा देवे।। कू ठा थाल बजावे।। कू ठे वक
कू ठे सुरता।। कू ठी कथा सुनावे।। कू ठा क
जुग सब को मानै।। कू ठा भरम दिढावे।। था
र जंगम जल थल महि यल।। घटि घटि तेज
मानो दादू आन भरम हमारा।। आदि पुरि
पहिचांनो।। ३०।। मैं पषि एक अपार के।। म
और न भावे।। सोई पंथ पावैगी बूका।। जिस
पंथ भावे।। टिक कोई पषि हिंदू तुरक के।। को
हूराल।। कोई पषि सोफी सेवड़े।। कोई सन्या
माता।। कोई पषि जोगी जंगमा।। कोई सकति
भावे।। कोई पषि कमड़े कापड़ी।। कोई बऊ
नावे।। कोई पषि काहू के चले।। मैं और न
नो।। दादू जिनि जग सिरजिया।। ताही कूं मा
।।३१।। आज हमारे राम जी साध घरि आ
गम चार चकुं दिसि भए आनंद बधा
चोक पुरावूं मोतिया।। घर से चंदन
पंच पचार पषाल करि।। पडु मा लच
तन मन धन करूं वारणों।। परद छिणा
।।सो सह मारा जी चले।। मो भाव रि कीजे
बहुरि कोरो पी तिसी प्रेम रस पीजे।। कौ
चेंदन आरती।। पड़ नाहा।

जी लियौ दासो जो छ्डि ॥२॥ आपा व सबइ छाड़ि करि राम
न रस लागि ॥ दादू औसर जात है जागि सकै तौ जागि
॥३॥ आवी रतन जतन नहीं नर नारायण हैगा। दादू ब जुरि
पाईये जनम अमोलिक येह ॥४॥ दादू दरिया संसार है
सुख का सागर राम। सुख सागर चलि जाईये ॥ दादू तजि
बेकाम ॥५॥ एक्का ये की राम सौ के साधू का संग ॥ दादू
अनत न जाईये और काल का अंग ॥६॥ दादू तनम
न के गुण ग्राहि सब जब हो इनि नारायण तब आपने
नैन ऊ देषिये अगट पावण्यारा ॥७॥ दादू झाती पाये पसु
पिरी अंदरि सो आहे होणी पाणी बिच मैं मिहरबान
है ॥८॥ दादू झाती पाये पसु पिरी हाणे लाइ मबेर साथ
स सोई हतियो पोइ पसंदो केर ॥९॥ ॥१०॥
दादू नमो नमो निरंजनं नमस्का
र गुरदेवतह वंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारंगतह
॥१॥ दादू यह मन बरजी बावरे घट मैं राखी घेरि म
न हसी मातावले अ उस दे दे फेरि ॥२॥ हसती छूटा म
न फिरै क्यू ही बध्या न जाइ बहुत महावत पचि गये
दादू कछु न बसाइ ॥३॥ जहां थें मन उठि चलै फेरि त
हां ही राषि तहां दादू लैलीन करि साध कहैं गुर साषि
॥४॥ थोरै थोरै हटकीये रहैगा ल्यौ लाइ जब लागा
उन मन सौं तब मन कहीं न जाइ ॥५॥ आपा दे दे राम
कौं दादू राखै मन साषी दे स्थिर करै सोई साधु ज
न ॥६॥ सोई सूर जे मन गहै निमष न चलने देइ जब ही
दादू पग भरै तब ही पाकड़ि लेइ ॥७॥ दादू जेती लहरि
रिस मंद की तेते मन हि मनोरथ मारि बैसै सब संतोष
करि गहि आतम येक बिचारि ॥८॥ दादू जे सुष मां

ट ॥ अब मन अबिगत नाथसौं उलटि दिषाइ बाट ॥२२॥ दादू
मन सुध साबति आपणा निहचल होवै हाथि तो इहां
हीं आनंद है सदा निरंजन साथि ॥२३॥ जब मन लागै राम
सौं तब अनत काहे कौं जाइ दादू पांणी लूंण ज्यूं ऐसै र
है समाइ ॥२४॥ ज्यूं जल पैसै दूध मैं ज्यूं पांणी मैं लूंण ऐसै
आतम राम सौं मन हठ साधे कौंण ॥२५॥ मन का मसतक
मूंडिए काम क्रोध के केस दादू बिषै बिकार सब सतगुर के
उपदेस ॥२६॥ सो कुछ हम थैं नां भया जा परि रीझै राम दादू
इस संसार मैं हम आये बेकाम ॥२७॥ क्या मुंह लेइ हंसि बो
लिए दादू दीजै रोइ जनम अमोलिक आपणा चलै अका
रथ षोइ ॥२८॥ जा कारण जग जीजिए सो पद हिरदै नां
हिं दादू हरि की भगति बिन ध्रिग जीवन कलि मांहिं ॥२९॥
कीया मन का भावता मेटी आग्याकार क्या ले मुष दिष
लाइए दादू उस भरतार ॥३०॥ इंद्री स्वारथ सब कीया
मन मांगै सो दीन्ह जा कारणि जग सिरजि सो दादू कछू न
कीन्ह ॥३१॥ कीया था इस काम कौं सेवा कारणि सा
ज दादू भूला बंदिगी सऱ्या न एकौ काज ॥३२॥ दादू बि
षै बिकार सौं जब लग मन राता तब लग चीत न आव
ई त्रिभुवनपति दाता ॥३३॥ दादू का जांणौं कब होइ
गा हरि सुमिरण इकतार का जांणौं कब छाडिहै यहु
मन बिषै बिकार ॥३४॥ बादि हि जनम गवाइया की
या बहुत बिकार यहु मन थिर नां भया जहं दादू नि
ज सार ॥३५॥ दादू जिनि बिष पीवै बावरे दिन दिन बा
ढै रोग देषत हीं मरि जाइगा तजि बिषिया रस भोग ॥३६
॥ आपा पर सब दूरि करि राम नाम रस लागि दादू औ
सर जात है जागि सकै तो जागि ॥३७॥ दादू सब कुछ

बिलसतां षातां पीतां होइ दादू मनका भावतां कहि स
मझावै कोइ॥४८॥ दादू मनका भावतां मेरी कहै बलाइ
साच राम का भावतां दादू कहै सुणिआइ ॥४९॥
सब मन का भावतां जे ऊँछ कीजै आन मन गहि राषि
ऐक सौं दादू साध सुजांण॥५०॥ जे कुछ भावै राम कौं सो
तत कहि समझाइ॥ दादू मन का भावतां सबको कहैब
णाइ॥५१॥ पैंडै पग चालै नहीं॥ होइ रह्या गलियार॥ रा
मरथ निवहै नहीं॥ षेबे कौं हुसियार॥५२॥ दादू काये
मोषे आन कौं आपन बहिया जात॥ औरों कुं अमृत
कहै आपण ही विष षात॥५३॥ दादू पंचौं ये परमोधि ले
इनही कौं उपदेस॥ यहु मन अपणां हाथि करि तौ चे
ला सब देस॥५४॥ दादू पंचौं का मुष मूल है मुष का मन
वां होइ यहु मन राषै जतन करि साध कहावै सोइ
॥५५॥ दादू जब लग मन के दोइ गुण तब लग निप
ना नांहि॥ दोइ गुण मन के मिटि गये तब निपनां मिलि
मांहि॥५६॥ काचा पाका जब लगैं तब लग अंतर हो
इ॥ काचा पाका दोइ रिकरि तब दादू ऐकै सोइ॥५७॥ सह
ज रूप मन का भया तब द्वै द्वै मिटी तरंग॥ ताता सीला
सम भया तब दादू ऐकै अंग॥५८॥ बहु रूपी मन ज
ब लगैं तब लग माया रंग॥ जब मन लागा राम सौं तब
दादू ऐकै अंग॥५९॥ हीरा मन परि राषिये तब दूजा च
है न रंग॥ दादू यूं मन थिर भया अबिनासी के संग॥६०
सुष दुष सब कांई पडै तब लग काचा मन॥ दादू कुछ
ब्यापै नहीं जब मन भया रतंन॥६१॥ पाका मडो लैन न
हीं॥ नि हचल रहै समाइ॥ काचा मन दहदि दे
वल चहु दिसि जाइ॥६२॥ सीप७ .

नखारानीर मांहैमोती नीपजै दादूबंदसरीर दादू
मनपंगुलभया सबगुणगयेबिलाइ हैकायानौजोब
नी मनबूढाकैजाइ दादूछबरुपनेकरली पे कं
मनइछानिजठौर नाइनिरंजनलागिरहु प्राणीपर २
हिऔर मनइछाओधाकीया घटमेंलहरिउठ ।
इ सांईसतगुरछाडिकरि देषिदिवांनांजाइ दा
दूकहैरामबिनां मनरंकहै जाचैतीनूंलोक जबम
नलागारामसौं तबभागेदालिददोष इहीका
आधीनमन जीवजंतसबजाचै तिरोतिरोकेआगै
दादूतिहूंलोकफिरिनाचै इहीअपरोबसि
करै सोकाहेजाचणजाइ दादूअस्थिरआतमा
आसणिबैठेआइ मनमनसाइन्द्रीमिलेतबजा
चकीयासांइ पंचौंकाफेर्याफिरै मायानचावैरा
नकटीआगैनकटानाचै नकटीतालबजा
वै नकटीआगैनकटानाचै नकटीनकटाभावै
पंचौंइंद्रीभूतहै मनवांषेतरपाल मनसादे
वीपूजिये दादूतीनूंकाल जीवतलूटैजगत
सब मृतकलूटैदेव दादूकहांउकारियेकरिकरि
मूयेसेव अगनिधोमज्यूं नीकलै देषत
सबैबिलाइ त्यूंमनबिछुट्यारामसौं दहदिसिबी
षरिजाइ घरछाडेजबकामाया मनबरिनआ
या दादूअगनिकेधूमज्यूं ऊरषोजनपाया स
बकाकुकेहोतहै तनमनपसरैजाइ ऐसाकोईसे
कहै उलटामांहिसमाइ क्यूंकरिउलटा
आणिये पसरिगयामनफेरि दादूडोरीसहज
की यूंआणौघरिघेरि दादूसाधसबदसौंमिलै

रहै मन राषा बल माहि। साध सबद बिन क्यू रहै। तबही
बीषरि जाइ॥६९॥ येक निरंजन नाउ सौं। साध संगति मा
हि। दादू मन बिलंबाइये। इजाकोई नां ढ़ि॥ ह्मवै चल
वैकू दिसि जात है। गुरु बाइक सौं बंधि। दादू संगति साध
की। पारब्रह्म सौं संधि॥७०॥ तन मै मन आवै नही। निस
दिन बाहरि जाइ। दादू मेरा जीव दुषी। रहै नही ल्यौ ला
इ॥७१॥ तन मै मन आवै नही। चंचल चहू दिसि जा। दा
दू मेरा जीव दुषी। रहै न राम समाइ॥७२॥ दादू कोटि जत
न करि करि मूये। यहु मन दह दिसि जाइ। राम नांव रो
क्या रहै। नाही आन उपाइ॥७३॥ यहु मन बहु बक
वाद सौं। बाइ भूत है जाइ। दादू बहुत न बोलिये। स
हजैं रहै समाइ॥७७॥ भूला भूंदू फेरि मन। मूरिष मुगध
गंवार। सुमरि सनेही आपणा। आतम का आधार
॥७८॥ मन मांणिक मूरष राषि रे। जन जन हाथ न देहु।
दादू पारिष जौहरी। राम साध दोइ लेहु॥७९॥ दादू मा
स्या बिन मानैं नही। यहु मन हरि की आन। ग्यान षडग
गुरदेव का। ता संगि सदा सुजाण॥८०॥ मन मृग मा
रै सदा। ताका मीठा मांस। दादू षाइबे कौ हिल्या। ता थैं
आन उदास॥८१॥ कह्या हमारा मांनि मन। पापी प
रिहरि काम। बिषिया का संग छाडि दे। दादू कहि रे राम
॥८२॥ केता कहि समझाइये। मानै नही निलज। मूरि
ष मन समझै नही। कीये काज अकाज॥८३॥ मन ही म
जन कीजिये। दादू दरपन देह। मांहैं मूरति देषिये। इ
हि औसरि करि लेहु॥८४॥ तब ही कारा होत है। हरि
बिन चितवत आन। कां कहिये समझै नही। दादू सिष
वैत ग्यान॥८५॥ दादू पांणी धोवैं बावरे। मन का मैल न

दादू मन निरमल तब होइगा जब हरि के गुण गाइ ॥८६॥
दादू ध्यान धरे का होत है जे मन नहीं निरमल होइ । तौ ब
ग सब ही उधरै जे बिधि सीझै कोइ ॥८७॥ दादू ध्यान धरे
का होत है जे मन का मैल न जाइ । बग मीनां का ध्यान धरि
पसू बिचारे षाइ ॥८८॥ दादू काले थैं धौला भया दिल द
रिया मैं धोइ । मालिक सेती मिलि रह्या सहजैं निरमल
होइ ॥८९॥ दादू जिसका दरपन ऊजला सो दरसन देषे
माहि । जिसकी मैली आरसी सो मुष देषै नाहि ॥९०॥ दा
दू निरमल सुध मन हरि रंग राता होइ । दादू कंचन क
रि लीया काच कहै नहीं कोइ ॥९१॥ यहु मन अपना
थिर नहीं करि नहीं जाणै कोइ । दादू निरमल देव की
सेवा क्यूं करि होइ ॥९२॥ दादू यहु मन तीन्यूं लोक मैं
अरस परस सब होइ । देही की रष्या करै हम जिनि नाटै को
इ ॥९३॥ दादू देह जतन करि राषिये मन राष्या नहीं जा
इ । उत्तिम मधिम बासना भला बुरा सब षाइ ॥९४॥ दा
दू हाडी हुषतसा चामर या लपटाइ । मांहै जिन्या म
स की ताही सेती षाइ । नकै उधारै नरक कै निसदि
न बहै बलाइ । सुचि करि लोकी जिये राम सुमरि
गुण गाइ ॥९५॥ दोंनौं तन मन मिलि रह्या इंद्री स
कल बिकार । दादू उसा सु इघरि कहा रहै आचार
॥९६॥ दादू जीवत लोक मैं मरता कल पबिहाइ ॥ दा
दू यहु मन मसकरा जिनि को इ पतियाइ ॥९७॥ दादू
मूवा मन हम जीवत देष्या जैसे मडहट भूत । मू
वा पीछै उठि उठि लागै ऐसा मेरा पूत ॥९८॥ निहु
चै कर ताजुगा गाह चंचल जब ही होइ । दादू पसू
पलक मैं यहु मन मारै मोहि ॥९९॥ दादू यहु

भी डका॥ जलमौं जीवे सोइ॥ दादू यूं मन निंद्ये॥ जि निज पती जे कोइ॥ १०० ॥ मांहै सूषिम कैरहे॥ बाहरि प सारे त्रंग॥ पवन लागि पवदा भया॥ काला नाग भवंग॥ १०१ ॥ मनभवंग यूंषिषभस्या॥ नृबिष क्यूं हीन होइ॥ दादू मिल्या गुरगारड़ी॥ निरबिष कीया सोइ॥ १०२ ॥ सु पिनां तब लग देषिये॥ जब लग चंचल होइ॥ जब नि हचल लागा राम सौं॥ तब सुपिनां नाहीं कोइ॥ १०३ ॥ जा गत जहां जहां मन रहै॥ तत तहां तहां जाइ॥ दादू जे जे मनि बसे॥ सोई सोई देषै आइ॥ १०४ ॥ दादू जे जे चित बसे॥ सोई सोई आवे चीति॥ बाहरि भीतरि देषिये॥ जा ही सेती प्रीति॥ १०५ ॥ साकति हरि या देषिये॥ मन चि त ध्यान लगाइ॥ दादू केते जुग गए॥ तो भी हस्या न ज इ॥ १०६ ॥ जिसकी सुरति जहां रहै॥ तिसका तहां बिश्रा म॥ सा देषै माया मोह मै॥ सा देषै आतमराम॥ १०७ ॥ जहां मन राषै जीवतां॥ मरतां तिस घरि जाइ॥ दादू बासा प्राण का॥ जहां पहली रह्या समाइ॥ १०८ ॥ जहां सुर ति तहां जीव है॥ जहां नाहीं तहां नांहि॥ गुण निरगु ण जहां राषिये॥ दादू घर बन मांहि॥ १०९ ॥ जहां सुर ति तहां जीव है॥ आदि अंति अस थान॥ माया ब्र ह्म जहां राषिये॥ दादू तहां बिश्राम॥ ११० ॥ जहां सुर ति तहां जीव है॥ जीवण मरण जिस ठौर॥ बिष अमृ त जहां राषिये॥ दादू नाहीं और॥ १११ ॥ जहां सुर ति तहां जीव है॥ जहां जाणे तहां जाइ॥ गम अगम जहां राषिये॥ दादू तहां समाइ॥ ११२ ॥ मनमनसा का सा वहै॥ अति फले गा सोइ॥ ... क

... वे ... तब आसे आस ... होइ ...

... कि ... आपकते ...

नो न छिपई फिरि आइ ॥८॥ पाका काचा ह्वै गया
जीत्या हारै दाव । अंति काल गाफिल भया दादू फिस
लै पाव ॥९॥ एक मन पंछुल पंच दिन सब को झूका
होइ । दादू उतरि आकास थैं धरती आया सोइ
॥१०॥ ऐसा कोई एक मन मरै सु जीवै नांहि । दादू
ऐसे बहुत हैं फिरि आवैं कलि मांहि ॥११॥ देषा दे
षी सब चले पारि न पहुंच्या जाइ । दादू आसण पहु
ले के फिरि फिरि बैठे आइ ॥१२॥ बरतणि एकै भां
ति सब दादू संत असंत । भिंन भाव अंतर घणां म
नसा तहां गुनंत ॥१३॥ दादू एक मन मारै मोमिना
एक मन मारै मीर । एक मन मारै साधिका एक मन
मारै पीर ॥१४॥ दादू मन मारे मुनियर मुये सुर नर कि
ये सिंघार । ब्रह्मा बिसन महेस सब राषे सिरजन
हार ॥१५॥ मन बाहै मुनियर बडे ब्रह्मा बिसन महेस
सिध साधिक जोगी जती दादू देस बदेस ॥१६॥ पूजा
मानि बडाई आदर मांगै मन । राम गहै सब परिहरै
सोई साध जन ॥१७॥ दादू जहां जहां आदर पाई ए
तहां तहां जीव जाइ । बिन आदर दीजै राम रस छा
डि हलाहल षाइ ॥१८॥ करणी किरका को नहीं
कथणी अनंत अपार । दादू यूं क्यूं पाइये रे मन मूढ
गंवार ॥१९॥ दादू मन मृतक भया इंद्री अपणो हा
थ । तौ भी कदे न कीजिये कनक कामणी साथ ॥२
०॥ दादू अब मन निरसैं घरि न दीन्हें मैं बेगा आ
निरसै सगी बैसा [illegible] त्या तकाइ रहै जाइ ॥२१॥ जब
मन मृतक ह्वै रहै इंद्री बल भागा । काया के सब गु
ण तजे निरंजन लागा । आदि अंति मधि एक रस [illegible]
[illegible] जो कोई जाहि माया [illegible] ताणी जाइ

१२८॥ दादू मन के सीस मुष हस्त पाव है जीव॥ श्र
वण नेत्र रसना रटै दादू पाया पीव॥१२०॥ दादू जहां
के नवाये सब नवै सोई सिर करि जांणि॥ जहां के बुला
ये बोलिये सोई मुष श्रवांणि॥ जहां के सुनाये सब
सुणै सोई श्रवण सयांण॥ जहां के देषे देषिये सोई
नैन सुजांन॥१२१॥ जे मुष माहैं बोलतां श्रवणहुं सु
णतां आइ॥ नैनहुं माहैं देषतां सो अंतरि उरझाइ॥
१२१॥ दादू मन ही सौं मल ऊपजै मन ही सौं मल धोइ॥
सीष चली गुर साध की तौ तूं निरमल होइ॥१२२॥ दा
दू मन ही माया ऊपजै मन ही माया जाइ॥ मन ही रा
ता राम सौं मन ही रह्या समाइ॥१२३॥ मन ही मरणा
ऊपजै मन ही मरणा षाइ॥ मन अबिनासी है रह्या
साहिब सौं ल्यौ लाइ॥१२४॥ मन ही सनमुष नूर है॥
मन ही सनमुष तेज॥ मन ही सनमुष जोति है॥ मन ही
सनमुष सेज॥१२५॥ मन ही सौं मन थिर भया॥ मन ही
सौं मन लाइ॥ मन ही सौं मन मिलि रह्या दादू अनत
न जाइ॥१२६॥ ॥ इति मन को अंग
॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमस्कार गु
रदेवतः॥ बंदनं सर्व साधवा [illegible]
दादू चौरासी लष जीव की [illegible]
नेक जनम दिन के करै कोइ [illegible]
ने गुण व्यापै जीव कौं तेते ही [illegible]
यह रिकारि सब षसिरजन [illegible]
हीं जीव के दादू व्यापै आइ [illegible]
न जांणि ता हि॥२॥ जीव [illegible]
जेक मैं होइ चौरासी [illegible]

अनेक रूप दिन के करै यहु मन आवै जाइ । आ
... गा कन मन का मिटै तब दादू रहै समाइ ॥ निस बा
... ...रि यहु मन चलै सूषिम जीव संघार । दादू मन थिर
... ...जिये आतम लेहु उबारि ॥ कबहूं पावक का
... ...पाणी धर अंबर गुण बाइ । कबहूं कुंजर कबहूं कै
... ... नर पसु वा कै जाइ ॥ सूकर स्वान सियाल सि
... ... अपर है घट माहि । कुंजर कीड़ी जीव सब पांडे जा
... ...ीना हि ॥

दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवत
... ... बंदनं सब साधवा प्र णामं पारंगतः ॥ सो हि
... ...द बंदनं सब साधवा ... ... दादू सुपिना
... ...है परि हम न ही सब जग आवै जाइ ॥ दादू माया का सुष
... ...दूषिये जागत गया बिलाइ ॥ दादू माया का सुष
... पंच दिन गर्ब्यो कहा गवार । सुपिनै पायो राज धन जा
... ...त न लागे बार ॥ दादू सुपिनै सूता प्राणीयां काये
... भोग बिलास । जागत झूठा के गया ताकी कैसी आस ॥
... स ॥ यहु माया का सुष मन करै सेज्या सुंदरि पास
... ... अंति काल आया गया दादू है उदास ॥ जैनाहीं
... सो दीषै सूता सुपिनै माहि । दादू झूठा के गया जागैं
... तो कछु नाहि ॥ यहु सब माया मृगजल झूठा
... झिलिमिलि होइ । दादू चिलका देषि करि सति करि
... जाना सोइ ॥ झूठा झिलिमिलि मृगजल पाणी करि
... लीया । दादू जग प्यासा मरै पसु प्राणी पीया ॥ छल
... बहि बहि जाइगा सुपिना बाजी सोइ । दादू देषि न भ
... ... यहु निज रूप न होइ ॥ सुपिनै सब कुछ देषि
... ये जागै तो कुछ नाहि । ऐसा यहु संसार है समझि दे
... षि मन माहि ॥ दादू जू कछु सुपिनै देषिये तैसा

यकुसंसार॥ ऐसैं आपा जांणियें फूल्यौ कहा गवांर॥
॥११॥ दादू जतन जतन करि राखिये दिढ गहि आतम
मूल। दूजा द्रिष्टि न देखिये सब ही सेंबल फूल॥१२॥ दादू
नैनहुं बिन नहीं देषिये सब माया का रूप। तहां लै नै
ना राखिये जहां है तत्त अनूप॥१३॥ दादू हस्ती हैवर
धन देषि करि फूल्यौ अंग न माइ। भेर दमामा एक दि
न सब ही छाडैं जाइ॥१४॥ दादू माया बिहडै देषतां
काया संगि न जाइ। कृतम बिहडै बावरे अजरावर
ल्यौ लाइ॥१५॥ दादू माया का बल देषि करि आया अ
ति अहंकार। अंध भया सूझै नहीं का करि है सिरजं
नहार॥१६॥ मन मनसा माया रती पंच तत्त परकास।
चौदह तीनूं लोक सब दादू होइ उदास॥१७॥ माया
देषै मन षुसी हिरदै होइ बिगास। दादू यहु गति
जीव की अंति न पूगै आस॥१८॥ मन की मूठि न
मांडिये माया के नीसांण। पीछैं ही पछिताहुगे
दादू षोटै बांण॥१९॥ कुछ षातां कुछ षेलतां कुछ
सोवत दिन जाइ। कुछ बिषिया रस बिलसतां दादू
गये बिलाइ॥२०॥ माषण मन पांहण भया माया रस
पीया। पांहण मन मांषण भया रांम रस लीया॥
॥२१॥ दादू माया सौं मन बीगड्या ज्यूं कांजी करि दूध।
है कोई संसार मैं मन करि देवै सुध॥२२॥ माया सौं
मन रत भया बिषै रस माता। दादू साचा छाडि करि
झूठे रंग राता॥२३॥ गंदी सौं गंदा भया यूं गंदा सब
कोइ। दादू लागे षूब सौं तौ षू षा होइ॥२४॥
माया के संगि जे गये ते बहुडि
डाकणी इन केते षाये॥२५॥ दादू

सी कोईन मकई डारि ॥ दोहा ॥ हिम्हये बाउरे गये
बउतपछि हारि ॥ २० ॥ दोहा ॥ परागतुग्या अमरे ॥ ज
हो मायान हो जाइ ॥ विद्या औ पर पढ़ित तब लरहे
पराइ ॥ २१ ॥ साधनकी इपगतरै कबहू राजउवा
रि ॥ दोहा ॥ तत लखा आपमे लैगाठ्या बिचारि ॥ २२ ॥ दोहा
अपणो अपणो धरि गये आप आगा बिचारि सदको
मी माया मेलनि ॥ दको मोछ्य संसारि ॥ २३ ॥ दोहा ॥ मा
या मग लूटु केरहे हमसे जीव अपार माया मा हैसे
दो ॥ इहै कालीधार ॥ २४ ॥ दोहा ॥ बिषै के कारनै रूप राते
है मैन नापाक ये कोल्हू माई ॥ बदीकी बात रूसुण
त सराहैन श्रवण नापाक रू कोल्हू जाई ॥ स्वाद के
कारनै जुबछिलागी रहे जिम्या नापाक ये कोल्हू पाई
गंध के कारनै नुख लागी रहे अग नापाक ये कोल्ह
लाई ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नगरी देन तब जब इक राजा हो
इ ॥ दोहा ॥ राजा दुष उदै सुष आनंद देष्या को ॥ २६ ॥ एक
राजा आनंद कै नगरी निहिचल वास ॥ राजा दुज
दुख बसै ॥ दोहा ॥ जो लिखका स ॥ २७ ॥ जैसे ऊजर का
मरस ॥ आपबंधनो आइ ॥ ऐसे दोहा हम तये क्यूं
करि निकस्या जाइ ॥ २८ ॥ जैसे मर्कट जो नरस आ
प बंधनो आयं ॥ ऐसे दोहा हम तये क्यू करि छूटे
फधु ॥ २९ ॥ जस्व स्वादु कारनै बंधा मूरिष माहि ॥
ऐसे दोहा हम तये क्यू ही निकसै नाहि ॥ ३० ॥ जैसे
अध अयान गर्दे बंधा मूरिष माहि ॥ ऐसे दोहा ह
मत ये जनम गवाया बादि ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ हरि या र ब
छुरे माया गह क्रूप ॥ मोहा कनक रू कामनी
नाना बिधि के रूप ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ सर्वादि सारं

वू देषत छलैजाइ ॥ ३२ ॥ स्वारथ साच तजि सबै बंधां
ने आइ ॥ विषसुष माहै रमि रहै माया हितचि
त लाइ ॥ सोई सतजन ऊबरै स्वाद छाडि गुण गाइ ॥
३३ ॥ दादू कूंण की काया कूंण घर कूंण करू परिवार कूं
ण काया देषि करि कूंण लोक कहा गवार ॥ ३४ ॥ दादू कूंण स
सार कूंण परिवार कूंण घरबार कूंण नर नारि न
दा मन माने कूंण कुल जाति कूंण पित मात
कूंण बंधु ब्रात कूंण तन गात सबै कारि जाने कूंण
सबंध कूंण सब फंध कूंण सब अंध कूंण जा बंध
कहां मघ ठाने ॥ दादू त्यागि कर सब त्यागि जागि रजा
गि देषि दिवाने ॥ ३५ ॥ दादू जन म माया सब देषता कूंण
के संगि लागि ॥ साचे पीतम को मिले त्यागि सकै तो भा
र गि ॥ ३६ ॥ दादू कूंण तन के कारने कीये बहु तविकार ॥
गृह दारा धन संपदा पूत कुटंब परिवार ॥ ताकारणि
हति आतमा कूंण कपट अहंकार ॥ सो माटी मिलि
जाइगा बिसस्या सिरजनहार ॥ ३७ ॥ दादू गत गृह गा
त धन गत दारा सुत जोबन गत माता गत पिता गत
बंधु सजन गत आपा गत पंच गत संसार कत रजन र
तज सिरज सिरे मन पार ब्रह्म निरंजन ॥ ३८ ॥ जीवे
१ मांहि जीव है ऐसा माया मोह ॥ साई सूक्ष्म सब गया
५ दादू नहीं अंदोह ॥ माया मगन रषेत बर सदगतिक
दन होइ ॥ जेब चेते देवता राम सरीषे सोइ ॥ ३९ ॥ काजर
खेत न नीपजै जैसा है सो बाइ ॥ दादू दाना बीजका क्या
पचि मरे गवार ॥ ४० ॥ दादू ईस संसार में निमषून की र
जैने है जा मण मरण आवटणा — ज देह
॥ ४१ ॥ दादू मोह संसारको
इह छूटे मनकरि को साधू संत

स्तीमायाहस नी सयनबन्त है सार तामेंनिरनै कै
या दाहरुगहगवार दाइकामकोबिनघाटेचो
है घरफोडे दिनरात सोवतसाहेनजाग ई तनके
तलेजात कामकोबिनघटिचोरहै मूसेमरेभडार
सोवतहीलेजाइगा चेतनिपहरैचार जूछुग
लागिकाठको लोहेलागिकाट कामको याघटजाज
रा दाहवारबाट ताहीमिलेजसचदको गहगा
गिलेजस्सूर कमगिलेजीवको नषसिषलाग
पूर दाइचंदमिलेजबराहको गहणमिलेजब
सूर जीवमिलेजवक्रमको रोमरह्योनरपूर
क्रमऊदाहाऔगनबीन कांटतबारबार अपनेहाथे
आपको काटतहैसंसार आपेमारेआपको
य कुजीवबिचारा साहिबरापणहारहै सोहिंदम
ने आपेमारेआपको आवआपकोषाइ अ
पैअपनाकालहै दाइकहैसमझाइ दाइमरहै
कीसबऊपजे जीवकोऊठनाहि जीवकोजाणैन
ही मरिवेकोमननाहि बधसबकूऊतबिकारहै
अवपापकोमूल टाहैसबआकारको दाइयअ
स्यूल दाइयऊनोदोजगटेबिष कामको
अहंकार रातिदिनसजारिवोकरै आपाअगनि
कार बिषेहलाहलषाइको सबजगमरि
रिजाइ दाहहहलानोऊले रिहैराविल्योनाइ
जेतीबिषियाबिलसिये तेतीहत्याहोइ परनबिम
समारिये संकलसिरेमारिसोइ बिषियाके
समहलया नरनारीकामास मायामातेमदघे
कीया जनमको दाइनावैमाघतनगो

नजाइ ॥ ५९ ॥ षातांहूजीनगतिहै लोहरवाडामांहि ॥ इंगट
पैडारस्तबसे तहांसतकाहेकोंजांहि ॥ ६० ॥ सांपणियेकस
बजीवकों आगेपीछेषाइ दादूकहैउपगारकरिकोईजं
नकबरिजाइ ॥ ६१ ॥ दादूषायेसांपणी क्यूंकरिजीवेलोग
राममंत्रजनगारडी जीवैइहिसंजोग ॥ ६२ ॥ दादूमायाकार
णिजगमरे पीवकेकारणिकोइ देषौज्यूंजगाविजले नि
मषनन्याराहोइ ॥ ६३ ॥ कालकनकअरुकामणी परिह
रिनकासंग दादूसबजगजलिमूवा ज्यूंदीपकजोतिपतं
गा ॥ ६४ ॥ दादूजहांकनकअरुकामणी तहांजीवपतंगेजा
हिं आगिअनंतसूझैनहीं जरिजरिमूयेमांहिं ॥ ६५ ॥ घट
मांहैमायाघणी बाहरित्यागीहोइ फाटीकंथापहरिक
रिचिह्नकरेसबकोइ ॥ ६६ ॥ कायाराषेबंदमैं मनदहदि
सिजैं दा[illegible]कनकअरुकामणी मायानहींमैं [illegible] आ
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मीवीछुषसोंषारी मायात्यागीकहैबाजारी ॥ ७१ ॥ ज्यूंजल
मैंरीमछली तैसायहुसंसार मायामातेजीवसब दा
दूमरतनबार ॥ ७२ ॥ दादूमायाफोटेनैनहै रांमनसूझै
काल साधपुकारेमेरचढि देषअगनिकीझाल ॥ ७३ ॥ बिना
भुवंगमहममसे बिनजल[illegible]जाइ बिनहीपावकज्यूं
जले दादूकछुनबसाइ ॥ ७४ ॥ अमृतरूपीआपहै औ
रसबैबिषझाल राषणहारारांमहै दादूदूजाकाल
॥ ७५ ॥ बाजीचिहररचाइकरि रह्योअपरछनहोइ मा
यापटपडदादीया तातैलषैनकोइ ॥ ७६ ॥ दादूनाहै
देषतां हिगाहीदौरीलाइ पीवपा
सहैनलिषाइ ॥ ७७ ॥ [illegible] चा

दादूजीव ऊतें नांनोरांगञ्जपार
सानामिले औरन ऊनराञ्जाहि दादूमनमांनैनदी
ताश्रावेसार बाजीमोहेजीवसब हमकोंरुरकी
गहि दादूकेसीकरिगया आपपारसांहिपार
दादूसांईसतिहै इज्ञासरमविकार मांतनिरंजननिवम
ला इज्ञाघोरश्रसार दादूसाधनलीजिये जेतुमृले
तीहोइ मायाकेबांधेकेई मूए पूरापडयानकोइ
दादूकहै जेहूमछाडेहाथये सोतुमृदीयाडारि दादूदीरा
हमलीये प्रीतसों सो केकरकोंकरलीन्ह पारब्रह्मकोंछा
पासेविलिकरि हितकोन्ह दादूसबकोंबनिजे
डिकारि जीवनिसों रलेगाजो हरी जेमांगे
षारधारि हीराकोइनलेस तिहूंलोकमेंफीरे धुरि
दहीटोटजम मारिये श्रनलपंषि
देह प कौंवसंतोषहे दादूचोंटि बामाहि दादूजलेपवादि जा
कासको मायापरजलि दादूऊसासारंबेगाबिचार सं
बिलंबिंगि
रजागतसूता तीनिभवननतनजाताहै दादूमायाश्रागेजीवसब
जाइगापता दादूमायाश्रागेजीवसब तासोंबे
करजोडि जिनिसिरजे जलबूंदसों तासोंबेठे
दादूसुरनरमुनियर बिसनबसि धडीसाधके पग
देहेठ सकललोकके सिरषडी साधकेरब
दादूमायाचेरीसंतकी दासीतसदरबा
रानीसबजगतकी तीनूंलोकमकारि
दादूमायादासीसंतकी साकतकीसिरताज दादू
नाचेतनडारी सतीसेतीलाज
ग्यानमुकतिबांधरी ब्रह्मबसेनोलिषि
तहांतागतिनिरंजनी

दादू कहै जे आवैनां जा बिचारी बिलसी बितडी
नै मांषे मारी ॥ दादू माया सब गहले कीये चौरा
सी लष जीव ता का चेरी क्या करै जे रमा रातै पीव ॥
॥ दादू माया बैरणि जीव की जिनि को लावै प्री
मा ति या देषै नरक कंरि यु जु संतनि की रीति ॥ मा
या मत चकची लकारि चे चल की ये जीव माया माते
मे ड पीया दादू बिस स्या पीव ॥ जेणी जणो की राम की
घर घर की नारी ॥ पतिब्रता नहीं पीव की सो मांषे मा
री ॥ जणा जणा के ठपी है लागे घर घर लमतडो
लै तांषे दादू षाइ तमाचे मादल कै मुषि बोलै ॥
॥ जे नर कामणि परहरै ते छूटै गरभ वास दादू ऊंधै
मुषि नहीं रहै निरंजन पास ॥ रोकन राषै झूठ न
साषै दादू षरचै षाइ नदी पूर प्रवाह ज्यूं माया आ
वै जाइ ॥ सदिका सिरजनहार का केता आवै जा
इ दादू धन संचै नहीं बैठा षुलावै षाइ ॥ जोगणि
के जोगी गहे सो फणि के कारिसे ष जगनणि के नग
ना गहे करि करि नाना भेष ॥ बुधि बिबेक बल
त दूरि णि हैं न ता प नु पावनि ॥ नल पर जानि
जीव घर बारि न चावनि नाना बिधि के रूप धरि सब
बधे नामानि जग बिट बिपरले कीया दरिनावे बुला
वनि ॥ बाजीगर की पूतली ज्यूं मर्कट मोह्या दा
दू माया राम की सब जगत बिमोह्या ॥ मोरा मोरी
देषि करि नाचै पंष पसारि यौं दादू घर आंगणै हम
नाचै कै बारि ॥ जिस घटि दीपक राम को ति
स घटि तिमर न होइ उस उजियारै जोति कै सब ज
ग देषै सोइ ॥ जिहि घटि दीपक न प्रगटै तहां मा
या लेग लगाइ दादू जागै जोति जब त माया भ्रम बि

बा

ीदार ॥ दादू जीव जंत दे नांनों रांम अपार ॥ ॥ दमची

हैसो नांमिले ॥ औरब जंत रात आहि ॥ दादू मन मांनें नहीं

कतां आवै जाइ ॥ ॥ बाजी मोहे जीव सब हमकों सूरकी

बांहि ॥ दादू के सो करि गया ॥ आप रारदयाहि पाइ ॥ ॥

दादू साई सति है ॥ दूजा भरम बिकार ॥ नांउ निरंजन निरम

ला ॥ दूजा घोर अंधार ॥ ॥ दादू सो धन लीजिये जे तुम्ह स

ती होइ ॥ माया के बांधे केई मूए ॥ पूरा पड्या न कोइ ॥ ॥ जे

दादू कहै जे हम छाडे हाथ थैं ॥ सो तुम्ह लीया सारि ॥ ॥ दादू दीर

हम लीवे प्रीतसों ॥ सो तुम्ह दीया डारि ॥ पारब्रह्मकों

पग सों ठेलि करि ॥ कंकर कों कर लीन्ह ॥ ॥ दादू सबकोंबंति

डि करि ॥ जाव निसो दिन कीन्ह ॥ ॥ जे माग

षारखाहि ॥ हीरा को ईन लेइ ॥ हीरा ले गा जो हरी ॥ धु

दइ ॥ ॥ हरी दोट ज्यू मारिये ॥ तिहूं लोक मैं फेर ॥ अनलपंषि

प ज्यू बसंतोष है ॥ दादू चोटि बामे रि ॥ ॥ दादू जे पथ है छाडि जा

कासकों ॥ माया मेर उलांघि ॥ दादू कसा सार बैठा बिचार ॥ सत

बिलबेस गि ॥ ॥ दादू जसा सार बैठा बिचार ॥ डारहा ॥ त

रजा गतस्ता ॥ तीनि तवन तत जाता बि ॥ ॥

जा इगा पूता ॥ ॥ दादू माया आगे जीव सब ॥ ग

ठेकरजोडि ॥ जिनि सिरजे जल बूंदसों ॥ तासौं बैठे

॥ ॥ दादू सुर नर मुनियर बिसन ब्रह्म सिव ब्या

दैदेग ॥ सकल लोक के सिर खडी ॥ साधूं के पग

॥ ॥ दादू माया चेरी संत की ॥ दासी उस दरबार

रांणी सब जगत की ॥ तीन्यूं लोक मझारि ॥ ॥

इ माया दासी संत की ॥ साकत की सिरताज ॥ ॥ दादू च

त संतो सा डांणी ॥ संतो सेती लाज ॥ ॥ अष्ट सिद्ध नौ निधि चेरी

मुकति ॥ बाहुरी ॥ त्रिगुण संगति निरंज

दादूकहैजेंआवैनांजाह बिचारी।बिलसीबितडी
नैमाथैमारी॥ ॥ दादूमायासबगहलेकीये।चौरा
सीलषजीव तांकाचेरीक्याकरै।जेरंगरातेपीव॥
९६॥दादूमायांबैरणिजीवकी।जिनिकोलावैप्री
ति।यादेषैनरककरि।यहुसंतनिकीरीति॥९७॥मा
यामतिचकचालकरि।चंचलकीयेजीव।मायामाते
मदपीया।दादूबिसरयापीव॥९८॥जेणजणकीरांमकी
घरघरकीनारी।पतिब्रतानहींपीवकी।सोमाथैमा
री॥९९॥जणजणकेउरिपीहैलागी।घरघरमंतडो
लेताथैदादूखाइतमाचे।मादलदक्यूंमुषिबोलै॥
१००॥जेनरकामणिपरहरै।तेछूटैगर्भवास।दादूकंध
मुषिनहीं।रहैनिरंजनपास॥१०१॥रोकननाषैकूंरन
नाषै।दादूबरचैषाइ।नदीपूरप्रवाहज्यूं।मायाआ
वैजाइ॥१०२॥सदिकासिरजनहारका।केताआवैजा
इ।दादूधनसंचैनहीं।बैठाषुलावैषाइ॥१०३॥जोगणि
कैजोगीगहे।सोफणिकैकारिसेष।जगनणिकैभग
तागहे।करिकरिनानाभेष॥१०४॥बुधिबिमककबल
दरणि।टैनतापनपावनि।त्रिगिच्छ।नलपरजालि
जीवघरबारिनचाउनि।नानाबिधिकेरूपधरिसब
बंधेनामनि।जगबिटंबिपरलेकीया।हरिनावजुला
वनि॥१०५॥बाजीगरकीपूतली।ज्यूंमरकटमोह्या।दा
दूमायारामकी।सबजगतबिमोया॥१०६॥मोरामारी
दुषिकरिनाचैपंषपसारि।योंदादूघरआंगणै।हम
नाचैकैबारि॥१०७॥जिसघटिदीपकरामका।ति
सघटितिमरनहोइ।उसउजियारैजोतिके।सबज
गदेषैसोइ॥१०८॥
यामैग्रनमाइ

दीपकदेषैलोइ चंद
२ दाइजोतिचमकेनिरखै दाइदीपकदे
नाइ प गारछुलानहोइ तहांपरसब
रकाचोदरा चोरासीलषपोथिया नहिं
का मायाछगटहोइ चोरासीलषपोथिया जोतिका
कोइ य कपट दीपकसाधका घरबनमें
म दाइपंछीसंतजन तहांपर निजदास दाइप्राणपतंगसब ज
हैं राषिये दीपकजोतिजगाइ घरबनमाहिंराषिये दीपक
होदीपकतहांजाइ पंछीसबमिलेसबकोइ
जलताहोइ दाइप्राणपतंगसब जाइमिलेसबकोइ दाइ
घरबनमाहिंराषिये दीपकप्रगटप्रकास घरबनमा
प्राणपतंगसब आइमिलेउसपास प्राणपतंगसब
हैं राषिये दीपकजोतिसहेत दाइप्राणपतंगसब
इमिलेउसहेत दाइमनमतवकभया कनककामनीसाथ
पोहाप नोसीकहैनकोजिये कनककामनीसंगरिषिकाइग आ
जातोहुझेजीवसब त्रयाकुरिषिकाइग माया कपटसा
पसलानही दाइकैसासग इन्द्रसंदरदेषैदाइ रा
के त्रयाकुरिषधरिनाचे बहुसाधीरसबदेषियेनारी
डकलिजांहि दाइसबपरिवार
सरतार ब्रम्हमुरकेपटके दाइसबपरिवार पसुप्राणीस
२ रपदहरिब्याषरी सबकेनदार पुरिषपलटिबेट
नही दाइमुगधगवार दाइकोसमझेनही बडाबे
नारीमातामोहोइ दाइकोसमझेनही पुरिषनारिकी
हि मातानारीपुरिषकी छाडिगयेअवधूत
क इरपांनविचारिरि छाडिगयेअवधूत नाहोइ दाइ
लाजीबबाहना जीवहिनानहोइ मायामेनापुरु
करिविषपीवैसबकोइ सबनिको पुरुन
दाइमोहे सबको

रानोंकहै येऊअचिरजआवै २९ दादूजेबिषजारैषा
इकरि।जिनिमुषमैंमेलै आदिअंतिउलेगपै।जेबिषसौंषे
लै॥३० जिनिबिषषायातेमूये।क्यामेरातेरा।आगिपरा
ईआपणी।सबकरैनबेरा॥३१ दादूमायाकाजलपाव
नो।व्याधीहोइबिकार।सेफेकोजलपीवता।पायासुषीसु
धसार॥३२ दादूकहैजिनिबिषपीवैबावरे।दिनदिनबा
ढैरोग।देषतहीमरिजाइगा।तजिबिषियारसभोग।३
३॥ अपणांपरायाषाइबिषदेषतहीमरिजाइ।दादूको
जीवैनहीं।इहिंभोरैजिनिषाइ॥३४ बहुसरीषाकैकरि
मायासौंषेलै।दादूदिनदिनदेषताअपणांगुणमेलै।३
५॥ दादूबुद्धाबिसनमहेसलौं।सुरनरउरझाया।बि
षकाअमृतनांउधरि।सबकिनहीषाया॥३६ दादूजन
मायासबदेषतां कूठीकेसंगिलागि।साचेपीतमकौंमि
लै।भागिसकैतोभागि॥३७ मायामारैलातसौं।हरिकौं
घालैहाथ।संगतजेसबऊठका।गहैसाचकासाथ॥
३८॥ दादूघरकेमारेबनकेमारे।मारेसरगपयाल।
सूषिममोटागूंथिकरि।मांडयामायाजाल॥३९ मूयेसरी
षेफिरहै।जीवनकीक्याआस।दादूरामबिसारिकरि।
बाछैभोगबिलास॥४०॥मायारूपीरामकौं।सबकोई
ध्यावै।अलषआदिअनादिहै।सोदादूगावै॥४१॥दादू
ब्रह्माकाबेदबिस्नकीमूरति।पूजैसबसंसारा।मह
देवकीसेवालागा।कहांहैसिरजनहारा॥४२॥माया
कोठाकुरकीया।मायाकीमहिमा।ऐसेदेवअनंत
करि।सबजगपूजणजाइ॥४३॥मायाबैठीरामह्वै।
कहैमैंहीमोहनराइ।ब्रह्माबिस्नमहेसलौं।जोनीआ
वैजाइ॥४४॥मायाबैठीरामह्वैताकौंलषैनकोइ॥

लाइ भ्रहजोतिचमकैतिरवर दीपकदेषिजाइ बढ्
रकाचोहरा प भारहुलाव होइ दाइदीपकहै
का मायाखूटहोइ चौरासीजवपेवा तहां रेसब
कोइ युऋघटदीपाक सोहका बुद्धजोतिका
स दाइयदीसतज तहाप रैनिजवास घरवनमें
हैंराषिये दीपकजोतिजमाइ दाइप्राणपतंगसब ज
होदीपकतहांजाइ घरवनमाहैराषिये दीपक
जलताहोइ दाइप्राणपतंगसब जाइमिलेसबकोइ
घरवनमाहैराषिये दीपकप्रगटप्रकास दाइ
प्राणपतंगसब आइमिलेउसपास घरवनमा
हैंराषिये दीपकजोतिसहेत दाइप्राणपतंगसब आ
इमिलेउसहेत दाइमनहतकमया ओरप्रप
तौंहाप तौसाकहेनकौजिये कनककामनीसाथ
जोतोबूझैजीवसब इयाफ्रिविकावग आप
२ पुरसलानहीं दाइकैसासंग मायाकपटसाजि
वै इयाफ्रिविधरिनाव इन्हसुंदारयेलेहाइ राषिले
अहलिजेव बहुताबीरसब देषिये नारीग्रु
सरतार अमसुरकेपेटके दाइसबपरिवार पु
२ रपहुरिआवरी सबपकैजनहार पसुप्राणीसमजै
नहीं दाइसुगधगंवार कुरिषपलटिवेटासब
नारीनातहोइ दाइकासमजैनहीं बडाअचंभा
हि मातानारीपुरिषकी पुरिषनारिकापूत
क इग्यानविचारिरि जाहिगयेअवधूत जीव
लाजीवबावला जीवहिवानोहोइ दाइअमतत्ता
करि विषपीवेसबकोइ मायामेलागुरामहै
धरिजमलनाउ दाइमोहेसबतिको छुटनरसबहै

रानाकहै यें जुत्र चिरजत्रावै ॥१२९॥ दादू जे बिष जारै षा
इकरि जिनि मुष मैं मेलै आदि अंति पलैग ये जे बिष सौं षे
लै ॥१३०॥ जिनि बिष षाया ते मूये क्या मेरा तेरा आगि परा
ई आपणी सब करै नबेरा ॥१३१॥ दादू माया का जल पाव
तां ब्याधी होइ बिकार सेझे का जल पीवतां प्राण सुषी सु
धसार ॥१३२॥ दादू कहै जिनि बिष पीवै बावरे दिन दिन बा
ढै रोग देषत ही मरि जाइगा तजि बिषिया रस सोग ॥१३
३॥ अपणा परायां षाइ बिष देषत ही मरि जाइ दादू को
जीवै नहीं इहि सौ रे जिनि षाइ ॥१३४॥ ब्रह्म सरीषा हैक रि
माया सौं षेलै दादू दिन दिन देषतां अपणी गुण मेलै ॥१३५
॥ दादू ब्रह्मा बिसन महेस लौं सुरनर उरझाया बि
ष का अमृत नांउ धरि सब किनही षाया ॥१३६॥ दादू जन
माया सब देषतां फूटी केस गिलागि साधै प्राणम कौं मि
लै लागि सकै तो लागि ॥१३७॥ माया मारै लात सौं हरि कौं
घालै हाथ संगत जे सब रूठ का गहै साचका साथ ॥
१३८॥ दादू घर के मारे बन के मारे मारे सरग पयाल ॥
सूषिम मोटा गूंथि करि मांड्या माया जाल ॥१३९॥ मूये सरी
षे फेर है जीवन की क्या आस दादू राम बिसारि करि
बाहै भोग बिलास ॥१४०॥ माया रूपी राम कौं सब कोई
ध्यावै अलष आदि अनादि है सो दादू गावै ॥१४१॥ दादू
ब्रह्मा का बेद बिसन की मूरति पूजे सब संसार महा
देव की सेवा लागे कहां है सिरजनहार ॥१४२॥ माया
कौ ठाकुर कीया माया की महिमा ऐसे देव अनंत
करि सब जग पूजण जाइ ॥१४३॥ माया बैठी राम ह्वै
कहै मैं ही मोहन राइ ब्रह्मा बिसन महेस लौं जोनी आ
वै जाइ ॥१४४॥

सब जगमांनैसालकरि बडा अचंतामोह … अजनु

कीया निरंजना गुणनिरगुण जांणें धस्यादिवादे अ

करि कैसैं मननमांनैं … निरंजनकी बातका … आ

अंजनमांहि दादूमनमांनैं नहीं अगरसतालैजाहि

दादूसदगीओर डाल करणीकरै डाओर

तिन ऐसैं रामनहरै जिनकैचिकनगोर … कोमल

नकैचटतैरे करेकाटकीगाइ दादूध्यनजैनहीं म

रि बदै इकबा… चंतानलिकैकरलीया मागक

बुनदेन दादूक अरडाटिचै चंतामणिकरलेहु … पार

सकीयापबाणका चंचनकदूनहोइ दादूआ रामबि

न सूलिवडायसबकोइ … सूरिजफटपखांणका

तासैंतिमरनजाइ साचासूरिजपरगटे दादूतेमरनसा

इ … रतिबडीपखांणकी कीया सिरजनहार द

इसा दसूझैनहीं रहवासेसार … सबकों

मणिकीया जसहीकेगुनहार कातिजकोसूझैनहीं

दादूमायेमारे … कागदकामाणसकीया छत्रपती

सिरमोर राजपाटसाधैनहीं दादूउदरिओर … स

कलजुगनआनेंधडे चतुरबलावणहार दादूसाझैले

नहीं जिसकावारनपार … दादूपहलीआपउपा

इकरि न्यारापदनिरबांण ब्रह्माविसनमहेसमिलि

बांध्यासकलबंधाण नांउ नीतिअनीतिसबपहलांबा

धैबेधि यससनजांणोंपाजी दादूरोपकधी … दादूबांधेबे

दोलिदेबि सरमकरमपरजाइ मरजादामांहैरहै सु

मिरणीयापनजाइ … दादूमायामोहवांलणी

नदूनइत्लामोपाइ दादूपेसेसैलेंकोतिजाले जांख

… नारीनागमिजेडस्येतेनरमूहेविजनहार दादू

कोजीवेनहीं पूछोसेंबेसयांनुं [illegible]
सी बाघणिवडीबलाइहा ाइ अंबरजनयांतिनको आ
सघाइ [illegible] नारीनेनदेवियेंसुखसोंनोइनती [illegible]
नेंकोनति जिनि स्त्रुणीं यक्रमेनजोमानवइ [illegible]
दरबारेसापणी किनेड क्रिकलिमाति [illegible]
नसवइसे दाइचेनेनांह्रि [illegible] दाईकेमघणा [illegible]
नागतिहोइ दाइडाली मवड्डयेकोनिवयनेंमेंको [illegible]
[illegible] मायासायणिंदवमें कनककोयणी [illegible]
साविञमहेसेतों दाइकेवेनकोद [illegible] मायाया [illegible]
वृमव [illegible]
[illegible]

नहोनमोनेरजनं नमसकारगुरदेवतन्हा बंदनंअबसा
धव्हा धुगांमेपारगतन्हा।।१।।दादू दयाजिन्होंकेहैनहीं
व उरिकहोवे साधजेहुय उनकादे विषनौंलगेब
डाप रंधा।।२।।दादू मिहरमहबतिमनिनहीं दिल
केवजकठोरा कालेकाफिरतेकाहे येमोमिनमालि
केञोरा।।३।। दादूकोईकाफजीवकोंकरेआतमाञ्या
तामारवरकंसेसानहीं सोअगोदोजगजात।।४।।दा
दूनाहरसिंघसियालसबकेतेमुसलमाननामाखणा
इमोमिनसदावडेमीयांकासानः।।५।।दादूमासअहा
रीजेनर तेनरसिंघसियाल बगमंजारसुनहाससही
येताञनषिकाल।।६।। दादूमुईमाररमांगासखरो नेते
ञ्रतषिजमकाला मिहरिदयानहीं सिंघदिल ह्रकरका
रसिया ।।७।। मासअहारमदुपीवे विषेविकारी
सो ह्वै।।दादू आतमरामबिन दयाकहांपीछे आ।।८।।
दादूलंगरलोगलोतसेलागो बोलैसदाउन्होंकोतीर
जोरजुलम वीच बटपारेआदिअंतिउनहींसोसीर।।
तनमनमारिरहेसांईसौं तिनकोदेषिकरेताजीराणि बहो
रुककहांपैं आहीअसीकजा ञोलियादा।।९।।बेमि
हरगुमराहगाफिलगोसतखुरदनी। बेदिलबदकार
आलम हयातमुरदनी।।१०।। ञ्लिकरिबलिकरिधाइ
करिमारेजिहिंतिहिंफेरि।।दादू ताहिनधीजियेवैनेस
गीतेर।।११।। दादू दुनियांसौंदिलबांधिकरिबैठेदी
नगवाइ नेकीनामबिसारिकरिकरदकमायाघाइ
।।१२।। दादू गलकाटैकलमासरैञ्या विचारादी
नपंचोवषतनिमाजगुजारें स्यावतिनहींञकीनई

॥ दुनियांकेपीछेपड्या।दौड्यादौड्याजाइ।दा
दूजिनिपैदाकीया।तासाहिबकौछिटकाइ॥१४॥कुफ
रजेके मनमें।मीयांमुसलमान।दादूपैयांकुगमे।बिसा
रेरहिमान॥१५॥आपसकौंमारैनहीं।उसकौंमारणजा
हिं।दादूआपामारेबिनां।कैसेंमिलैखुदाइ॥१६॥नीत
रिदूंदरसरिरहै।तिनकौंमारैनांहिं।साहिबकीअरदाह
कौं।ताकौंमारणजाहिं॥१७॥ दादूमूयेकौक्यामारियै
मीयांमूईमार आपसकौंमारैनहीं।औरोंकौंकुसिया
रा॥१८॥ जिसकापातिसकाखूदा।तौकाहेकादोसा।दा
दूबंदाबंदगी।मीयांनकरिरोसा॥१९॥ सेवगसिरजन
हारका।साहिबकाबंदा।दादूसेवाबंदगी।इजाक्याधंधा
॥२०॥ सोकाफिरजेबोलैकाफा।दिलअपणीनहींराषै।
साफा॥सांईकौंपहिचांनैंनांहीं।कूडकपटसबहूनहींमा
हीं॥२१॥सांईकाफुरमाननमांनैं।कहांपीवऐसेंकरि
जांनैं।मनअपणोंमैंसमझैनांहीं।निरषतचालैअंतौंहों प
हीं॥२२॥जोर करैमसकीनसंतावै।दिलउसकीमैंदरद
नआवै।सांईसेतीनांहींनेहा।गरबकरैअतिअपणीदेह
॥२३॥इनबातनिक्यूंपईयेपीव।पंथनकुपरिराषेजीव।। र
जोरजुलमकरिकुटंबसौंषाइ सोकाफिरदोजगमेंजाइ
॥२४॥ दादूजाकौंमारणजाईये।सोईफिरिमारै।जाकौं
तारणजाईये।सोईफिरितारै॥२५॥ दादूनफसनांउसौं
मारिये।गोसमालदेपंदा।इईहैसोइरिकरि।तबघटमेंआ
नंद॥२६॥मुसलमानजुराषेमान।सांईकामांनेफुरमान।
सारोंकौंसुषदाईहोइ।मुसलमानकरिजांनैंसोइ॥२
७॥ दादूमुसलमान मिहरगहिरहै।सबकौंसुषकिन
हींनहींदूहै॥२८. . । ज ॥ ॥

सवारी ।। ७० ।। सोमोमिनमनमेंकरिजांणि । सतिमहूरीजै
सेश्रोणि । चलैमाचसवारैवाट । तिनकौंश्रुजलिखतकैया
ट ।। ७१ ।। सो मोमिनलौमिलिन होइ । सांईकौंपछिचांनैं
सोइ । जोरनादरैहरामनपाइ । सोमोमिनतिसमैंजाइ
।। ७२ ।। जोहमनदीयुजारतेडरु । कौंवयासाइ सीरन
हीकछुदंगीकरादि निठुरमाई ।। ७३ ।। अपनौंश्र
मलौंकूटिकेकाराकेनाही । सोइपीडुकारली जाइ
वमांही ।। ७४ ।। कोईयाश्रथाइकरि नहिंकूलरौ
सूटीपगीश्रांनकी आपणांकूंमरियां ।। ७५ ।। फूटीनाउ
समंदमें सबडूबराजागे । अपणांश्रांणजीवलेसबकौं
ईसांणें ।। ७६ ।। दाइसिरसिरिलागीआपणीं कूकों
राबुजादे अपणां अपणांसावटै । सांईकोंसांदै ।। ७७ ।।
मानानांउश्रलादकां । सांईसतिकरिजांणिं । निहदव
करिवंदगी । दाइसोपवांणि ।। ७८ ।। आदटकूटहोत
हे औसरबीताजाइ । दाइकरिलेबंदगी । रावणदारहु
दाइ ।। ७९ ।। इसकलिकेतकेगये । हिंदूमुसलमांन दा
इसाचीबंदगी । फूगासबअभिमांन ।। ८० ।। पोथीश्रप
णांदिंडकरि । हरिजसमांहेंलेह । पंडितअपणांश्रांणक
रि । दाइकथोअलेष ।। ८१ ।। दाइकायाहमारीकतेब
वोलियेलिपराषांरहिमांने । मनहमारातूलांबोलिये
सुरतांदैसुवहांनें ।। ८२ ।। दाइअलिफएकअलादका
जेपटिजांणैंकोइ । कुरांनकतेवाइलमलबपटिकरि
पूरांहोइ ।। ८३ ।। दाइकायामहलमैंनिमाजगुजारौं
तहांश्रोरनश्रांवणपावैं । मनमनकेकरितसवीफेरौं
तबसाहिबकेमनिभावैं ।। ८४ ।। दाइदिलदरियामें
गुसलहमारा । ऊजूकारिचितलाऊं । साहिबश्रांगेकै

रोबंदगी॥ बेरबेर बलिजांऊं॥४२॥ दादू पंचौं संगि संगालैं
सांईं तन मन तैं सुख पाऊं॥ प्रेम पियाला पीवजी देवै क
लमा पैले लाऊं॥४३॥ सो साकार गि सब करैं रोजा बं
गनिमाज॥ सूबान ऐकै आहि सों॥ जे तुम साहिब सेती का
ज॥४४॥ दादू हरोज हजूरी होइ रहु॥ काहे करें कलाप
मुलां तहां तुका किये॥ जहां अरस इलाही आप॥४५॥ हर
दम हाजिर हूणा बाबा॥ जब लग जीवै बंदा॥ दादू महिलसां
ईसों स्याबति पंच वषत क्या धंधा॥४६॥ दादू हिंदू मारग कै
है हमारा॥ तुरक कहैं रह मेरा॥ कहां पंथ है कहो अलका॥
तुम्ह तो ऐसा हेरा॥४७॥ दादू दुई दरोग लोक कों भावै सा
ईं साच पियारा॥ कौंण पंथ हम चलैं कहो धौं साधो करो
बिचारा॥४८॥ षंड षंड करि ब्रह्म कौं पषि पषि लीया बांटि
दादू पूरण ब्रह्म तजि बंधे भ्रम की गांठि॥४९॥ जीवत दीसै
रोगिया कहैं मूवां पीछै जाइ॥ दादू दुहुं के पाऊं मैं ऐसी
दारू लाइ॥५०॥ सो दादू किसकौं मकी॥ जा सौं दरदन जा
इ॥ दादू काटै रोग कौं सो दारू ले लाइ॥५१॥ दादू अनसे
काटै रोग कौं अनहद उपजै आइ॥ सेजे का जल निरमला
पीवै रुचि ल्यौ लाइ॥५२॥ दादू सोई अनसे सोई है पजी
सोई सबद तत सार॥ सुणतां ही साहिब मिलै॥ मन के जाहिं
बिकार॥५३॥ औषदि षाइ न पछि रहै॥ विषम व्याधि क्यों
जाइ॥ दादू रोगी बावरा दोस बैद कौं लाइ॥५४॥ ऐके सा
का गंडा क्रूं ही सज्या नजाइ॥ दूषन लागी जीव की
दादू केता षाइ॥५५॥ पसुवा की नाईं करि करि षाइ॥ व्या
धि घणेरी बधती जाइ॥ पसुवा की नाईं करै अहार॥ दादू
बाढै रोग अपार॥ रांम रसांइण भरि भरि पीवै॥ दादू जोगी
जुगि जुगि जीवै॥५६॥

रू ल जेन मन्य मो लिव जातहै बेठे मांजो फलि ॥
री अमोडी तावडी बेठे पेटफुलाइ ॥ दादू सकल स्वान
पुं जेअ्रोदे तूमाइ ॥ दादू बाटा मोगा मांडूकरि
वाहि चितसीया ज्वने जीव छिलिया हरि नांउनली
या ॥ समति न जांने राम की इन्दी को आधीन दादू
यसा दसो तापेनी तनलीन ॥ दादू अपनानीको
सांचे मेम रामीया वहा इ तुक अपणो सती काज
हैमेम रावहा पे ती धरि जाइ ॥ दादू जेह मजा राया
ये के करि तो कांहे लो करि सा मेरा प्यासा मे लीया
लोगो को दलाजा इ ॥ दादू पहै यहको थ मा थी मी
पि चा रा हमको अनेक पजी हम तानी ससार
दादू लि तु लि ग्रहे सानके साथी सबद होइ नव ही
आयाउपजे हम सा औ रनको ॥ दादू सोउ पजी
किस को मकी जेजगाजगा करे केम सा सी सुखिसम
फे सा वकी जेर सनाँ रससे ॥ दादू दजोडे साची
कहे विषेन छाडे जीव पांणी घालि बिलोइ ये तोवयु नरि
निकसे घी व ॥ दादू पद जोडे काया इ ये साषीकहे
क्या होइ ॥ सतिसिर मरी साईयां ततन वां न्हसोइ
कहि बेलु सिंबिमनलुसी कि र बा और ये बल बाती
तिमरन लाज मैदीवा वाती लेला ॥ दादू कारि बेवार
लेहमनही कहि हैको हम स्तूराक हि बाहमथै लिका
हे करि बाहम पेइरि ॥ दादू कहे कहे काहे होता है
कहे सीफे कौम कहे कहे का पाइ ॥ जब लगि देनर
कहे राम ॥ दादू कहे राम के कहे ता जो डि वा राम
श्रीराम ॥ १०० ॥ दादू कहे राम कहे ते राषि
कहे ते साधि राम कहे ते गाइवा राम कहे ते राषि
॥ १०१ ॥ दादू हुरता घरिन ही वकता बके सुवादि वकता

सुरतायेकरंस।कथाकहावैआदि॥७२॥वकतासुरता
घरिनहीं।कहैसुणैकोरांम॥दादूयहुमनपिरनहीं।वा
दिबकैवेकांम॥७३॥देषादेषीसबचले।पारिनपहुंच्या
जाइ॥दादूआंमणिपहलकौ।फिरिफिरिबैठेआइ॥७४॥
बाहरिसुरझैदेषतां।बहुरिउरझैआइ।अंतरिसुर
झैसमझिकरि।फिरिनउरझैजाइ॥७५॥आतमला
वैआपमैं।साहिबसेतीनांहि।दादूकोनिपजैनहीं।इनू
निरफलजाहि॥७६॥ हूंसुझकौंमोटाकहै।दोउझैब
डाईमांन।साहिबकौंसमझैनहीं।दादूझूगज्ञान॥७७॥
दादूजगतकहावैआपकौं।जगतिनजांणैत वा।सुपिनै
हीसमझैनहीं।कहांबसेगुरदेव॥७८॥ दादूसेवगनांव
बुलाइये।सेवासुपिनैनांहि॥नांउधरायेकासर्या।जेय
कनहींमनमांहि॥७९॥ नांउधरावैदासका।दासातननपै
री।दादूकारिजक्यूंसरै।हरिसौंनहींहजूरि॥८०॥जगत
नहोवैसगतिबिन।दासातनविनदास।बिनसेवासेवग
नहीं।दादूझूगीआस॥८१॥ दादूरांमसगतिसांवैनहीं
आपणींसगतिकासाव।रांमसगतिसुषसौंकहै।घेलेघ
पाणीडाव॥८२॥जगतिनिराली रहिगईहमसूंलं
परेबैनमांहि।जगतिनिरंजनरांमकी।दादूपावैनांहि
॥८३॥ जगतिनजांनैरांमकी।इंद्रीकेआधीन।दादूब
धेस्वादसौं।तापैंनांउनलीन्हा॥८४॥ सोद साकतहूं रहै
जिहिंदिसिपहुंचेसाध।मैंतैंमूरिषगहिरहे।लोभबडा
ईवाद॥८५॥दादूरांमबिसारिकरि।कीयेबहुअपरा
ध।लाजौंमारेसंतसब।नांउहमारासाध॥८७॥ मनसा
केपकवांनसौं।पेटसरावै।जेकहैयहूंकीजियै।तब व
हीविगिलाये॥८८॥ दादूमिसरीमिस.रीकीजिये॥

३ बमीमानोंही मोबानलजी होइगा॥ छिटक्या दैमांही
॥८८॥ दादू बातोंही न ऊचै नहीं॥ घर हरि पयांना॥ मारगा
पंथी उठि चले सोई सयांना॥८९॥ दादू सो सब ऊगह की
जिये अनिक घन देषे मन सांगा चलै मना तब लागै लेषे
॥९०॥ दादू कासों कहि समझाइये सबको चतुर सुजान
कीडी कुंजर आदि दे नांही न कोई अयान॥९१॥ दादू कि
रता न सैयाना॥९२॥ आप रहै घट मांहिं कुंजर कीडी जीव
सब पांडे जाणौ नांहिं॥९३॥ दादू सुना घट सोधी नहीं पंडि
त ब्रह्मा पूत आगम निगम सब कथै घर मैं नाचै भूत
पढै न पावै परम गति पढै न लंघै पार पढै न ऊचै प्राणिया
दादू दीडु कार॥९४॥ दादू निबरै नांव बिन झूठा कथै कपै
गियान बैठा सरपाली करै पंडित बेद पुरान॥९५॥ दादू
केते पुस्तक पढि मूये पंडित बेद पुरान केते ब्रह्मा कथि
गये नांहि न राम समान॥९६॥ दादू बहम देया सो
कार बिचारा नो मांहि जदो निरंजन पाइये सो देस्हि रि
इतनांहिं॥९७॥ पढि पढि थाके पंडिता किनहू न पाया
पार कथि कथि थाके मुनिजना दादू नांव अधार॥९८॥
दादू काजी क जान जानहीं कागद हाथि कतेब पढतां
पढतां दिन गये भीतर नांहीं भेद॥९९॥ मसि कागद के आ
सिरे क्यूं छूटै संसार राम बिना छूटै नहीं दादू भरम बि
कार॥१००॥ कागद काले करि मूये केते बेद पुराना येक
अषिर पीव का दादू पढै सुजान॥१०१॥ दादू अषिर प्रेम का
कोई पढैगा येक दादू पुस्तक प्रेम बिन केते पढै अनेक
॥१०२॥ दादू पाती प्रेम की बिरला बांचै कोइ बेद पुरा
ण पुस्तक पढै प्रेम बिना क्या होइ॥१०३॥ दादू कहतां
दिन गये सुणतां सुणतां जाइ दादू ऐसा को नहीं॥

सुणि रांम समाइ ॥१०५॥ मौनि गहै ते बावरे, बोलैं षरे अयांन स
हजैं राते रांम सौं, दादू सोई सयांन ॥१०६॥ कहतां सुणतां दिन
गये, कै कछू न आया, दादू हरि की सगति बिन, प्राणी पछि
ताया ॥१०७॥ दादू कथणीं और कुछ, करणीं करैं कुछ औ
र, तिन थैं मेरा जीव डरै, जिनके ठिक न ठौर ॥१०८॥ अंतरगा
ति और कछू, मुष रसना कुछ और, दादू कथणी और कुछ
तिन कौं नांही ठौर ॥१०९॥ दादू रांम मिलन की कहत हैं, कर
त कुछ और, ऐसे पीव क्यों पाइये, समझि मन बौरे ॥११०॥
दादू बग नीं संग षाइ कारि, मेति वासे मांझी, पै कानां हीं गां
डी पतिसाही षाजी ॥१११॥ दादू टोटा दालदी, लाषौं का
व्यौपार, पै कानां ही गांठडी, सिरै साहूकार ॥११२॥ दादू पेस
बकिसके पंथ मैं धरती अरु आसमान, पांणी पवन दिन
राति का, चंद सूर रहिमांन ॥११३॥ दादू बुसा विसम देस
का, कौंण पंथ गुरदेव, सांई सिरजनहार तूं, कहिये अल
ष अभेव ॥११४॥ दादू महमद किसके दीन मैं, जबराईल
किस राह, इनके मुरसिद पीर की, कहिये एक अलाह ॥
॥११५॥ दादू ए सब किसके ह्वै रहे, यहु मेरे मन मांहि, अल
ष इलाही जगत गुर, दूजा कोई नांहि ॥११६॥ दादू और देही
औलाति कौं, पीयां सदै हिवंनि, सोहं मीयांना घुरे, जो मीयां
मीयंनि ॥११७॥ आई रोजी ज्यूं गई, साहिब का दीदार, गहि
ला लोगों कारनैं, देषै नहीं गंवार ॥११८॥ फल कारणि सेवा क
रैं, जाचैं त्रिभुवन राव, दादू सो सेवग नहीं, षेलैं अपणा डाव
॥११९॥ सहकामी सेवा करैं, मांगैं मुगध गंवार, दादू ऐसे सेव
ग तहैं, फल के सेवणहार ॥१२०॥ तन मन लै लागा रहै, रा
ता सिरजनहार, दादू कुछ मांगै नहीं, ते बिरला संसार ॥
दादू मोहि सेवग रांम का (...) वी

कोसावैनहीं ऐकारयारामीना॥ ॥ अपणी अपणीजा
तिसों लक्षकौहै सैघाति दोहरा सैद्धग रामकी नाकैनहीसर
ति॥ ॥ चोरऋन्याईमसकरा सबनिलिबैसैघाति दोह
सैव गरामका तिलसौंकरैसराति॥ ॥ साधगयासाहिना
णकौसबमिलिमारैलोक दोहरा ऐसादेखिये कलकाडगा
राफ्लोक॥ ॥ दोहरा इन्हंमरमहै हेहरुतरकगयोर जेउकौ
वांधैरहतहै सोगाहिलतविचार॥ ॥ दोहरा सबजाये
कूटलै घरमैबडीबलाइ कोलजालहसजीवका बात
निहीक्रजाइ॥ ॥ अपणी अपणीकरिलीया नेजनमि
हैं बाहि दोहरा ऐकैरूपजल मैनकरि रमतुवाइ॥ ॥ दो
हपारीकैवतनाउधरि नानाछिपिकीजाति बोलगाद्दी
रकौगाहि कहौसैकहालमात॥ ॥ दोहरा जबपुणीऋ
बिचारिये नबसकलज्ञातमायेका कायाकेगुरदेखि
ये तौनानाबरणअनेक॥ ॥ दोहरा लीलराजारामकी
२ घैलैरवहीसेत आपापघेकेरघु छूटीसबैलरं त॥
अपणांपरायाराइहिम देखतहीमरिजाइ॥ दोहराकोजी
नहीं छाहैसोरैजिलिखाइ॥ ॥ दोहरा साधै साधतलगाहै
छिपैहलाहलसाइ तहोजनतेरामजी सुपिनैकदेन
जाइ॥ ॥ दोहरा साधनगतिगुरजैनहीसाहि नम
ग॥ छिपैछेकारहूटैनहीं सोकैसासंतसंग॥
॥ सगाछिपैबिकारकै तिनकौज्ञारमान सगा
नहारकै तिनसौंबहुमान॥ ॥ दोहरा ऐसेकौ
ऐषा तोलीतिमरनजाइ सोधनहीसरीरका
निकासनजाइ॥ ॥ दोहराकाहियेकिछ्तुपग
नैंकोग्राहव अब्जूपलतान्या सतिनमां
कालरेजेतननीरजे जेवाहैसोहर दा

बीजका क्यापछिमेरेगवा॥३८॥दादूजिनिकेकरपणरसो
किया सोअपणामूं[illegible]गवाया॥अलखदेवअंतरिबसे क्या
दूजीजागहजाइ॥३९॥पणरपीवकोदकरि पणरपूजेजा
ण॥अंतकालपणरतथे॥बऊबेडेदहिगंवान॥४०॥ककर
बांध्या गोरडी॥हीरकेबेसास॥अंतिकालहरिजौहरी
दादूसूतकपास॥४१॥पदलीपूजेठदूसी॥इबसीहूठ
सबोगिं॥आंगेदूसहोइगा॥दादूसतिकरिजाणि॥४२
॥ दादूपेडैपापके॥कदेनदीजेपाव॥जिहिपैंडेमेरापी
वमिले॥तिहिपैंडेकाचाव॥४३॥दादूसुकतमारगचा
लेतां॥बुरानकबहूंहोइ॥अमृतपातापाणियां॥मूंदा
नसुणियेकोइ॥४४॥दादूऊछनांहीकानांजेक्याजेच
रियेसोकूर॥सुरनरमुनियरबंधियां॥लोकाचारदकूट
॥४५॥दादूऊछनांहीकानांउधरि॥नरमाणंसबसंसार
साचकूरसमझैनहीं॥नाऊछकीयाविचार॥४६॥दादू
केईदौडे द्वारिका॥केईकासीजांहि॥केईमथुराकौंचलै
ना[illegible] इनारेणमिटे देही म
[illegible] द्वारिका[illegible]
ऊपरिआलेमसबकेरा॥साधूजनघटमांहि॥दादूयेता
अंतरा॥तातैंबरातीनांहि॥४७॥दादूसबथेएककेर
सोएकनजांनां॥जणेजणेकाह्वैगया यहुजगतदिवा
ना॥४८॥दादूजेकोठलैसाचकौं॥तोसाचारहैसमा
इ॥कौडीबर कूंदीजिये रतनअमोलिकजाइ॥
दादूकूडासाचाकरिलीया विषअमृतजांनां ऊबको
[illegible]
गसाचका॥साचाहैसोजाइ॥
दीयाछिपाइ॥५०॥सा[illegible]
ऊकाहोइ

दादू साचा अंगन हे लिये, साहिब मानै नाहिं। साचा
सिर पर राषिये, मिलि रहिये ता मांहि॥ दादू साचे सा
हिब कौं मिले, साचे मारग जाइ। साचे सौं साचा भया, तब
साचे लीये लाइ॥ दादू साचा साहिब सेविये, साची
सेवा होइ। साचा दरसन पाइये, साचा सेवग सोइ॥
साचे का साहिब धणीं, समरथ सिरजनहार। पाषंड
की यहु पिरथमी, परपंच का संसार॥ झूठा साचा
वा होवै तिन कौ दादू राम न मन मानै॥ दादू कहै
आसिक अलाह के, मारे अपने हाथ। ष कहै आल
म औजूद सौं, कहै जुबां की बात॥ दादू पाबंद पीव
न पाइये, जे अंतरि साच न होइ। ऊपर थैं क्यूं ही रहौ,
भीतरि के मल धोइ॥ साच अमर जुगि जुगि रहै,
दादू बिरला कोइ। झूठ बहुत संसार मैं, उतपति परले
होइ॥ दादू झूठा बदलिये, साच न बदल्या जाइ।
साचा सिर परि राषिये, साध कहै समझाइ॥ साच न
सूझै जब लगै, तब लग लोचन अंध। दादू मुकता छाडि
करि, गल मैं घाल्या फंध॥ साच न सूझै जब लगै,
तब लग लोचन नाहिं। दादू निरबंध छाडि करि, बंध्या द्वै
पष मांहि॥ करम फिरावै जीव कौं, करमौं कौं क
रतार। करतार कौं कोई नहीं, दादू फेरणहार॥ जे
साहिब सिरजै नहीं, तौ आपै क्यूं करि होइ। जे आपै
ऊपजै, तौ मरि करि जीवै कोइ॥ जे यहु करता
जीव था, संकट क्यूं आया। करमौं के बसि क्यूं भया,
क्यूं आप बंधाया॥ क्यूं सब जोनी जगत मैं, घर बारि
चाया। क्यूं यहु करता जीव कै, पर हाथि बिकाया॥
येक साच सूं गहगही, जीवण मरण निबाहि। दा
... जाइ ... दादू म

तहांछिपाईये साचनछानोहोइ सेसरसातलिगगनछ
प्रगटकयेसोइ ।। दादूकहांछानारहसुनिअनां सं
ह्रारगतसबदबाद प्रगटतीनलोकमैं सकलप्रका
सधू ।।१००।। दादूकहांसिवबैठाध्यानधरि कहांकाली
रानाम सोकछांनाहोइगा जेरह्यातैगारांम ।। दा
दूकहांलीनसुषदेवथा कहांपीपारैहारा दादूसासा
कूछिपे सकललोकप्रकास ।।१०२।। अगमगमगोचरर
षिये करिकरिकोटिजतंन दादूछानांक्यूंरहैजिसघ
टिरामरतंन ।।१०३।। दादूअगमपयालमें साचाबोलै गो
सकललोकसिरिदेपिये प्रगटसबहीहोइ ।।१०४।। छां
नेंकीजिये चौडैप्रगटहोइ दादूपैसिपयालमें
बुराकरैजिनिकोइ ।।१०५।। आपाकोयाजगमैंनहीं को
याजागैआइ साहिबकेदरिन्यावहै जेझूठसांमरजा
इ ।।१०६।। सोईजनसाधूसिधसो सोईसतवादीसूर सो
ईमुनियरदादूवडे सनमुषरहणिहजूरि ।।१०७।। दादूसो
ईजनसाचेसोसती सोईसाधिकसुजांण सोईग्यांनी
सोईपंडिता जेरतेरामरहमांन ।।१०८।। दादूसोईऔलियासोई
पयंमर सोईसोफीसोईसेष सोईमसाइकसोई पी
रयेकअलेष ।।१०९।। दादूसोईकाजीसोईमुलां सोई
मोमिनमुसलमांन सोईसयांनेसबभलै जेरतेरहिमा
न ।। राममनामकोंबलजाउं दे ताममांड्याहाट
साईसौसौदाकरै दादूषोलिकपाट ।। दिढदेषि
रषवांकरै दूरि ।। दादूमां ।।
बड़ीदाद ।।
दादूयोकि
जिलाकैहरना

रामकी तौ कोइ गावै है ॥ दादू दूसर हीन है तौ कोइ
कहै गा ॥ येक राम छाडै नहीं छाडै सकल बिकार
दूजा सहजै होइ सब दादू का मत सार ॥ जे तू चाहै
राम कौ तौ एक मनां आराध दादू दूजा दूरि करि मन
इ सौं करि साध ॥ कबीर बिचारा कहि गया बहु
त सौ तिस मझाइ दादू दुनियां बावरी ता कै संग न जा
इ ॥ पावहिगे उस ठौर कौ लंघे गये जु घाट दादू
क्या कहि बोलिये अजहूं बिच ही बाट ॥ साचा राम
साच सौं ... राता कूं न दादू न्यावन वेरिये सब साधों की
एह ॥ जे पहुंचे ते कहि गये तिन की येकै बात सब सा
धों का येक मत ये बिच के बारह बाट ॥ जे पहुंचे ते
कहि गये तिन की येकै बात सबै सयाने येक मत उन
की येकै जात ॥ सब सयाने कहि गये पहुंचे का घर
एक दादू मारग मांहि के तिन की बात अनेक ॥ सूरि
ज सनमुख आरसी पावक कीया प्रकास दादू सांई साध
बिच सहजै निपजै दास ॥ सूरिज साषी भूत है सा
च करै प्रकास चोर डरै चोरी करै रैणि तिमर का नास
॥ चोर न भावै चांदणां जिनि उजियारा होइ सूते
का सब धन हरौं मुझै न देषै कोइ ॥ घलि करि घलि
करि घाइ करि मारै जिहिं तिहिं फेरि दादू ताहि न भीजिए
ओ समीप तेरि ॥ घटि घटि दादू कहि समझावै जैसा
करै सु तैसा पावै को काहू का सीरी नाहीं साहिब दे
षै सब घट मांही ॥
दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतह बंदनं स
ब साधवा प्रणांमं पारंगतह ॥ दादू दूंडे ज्ञान सब च
तुराई जलि जाइ अंजन मंजन फूंकि दे रहै राम ल्यौ ला
इ ॥ राम जिनां सब जी के नाहीं कहूं ताके प्राणियां

सकल अहथां कोटि करि । दादू जो मषियां न आ । तांनी पंहि
न बहुत हैं दाता सूर अनेक । दादू सेष अनंत है लागि रह्या
सो येक ॥४॥ कोरा कलस अवांह का । ऊपरि चित्र अने
क । क्या कीजे दादू बस्त बिन । ऐसे नांनां सेष ॥५॥ बाहरि
दादू सेष बिन । भीतरि बस्त अगाध । सो ले हिरदै राषिये
दादू सनमुष साध ॥६॥ दादू सांडा तरिषरि बुस्त सौं । जूंम
दौमोलि बिकाइ । षाली सांडा बस्त बिन । कौडी बदलै जा
इ ॥७॥ दादू कनक कलस बिष सौं भरया । सो किस आवै
काम । सो धनि कूटा चांम का । जामैं अंम्रत रांम ॥८॥ दादू
देषै बस्त कौं । बासण देषै नांहि । दादू भीतरि भरि धरया । सो
मेरे मन मांहि ॥९॥ दादू जे हूं समझै तौ कहौं । साचा एक अ
लेष । डाल पांन तजि मूल गहि । क्या दिषलावै सेष ॥१०
दादू सब दिषलावैं आपकौं । नांनां सेष बणाइ । जहां आ
पा मेटण हरि भजन । तिहिं दिसि कोई न जाइ ॥११॥ दादू सा
कत क्षेरहौ । जिहिं दिसि पहुंचे साध । मैं तैं मूरिष गहि रहे
लोभ बडाई बाद ॥१२॥ दादू सेष बहुत संसार मैं । हरिजन
बिरला कोइ । हरिजन राता रांम सौं । दादू येकै सोइ ॥१३॥ ही
रे रीझै जौंहरी । षलि रीझै संसार । स्वांगि साध बहु अंतरा
दादू सति बिचार ॥१४॥ स्वांगि साध बहु अंतरा । जेता ध
रणि आकास । साध राता रांम सौं । स्वांग जगत की आस
॥१५॥ दादू स्वांगी सब संसार है । साधू बिरला कोइ । जैसे
चंदन बावनां । बनि बनि कहीं न होइ ॥१६॥ दादू स्वांगी सब
संसार है । साध कोई येक । हीरा दूरि दिसंतरां । कंकर औ
र अनेक ॥१७॥ दादू स्वांगी सब संसार है । साध समंद पा
र । अनल पंष कहूं पाईये । पंषी कोटि हजार ॥१८॥ दादू
स्वांगी सब संसार है । साधू सोधि सुजाण ज्यां
दादू बहुत देहरा ॥१९॥ दादू चंद

नांहि सकल समंद हीरा नहीं त्यूं साधू जग मांहि ॥२०॥ ऐसा
ई कांई फेर है सांई तिसका होइ दादू जी बात सब जे बिन
पावै कोइ ॥२१॥ दादू स्वांग सगाई कुछ नहीं रांम सगाई
साच दादू नाता नांउं का दूजै अंगन राच ॥२२॥ दादू एकै
आतमां साहिब है सब मांहि साहिब कै नातै मिलै भे
ष पंथ कै नांहि ॥२३॥ दादू माला तिलक सौं कुछ नहीं
काहू सेती कांम अंतरि मेरे एक है अहनिस उस का नां
म ॥२४॥ दादू संतू भेष धरि थ्या बोलै निंदा अरु अपवाद सा
चे कौं झूठा कहै लागै बहु अपराध ॥२५॥ दादू कबहूं
कोई जिनि मिलै भगत भेष सौं जाइ जीव जनम का नास
है कहै अमृत बिष खाइ ॥२६॥ दादू पहुंचे पूत बटाऊ होइ क
रि नट ज्यूं काछ्या भेष षबरि न पाई खोज की हम कौं मि
ल्या अलेष ॥२७॥ दादू माया कारणि मूंड मुडाया एतो
जोग न होई पारब्रह्म सौं परचा नांही कपट न सीझै कोई
॥२८॥ पीव न पावै बावरी रचि रचि करै सिंगार दादू फि
रि फिरि जगत सौं करैगी बिभचार ॥२९॥ प्रेम प्रीति सने
ह बिन सब झूठे सिंगार दादू आतम रतन नहीं क्यूं मां
नैं भरतार ॥३०॥ दादू जग दिषलावै बावरी षोडस क
रै सिंगार तहां न संवारे आप कौं जहां भीतरि भरतार
॥३१॥ सुध बुध जीव धिजाइ करि माला संकल बाहि
दादू माया ग्यांन सौं स्वांमी बैठा षाइ ॥३२॥ जोगी जंगम सेवड़े
बौध संन्यासी सेष षटदरसन दादू रांम बिन सबै कपट के भे
ष ॥३३॥ दादू सेष मसाइक अवलिया पैकंबर अरु पीर
दरसन सौं परसन नहीं अजहूं बेली तीर ॥३४॥ नानां भेष
बणाइ करि आपा देषि दिषाइ ॥ दादू दूजा दूरि करि सा
हिब सौं ल्यौ लाइ ॥३५॥ दादू देषा देषी लोक सब केते आ
वहिं जाहिं रांम सनेही नां मिलै जे निज रूप मांहिं ॥३६॥

दादू सब देषैं असथूल कौं। यहु ऐसा आकार॥ सूषिम सहज न सूझई। निराकार निरधार॥३७॥ दादू बाहर का सब देषिये। भीतर लष्या न जाइ॥ बाहरि दिषावा लोक का। भीतरि राम दिषाइ॥३८॥ दादू यहु परष सराफी ऊपली। भीतरि की यहु नांहि॥ अंतर की जांणैं नहीं। तातैं षोटा षांहि॥३९॥ दादू सचु बिन साईं नां मिलै। भावै भेष बणाइ॥ भावै करवत उरध मुष। भावै तीरथ जाइ॥४०॥ दादू साचा हरि का नांउ है। सो ले हिरदै राषि॥ पाषंड प्रपंच दूरि करि। सब साधौं की साषि॥४१॥ हिरदै की हरि लेइगा। अंतरजांमी राइ॥ साच पियारा राम कौं। कोटिक करि दिषलाइ॥४२॥ दादू मुष की नां गहै। हिरदै की हरि लेइ॥ अंतर सूधा एक सौं। तौ बोल्यां दोस न देइ॥४३॥ सब चतुराई देषिये। जे कुछ कीजे आंन॥ मन गहि राषै एक सौं। दादू साध सुजांन॥४४॥ सबद सुई सुरति धागा। काया कंथा लाइ॥ दादू जोगी जुगि जुगि पहरै। कबहूं फाटि न जाइ॥४५॥ ग्यांन गुरू का गूदड़ी। सबद गुरू का भेष॥ अतीत हमारी आतमां। दादू पंथ अलेष॥४६॥ दादू सकल अंग अविगत है। दरवेसी दरवेस॥ दादू सिकल सबर है। अकलि पीर उपदेस॥४७॥ दादू सतगुरि माला मन दीया। पवन सुरति सौं पोइ॥ बिन हाथौं निसदिन जपै। परम जाप यौं होइ॥४८॥ दादू झूठा राता झूठ सौं। साचा राता साच॥ ऐता अंध न जांणहीं। कहां कंचन कहां काच॥४९॥

अंग ॥१४॥ साषी २५४६॥ साधु को अंग लिष्यते॥

दादू नमो नमो निरंजनं। नमसकार गुरदेव तह। बंदनं सब साधवा। प्रणांमं पारंगतह॥१॥ दादू निराकार मन सुरति सौं। प्रेम प्रीति सौं सेव॥ जे पूजे आकार कौं। तौ साधू प्रतषि देव॥२॥ दादू सो जन हरि जे देह कौं। लीया मन.

मुषमे लता पाया आतमराम ॥५॥ जंग कायाजीवकी तर
सांईके साध ॥ दादू सब संतो बिचे मांहें आप अगाध ॥६॥ साधु
जन संसारमें सो जल बोहिथ अंग ॥ दादू केते उधरे जेते बैठे
संग ॥७॥ साधूजन संसारमें सीतल चंदन बास ॥ दादू केते उध
रे जे आये उन पास ॥८॥ साधूजन संसारमें हीरे जैसा हो
इ ॥ दादू केते उधरे संगति आये सोइ ॥९॥ साधूजन संसारमें
पारस परगट गाइ ॥ दादू केते उधरे जेते परसे आइ ॥१०॥ रूषबृ
ष बनराइ सब चंदन पासैं होइ ॥ दादू बास लगाइ करि
कीये सुगंधे सोइ ॥११॥ जहां अरंड अरु आक पे तहां चंद
न ऊगा मांहि ॥ दादू चंदन करि लीये आक कहै को नांहि
॥१२॥ साधनदी जल रांमरस तहां पषालै अंग ॥ दादू नम
ल मल गये साधूजन के संग ॥१३॥ साधू बरषै रांमरस अम
त बांणी आइ ॥ दादू दरसन देषतां त्रिबिध ताप तजि जाइ
॥१४॥ संसार बिचारा जात है बहिया लहरि तरंग ॥ भेरे
बैठा ऊबरे सति साधौं के संग ॥१५॥ दादू नेड़ा परम पद सा
धु संगति मांहि ॥ दादू सहजैं पाईये कबहूं निरफल नांहि
॥१६॥ दादू नेड़ा परम पद करि साधू का संग ॥ दादू सहजैं
पाइये तन मन लागै रंग ॥ दादू नेड़ा परम पद साधू संगति
१५ इ ॥ दादू सहजैं पाईये स्याबति सन मुष सोइ ॥१७॥ दादू ने
ड़ा परम पद साधूजन के साथ ॥ दादू सहजैं पाईये परम पदारथ
हाथ ॥१८॥ साध मिलै तब ऊपजे हिरदै हरि का भाव
इ संगति साध की जब हरि करे पसाव ॥१९॥ साध मिलै तब
ऊपजै हिरदै हरि का हेत ॥ दादू संगति साध की किरपा क
रै तब देत ॥२०॥ साध मिलै तब ऊपजै प्रेम भगति रुचि
दादू संगति साध की दया करि देवै सोइ ॥२१॥ साध मिलै त
ब ऊपजै हिरदै हरि की प्यास ॥ दादू संगति साध की अ

गतगुरुदेवआस॥१९॥ साधमिलैतबहरिमिलै सबसुखआ
नंदमूर। दादूसंगतिसाधकी रांमरसातरदूर॥२०॥ ब
रकथाउसयेककी इजानोंहीआन। दादूतनमनलाइ
करि सदासुरतिरसपांन॥२१॥ प्रेमकथाहरिकीकहै फ
रेसगतिस्योंलाइ पीवैपिलावैरामरस सोजनमिलंबौ
आइ॥२२॥ दादूपीवैपिलावैरामरस प्रेमसगतिगुणगा
इ नितप्रतिकथाहरिकीकरै हेतसहितस्योंलाइ॥२३॥
आनकथासंसारकी दम [illegible] सुणांतेआइ तिसकामुख
[illegible]कहै दईन दपाईना॥ [illegible] दादूमुखदिखलाईसा
धकां॥जेतुमहीमिलदेआइ॥तुम्हमांहीअंतरकरै
दईनदिखाईताहि॥२५॥ जबदरहौनबदासियो तुम्हपे
मांगौयेह दिनप्रतिदरसनसाधका प्रेमसगतिदिढदेह
॥२६॥ साधसपीडामनकरै सतगुरसबदसुणाइ मींरा
मेरामिहरकरि अंतरिबिरहउपाइ॥२७॥ जेजांहौवेतू
कहै कटिबपिकदेनजाइ दादूसोमुषआतमा साध
पसेआइ॥२८॥ साहिबसोंमनमुषरहै संतसंगतिमेंआ
इ दादूसाधसबकहै सोनिरफलक्यूंजाइ॥२९॥ ब्रह्मगा
इत्रपलोकमें साधूअमयनपांन मुषमारगअंमृतझरै
कतदहैदादूआन॥३०॥ दादूपायाप्रेमरस साधूसंगति
मांहिं फिरिफिरिदेषैलोकसब यहुरसकतहूंनांहिं
॥३१॥ जिसरसकोंमुनियरमरैं सुरनरकरैकलाप सोरस
सहजैंपाइये साधूसंगतिआप॥३२॥ संगतिबिनसीझै
नहीं कोटिकरैजेकोइ दादूसतगुरसाधबिनकबहूं
सुधनहोइ॥ [illegible] दादूनेडाइरिपै आ
मनमनवाचाक्रमना दादूसंगतिसाध
होइसमेन वेदनवेदनपाव नीलनसंग [illegible] जे

येकला सेवग स्वांमी होइ जगत दुहागी राम बिन साध सुहा
गी सोइ दाइ जेन सुषिया सये दुनियां कों बहु दंद
दुनी दुषी हम देषता साधनि सदा आनंद दा
इ देषत हम सुषी सांई कै संगि लागि ये सो सुषिया होइ ग
जा कै पूरे साग मीगा पीवै राम रस सो मीमां होइ स
हजै कहु वा मिटि गया दाइ निरबिष सोइ दाइ अंत
रि येक अनत सौं स दा निरंतर प्रीति जिहिं प्रांणी प्रीतम ब
से सो बैताह त्यवन जीति दाइ मेहा सीतहिं दास
जिहिं सरगष जे पीव बहुत जोति करि वारसों तापरि
जे जीव दाइ लीला राजा राम की षेलै सब ही संत
आपा षये केसया हूटी सबे मरंति दाइ आनंद स
अडोलसैं रांम सनेही साध प्रेमी प्रीतम कों मिले यक
ष अगम अगाध सदा लीन आनंद मैं सहज रूप स
ब ठोर दाइ देषे येक कों दूजा नाही और यक
दीपक साध का ब्रह्म जोति प्रकास दाइ पंषी संत जन त
हां परै निज दास घर बन मांहें राषिये दीपक जोति
जगाइ दाइ प्रांण पतंग सब जहां दीपक तहां जाइ घ
र बन मांहें राषिये दीपक जलता होइ दाइ प्रांण पतंग स
ब जाइ मिले सब कोइ घर बन मांहें राषिये दीपक
गट प्रकास दाइ प्रांण पतंग स ब आइ मिले उस पास
घर बन मांहें राषिये दीपक जोति सहेत दाइ प्रां
ण पतंग सब आइ मिले उस हेत जिहिं घटि प्रगट रा
म है सो घट तज्या न जाइ नैनौं मांहें राषिये दाइ आप न
साइ दाइ जिहिं घटि दीपक राम का तिहिं घट तिम
र न होइ उस जियार जोति के सब जग देषे सोइ
कबहूं न बिहडै सो रतन साधू हिरदै मंत होइ दा

अानंदअरमखातिसारहीरोइ ॥ ॥ वृथ्वनदांसारही
भदीनारामीनेर मनंदडी अम्रियरनार छोडसकल
गुणदह निराकारसाम्रितिरह अनदसमनेदारले
ह दादूम्ययकरिपाईव अनचरमीकोंहेह ॥ साध
सदामजांसिरह मलाकहनकोइ दादूपक्षमरहा
कमनलागोकोइ साधसदानजंमिरह मैलाकहनेकी
इ मुनिसरोवरहमला दादू छिरलोकोइ ॥ सादि
कागाहारसह गेदामांहिकोइ दादूमवरसाधसा
रजानाहीकोइ ॥ दादूजवलगोनेहनहींबिलू साध
कहैतेअंग तवलगकहकरिमानिये सांदूकाएस
ग ॥८७॥ दादूसोईजनसाधसिधसो ॥ सोईसकलसिरमो
र ॥ जिहिकेहिरदैहरिबसे दूजानांही ओर ॥८८॥ साधसि
रोमणिसोधिले ॥ नांहीपूरि परि आइ ॥ सजीवनिसांभ्रचडै
इआवहिया जाइ ॥८९॥ दादूऔगुणछाडैगुणगहै सो
ईसिरोमणिसाध ॥ गुणऔगुणथैरहितहै सोनिजब्रह्म
अगाध ॥९०॥ दादूसीधवफटकपषांणका ऊपरियेके
रंग ॥ पांणीमांहैदेषिये न्यारान्यारा अंग ॥९१॥ दादूसीधव
केआपानही ॥ नीरषीरएकसंग ॥ आपाफटकपषांणके ॥
मिलैनजलकेसंग ॥९२॥ दादूसवजगफटकपषांण है सा
धसीधवहोइ ॥ सीधवएकेकैरह्या पांणीपथरहोइ ॥९३॥
अेवपदरअरसमें उसोईआदि ॥ दादूपसेतिनकेअलगा
न्यापे ॥९४॥ अेवपदरअरसमें बेगारिरीपसेनि ॥ दादू
पसेतिनिके जेदीदारलहेनि ॥९५॥ अेवपदरअरसमेंजि
न्हीं रूहरदेनि ॥ दादूपसेतिनके सुकीगाल्हीकेनि ॥९६॥ अ
वेपदरअरसमें लुडंदाआहीन दादूपसेतिनिके असां
पूतरिहीनहे ॥९७॥ अेवपदरअरसके
दादूपसेतनिके किनेईआहीन ॥९८॥

का आसिकअ्मरसपिवंनि ओंपदृरअलाह दा बुद्धाइ
हेजीवनि ॥१०१॥ आतमआसणरांमका तहांबसेभगवा
न दादूदनूंपरसपरहरिआतमकाथान ॥१०२॥ जदांस
मतहांसंतजन जहांसाधतहांराम दादूदनूंएकठे
अरसपरसहिआंम ॥१०३॥ हरिसाधयूंपाईये अबिगत
केआरंध साधसंगतिहरिमिले हरिसंगनिपेसाध
॥१०४॥ रांमनांमसोंमिलिरहै मनकेछाडिबिकार तो
हिरदामांहैंदेषिये इनदूंकादीदार ॥१०५॥ साधजन
उसदेसका आयाइहिसंसार दादूउसकौंपूछिए
प्रीतमकेसमाचार ॥१०६॥ समाचारसतिपीवके कोसा
धकहैगाआइ दादूसीतलआतमां सुषमेंरहेसमाइ
॥१०७॥ साधसबदसुषबरिषिहै सीतलहोइसरीर दादू
अंतरिआतमां पीवेहरिजलनीर ॥१०८॥ दादूदतद
रबारका कोसाधूबांटेआइ तहांरांमरसपाइये जे
हांसाधूतहांजाइ ॥१०९॥ दादूसुरतासनेहीरामकासो
मुझमिलवोआंणि तिस आगेहरिगुणकथों सुणतं
नकरईकांणि ॥११०॥ सबहीम्रतकसमानहैं जीयात
बहीजांणि दादूछाटाअमीका कोसाधबांटेआणि
॥१११॥ सबहीमिरतककेरहै जीवेंकोंउपाइ दादूअम्र
तरांमरस कोसाधसींचेआइ ॥११२॥ सबहीमिरतकमा
हिहैं क्यूंकरिजीवैसोइ दादूसाधप्रेमरस आणिपि
लावेकोइ ॥११३॥ सबहीम्रतकदेषियें किहिबिधिजी
वेंजीव साधसुधारसआणिकरि दादूबरिषैपीव
॥११४॥ हरिजलबरिषैबाहिरा सूकेकायाषेत दादू
हरियाहोइगा सींचणहारसचेत ॥११५॥ गंगाजमनासुर
सती मिलैजबसागरमांहि षाराषाणीकेगया
हमींकनाहि ॥ दादूरांमनछांडिये गहिले

असंसार साधसंगतिसोमिले ऊसंगतिसंगतिवार॥११६॥
जंपतपकरणीकरिगये॥ऋगपहूंतेजाइ॥ दादूमनकी
वासनां नकपडेफिरिश्राइ॥११७॥ दादूऊसंगतिसबु
परहरी॥मातपिताकुलकोइ॥सजनसनेहीबंधवा॥सावे
श्रापाहोइ॥११८॥श्रपंानमूरिषहितोकारा॥संजनोस
मोरिपह॥ग्यानवानजननते॥निरामई मनोजिनह॥११९॥
ऊसंगतिकेनगये॥जिनकानांवनगांव॥दादूतेक्यूंउधरें॥
साधनहीजिसगांव॥१२०॥भावभगतिकारंगकहि॥ब
टपारेमोरेबाट॥दादूद्वारामुकतिका॥षोलेजडेंकपाट
॥१२१॥दादूसाधसंगतिश्रंतरपडे॥तोभागे गाकिसठौर
प्रेमभगतिभावेनहीं॥यहुमनकामतश्रोर॥१२२॥बैरा
गीबनमेंबसे॥घरबारीघरमांहि॥रांमनिरालारहिगया
दादूइनमेंनांहि॥१२३॥दादूरांमभिलणाकेकारणें॥जेतू
षराउदास॥साधूसंगतिसोधिले॥रांमउनंहूकेपास॥१२४॥
दादूरांमभिलनकीकहतहैं॥करतेकछुश्रोर॥ऐसेपी
वक्यूंपाइये॥समझिमनबौरे॥१२५॥ दादूसोईसेवगरा
मका॥जिसेनइंजीचीत॥दूजाकोभावेनहीं॥एकपियारा
मीत॥१२६॥मूनिगहेतेबावरे॥बोलेंधरेश्रग्यान॥सहजे
रातेरांमसों॥दादूसोईसयान॥१२७॥ ब्रह्मासंकरसेसमु
नि॥नारदध्रूसुषदेव॥सकलसाधदादूसही॥जेलागे हरि
सेव॥१२८॥साधकवलहरिबासनां॥संतभवरसंगिश्रा
इ॥दादूपरिमललेचले॥मिलेरांमकोंजाइ॥१२९॥दादूसह
जेमेलाहोइगा॥हमतुमहरिकेदास॥श्रंतरिगतितोमि
लिरहे॥पुनिप्रगटप्रकास॥१३०॥श्रानममोंहेंरांमहैं
हजानांकोहोइ॥सेवाबंदनश्रारती॥साधकरैसबकोइ
॥१३१॥ संतउतारेंश्रारती॥तनमननमंगलचार॥दादूबलि
बलिवारणें॥तुमपरिसिरजनहार॥१३२॥

रि मोटे भाग साधूं का दरसन कीया। कहा करै जम काल। राम र
साइण भरि पीया ॥१२४॥ दादू ये ता अबिगत आप थैं साधूं
कौ अधिकार। चौरासी लष जीव का तन मन फेरि सवारि
॥१२५॥ बिष का अमृत करि लीया पावक का पांणी। बांका
सूधा करि लीया सो साध बिनांनी ॥१२६॥ दादू ऊरा पूरा क
रि लीया षारा मीठा होइ। फूटा सारा करि लीया साध बि
मेकी सोइ ॥१२७॥ बंधा मुकता करि लीया उरझ्या सुरझि
समांन। बैरी मीता करि लीया दादू उतम ग्यांन ॥१२८॥ झूठा
साचा करि लीया काचा कंचन सार। मैला निरमल करि ली
या दादू ग्यांन बिचार ॥१२९॥ कोटि बरस लौं राषिये बंस
चंदन पास। दादू गुण लीये रहे कदे न लागे बास ॥१३०॥ को
टि बरस लौं राषिये पथर पांणी मांहि। दादू आडा अंग है
भीतरि भेदै नांहि ॥१३१॥ कोटि बरस लौं राषिये लोहा पा
रस संग। दादू रोम का अंतरा पलटै नांही अंग ॥१३२॥ को
टि बरस लौं राषिये जीव ब्रह्म संगि दोइ। दादू मांहै बास
नां कदे न मेला होइ ॥१३३॥ सतगुर चंदन बावनां लागे र
हे भुवंग। दादू बिष छाडै नहीं कहा करै सतसंग ॥
॥१३४॥ सतगुर साध सुजांण है सिष का गुण नहीं जाइ। दा
दू अमृत छाडि करि बिषै हलाहल षाइ ॥१३५॥ काया क
मल गाड करि नीरथ अंचै जाइ। नीरथ मांहै कौ जिये सो
कैसे करि जाइ ॥१३६॥ जहां तिरिये तहां डूबिये मन मैं मे
ला होइ। जहां छूटै तहां बंधिये कपट न सीझै कोइ।
॥१३७॥ दादू जब लग जीविये सुमिरण संगति साध। दादू सा
धूं राम बिन दूजा सब अपराध ॥१३८॥
॥[illegible]॥ दादू नमो नमो निरंजनं
नमसकार गुरदेवतः। बंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारं
गतः ॥१॥ दादू पष रहिता मैं जसे सुष दुष येक समा[illegible]

मैंनें जीवै सहज सों॥ रे सापद निरबांण॥२॥ सहज रूप
मन का भया॥ जब द्वै द्वै मिटी तरंग॥ ताता सीला समि भया
तब दादू येकै अंग॥३॥ सुष दुष मन मांनैं नहीं॥ रांम रंगि
राता॥ दादू दून्यूं छाडि सब॥ ऐमर सिमाता॥४॥ मति मोटी
उस साध की॥ द्वै पष रहित समांन॥ दादू आपा मेटि करि
सेवा करै सुजांण॥५॥ कलू न कहावै आपकौ॥ कांहू सं
गिन जाइ॥ दादू न्रपष कै रहै॥ साहिब सों ल्यौ लाइ॥६॥
सुष दुष मन मांनैं नहीं॥ आपा पर समि भि साइ॥ सो मन मन
करि सेविये॥ सब पूरण ल्यौ लाइ॥७॥ नांद मछाडै नांग
वै ऐसा गया न बिचार॥ मधि सा दूसे वै सदा॥ दादू मुक
ति दुवार॥८॥ सहज सुंनि मन राषिये॥ इन दून्यूं के मां
हिं॥ लै समाधि रस पीजिये॥ तहां काल भै नांहि॥९॥ आ
पा मेटै मनका॥ आपा धरै आकास॥ दादू जहां जहां द्वै
नहीं॥ मधि निरंतर बास॥१०॥ नहीं म्रतक नहीं जीवता
नहीं आवै नहीं जाइ॥ नहीं सूता नहीं जागता॥ नहीं भू
षा नहीं षाइ॥११॥ न तहां चुप न बोलनां॥ मैं तैं नांही कोइ
दादू आपा पर नहीं॥ न तहां येक न दोइ॥१२॥ दादू इस आ
कार थैं दूजा सूषिम लोक॥ ता थैं आगै ओर है॥ जहां बा
हरष न सोक॥१३॥ दादू हद छाडि बेहद मैं॥ निरभै निरपष हो
इ॥ लागि रहै उस येक सौं॥ जहां न दूजा कोइ॥१४॥ दादू
जे ओंनर होत हैं॥ जिनि आंणै मन मांहिं॥ तहां लै मन कौं
राषिये॥ जहां कछू दूजा नांहिं॥१५॥ जब निराधार मन र
हि गया॥ आतम के आनंद॥ दादू पीवै रांम रस॥ भेटे प
रमानंद॥१६॥ निराधार घर कीजिये॥ जहां नांही धरणि
आकास॥ दादू निहचल मन रहै॥ निरगुण के बेसास
मन चित मनसा आतमा॥ सहज सुरति
पंचौं मिले जं थैं धरती आ

ल कबीर का। आसे घा नहीं जाइ॥ दादू डाकै जग गुर
लहि पहै तुम आइ॥१९॥ दादू रद्द ति कबीर की कठि
न विषम यहु चाल। अधर एक सौ मिलि रह्या। जहां
न झंपै काल॥२०॥ निराधार निज सगति क्रि। निराधा
र निज सार। निराधार निज नांउ ले। निराधार निरकार॥
निराधार निज राम रस। कोसाधू पीवण हार॥ निरा
धार नमल है। दादू ग्यान बिचार॥२१॥ दादू बिचरा मन
केला आपै। आवण जाण न देई॥ जहां केतहां सब रा
षै दादू पार पहूंते सेई॥२२॥ चलु दादू तहां जाइये।
जहां मरै न जीवै कोइ। आवागवन भै को नहीं। जहां
सदा एक रस होइ॥२३॥ चलु दादू तहां जाइये। जहां
चंद सूर नहीं जाइ। राति दिवस का गमि नहीं। सहजै
रह्या समाइ॥२४॥ चलु दादू तहां जाइये। माया मोह
थें दूरि। सुष दुष को ब्यापै नहीं। अबिनासी घर पूरि
॥२५॥ चलु दादू तहां जाइये। जहां जम जौरा को ना
हिं। काल मीच लागै नहीं। मिलि रहिये ता मांहि॥२६
॥ एक देस हम देषिया। तहां रुति नहीं पलटै कोइ।
हम दादू उस देस के। जहां सदा एक रस होइ॥२७॥
एक देस हम देषिया। तहां बस्ती ऊजड़ नांहि। हम
दादू उस देस के। सहज रूप ता मांहि॥२८॥ एक देस
हम देषिया। तहां निस दिन नांही घाम। हम दादू उ
स देस के। जहां निकटि निरंजन राम॥२९॥ बारह मा
सी नीपजै। तहां किया परवेस। दादू सूका ना पड़ै।
हम आये उस देस॥३०॥ जहां बेद कुरांण का गमि
नहीं। तहां किया परवेस। तहां कछु अचिरज देषि
या। यहु कछु औरै देस॥३१॥ नांघ रहला नब
रला। जहां बूझै निज नांउ। दादू उनमनी मन रहै

सलातसोईगांउ ॥३३॥ नांघरिरह्यानबनगया नांकु
छकीयाकलेस ॥ दादूमनहीमनमिल्या ॥ सतगुर
केउपदेस ॥३४॥ कादेदादू घरिरहै कादेबनषंडजाइ ॥ घ
रबनरहितारामहै तादीसोंल्योलाइ ॥३५॥ दादूजिनि
प्राणीकरिजांणियां घरबनयेकसमान घरमांहेब
नज्यूंरहै सोईसाधसुजांण ॥३५॥ सबजगमांहेयेकला
देहनिरंतरबास ॥ दादूकारणिरांमके घरबनमांहिउ
दास ॥३६॥ घरबनमांहैसुषनहीं सुषहैसांईपास ॥ दा
दूतासोंमनमिल्या इनथैंभयाउदास ॥३७॥ नांघरेरह
यानबनसला ॥ जहांनहीनिजनांउं ॥ दादूउनमनीम
रनरहै सलानसोईगांउं ॥३८॥ बैरागीबनमैंबसे ॥ घर
बारीघरमांहि ॥ रांमनिरालारहिगया ॥ दादूइनमैंनांहि
॥३९॥ दीनदुनीसदिकैकरौं ॥ टुकदेषणदेदीरतन
मनसीछिनछिनकरौं ॥ भिस्तदोजगभीवा २ ॥४०॥ दा
दूजीवणमरणका मुझिपछितावांनांहि ॥ मुझपछि
तावापीवका रह्यांनैंनउमांहि ॥४१॥ अगनकसुष
दुषतजे ॥ जीवणमरणनसाइ ॥ दादूलोतीरामका
कोआवैकोजाइ ॥४२॥ अगनकसंसैनहीं ॥ जीव
णमरणभैनांहि ॥ रांमबिमुषजेदिनगये ॥ सोसालै
मनमांहि ॥४३॥ : दादूहिंदुतुरकनहोइबा ॥ साहि
बसेतीकांम ॥ षटदरसंनकेसंगिनजाइबा ॥ नपष
कहिबाराम ॥४४॥ षटदरसंनदून्यूंनहीं ॥ निरालंब
निजबाट ॥ दादूयेकेआसिरैलंघेऔघटघाट ॥
दादूनाहमहिंदुहोंहिंगे नांहंमसुसलमांन ॥ षटद
रसंनमैंहमनहीं ॥ हमरतेर [illegible] ॥ न[illegible]हि
हदेकुरा ॥ [illegible]तुकमसीति
[illegible] ॥४७॥

सिनासी सेव ॥ अटहर सेन ॥ दादू राम बिन सबै कपटये
ष ॥५२॥ दादू अलह राम का है पषपे न्यारा रहिता गुर
आकार का सो गुरु हमारा ॥५३॥ दादू मेरा तेरा बावरे
मैं तै की तजि बांणि ॥ जिनि यहु सब कुछ सिरजिया
करिता ही का जांणि ॥५४॥ दादू करणी हिंदू तुरक की
आपणी आपणी ठोर ॥ दुहूं बिचि मारग साध का यहु सं
तौं की रह और ॥५५॥ दादू हिंदू तुरक का है पषपं छा
निवारि ॥ संगति साचे साध की सांई कौं संभारि ॥
॥५६॥ दादू हिंदू लागे देहुरे मुसलमान मसीति ॥ हम
लागे येक अलेष सौं सदा निरंतर प्रीति ॥५७॥ यहु मस
सीति यहु देहुरा सतगुरि दीया दिषाइ ॥ भीतरि से
वा बंदगी बाहरि काहे जाइ ॥५८॥ इन दून्यूं बिचि है
है ॥ मिलि रस पीया न जाइ ॥ दादू आपा मेटि करि इ
न्यूं रहै समाइ ॥५९॥ मै ना त सयान क के रहै देषा
निरपष अंग ॥ दादू येके लेरह्या दूजा चढै न रंग ॥
॥६०॥ जो रे बहके साच है सब कौ देष सभाइ ॥ चलन
ही संसार की ॥ दादू गया न जाइ ॥६१॥ दादू पषक
हे के नां मिले ॥ नि. ह. प. ष. ॥ निरमल नांव ॥ सांई सौं
सनमुष सदा मुकता सब दीगात्र ॥६२॥ दादू जब थे
हम निरपष भये सबै रिसांने लोग ॥ सतगुर के परसा
द थें मेरे हरष न सोक ॥६३॥ निरपष के करि पषग
है नरक पडैगा सोइ ॥ हम निरपष लागे नांव सौं
करता करै सु होइ ॥६४॥ दादू पषका रु के नां मिले
निहकांमी निरपष साध ॥ येक सरोसै राम के षेले
षेल अगाध ॥६५॥ दादू दे पषहू रि करि निरपष नि
रमल नांव ॥ आपा मेटै हरि भजै ताकी मैं बलि जां
वूं ॥६६॥ दादू पषापषी संसार सब निरपष वि...

कोइ॥ सोई निरयमहोइगा॥ जाकेनांव निरंजनहै
इ॥६३॥ अपरोअपरोपंथकी सबकोकहैबदाइ॥
तायेंदाइयेकसों॥ अंतरिगतिल्योलाइ॥६४॥ दाइ
तजिसंसारसब॥ रहैनिरालाहोइ॥ अबिनासीके
आसिरे॥ कालनलागेकोइ॥६५॥ कलिजुगकूक
रकलमुहां॥ उठिलागेधाइ॥ दाइकरिहूटिये क
लिजुगबडीबलाइ॥६६॥ कालामुहसंसारका॥ नी
लेकीयेपांव॥ दाइतीनितलाकहै॥ भावेतीधरजाइ
॥६७॥ दाइभावहीनजेपृथमी॥ दयाबिहूंणांदेस
भगतिनहीभगवंतकी॥ तहांकेसाघवेस॥६८॥
जेबोलोतोचुपकहै॥ चुपतोकहैपुकार॥ दाइ
क्यूंकरिहूटियेअैसाहैसंसार॥६९॥ येषिचलें
तेवांगियां॥ तेताउलब्योहार॥ न्यपबसाधूसो
सदाजिनकेयेकअधार॥७०॥ दाइयेरोंपरिग
ये॥ बहुरेबारहबाट॥ इनकेसंगिनजाइये॥ उलटा
अविगतघाट॥७१॥ दाइआगेकोंआयाकहैं॥ स
तेकोंकहैजाइ॥ आवणजांणांकहैं॥ जहां
कातहांसमाइ॥७२॥ ॥अथसाचकाअंगकी
ख्या॥ दाइनमोनमोनिरंजनं॥ नमसकारगुरदेव
तह॥ बंदनंसबसाधवा॥ प्रणांमपारंगतह॥१॥ दा
इसाधूगुणगहै॥ अौगुणतजैबिकार॥ मानस
रोवरहंसज्यूं॥ छाडिनीरगहिसार॥ हंसगियानी
सोभला॥ अंतरिराखैयेक॥ बिषमेअंम्रतकाढिले
दाइबडाबमेक॥२॥ पहली न्यारामनकरै॥ पीछै
सहजसरीर॥ दाइहंसबिचारसौं॥ न्याराकीयानी
नीर॥४॥ आपैआपप्रकासिया॥
आतम ... आपकीया॥

खीर नीर का संत जन न्याव नबेरैं आइ दादू
साधू हंस बिन भेल सभेलै जाइ ॥ दादू हंस
मोती चुणैं कंकर दीया डारि सतगुर कहि सम
झाइया पाया भेद बिचार ॥ दादू हंस मोती
चुणैं मानसरोवर जाइ बगला छीलरि बापुड़ा
चुणि चुणि मछली खाइ ॥ दादू हंस मोती चुणै
मानसरोवर न्हाइ फिरि फिरि बैसै बापुड़ा का
ग करंकां आइ ॥ दादू हंस परषिये उतिम कर
णी चाल बगुला बैसै ध्यान धरि प्रतषि कहिये
काल ॥ उजल करणी हंस है मैली करणी का
ग मधिम करणी छाडि सब दादू उतिम माग ॥
दादू मन की साध की मैली सब संसार
मैली मधिम ह्वै गये निरमल सिरजनहार ॥ दादू क
रणी ऊपरि जाति है दूजा सोच निवार मैली मधिम
ह्वै गये उजल ऊंचे बिचार ॥ उजल करणी रा
म है दादू दूजा धंध क्या कहिये समझै नहीं चारों
लोचन अंध ॥ दादू गऊ बछ का ग्यांन गहि
दूध रहै ल्यौ लाइ सींग पूंछ पग परहरै अस्थन
लागै धाइ ॥ दादू कांम गाइ के दूध सौं हाड चांम
सौं नांहि इहि बिधि अमृत पीजिये साध के मुष
मांहि ॥ दादू मधि के नांव सौं लोगनि सौं कछ
नांहि लोगनि सौं मन ऊपली मन की मन ही
मांहि ॥ दादू जाके हिरदै जैसी होइगी सो तै
सी ले जाइ दादू तूं निरदोष रहु नांव निरंतर गा
॥ दादू साध सबै करि देषणां असाध न दीसै
कोइ जिहि के हिरदै हरि नहीं तिहि तन टोटा
होइ ॥ जब साधू संगति पाई जब ह्वै दूर हरि

नसाइ। दादू बोहिथ बैसि करि। मूंडे निकटि न
जाइ॥२०॥ जब उ मय पारण्याइये। तब कहु
दीया हारि। दादू साचा सौं मिले। तब कूडा काच
निवारि॥२१॥ जब जीवन मूरी पाइये। तब मरिबा
कौंण बिसाइ। दादू अंमृत छाडि करि। कौंण हला
हल खाइ॥२२॥ जब मानसरोवर पाइये। तब छील
र कौं छिटकाइ। दादू हंसा हरि मिले। तब कागा
ये बिलाइ॥२३॥ जहां दिनकर तहां निस नहीं। नि
स तहां दिनकर नांहिं। दादू ये कै नहीं। साधन के
मत मांहिं॥२४॥ ये कै घोडे चढि चले। दूजा कोन ल
होइ। दुहु घोडे चढि चालतां। पारि न पहुंच्या को
इ॥२५॥ ॥अथ विचार को अंग॥ दादू न
मो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतः। बंदनं स
र्व साधवा। प्रणामं पारंगतः॥१॥ दादू जल मैं गग
न गगन मैं जल है। पुनि वै गगन निरालं। ब्रह्म जीव इ
हि बिधि रहै। असा भेद बिचार॥२॥ ज्यूं दर्पन मैं मु
ष देषिये। पांणी मैं प्रतिबिंब। असैं आतम राम है।
दादू सब ही संग॥३॥ जब दर्पन मैं मुष देषिये।
तब अपना सूझै आप। दर्पन बिन सूझै नहीं। दा
दू पुनि र पाप॥४॥ दादू जीयें तेल तिलनि मैं। जी
यें गंध फूलनि। जीयें मषण षीर मैं। इयें रब रूहनि
॥५॥ इयें रब रूहनि मैं। जीयें रूह रगांनि। जी
यें जेरो सूर मैं। ठंढौ चंद्र बसंनि॥६॥ दादू जिनि यहु
दिल मंदिर कीया। दिल मंदिर मैं सोइ। दिल मां
है दिलदार है। और न दूजा कोइ॥७॥ मीत तुम्हा
रा तुम्ह कनै। तुम्ह ही लेहु पिछांणि।

खिये पति बांब जूं जांणि ॥८॥ दादू नाल कवल जल
ऊपजै क्यूं जुदा जल मांहि । चंदहि हित चित प्रीत
डी यौं जलसेती नांहि ॥९॥ दादू येक बिचार सौं स
बसैं न्यारा होइ । मांहै है परि मंन नहीं सहज निरं
जन सोइ ॥१०॥ दादू गुण नगुण मन मिलि रह्या क्यू
बेगर ह्वै जाइ । जहां मन नांही सो नहीं जहां चेतनि
सो आइ ॥११॥ दादू सब ही ब्याधि की औषद येक
बिचार । समझे थैं सुष पाइये कोई कुछक होग
वांर ॥१२॥ दादू इक निरगुण इक गुणमई सब घ
टि ये है ग्यान । काया का माया मिले आतम ब्रह्म
समान ॥१३॥ दादू कोटि अचारान येक बिचारी त
ऊन सरभरि होइ । आचारी सब जग रच्या बिचा
री बिरला कोइ ॥१४॥ दादू घट मैं सुष आनंद है त
ब सब ठाहर होइ । घट मैं सुष आनंद बिन सुषी
न देष्या कोइ ॥१५॥ काया लोक अनंत सब घट मैं भा
री नीर । जहां जाइ तहां संगि सब दरिया पैली ती
र ॥१६॥ काया माया ह्वै रही जोध बहु बलिवंत । दा
इ इतर क्यूं तिरै काया लोक अनंत ॥१७॥ मोटी माया
तजि गये सूषिम लीये जाइ । दादू कों छूटै नहीं
माया बडी बलाइ ॥१८॥ दादू सूषिम मांहिले तिन
का कीजै त्याग । सब तजि राता राम सौं दादू यहु
बैराग ॥१९॥ गुणा अतीत सो दरसनी आपा धरै उठा
इ । दादू निरगुण राम गहि डोरा लागा जाइ ॥२०॥ पिं
ड मुकति सब को करै प्राण मुकति नहीं होइ । प्राण
मुकति सतगुर करै दादू बिरला कोइ ॥२१॥ दादू स्व
धम हवा कूं सूलिये सो तत पति कूं जाइ क्यूं सब

बूडै देह गुण सत गुर कहि समझाइ ॥२२॥ मांही थैं
मन काढि करि ले राखै निज ठौर ॥ दादू भूलै देह गु
ण बिसरि जाइ सब और ॥२३॥ नांव भुलावै देह गु
ण जीव दसा सब जाइ ॥ दादू छाडै नांव कौं तौ फि
रि लागै आइ ॥२४॥ दादू दिन दिन राता रांम सौं दि
न दिन अधिक सनेह ॥ दिन दिन पीवै रांम रस दि
न दिन दरपन देह ॥२५॥ दादू दिन दिन भूलै देह गुण
दिन दिन इंद्री नास ॥ दिन दिन मंन मनसा मरै दिन
दिन होइ प्रकास ॥२६॥ देह रहै संसार मैं जीव रा
म कै पास ॥ दादू कछू ब्यापै नहीं काल झाल दुख त्रा
स ॥२७॥ काया की संगति जे बैगा हरि पद मांहि
दादू निरभै ह्वै रहै कोई गुण ब्यापै नांहि ॥२८॥ का
या मांहै भै घणा सब गुण ब्यापै आइ ॥ दादू निरभै
घर कीया रहै नूर मैं जाइ ॥२९॥ षड अक्षर बिन नाम
रे कोई गुण ब्यापै नांहि ॥ रांम रहै ते संजन रहै काल
काल जल मांहि ॥३०॥ सहज बिचार सुष मैं रहै दा
दू बडा बमेक ॥ मंन इंद्री पसरै नहीं अंतरि राषै ए
क ॥३१॥ मंन इंद्री पसरै नहीं अहनिसि एकै ध्यांन
पर उपगारी प्रांणियां दादू उतिम ग्यांन ॥३२॥ दादू मैं
नांहीं तब नांव क्या कहा कहावै आप ॥ साधौ कहौ ३
बिचारि करि मेटौ तन की ताप ॥३३॥ दादू आया तर ३
कैसें क्रिया दीसि सब संसार ॥ आया सुरके सुरझि
या एक सुर ग्यांन बिचार ॥३४॥ जब समझ्या तब
सुरझिया उलटि समांनां सोइ ॥ कछू कहावै जब
लगैं तब लग समझि न होइ ॥३५॥ जब समझ्या
तब सुरझिया गुरमुखि ग्यांन अलेष ॥ ऊरध कव

लैमैं आरसी फिरि करि आपा देष ।।२४।। ऊमरसंगति
दिन दिन बधे सोई ग्यांन बिचार । दादू आतम सो-
धि करि मथि करि काढ्या सार ।।२५।। दादू जिहि बरि-
यां कछु सब ऊपजै सो कछु करै बिचार । कानं
ध्यांन तब आवै क्या लिषि बंधे भार ।।२६।। दादू जब
कुछ मन हीं मन मिल्या तब कछु पाया भेद । दादू
लेकरि लाईये क्या पढि मरिये बेद ।।२७।। पाणी पा-
वक पावक पाणी जांणैं नहीं अजांण । आदि अंति
बिचारि करि दादू जांण सुजांण ।।२८।। सुष मांहैं दुष
बहुत हैं दुष मांहैं सुष होइ । दादू देषि बिचारि क-
रि आदि अंति फल दोइ ।।२९।। मीठा षारा षारा मी-
ठा जांणैं नहीं गवार । आदि अंति गुण देष करि
दादू कीया बिचार ।।३०।। कोमल कठिन कठिन है
कोमल मूरिष मरम न बूझै । आदि अंति बिचार
करि दादू सब कछु सूझै ।।३१।। पहली प्राण बिचारि
करि पीछै चलिये साथ । आदि अंति गुण देषि करि
दादू घालि न हाथ ।।३२।। पहली प्राण बिचारि करि पीछै
कुछ कहिये । आदि अंति गुण देषि करि दादू निज ग-
हिये ।।३३।। पहली प्राण बिचारि करि पीछै आवै जा-
इ । आदि अंति गुण देषि करि दादू रहै समाइ ।।३४।।
जे मति पीछै ऊपजै सो मति पहली होइ । कबहूं न
होवै जीव दुषी दादू सुषिया सोइ ।।३५।। आदि अंति
गाहन कीया माया ब्रह्म बिचार । जहां का तहां लै धरि
दे दादू तन बार ।।३६।।   ।।इति बिचार को अंग।।
दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेवतः । बंद-
नं सर्ब साधवा प्रणामं पारंगतः ।। दादू सहजे

पहली प्राण बिचारि करि पीछै पग दीजै । आदि अंति गुण देषि करि दादू ...

सिरजै   दादू गा जे ऊबरा चया राम काल्हका
कालयेमरै दुखी होत बेकाम ॥२॥ दादू सांई कीया सु
होरह्या जे कछु करै सु होइ । करता करै सु होत है
काहे कलपै कोइ ॥३॥ दादू कहै जे तैं कीया सु होर
ह्या जे तूं करै सु होइ । करण करांवण एक तूं दूजा नां
ही कोइ ॥४॥ सोई हमारा सांईयां जे सबका पूरणहा
र । दादू जीवण मरण का जाकै हाथि विचार ॥५॥
दादू अगम वनयाता लमधि ॥ आदि अंति सब है । सि
सिरजि सबनि कौं देत है सोई हमारा ए ॥६॥ कर
णहार करता पुरिष हमकौं कैसी चींत । सब काहू
की करत है सो दादू का मीत ॥७॥ दादू मनसा बाचा
कमनां साहिब का वेसास । सेवग सिरजनहार
का करै कौण की आस ॥८॥ उरमन आवै जीव कौं
अण कीया सब होइ । दादू मारग मिहर का सुकै
छिरला कोइ ॥९॥ दादू दम अण सुरा को नहीं जे क
रि जांणै कोइ । उद्दिम मैं आनंद है जे सांई सेती हो
॥१०॥ पूरण हारा पूरसी जो चित रहसी ठांम । अंतर थैं
उमंगसी सकल निरंतर रांम ॥११॥ पूरिक पूरा पासि
है नां ही दूरि गंवार । सब जाणत है बावरे देवे कौं ऊ
सियार ॥१२॥ दादू चिंता रांम कौं समरथ सब जांणै । दा
दू रांम संभालि ले च्यंता जिनि आंणै ॥१३॥ दादू चिंता
कीयां कछू नहीं च्यंता जीव कौं खाइ । हूंणां है सो ह्वै
रह्या जांणां है सो जाइ ॥१४॥ दादू जिनि पहुंचाया
प्राण कौं उदर उरध मुष खीर । जठर अगिनि मैं राखि
या कोमल काया सरीर । सो समरथ संगी संगि रहै ।
बिकट घाट घट भीर ।

लै मन नहीं र ॥[illegible]॥ गोब्यंद के गुण चीतिकरि नैंन हैंन प्यासी
स जिनि सुख दीया कांन कर प्राणनाथ जगदीस तन म
न सौंज सवारि सब राखे बिसवाबीस सो साहिब सुमि
रै नहीं दादू सानिहदीस ॥[illegible]॥ दादू सो साहिब जिनि बी
सरै जिनि घट दीया जीव गरभ वास मैं राखिया पाले पोखे
पीव ॥[illegible]॥ हिरदै राम संभालिले मन राखे बेसास दादू स
मर्थ साईयां सब की पूरे आस ॥[illegible]॥ दादू राजि कारिज
कलीये मुझ देवे हाथों हाथ ऊरिक पूरा पासि है सदा
हमारे संथ ॥[illegible]॥ दादू सांई सबनि कौं सेवग के सुख देइ
अया मूढ मति जीव की तो ही नांव न लेइ ॥[illegible]॥ दादू सि
रजनहारा सबनि का ऐसा है समर्थ सोई सेवग बेरदा
जहां सकल पसारे हथ ॥[illegible]॥ धनि धनि साहिब तूं बडा
कौंण अनूपम रीति सकल लोक सिर साईयां ह्वै करि
रह्या अतीत ॥[illegible]॥ दादू हौं बलिहारी सुरति की सब की
करै संभाल कीडी कुंजर पलक मैं करता है प्रतिपाल
॥[illegible]॥ दादू जाकौं न सो जन सहज मैं सईयां दे सुलेइ ता
थै अधिका और कछु सो तूं कोई करेइ ॥[illegible]॥ दादू टका
सहज का संतोषी जन खाइ मृतक भोजन गुरमुखी
काढे कलपे जाइ ॥[illegible]॥ भ्रम रवर के साव का येक कण
का खाइ दादू जेता पापं था भर्म करम सब जाइ ॥[illegible]॥
दादू कौंण पकावै कौंण पीसे जहां तहां सीधा ही दीसे
दादू साडा देह का तेता सहज बिचार जेता हरि बि
अंतरा तेता सबै बिकार ॥[illegible]॥ दादू जल दल राम का
मल लेवै सो साद संसार का समझै नहीं अबिगत साव
गाध ॥[illegible]॥ दादू जे कछु सुख दादू का होवे गा सोई
चितपति कोई जिनि सोचे सुखि ना जे लोई ॥[illegible]॥ दादू

सुदाइ कही को नांही॥ फिरि हौं पृथी सारी॥ दूजा दह
दिसि फिरि करि बौरे॥ साधु सबद बिचारी॥३१॥ दादू बिना
रांम कही को नांही॥ फिरि हौं देस बिदेसा॥ दूजा दह
दिसि फिरि करि बौरे॥ सुणियहु साध संदेसा॥३२॥ दादू
सिदक सबूरी साच गहि॥ स्याबति राखि अकीन॥ सा
हिब सौं दिल लाइ रहु॥ मुरदा है मसकीन॥३३॥ दा
दू अणबंछ्या टूटा का खात है॥ मर महि लागा मन नांउ
निरंजन लेत है॥ ऐन मल साधु जन॥३४॥ अणबंछ्या
आगै पड़ै॥ पीछै लेइ उठाइ॥ दादू के सिरि देस यहु॥
जे कुछ रांम रजाइ॥३५॥ अणबंछ्या आगै पड़ै॥
बिस्या बिचारि खाइ॥ दादू फिरै न तोडता तरवर
ताकि न जाइ॥३६॥ मीठे का सब मीठा लागै॥ भावै बि
ष भरि देइ॥ दादू कड़वा ना कहै॥ अमृत करि करि
लेइ॥३७॥ बिपति भली हरि नांउ सौं॥ काया कसौ
टी दुख॥ रांम बिना किस काम का॥ दादू संपति सुख
॥३८॥ दादू एक बेसास बिन॥ जीयरा डांवाडोल॥
निकटि निधि दुख पाइये॥ चिंतामणी अमोल॥३९॥ दा
दू बिन बेसासी जीयरा॥ चंचल नांही ठौर॥ निहचै
निहिचल ना रहै॥ कछू और की और॥४०॥ दादू हो
णां था सो ह्वै रह्या॥ जिनि बांछै सुख दुख॥ सुख मांहै
दुख आइसी॥ पीव न बिसारी सुख॥४१॥ दादू हो
णां था सो ह्वै रह्या॥ स्रगन बांछी धाइ॥ नरक कन्है थी
नां डरी॥ हवा सु होसी आइ॥४२॥ दादू होणां था सो
ह्वै रह्या॥ जे कुछ कीया पीव॥ पल बधै न छिन घटै
ऐसी जांणी जीव॥४३॥
और न होवै आइ॥ लेणां था सो

ली या जाइ ॥१४९॥ ज्यूं रचिया त्यूं होइगा काहे कौं सिर
लेह। साहिब ऊपरि राखिये देख तमासा रेह ॥१५०॥
॥ ज्यूं जाणौं त्यूं राखियो तुम्ह सिरि डाली राइ। दूजा
को देखौं नहीं दादू अनत न जाइ ॥१५१॥ ज्यूं तुम्ह भा
वै त्यूं खुसी हम राजी उस बात। दादू के दिल सिदक
सौं भावै दिन कौ रात ॥१५२॥ दादू करणहार जे कुछ
किया सो बुरा न कहणा जाइ। सोई सेवग संत जन
रहिबा राम रजाइ ॥१५३॥ दादू करणहार जे कुछ की
या सोई हूं करि जाणि। जे तूं चतुर सयाना जानरा
इ तो याही परवाणि ॥१५४॥ दादू करता हम नहीं करता
और कोइ। करता है सो करैगा तूं जिनि करता होइ
॥१५५॥ कासी तजि मगहर गया कबीर भरोसे राम।
सेवे ही सांई मिल्या दादू पूरे काम ॥१५६॥ दादू रोजी रा
म है राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सौं पो
२ ख्या सब परिवार ॥१५७॥ पंच संतोषे एक सौं मन मतिवा
ला मांहि। दादू भागी भ्रम सब दूजा नाहै नांहि ॥१५८॥
॥ एक सेर का ठांवड़ा क्यूं ही भरया न जाइ। भूख
भागी जीव की दादू केता खाइ ॥१५९॥ दादू साहिब मे
रे कपड़े साहिब मेरा खाण। साहिब सिर का ताज है
साहिब प्यंड परांण ॥१६०॥ सांई सत संतोष दे भाव भ
सि गति बेसास। सिदक सबूरी साच दे मांगे दादू दास ॥
॥१६१॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेव
तह। बंदनं सर्व साधवा प्रणामं पारंगतह ॥१॥ सां
ई को सिरि दे छिपे उस परि कोई नांहि। दादू ग्यान वि
चारि करि सो राख्या मन मांहि ॥२॥ सब लालों सि
रि लाल है सब खूबौं सिरि खूब। सब पाकौं सिरि

कहै॥ दादू का मन हूब ३ ॥ अकुल परापर साम
मदेव निरंजनं निराकार निरमलं॥ तिस दादू वंदनं
॥४॥ येक तत ता ऊपरि इतनी॥ तीनि लोक बुदं - मा
धरती गगन पवन अरु पांणी॥ सपत दीप नौ षंडा॥ ५
चंद सूर चौरासी लष दिन अरु रैंणी॥ रचिले संपत
समंदा॥ सवा लाष मेर गिर परबत॥ अ गरा भार
नीरण बुत ता ऊपरि मंना॥ चौदह लोक रहै सब र
चनां॥ दादू दास तास घरि बंदा॥ ६॥ दादू जिनि यह कुद
नी करि धरी॥ थंभ बिन राषी॥ सो हम कौं क्यूं बीसरे॥
संत जन साषी॥ ७॥ दादू जिनि प्रांण पिंड हम कौं
दीया॥ अंतरि सेवें ताहि॥ जे आवै औसांण सिरि
सांई नांउं संबाहि॥ ८॥ दादू जिनि मुझ कौं पैदा
कीया॥ मेरा साहिब सोइ॥ मैं बंदा उस राम का॥ जि
नि सिरज्या सब कोइ॥ ९॥ दादू ऐक सगा संसार
मैं॥ जिनि हम सिरजे सोइ॥ मनसा बाचा करमनां॥
औरन दूजा कोइ॥ १०॥ जेणा केत कबीर का सोई
बर बरि हो॥ मनसा बाचा क्रमनां मैं औरन करि हो
॥ ११॥ सब का साहिब ऐक है॥ जाका परगट नांउं
दादू सांई सोधि ले॥ ता की मैं बलि जांउं॥ १२॥ साचा
सांई सोधि करि॥ साचा राषी भाव॥ दादू साचा नां
उं ले॥ साचे मारग आव॥ १३॥ साचा सतगुर सोधि
ले साचे लीजै साध॥ साचा साहिब सोधि करि दा
ई भगति अगाध॥ १४॥ जा मैं मेरे सुजाण है॥ रमिता राम
न होइ॥ जो मन माणे रहित है॥ मेरा साहिब सो
इ॥ १५॥ उठे न बैठे ऐक रस॥
रैन जागे जगत गुर॥

१६ नां वहु जामैं नां मरै नां आवै ग्रभ वास दाइ ऊं
धे मुष नहीं नरक कुंड दस मास॥१७॥ कृतम नहीं सो
ब्रह्म है घटै बधै नहीं जाइ पूरण निहचल येक रस
जगति न नाचै आइ॥१८॥ उपजै बिनसै गुण धरै यहु
माया के रूप दाइ देषत थिर नहीं छिन छांहीं छिन धू
प॥१९॥ जे नांहीं सो ऊपजै है सो उपजै नांहिं अल
ष आदि अनादि है उपजै माया मांहि॥२०॥ जे यहु
कर्ता जीव था संकट क्यूं आया कर्मों के बसि क्यूं
भया क्यूं आप बंधाया क्यूं सब जोनी जगत मैं घर
बार नचाया क्यूं यहु करता जीव है पर हाथि बि
काया॥२१॥ दाइ कृतम काल बसि बंध्या गुण मां
ही उपजै बिनसै देषतां यहु करता नांहीं॥२२॥ जा
ती नूर अलाह का सफाती अरवाह सफती सि
जदा करै जाती बेपरवाह॥२३॥ दाइ षंड षंड निज
नया इकलस येकै नूर ज्यूं था त्यूं ही तेज है जो
ति रही भरपूर॥२४॥ नूर सपूर अपार है तेज पुं
ज सब मांहिं दाइ जोति अनंत है आगो पीछो नां
हिं॥२५॥ वार पार नहीं नूर का दाइ तेज अनंत की
मति नहीं करतार की ऐसा है भगवंत॥२६॥ प्रम
तेज प्रकास है प्रम नूर निवास प्रम जोति आनं
मैं हंसा दाइ दास॥२७॥ प्रम तेज परापरं प्रम जो
ति प्रमेसुर स्वयं ब्रह्म सदई सदा दाइ अविचल
स्थिर॥२८॥ आदि अंति आगै रहै येक अनू
मदेव निराकार निज निरमला कोइ न जांणै भेव
अबिनासी अपरंपरा वार पार नहीं छेह सो तूं
दाइ देषि ले उर अंतरि करि नेह॥२९॥ अबिनासी

हिबसंतिहै।जेउपजे बिनसैनांहि।जेताकहियेका
लमुषि।सोसाहिबकिसमांहि।३०।सांईमेरासतिहै
निरंजननिरकार।दादूबिनसैदेषतां।झूठासबआका
र।३१।रांमरटणिछाडै.नहीं।हरिलैलागा जाइ।बी
चैंहीअटकैनहीं।कलाकोटिदिषलाइ।३२।उरैंही
अटकैनहीं।जहांरांमतहांजाइ।दादूपावैप्रेमसुष
बिलसैबस्तअघाइ।३३।दादूउरैंहीउरझेघणो मू
येगलदेपास।ऐंनअंगजहांआपणा।तहांगयेनि
जदास।३४।सेवाकासुषप्रेमरस।सेजसुहागनदू
दादूबाहैदासकौं।कहैदूजासबलेइ।३५।षुसुरिषा
सबपहरै।सुंदरदेहैजागि।अपणांपीवपिछांणिक
रि।दादूरहियेलागि।३६।आंनपुरिषहौंबहनडी।
परमपुरिषभरतार।हौंअबलासमझैनहींतूंजां
णैकरतार।३७।लोहामाटीमिलिरह्या।दिनदि
नकाईषाइ।दादूपारसरांमबिन।कतहूंगयाबि
लाइ।३८।लोहापारसपरसिकरि।पलटैअपणांअं
ग।दादूकंचनहैरहै।अपणेसांईसंग।३९।दादू
जिहिंपरसैपलटैप्रांणियां।सोईनिजकरिलेह।लो
हाकंचनहैगया।पारसकागुणयेह।४०।आपान
हीबलमिटै।त्रिबिधितिमरनहींहोइ।दादूयहगु
णब्रह्मका।सुनिसमांनासोइ।४१।मायाकागुणब
लकरै।आपाउपजैआइ।राजसतामससातगा
मनचंचलहैजाइ।४२।दहदिसफिरैसुमनहै।आ
वैजाइसुपवन।राषणहारा ओराहै।देषणहारा
बैद्ध।४३। ॥अथसंमथाईकोअंग॥२८॥
नमोनमोनिरंजनं।नमसकारगुरदे

देषिमनमांहि ॥ ॥ पैदाकीयाघाटघड़ि आपैआपउपा
इ हिकमतिऊनरकारीगरी दादूलषीनजाइ ॥ ॥ जैसूं
बजायासाजिकरि कारीगरकरतार पंचौंकारसनादहै
दादूबोलणहार ॥ ॥ पंचऊपनासबदसौं सबदपंचसौं
होइ सांईमेरेसबकीया बूझैबिरलाकोइ ॥ ॥ हैतोरती
नहींतोनांहीं सबकुछऊतपतिहोइ हुकमैंहाजिरसब
कीया बूझैबिरलाकोइ ॥ ॥ नहींतहांथैंसबकीया
आपैआपउपाइ निजततन्यारानांकीया दूजाआवैजा
इ ॥ ॥ नहींतहांथैंसबकीया फिरिनांहींकैजाइ दादू
नांहींहोइरहु साहिबसौंल्योलाइ ॥ ॥ षालिकषेलैषे
लकरि बूझैबिरलाकोइ लेकरिसुषियानांभया देक
रिसुषियाहोइ ॥ ॥ देबेकीसब भूषहै लेबेकीकुछ
नांहि सांईमेरेसबकीया समझिदेषिमनमांहि ॥ ॥ दा
दूजेसाहिबसिरजैनहीं तौआपैक्यूंकरिहोइ जेआपै
को हीऊपजै तौमरिकरिजीवैइ ॥ ॥ करमफिरावैजीव
कौं करमौंकौंकरतार करतारकौंकोईनहीं दादूफेर
णहार ॥ ॥
दादूनमोनमोनिरंजनं नमसकारगुरदेवतः बंदनंसरबसाध
वा प्रणामंपारंगतः ॥ ॥ दादूसबदैंबंध्यासबरहै सब
दैंहीसबजाइ सबदैंहीसबऊपजै सबदैं सबैसमा
इ ॥ ॥ दादूसबदैंहीसचुपाइये सबदैंहीसंतोष
सबदैंहीअसथिरभया सबदैंभागासोक ॥ ॥ दादूसब
दैंहीसूषिमभया सबदैंसहजसमांन सबदैंहीनिरगु
णमिलै सबदैंनिरमलग्यांन ॥ ॥ दादूसबदैंहीमुकताभ
या सबदैंसमझैप्रांण सबदैंहीसूझैसबै सबदैंसुरझैजा
ण ॥ ॥ दादूॐकारथैं अरसपरससंजोग अंकूरबी
ऊपजै

२ केंसा:

हैपापपुनि।रहितबिधिजोगरसोग॥ ॥ॐकारथैंऊपजे, गुर
नसैबहुतबिकार।सात्रसगतिलेथिररहै।दादूआतमस,
र॥ ॥पहलीकीयाआपथें।उतपतिकॐकार।ॐकार
ऊपजे।पंचतत्तआकार।पंचतत्तथेंघटभया।बहुबिधि
सबबिसतार।दादूघटथैंऊपजे।मैंतैंबरणबिचार॥ ॥ये
सबदसबउत्तकीया।ऐसासमरथसोइ।आगेपीछेतो
जेबलहीगांहोइ॥ ॥निरंजननिराकारहै।ॐकारअ
र।दादूसबरंगरूपसब।सबबिधिसबबिस्तार॥ ॥आ
सबदॐकारहै।बोलैसबघटमांहि।दादूमायाबिस्तरी
परमतत्तयहनांहि॥ ॥पैदाकीयाघाटघडि।आपैआप
उपाइ।हिकमतिहुनरकारीगरी।दादूलषीनजाइ॥ ॥
जेंहबजायासाजिकरि।कारीगरकरतार।पंचोंकाअभिना
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वसातैजीवेले।पवनहिबन॥ ॥[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दलबिगासैं होइ साधसबदमाताकहै तिनसबदौंमां
गामोहि दाइदबिहागीसाधकी सोपरियोमेरसीस
रहैमाथामोहिगै वेमसजनजगदीस दाइदबागीउ
यकी अनसैघटउकास रामअकेलारहिगया सबदू
नरंजनपास दाइदगुरकीरामहै सबदकहैगुरग्या
तिनसबदौंमनमोहिया उनमनिलागाध्यान साच
जेलेमिलै सबदगुरूकागयान दाइदमकौलेचल्या
गहातमकाअसथान दाइदमकौसुषसया
साधसबदगुरग्यान सुषिबुधिसोधीसमकिकरि पाया
दनिरबाण दाइसबदबिचारिकरि लागिरहैमन
लाइ ग्यानगहैगुरदेवका दाइसहजसमाइ सब
दौंमांहैंरामधन जेकोइलेइबिचारि दाइइसससारमें क
बहूनआवैहारि दाइरामरसाइगातरिधस्या
साधनिसबदमंझारि कोइपारिषपीवैसीतिसो समके
सबदबिचारि सबदसरोवरसूभरमस्या हरिज
लनिरमलनीर दाइपावैसीतिसो तिनकेअषिलसरीर
सबदौंमाहैंरामरस साधौंतरिदीया आदिअंति
सब संतमिलि यूंदाइपीया पांगीमाहैंरापिये
कनककलंकनजाइ दाइगुरकेग्यानसौं ताइअगनि
मैंबाहि कारिजकोसीझैनही मीठाबोलैबार
दाइसाचेसबदबिन कटैनतनकीपार सबदैंबं
धां नांसाहकै तायैदाइआया उनिअजीवीबाउ
डी सुषदरसनपाया दाइगुतजिनूरगुगाबो
लिये तेताबोलअबोल गुगागहिआपाबोलिये
तेताकहियेबोल दाइसबकअवाजसो असे

२९ ॥ सबद कबीर का मीठा लागै मोहि। दादू सुणतां परम सु
ष केता आनंद होइ ॥३०॥ अथ जीवत मृतक
कौ अंग ॥ दादू नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेव त
ह बंदनं सब साधवा प्रणामं पारंगतह ॥१॥ धरती मत
आकास का चंद सूर का लेइ। दादू पांणी पवन का रा
म मता कहि देइ ॥२॥ दादू धरती ह्वै रहै तजि कूड कपट
अहंकार। साईं कारणि सिर सहै ताकौं प्रतषि सिरजन
हार ॥३॥ जीवत माटी मिलि रहै साईं सनमुष होइ।
दादू पहली मरि रहै पीछै तौ सब कोइ ॥४॥ माटी माहें
ठौर करि माटी माटी माहिं। दादू सम करि राषिये द्वै पष
दुबध्या नाहिं ॥५॥ आपा गरब गुमान तजि मद मछ
र अहंकार। गहै गरीबी बंदगी सेवा सिरजनहार ॥
६॥ मद मछर आपा नहीं कैसा गरब गुमान। सुपिनै ही
समझै नहीं दादू क्या अभिमान ॥७॥ झूठा गरब गुमा
न तजि तजि आपा अभिमान। दादू दीन गरीब ह्वै
पाया पद निरबांण ॥८॥ दादू भाव भगति दीनता
अंग प्रेम प्रीति सत हि संग ॥९॥ दादू सिक सबूरी द
साच गहि। स्याबति राषि अकीन। साहिब सौं दिल
लाइ रहु मुरदा ह्वै मसकीन ॥१०॥ तब साहिब कौं सि
जदा कीया जब सिर धर्या उतारि। दादू जीवत मरे
हि रसदवा कौं मारि ॥११॥ राव रंक सब मरहिंगे जी
वै नांही कोइ। सोई कहिये जीवता जे जीवत मृतक हो
इ ॥१२॥ दादू मेरा बैरी मैं मूवा मुझै न मारै कोइ। मेहि
मुझ कौं मारता मैं मरजीवा होइ ॥१३॥ दादू आपा जब
लगै तब लग दूजा होइ। जब यहु आपा मिटि गया
तब दूजा नांही ॥१४॥ बैरी मारे मरि गये चित थैं बिस

ऐनांहि दादू अजहूं साल है समझि देखि मन मांहि ॥ दा
दू तो तूं पावे पीव कों जे जीवत मृतक होइ आप गवाये
पीव मिले जानत है सब कोइ ॥ दादू तो तूं पावे पी
व कों आपा कछू न जाणि आपा जिस थें ऊपजे सोई
सहज पिछाणि ॥ दादू तो तूं पावे पीव कों मैं मेरा सब
खोइ मैं मेरा सहजैं गया तब निरमल दरसन होइ ॥
मैं ही मेरे पोट सिर मरिये ताके भारि दादू गुर प्रसाद थें सि
र थें धरी उतारि ॥ मेरे आगे मैं खडा ताथें रह्या लुकाइ
दादू प्रगट पीव है जे यहु आपा जाइ ॥ दादू जी
वत मृतक ह्वै करि मारग मांहैं आव पहली सीस
उतारि करि पीछे धरिये पाव ॥ दादू मारग साध का खरा
दुहेला जाणि जीवत मृतक ह्वै चलै राम नाम नीसाण ॥ दा
दू मृतक तब ही जाणिये जब गुण इंद्री नांहि जब मन आ
पा मिटि गया तब ब्रह्म समाना मांहि ॥ दादू मारग क
ठिन है जीवत चलै न कोइ सोई चलि है बापुरा जे जीवत
मृतक होइ ॥ मृतक होवे सो चलै निरंजन की बाट दा
दू पावे पीव कों लंघे औघट घाट ॥ दादू जीवत ही मरि
जाइये मरि मांहैं मिलि जाइ सांई का संग छाडि करि कौ
ण सहै दुख आइ ॥ दादू कहिये कछु आपा जाइगा कहि
ये कछु बिसरै और कहिये कछु सूषम होइगा कहिये कछु प
रै ठौर ॥ दादू आपा कहां दिखाइये जे कछु आपा हो
इ यहु तो जाता देखिये रहता चीन्हों सोइ ॥ दादू आ
प छिपाइये जहां न देखै कोइ पीव कों देखि दिखाइये त्यूं
त्यूं आनंद होइ ॥ अंतरगति आपा नहीं मुख सौं
मैं तैं होइ दादू दो रू लिखि लेत होइ ॥
जे जन आपा मे है इस बढां

देषतां साहिबसौंल्यौलाइ ॥३१॥ गरीबगरीबीगहि रह्या
मसकीनी मसकीन दादू आपामेटिकरि होइरह्यालेली
न ॥३२॥ मैंहींमेराजबलगैं तबलगबिलसैषाइ मैंनां
हींमेरीमिटै तबदादूनिकटिनजाइ ॥३३॥ दादूमनांमनी
सबलेरहै मनीनमेटीजाइ मनांमनीजबमिटिगाई त
बहींमिलेषुदाइ ॥३४॥ दादूमैंमैंजालिदे मेरेलागोआ
गि मैंमैंमेराइरिकरि साहिबकेसंगिलागि ॥३५॥ दादूषो
ईआपणीं ॥ लज्याकुलकीकार मांनिबडाईपतिगई
तबसनमुषसिरजनहार ॥३६॥ दादूमैंनांहीतबयेक
है मैंआईतबदोइ मैंतेंपडदामिटिगया तबज्यूंथा
त्यूंहीहोइ ॥३७॥ दूरसराघाकरिलीया बैठैंकाबैदा
दादूइजाकोनहीं मुकसीमांगदा ॥३८॥ दादूसोसुषे
मनपाईये सांईपीतिनहोइ साधौबरदनकुंपडै ज
बलगआपनषोइ कहिबासुष्टिबागतरया आपा
उकांस दादूमैंतेंमिटिगया तबपूरणंब्रह्मउकास
॥४०॥ दादूसुषिममांहिले तिनकाकीजैत्याग सब
तजिरातासांमसौं दादूयहुबैराग ॥ गुणअतीतसो ४१
दरसनी आपाधरैउगाइ दादूनिरगुणरांमगहि डोरी
लागाजाइ ॥४२॥ सांईकारणिमासका लोहीपाणी
होइ सूकैआटाअस्तका दादूपावैसोइ ॥४३॥ तनम
नमैदापासिकरि छांणिछांणिल्यौलाइ यौंबिनदा
इजीवकी कबहूंसालनजाइ ॥४४॥ पीसैऊपरिपी ५
सीये छांणिकरिछांणिं तौआतमकनबेरै दादूये
साजांणि ॥४५॥ पहलीतनमनमारिये इनकामरदै
मांन दादूकाटैजंतुमैं पीछैसहजसमांन ॥४६॥ काटै
ऊरिकाटिये दाधेकौदौलाइ दादूनारनसौंचिये

तौतरवरबधताजाइ ॥ दादूसबकौसंकटएकाइ
नकालगहैगाआइ ॥ जीवतम्रतकह्वैरहै ताकेनिकटि
नजाइ ॥ दादूसारागहिलाह्वैरहै अंतरजामीजा
णि तौछूटैसंसारथैं रसपीवैसारंगपाणि ॥ मृग
गहिलाबावला साईंका शरणाहोइ दादूदिवानाह्वै
रहै ताकोलषैनकोइ ॥ दादूजीवतम्रतकह्वैरहै
२ सबकोबिरकतहोइ काढोकाढोसबकहै नांउनलेवै
कोइ ॥ म्रतककाढिमसांणथैं कहुकौणचलावै
अविगतगतिनहींजांणियें जगिआंणिदिषावै
जीवतम्रतकसाधकी बांणीकाप्रकास दादूमोहेरां
मजी लीनभयेसबदास ॥ दादूजेतूंमोटामीरहै
सबजीवोंमेंजीव आपादेषिनभूलिये षराइहेला
पीव ॥ आपामेटिसमाइरहु हूंजाधमबाटि
दात काहैपचिमरैसचहैंसुमिरणसाधि ॥ दादूआप ।
मेटैएकरस मनह्वैसुथिरलेलीन अरसपरसआ
नंदकरै सदासुषीसोदीन ॥ जहांतहांथैंसबको
इ फिरिनांहींकेजाइ दादूनांहींह्वैरहु साहिब
सोंल्यौलाइ ॥ दादूहैकेंभैघणा नांहींकोंकछुनां
हिं दादूनांहींह्वैरहु अपणेसाहिबमांहिं ॥ दादू
हैं हैंनांहींतैंमैंगया एकैइसरनांहिं नांहींकोगहिरघ
णी दादूनिजघरमांहिं ॥ जहांरामतहांमैंनहीं
मैंतहांनांहींराम दादूमहलबारीकहै द्वैकोंनांहीं
ठांम ॥ जीवतमाटीमिलिरहै सांईंसनमुषहो
इ दादूपहलीमरिहै पीछैतौसबकोइ ॥ बिर
हअग्निकादागदे जीवतम्रतकगोर दादूपहली
घरकीया आदिहमारीगोर ॥ हमोंहमाराका ।

रतीया। जीवतकरणीसार। पीछैकरसाकोनहीं। दादूअं
गमअपार॥६३॥अंग॥२३॥साषी॥२०८२॥सूरातन
को अंग। दादूनमोनमोनिरंजनं नमसकारगुरदेवतह॥
वंदनं सबसाधवा। प्रणामं पारंगतह॥ साचासिरसो
षेलहै। यहुसाधजनकाकाम। दादू मरणआसंघे
सोईकहैगाराम। रामकहैतेमरिकहैं। जीवतकह्या
नजाइ। दादूऐसेरामकहि। सतीसूरसमभाइ॥
२॥ जबदादूमरिबागहै। तबलोगोंकीक्यालाजसं
तीरामसाचाकहै। सबतजिपतिसोंकाज॥४॥ दादू
हमकाइरकइंबाकरिहै। सूरनिरालाहोइ। निक
सिषडामैंदानमें। तासमिऔरनकोइ॥५॥ मडानजी
वैतोसंगिजलै। जीवैतोघरिआणि। जीवणमरणरा
मसों। सोईसतीकरिजाणि॥६॥ जनमलगैबिसचा
रणी। नषसिषसरीकलंक। पलकएकसनमुषज
ली। दादूधोयेअंक॥७॥ स्वांगसतीकाघ हरिकरि
करैकटंबकोसोच। बाहरिसूराहेषिये। दादूसोनरै
पोच॥८॥ दादूसतीतभिरजनहारसों। जलैबिरहकी
झाल। नांवकुमेरेनजलिबुझै। ऐसेसंगिदयाल॥
९॥ दादूमुकहोतेलषसिर। तोलषदेतावारि। सद
मुकटाधाएकसिर। सोईसौंपैनारि॥१०॥ दादूसतीज
लिकोइसंई। मूयेमडेकीलार॥ योंजेजलतीरामसों
साचेसंगभरतार॥११॥ दादूमूयेमडेसौंहेतक्या। जे
जीवकीजाणैनाहिं। हेतहरीसोंकीजिये। जेअंतर
जांमीमांहिं॥१२॥ सूराचढिसंग्रामकों। पाछेपगक्यूंदे
सो। वग
सूरारामका। २

काइरकोमनश्रावई
ै नहींकाइरकोकाम काइरकोमनश्रावई दाइसीससदै
थकसूरेकोखेत तनमनसौंपेरामको दाइसीससदै
त जबलगलालचजीवका तबलगनहेसूरा
नजाइ कायामाया मनतजे तबचौडेरहै
बजाइ दाइचौडेमेंश्रानदहै नांवधस्याशिरा
जीत साहिबश्रपणाकरिलीया श्रत रगतिकाडी
ति दाइजेइउकामकरीमसो तोचुकटैचहि
करिनाचकूणहैसोजाइगा निदहैचेरहैसाच
समकहैगाएककौ जेजीवतमृतकहोइ दाइदेहै
पाईये कोटीमधेकोइ सूरापूरासतजन साई
कोसेवे दाइसाहिबकारणै सिरश्रपणादेवे सू
राऊँकैखेतमें साईसनमुखश्राइ सूरकोसाईमिले
तबदाइकालनखाइ मरिबेऊपरियेकपग
रताकैरसुहोइ दाइसाहिबकारणै तालाबेलीम
हि दाइश्रगनमेंचियेकहिसमझाकेतोहि
हिसरोसारामका बकाबालनहोइ बकत
पछोडारह्या श्रबजीवसोचनिवारि दाइमर
ांकिरऊसाहिबकेदरबारि जीवोंका
ख्या कोकाकोतारै दाइसोईसूरिवा जेश्राप
जेनिकसैसंसारथैं साईकोदिसधाइ दाइ
बसंदाइबाऊडे तोपीछेमारयाजाइ
ईपाछैहैलाजिनिकरै श्रागेहैलाश्राव श्राग
श्रनूपहै नहीपाछेकासाव पाछेकोपग
सरे श्रागोकोपगदेइ दाइयहमतसूरका
मठोरकोलेइ श्रागाचलिपीछाफिरै
सकमदीठ दाइदेखेदोइदल सांमेटूकरि

२९॥ दादू मरणां मांझि करि रहै न हीन्यो ... लाइ काइ
र सो जे जीव ले आरण ही मैं जाइ॥३०॥ सूरा होइ सु मे
र उलंघे सब गुण बंध्या छूटे। दादू निरभै है रहै का
इर तिण न टूटे॥३१॥ सब के संगि काल है जर बकु
जो धै मारग मांहि। कोटि मैं कोई येक ऐसा मरण
आसे घि जाहिं॥३२॥ दादू जब जागे तब मारिये बैरी
जीव के साथ। मन सा मंद्रियों का मरिय। क्रोध महाब
ल काल। पंच चोर चित वत रहौ। माया मोह विष का
ल। चेत नि पहरे आपणे। कर गहि षड्ग संभालि॥
३४॥ काया कबज कमांण करि सार सबद करि तीर
दादू यह सर सांधि करि मारै मोटे मीर॥३५॥ काया क
ठिन कमांण है मांचै बिरला कोइ। मारै पंचौं मिरगला
दादू सूरा सोइ॥३६॥ जे हरि कोप करै इन ऊरि तौ कांम कटक प
दल जांहि कहां। लाल ष तौ स [illegible] जे ... दर
हे हरि जहां तहां॥३७॥ तब साहिब कौं सिर जरू की या
जब सिर धर्‍या उतारि। यू दादू जीवत मरै। हरि सबदां
कौं मारि॥३८॥ दादू तन मन कांम करीम के॥ आ
वै तौ नीका। जिसका तिसकौं सौंपिये सोच क्या जीव का
३९॥ जे सिर सौंप्या राम कौं सो सिर भया सनाथ। दादू
दे ऊरन भया जिसका तिसके हाथ॥४०॥ जिसका है ति
सकौं चढै तौ दादू ऊरण होइ। पहला देवै सो सर। पीछे ल
तौ सब कोइ॥४१॥ सांई तेरे नांउ परि सिर जीव करौं कु
रबांण। तन मन तुम्ह परि वारणौं दादू पिंड पुरांण॥४२॥
आपणौं सांई कारणौं क्या क्या नहिं
तन जि आपणां सिर दीजे॥४३॥
साहिब जी का नांउ

इसेकतकेगये माटीधरीमसांण ॥ जोगीजांदेबा
जंदी कतगयेसेजोगी दादूरहतेमढीमे करतेरस
जोगी ॥ दादूजीयराजाइगा यूंकेतनमाटीहोइ
जेसंस्योसोद्विनसिहै अमरनहीकलिकोइ ॥ दा
दूदेहीदेषतां सबकिसहीकीजाइ जबलगसास
सरीरमें गोबिंदकेगुणगाइ ॥ दादूदेहीउज्जली
देसबटाऊनाहि कारजंगोकबचालसी गोदेन
गोसानाहि ॥ दादूसबकोपाइंणा दिवसचारि
संसार औसरिऔसरिसबचले हमभीइहदेबि
चार ॥ सबकोबेठेपंथसिरि रहेबटाऊहोइ जे
आयेतेजाहिगे इसमारगसबकोइ ॥ बेगिबटा
ऊपंथसिरि अबबिलंबनकीजे दादूबेगबल्या
कैरामजपिलीजे ॥ संझ्याचलेउताव लाब
टाऊबनषंडमाहि बरियांनाहीढीलकी दादू
बेगिघरिजाहि ॥ दादूकरहपलाणिकरि को
चेतनिचढिजाइ मिलिसाहिबदिनदेषतां सांझ
पडेजिनिआइ ॥ २१ ॥ पंथदुहेलादूरिघर संगनं
साथीकोइ उसमारगहमजाहिगे दादूक्यूंसुष
सोइ ॥ लंघणाकेलकुघरां कपरचाटडीन्ह
अलापाणीपंथमें बिहंडाआहीन ॥ दादूहंस
तारोवतापांकुरां काहूंकालिनजाइ कालष
डासिरऊपरै आवणहाराआइ ॥ दादूजो
रातेरीकालदे सोजीवनजाणो सबजगसूतां
नींदडी इतताणोबाणो ॥ दादूकरणीकालकी
सबजगपरलेहोइ रामबिमुषसबमरिगये चेत
नदेषेकोइ ॥ साहिबकोसुमिरेनही बहुत

जगावैतार॥दादूकरणीकालकी सबप्रलैसंसार॥
ताकालजगाइकरि सबपैसेमुखमांहि॥दादूअ वि
चिरजदेखियाकोईचेतैनांहि॥ सबजीवसांई
कालकौं॥करिकरिकोटिउपाइ॥सांईबकौंभुमि
नहीं येपरलैजाइ॥ दादूकारणिकालकेसक
लसंवारेआप॥मीचबिसारैमरणकौं॥दादूसोकस
ताप॥दादूअमृतछाडिकरि बिषैहलाहलख
ाइ॥जीवबिसाहैकालकौं मूढामरिमरि जाइ॥
निरमलनांउबिसारिकरि॥दादूजीवजंजाल॥नहीत
हांथैंकरिलीया॥मनसामांहैकाल॥ सबजगछे
ली॥कालकसाई॥करदलीयेंकंठकाटै॥पंचततकी
पंचपंखडी॥बेडुखंडकरिबांटै॥ सबजगसूतानींद
भरि॥जागैनांहीकोइ॥आगैपीछैदेखिये॥प्रतख्यिपलै
होइ॥ कालजालमैंजगजलै॥भाजिनिकसैको
इ॥दादूसरणैसांचकैं॥अभैअमरपदहोइ॥ ये
सजनदुरिजनचलेंगे॥ नकालकीबार॥दादूइनमै
कोनहीं॥बिपतिबंटावणहार॥ संगीसजणआ
पणां॥साथीसिरजनहार॥दादूजाकोनहीं॥इहि
कलिइहिसंसार॥ येदिनबीतेचलिगये॥वेदिन
आयेधाइ॥रांमनांमबिनजीवकौं॥कालगरासैजाइ
॥ जेउपज्यासोबिनसिहै॥जेदीसैसोजाइ॥दादू
निरगुणरांमजपि॥निहचलचितलाइ॥ जेउप
ज्यासोबिनसिहै॥कोईथिरनरहाइ॥दादूबारीआ
पणी॥जेदीसैसोजाइ॥ सबजगमरिमरिजातहै
अमरउपावणहार॥रहितारमितारांमहै॥बहिता
सबसंसार॥ दादूकोईथिरनहीं॥यहुसबआ

वै जाइ अमरपुर सत्र आपे रहै केसाधल्पोलाइ
यक्त जग जाता देखि करि दादू करी पुकार घडी महू
रत चालणा राखै सिरजनहार दादू हिबसुष
मो है षेलतो काल पकड्या आइ उपजे बिनसे
षतो यक्त जगयो ही जाइ राम नाम बिनजी वजे
केते मुये अकाल मीच बिना जे मरत है ताथे दादू मा
न आपसि पदहस्ती घणा राकस सूनपरत तिस
बनमें दादू पड्या चेतन ही अचेत पूतपिता थे
बीछुट्या सुलि पड्या किस गोर मरै नहीं उर फाटि
करि दादू बहा कठोर जेहि दिन सुबरि न आवे
आव घटे तन छीजे अंत काल दिन आइ पहूंता
दादू दीलन कीजे दादू औसर चलि गया बरिया
गई बिहाइ कर छिटके कहां पाइ जनम अमो
लिक जाइ दादू गाफिल के रह्या गहिलाकवा
गवार सो दिन चीति न आवई सोवे पांव पसारि
दे दादू काल मारि करगहै दिन दिन षेचत जाइ
अजहूं जीव जागे नहीं सोवत गई बिहाइ
सूता आवै सूता जाइ सूता षेले सूता षाइ सूता ले
वै सूता दे वै दादू सूता जाइ दादू देषत ही ब
या आमवरण्या षेत तन मन जोबन सबगया
दे अजहूं न हरि सौं हेत दादू कूटे केघर दे षिक
रि कूटे पेंसे जाइ कूटे कूं गावो लगे रहे मसाय
आइ दादू प्राण पयाणा करि गया माटी धु
दे रामसाण जाल मालाहारे दिषि करि चेतन ही अज
ण दादू केई जाले केई जालिये केई जालण जा
हि केई जालणा कीके दादू जीव गमानो हि

कोई गावै कोई गाड़िये कोई गावन जांहि कोई
नाचनाँ करै दादू ज्यों वतनाहि॥ ६१॥ दादू केते
उठि रे प्राणी जाग जीव॥ अपणा सजण संभाल॥
गाफिल नींद न कीजिये॥ आइ पहूंता काल॥ ६३
समरथ का सरणा तजै॥ गहै आन की ओट॥ दादू
बलिवंत की क्यों करि बचै चोट॥ ६४॥ अविनासी
के आसिरे॥ अजरावर की ओट॥ दादू सरणै साच
कै॥ कदे न लागै चोट॥ ६५॥ मूसा भागा मरण थैं ज
हां जाइ तहां गोर॥ दादू अगै पीछे काल सब॥ कठिन
काल का सोर॥ ७०॥ दादू सब जग मांहै काल के
मांहि पाया जाल॥ दादू गोरमसाण मैं॥ कोई अ
गपयाल॥ ७१॥ दादू मडा मसाण का॥ केता करै ड
फाण॥ मृतक मुरदा गोर का॥ बहुत करै अभिमा
न॥ राजा राणा राव मैं॥ मैं खांनौं सिरखान॥ माया मो
ह पसारै एता॥ सब धरती असमान॥ ७२॥ पवनतका
पूतला॥ यकुं पिंड सवां रा॥ मंदिर माटी मास का
बिनसत नही बारा॥ ७३॥   हाड चाम
का प्यंजरा॥ बिचि बोलण हारा॥ दादू पैसि करि
बहु कीन्हा पसारा॥ ७४॥ बहुत पसारा करि गया
कछू हाथि न आया॥ दादू हरि की भगति बिन
प्राणी पछिताया॥ ७५॥ मांणस जल का बुदबुदा
पांणी का पोटा॥ दादू काया कोट मैं॥ मेवासी मो
टा॥ ७६॥ बाहरि गढ निरसै करै॥ जीबे के तांई॥
दादू मांहै काल है॥ सो जांणै नांही॥ ७७॥ दादू साचे
मैं तैसा दिख मिलै
ट गाइ ये॥ कपट काया

है मो चेदे सारी को सिरसाल जे कछु व्यापे राम
न दाइ सोई काल दाइ जे नाल हरि बिकार
की काल कहत है मे सोइ छेमल हरि सोम
व की सि नहि नये होइ दाइ का लस्प
है बसे कोइ नजाणे ताहि ये कछु ही करणी का
ल है सब काहू को षाइ दाइ बिष अमृत घ
मे बसे इन्द्र पे के गाते माया बिषे बिकार सब
अमृत हरि का नाउ दाइ कहा सुमेर मेर म
रणा सब नहि ये सिरताज सो सी मरि माटी
वा अमर अलह का राज केते मरि माटी
भये बहुत बडे बलिवंत दाइ केते के गये द
नां दव अनंत दाइ धरती करते एक पग
दरिया करते फाल हाको अबत फाहते सो सी
बाये काल दाइ सब जग कंपे काल थें ब्रह्मा
बिसन महेस सुर नर मुनि जन लोक सब स्वर्ग
रसातलि सेस चंद सूर धर पवन जल ब्रह्मंड
खंड प्रवेस सो काल डरै करतार थें जे जेव मु
आदि स पवन पाणी धरती अंबर बिनसे
रवि ससि तारा पंच तत सब माया बिनसे मा
निष कहा बिचारा दाइ बिनसे तेज के मा
टा के कि समाहि अमर उपावण हार है इज्ञा
को ई नांहि पाणी पवन ज्यूं पतला काया
करे कमाइ दाइ सब संसार मे कहां गयान
जाइ नूर तेज ज्यूं जोति है प्राण पिंड यूं हो
इ दिष्टि मुष्टि आवे नहीं साहिब के बसि सो
इ मन ही मांहे कै मरे जावे मन ही मांहि

आदि बसाषी स्तत दे। दाइ इसणनां हिा।१०॥ आपमारे
आपकों। आप आपकों घाड़। आपे आणां काल दे। दाइ
कहि समझाइ॥ ११॥ आपेमारे आपकों यकुजा वि बि
चारा॥ साहिब राषणहार है सो हित हमारा॥ १३॥
[illegible] ॥ दाइनमो
[illegible] बसाधव
प्राणम पारगतह॥ १॥ दाइ जेइ जोगी गुरमुषी। तो लेणांत
न विचारि॥ गहि आव धगुरष्यानका काल तु रिसकों मा
रि॥२॥ नोटविट सैं घटसेरी सो जोगी जी वे दाइ का है कों
मेरा रामर समाये॥३॥ साधू जनकी वासना। सवटर है
संसार॥ दाइ आतम ले मिले॥ अमरउपावण हार॥४॥
रामसरीषे होरहे। यकुनाहीउन दार॥ दाइ साधू अमर
है॥ बिन से सब संसार॥५॥ जे कोई सेवे रामकों। तो राम
सरीषा होइ॥ दाइ नीम कबीर ज्यं। साषी बोले सोइ॥६॥
आरथिन आयो सो गया॥ आया सो कंआइ॥ दाइ तनमन
न जीवता॥ आपा ठौर लगाइ॥७॥ पहली था सो अब तया
अब सो आगे होइ॥ दाइ नीं ठौरकी॥ बिरला बूझै कों
इ॥८॥ दाइ जे जन हरिकेरंगिरंगे। सो रंग कटे न जाइ॥ सदा
सुरंग संत जन। रंग में रहे समाइ॥९॥ सांई की या सुकूमि
टे। सुंदर सो सारंग॥ दाइ धोवें बावरे॥ दिन दिन होसुरंग
१०॥ दाइ कहे सब रंग तेरे तें रंगे॥ हूं है सब रंगमा हि॥ स
व रंग तेरे तें रंगे॥ दूजा कोई नांहि॥११॥ ऐसा कोई नां मि
ले॥ तन फेरि संवारे॥ बूढे थे बाला करे॥ षे काल निरा॥१२
बूढे देदते सारे नंदा लोग बहते अमरकंद॥ अमरकं
द दाइ आनंद॥१३॥ दाइ कहो जम जोरा [illegible]
लकों इन॥ कहा मीचकों मारिये।

॥ अमरभोर अबिनासी आसण। तिहां निरंजन लागि
है। दादू जोगी जुगि जुगि जीवै। काल ब्याल सब सहि गि
है ॥१२॥ राम रमै ते नाइ धुनि। ऐसै सदा अभंग। दादू अबि
नासी मिलै। तौ जम को दीजै डंड ॥१३॥ दादू जुरा काल जाम
ण मरण। जहां जहां जीव जाइ। भगति परांइण लीन मन
ताकौं काल न षाइ ॥१४॥ निरबिकार निज नांव ले। जीवनि
यहु उपाइ। दादू कृत्रम काल है। ताके निकटि न जाइ ॥१५॥
सहज सुंनि मन राषिये। इन दून्यूं के मांहि। लै समाधि रस पीजि
ये। तहां काल भै नांहि ॥१६॥ अबिनासी के आसिरै। अजरा
वर की ओट। दादू सरणें साच के। कदे न लागै चोट ॥१७॥ मर
णां आगा मरणीयें। दूषै नांहीं दूष। दादू ऐसौ ऐ गया। सुषे सू
ता सुष ॥१८॥ दादू सब कौं संकट येक दिन। काल गहैगा आ
इ। जीवन मरन क फेर है। ताके निकटि न जाइ ॥१९॥ जीव
न मिलै सु जीवतैं मूवे मिलै मरि जाइ। दादू दून्यूं देषि क
रि। जहां जीव तहां जाइ ॥२०॥ दादू कोई थिर नहीं। यहु स
ब आवै जाइ। अमर पुरिस आपै रहै। कै साधू लौ लाइ ॥
२१॥ दादू साधन सब कीया। जब उनमन लागा मन।
दादू असथिर आतमां। जुगि जुगि जीवै जन ॥२२॥ रह
तै सेती लागि रहु। तौ अजरावर होइ। दादू देषि बिचारि
करि। जुदा न जीवै कोइ ॥२३॥ जेता करणां काल का। तेता
परिहरि जांणि। दादू आन मरां मसौं। जे तू परम सुजांण ॥२४॥
बिष अमृत घट मैं बसै। बिरला जांणैं कोइ। जिनि बिष
षाया ते मूये। अमर अमी सों होइ ॥२५॥ दादू सब ही म
रि है। जीवत नांहीं कोइ। सोई कहिये जीवता। जे कलि
अजरावर होइ ॥२६॥ देह रहै संसार मैं। जीव राम के पा
स। दादू कुछ ब्यापै नहीं। काल झाल दुष त्रास ॥२७॥

काया कीसंगति तजे। बैठा हरिपद मांहि॥ टा माया मैं यों रहे। कोई गुण व्यापै नांहि॥ २२ दादू तजि संसार सब। रहे निराला होइ॥ अविनासी के आसिरे। काल न लागै कोइ॥ २३॥ जागत लागत राम सौं। निर्भै होंनी जाइ॥ पारिये मने हो आपनां। दादू काल न षाइ॥ २४॥ दादू जागत लागा रांम सौं। छाडे विषै विकार॥ पीव सौं जीव सु रांम रस आतम साधन सार॥ २५॥ मरे न पावै पीव कों। जीवत चेकाल। दादू निरसे नांव ले। इस्यूं हाथि दयाल॥ दादू जाता देखिये। लाहा मूल गवांइ। साहिब की गति आमहे। सो कछु लषा न जाइ॥ २६॥ दादू मरतें कौं चल्या मगा वनि के साथ। दादू लाहा मूल सौं इस्यूं आये हाथि॥ साहिब मिलै तो जीविये नहीं तो जीवै नांहि। सौ कैसे मन उपाइ करि। दादू मरु कै मांहि॥ २७ सब जीव निसांधे न हो। ना थै मरि मरि जाइ॥ दादू पावै राम रस। सुष मैं रहे समाइ दादू जे जन वेधे जीत सौं सो जन रहस जांहि उनलहि मन नां आपको। अंतर नांही पावा॥ २८॥ दिन दिन लहुडे होंहि सब। कहै मोटा होता जाइ। दादू दिन दिन ते लहुडे होंहि। मल्यो लाइ॥ २९॥ न जानों हांजी चुणइ है लोकिक ताके नित काल। सदा सजीव निसु निरखै दादू देखा न दादू जीवत छूटे देह गुण। जीवनमुक्ता होहि। सब नां बड़ मसब ! सुकति कहा कैसें जरे ईसन कहा जीवत मरतक साधु ताके नजिक
चारा॥ ४४
ग
दादू जी
...

मत्र्यनेक जीवतमृकतिसद्गतिलये दादू४
जीवतमेलानालया जीवतवसनहोइ जीवतजा
पतिनांमिले दादूबूकेसोइ जीवतहस्तरनातिरे जीव
त लेघेनपार जीवतनिरसेनार ते दादूतेससार
जीवतप्रगटनांसरा जीवतप्रचानांहि जीवतनप
यापावकी वूडेसोजलमांहि जीवतपदपायानदी
जीवतमिलेनजाइ जीवतजेछूटेनहीं दादूगयेबिला
इ दादूछूटेजीवता मूवांछूटेनांहि मूवांपीछेछू
टिये तोसबआयेजसमांहि मूवांपीछेमुकतिबता
वे मूवांपीछेमेला मूवांपीछेअमरअभेपद दादूभूले
गहिला मूवांपीछेबेकुंठवासा मूवांसुरगपठावे
मूवांपीछेमुकतिबतावे दादूजगबौरावै मूवांपी
प छेपदपहुंचावै मूवांपीछेतारै मूवांपीछेसद्गतिहोवे
दादूजीवतमारै मूवांपीछेसगतिबतावे मूवांप
छेसेवा मूवांपीछेसंजमिराषे दादूदोजगदेवा
दादूधरतीकासाधनकीया अंबरकोणअभ्यासरा
ससिकिसअंबरसपे अमरलयेनिजदास साहि
बमारेतेमूये कोईजीवेनांहि साहिबराषेतेर है
इनिजघरमांहि जेजनराषेरामजी अपणोअंगि
गाइदाहऊदलागेनहीं जेकोटिकालकछिजाइ दादू
र नमोनिरंजन नमसकारगुरदेवतह बंदनसबसाध
प्राणांमपारंगतह मनचितआतमदेषिये लागा
किसठौर जहांलागातेसाजांणिये कादूदेषेओर
दादूसाधपरषिये अंतरिआतमदेष मनकी
मायारहै केआपेआपअलेष

करिपीछैधरियेनांव॥अनरगतिकीजेलषै।तिनकीमैं
बलिजांउं॥४॥कहैलषैसोमानवी।सैनलषैसोसाध॥म
मनकीलषैसुदेवता।दादूअगमअगाध॥५॥दादूबा
हरकासबदेषिये।भीतरिलष्यानजाइ॥बाहरिदिषा
वालोककां।भीतरिरामदिषाइ॥६॥दादूकोमधणीकेना
उंसौं।लोगोंसौंकछुनांहिं।लोगोंसौंमनऊपली।मनकी
मनहीमांहिं॥७॥यहुअबबसराषीऊपिली।सीरिकासकु/न
नांहिं।अंतरकीजांणैनहीं।ताथैंषोटाबाहिं॥८॥दादू
जेनांहींसोसबकहै।हैसोकहैनकोइ॥षोटाषराप
रिषिये।तबज्यूंथात्यूंहीहोइ॥९॥दहदिसिफिरैसुमनहै
आवैजाइसुपवन।राषणहारांप्रांणहै।देषणहारा
ब्रह्म॥१०॥घटकीभांनिअनीतिसब।मनकीमेटिउपा
धि।दादूपरहरिपंचकी।रामकहैतेसाध॥११॥अरथआ
यातबजांणिये।जबअनरथछूटै।दादूभांडाभरमका
गिरिचौड़ेफूटै॥१२॥दादूजाकहिबेकोंरह्या।अंतरि
डाल्याषोइ।ऊपरिकीयेसबकहैं।मांहिंनदेषैकोइ॥१३॥
जैसेमांहैंजीवरहै।तैसीआवैबास।मुषबोलैतबजा
णिये।अंतरकापरकास॥१४॥दादूऊपरिदेषिकरि।स
बकोराषैनांउं।अंतरगतिकीजेलषै।ताकीमैंबलिजां
उं॥१५॥कायाकेसबगुणबंधे।चौरासीलषजीव॥दा
दूसेवगसोनहीं।जेरंगिरातेपीव॥१६॥तनमनआतम
एकहै।इस्मबतनहार।दादूमूलपायानहीं।दुवि
ध्यारमबिकार॥१७॥कायाकेबसिजीवसब।ह्वात
मइसआकार॥दादूकायाबसिकरै।निरंजननिरका
र॥१८॥पूरणब्रह्मबिचारिये। ै
का॥कायाकेगुणदेषिये॥

तिबुधिबमेकबिचारबिन मायासपस्समान समी
नयासमझैनही दादूप्रमतियांन सबजीवप्राणी
सूनहै साधमिलैनबदैव बुद्धमिलैनबधुदै दादू
कलपमुसेव दादूबेसाजीवहै सूटाबधसमान
दादूपनूदेपिये इज्ञानाहीग्यान करमोकेवसि
वहै करमरहितसोबहम जहांग्यातमनहोयग्यातमा
दादूसागरसम काचाकठेलेकफने कायाहीकी
मांहि दादूपाकाभिनिरहै जीवबहमकेनांहि बाथ
सुरनैवाये बाजे येहूसोभिस्तीज्यो रामसनहीसाध
दादूबेगामोकलिदीज्यो सबजीवोकोमरवो
मनकोबिरलाकोइ दादूरकेग्यानसौ साईसनमुखहोइ
पांडापारिखूजोहरी मनबोटालेग्यावे बोटामन
केमाथैमारे दादूहरिउडावे प्रयूनांहैनेनानही
तायेबोटाबांहि ग्यानबिचारनऊपजै साचझूठस
मकाहि दादूसाचालीजिये झूठादीजेडारि साचा
नबूबराषिये झूठानेछनिवारि हीरेकोंकदरक
मूरिषलोगन्नजांण दादूहीराहाथिले पारिषेसाध
सुजांण हीराकोडांनालहै मूरिषहाथिगवार
पायापारिषजोहरी दादूमोलग्रपार ग्रंथहीरा
परषिया कीयाकोडीमोल दादूसाधूजोहरी हीरे
रामबिनाकिसकांमका नहीकौडी मिस्र
ननतोल जीवसाईसराबाहैगया दादूछसेथोह सहिगात
हैमेलिकरि मोलिबिकानोवस सगुरानिगुराषिये साधु
पारबहमिलिहैस सगुराचानिगुराझूठा साहिबकेदरबा
सबकोइ दादूसगुरासतिसंजमिरहै सनमुखमि

नव्हार निसुरातो नालालची॥ तूं चे टिबै विकार॥ षोट॥
रापरषिये॥ दादू कसि कसि लेइ॥ साचा है सो राषिये कू
गार दूर्यानदेइ॥ २॥ षोटा षरा कसि दे वे पारिष॥ तौ के सें ब
निआवै॥ षोटे षरे का वनलैषै॥ तब साहिब के मनि सावे॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
॥ ३॥ दादू कसि कसि लीजिये॥ परषा तें प्रमाण॥ षोटा गा
ठिनबांधिये॥ साहिब के दीवांणि॥ [illegible] षरा कसोटी पाव का
कोई बिरला पर्कचणहार॥ जेपर्कचे ते ऊबरे॥ ताइकाये त
तसार॥ ४॥ षोटा षरा परषिये॥ दादू कसि कसि लेइ॥ साचा
है सो [illegible]
[illegible]
वेसा॥ काया कसौटी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
उणबेरहि नहे॥ सो निज ब्रह्म अगाध॥ ५॥ दादू नवलता
नैनदेषिये॥ साधकहैं नेअंग॥ तब लग का कसि मांजिये
साहिब का प्रसंग॥
बमांनैनांहिं॥ प.
हिं॥ १॥ २ दादू रांग्याबेरमे॥

नाईरांमकी उम्हनां केरहियो   ज्यूं ज्यूं होवै त्यूं कहै घा
बधिकेहैन जाइ दादू सो सुध आतमां साधू पैसे आइ

दादू
नमो नमो निरंजनं नमसकार गुरदेव तह बंदनं सरब
साधवा प्रणामं पारंगतह दादू माया का गुण बल करै आ
पा उपजै आइ रजसतामस सातगी मन चंचल कै जाइ
आपा नांही बल मिटै त्रिविधि तिमर नहीं होइ दादू
त्रिगुण ब्रह्म का सुनि समांनां सोइ दादू अनते उपज
गुणामइ गुणांही पैले जाइ गुणांहीसौं गहि बंधिया छू
टै कोंणा उपाइ दादू उपजत ही उहाँ लै निरपख अनभै
सार येक रांम हहजानहीं दादू लेहु विचार दादू का
या ब्रह्म गुणामइ मनमुख उपजै ग्यांन चौरासी लख जी
व कौं इस माया का ध्यान आतम बोध बंझ का बेटा
गुरमुख उपजै आइ दादू पंगुल पंच बिन जहां रांम तहां
जाइ आतम मांहै उपजै दादू पंगुल ग्यांन कृतम जा
इ उलंघि करि जहां निरंजन थांन आतम उपजि अ
कास की सुमिरि ध्रुता की बाट दादू मारग पैर बका कोई
लेगैल घाट आतम बोधी अनभई साधू निरपख हो
इ दादू राता रांम का रस पीवैगा सोइ इक निरगुण ग्य
गुणामइ सब घटि येहै ग्यांन काया कामा या मिले आत
म ब्रह्म समांन बिष अंमृत घट मैं बसै बिरला बूझै
कोइ जिनि बिष खाया ते मूये अमर अंमी सो होइ
आपै आप प्रकासिया निरमल ग्यांन अनंत न भारनीर
न्यारा कीया दादू जिन भगवंत प्रेम लगा ति जब का
पजे निहचल सहज समाधि दादू पीवै रांमरस सतगु
रके परसादि प्रेम लगाति जब कापजे पंगुल ग्यांन बि
चार दादू हरि रस पाईये छूटे सकल बिकार दा

इ भगति निरंजन रांम की॥ अबिचल अबिनासी॥ सदा
सजीवनि आतमां॥ सहजैं परकासी॥१६॥ दादू बेकहि
साईं आतमां॥ उपज्या आनंद साध॥ सहज सील संतो
ष सत॥ प्रेम मगन मन राव॥१७ जब हम ऊजड चालते॥ उ
तब कहते मारग मांहिं॥ दादू पहुंचे पंथ चलि॥ कहैं यहु
मारग नांहिं॥१८॥ पहली हमें बहु कछ कीया॥ भरम करम॥ स
संसार॥ दादू अनभै ऊपजी॥ राते सिरजनहार॥१९॥ दादू
सोई अनभै सोई ऊपजी॥ सोई सबद ततसार॥ सुणतां ही
साहिब मिलै॥ मन के जांहि बिकार॥२०॥ दादू अनभै का
टै रोग कौं॥ अनहद उपजै आइ॥ सेझे का जल निरमला॥ पा
वै रुचि ल्यौ लाइ॥२१॥ जब घटि अनभै ऊपजै॥ तब की पा
करम का नास॥ भै भ्रम भागे सबै॥ पूरण ब्रह्म प्रकास॥
२॥ दादू बांणी ब्रह्म की॥ अनभै घटि परकास॥ रांम अके
ला रहि गया॥ सबद निरंजन पास॥२३॥ पारब्रह्म कह्या
प्राण सौं॥ प्राण कह्या घट सोइ॥ दादू घट सब सौं कह्या
बिष अंमृत गुण दोइ॥२४॥ दादू मालिक कह्या अरवाह
सौं॥ अरवाह कह्या औजूद॥ औजूद आलम सौं कह्या
हुकम खबर मौजूद॥२५॥ दादू अनभै थैं आनंद भया
पाया निरसै नांउं॥ निहचल निरमल निरबांण पद॥ अग
म अगोचर ठांउं॥२६॥ दादू अनभै बांणी अगम की॥ लेग
ई संगि लगाइ॥ अगह गहै अकह कहै॥ अभेद भेद लहा
इ॥२७॥ दादू जे कछु बेद कुरांण थैं॥ अगम अगोचर
बात॥ सो अनभै साचा कहै॥ यहु दादू अकह कहात
२८॥ दादू जैसा ब्रह्म है॥ तैसी अनभै ऊपजी होइ॥ जैसा
है तैसा कहै॥ दादू बिरला कोइ॥२९॥ जे मति पीछैं ऊप
जै॥ सो मति पहली होइ॥ कबहूं न दादू

सुखिया सोइ ॥ १६ ॥ दादू मरिबे की सब ऊपजे, जीवे की कछु ना
हिं । जीवे की जाणे नहीं, मरिबे की मन मांहि ॥ १७ ॥ [illegible]
[illegible] दादू नमो नमो
निरंजनं, नमसकार गुरदेवतः । बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं प
रंगतः ॥ १ ॥ आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै बिकार । निरबै
री सब जीव सौं, दादू यहु मत सार ॥ २ ॥ निरबैरी निज आ
तमा, साधन का मत सार । दादू दूजा राम बिन, बैरी मं कि
बिकार ॥ ३ ॥ निरबैरी सब जीव सौं, संत जन सोई । दादू ए
के आतमा, बैरी नहीं कोई ॥ ४ ॥ सब हम देख्या सोधि करि,
दूजा नाहीं आन । सब घटि एकै आतमा, क्या हिंदू मुसल
मान ॥ ५ ॥ दादू नारि पुरिष का नांउ धरि, इहि संसै भ्रमि भु
लान । सब घटि एकै आतमा, क्या हिंदू मुसलमान ॥ ६ ॥
दून्यूं साई हाथ पग, दून्यूं साई कान । दून्यूं साईं नैन हैं, हिं
दू मुसलमान ॥ ७ ॥ दादू के दूजा नहीं, एकै आतम राम । सत
गुर सिर परि साध सब, प्रेम मगन विश्राम ॥ ८ ॥ दादू सं
सा आरसी देखत दूजा होइ । भरम गया दुबिध्या मिटी, तब
दूसर नाहीं कोइ ॥ ९ ॥ दादू किस सौं बैरी ह्वै रह्या, दूजा कोई
नांहि । जिसके अंग थैं ऊपजे, सोई है सब मांहि ॥ १० ॥ सब घ
टि एकै आतमा, जाणै सो नीका । आपा पर मैं चीन्हि ले, दर
सन है पीव का ॥ ११ ॥ काहे को दुख दीजिये, घटि घटि आत
म राम । दादू सब संतोषिये, यहु साधौं का काम ॥ १२ ॥ ए
के अलह राम है, समरथ सांई सोइ । मैदे के पकवान सब,
षातां होइ सु होइ ॥ १३ ॥ काहे कौं दुख दीजिये, सांई है सब
मांहि । दादू एकै आतमा, दूजा कोई नांहि ॥ १४ ॥ साहिब जी
की आतमा, दीजै सुख संतोष । दादू दूजा को नहीं, चौदह
तीन्यूं लोक ॥ १५ ॥ दादू एकै आतमा, साहिब है सब मांहि

साहिबकेनातैमिले॥सेषपंथकेनांहि॥१६॥ दाद्‌जब
जांणपिछांणैंआपको॥ आतमसबसांई॥ सिरजंनहा
रासबनिका॥तासोंल्योलाई॥१७॥ आतमरांमबिचा
रिकरि॥घटिघटिदेवदयाल॥दाद्‌सबसंतोषिये॥
सबजीवोंप्रतिपाल॥१८॥दाद्‌पूरणब्रह्मबिचारिले
दुतीभावकरिदूरि॥सबघटिसाहिबदेषिये॥रांमरह्या
[illegible]
[illegible]
[illegible]
रिया॥तोइजाकोणगवार॥२१॥तनमनआतमगाक
हो॥इजासबउनहार॥दाद्‌दूजापायानहीं॥इतिभ्रम
मेंविकार॥२२॥दाद्‌सूकासदजेंकोजिव [illegible]
नांहिं॥काहेकोदुषदीजिये॥साहिबमांहिंनांहिं॥२३॥
जूंआपेदेषैआप कों॥ [illegible]
हौ॥दुषनपावैकोइ॥ [illegible] ॥कागकेदहि [illegible]
गयेअनंतकपार॥ [illegible]
रा॥२५॥ घटघटकेनहारवद [illegible]
इएकअनेकदे॥ [illegible]
रसब॥सांई [illegible]
सेकैजाइ॥ [illegible]
आदिअनिरवये [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

के ३१ दादू अरस खुदाइ का॥ अजरावर का थान॥
दाइ सोकर ठाहिये॥ साहिब का नीसाण॥ ३२ दादू
आप छिपावै दूजरा॥ तिस का का कारहि जेतन
प्रत बिषमे सुरकीया॥ सो साने जीव रतन॥ ३३ मसी
ति सवारी मानसौं॥ तिस कौं करहि सलाम॥ औ न
आप पैदा कीया॥ सो ढाहै मुसलमान॥ ३४ दादू जे॥
गल माहै जीव जे॥ जग पैर है तदास॥ से
नकरा तिदिन॥ निहचल नाहीं बास॥ बाचा बंधी
जीव सब॥ सोजन दोषा घासा॥ आतम म्यानन की
पजै॥ दादू कारहि बिलासा॥ ३५॥ दादू काला मुहे
रिकरदका॥ दिलपै दूरि निवारि॥ सब सू रति सु
बद्दानकी॥ मुला मुगधन मारि॥ ३६॥ माला मुसेका
काटिये॥ माया मनी कौं मारि॥ पचौलि समलकी
जिये॥ सब जीव उमारि॥ ३७॥ दादू डुनिया सौति
लबंधि करि॥ बैठे दीन गवाइ॥ नेकौं नाबू बिस
रिकरि॥ करदक माया षाइ॥ ३८॥ मिहरि महल
मनिनहीं॥ दिलके बजर कगोर॥ काले का फिर
कहिये॥ मोमिन मालिक ओरा॥ ३९॥ दादू दया
नौकै दिल नहीं॥ बऊरि कहावै साध॥ जे मुछ
काटै छिये॥ तौ लागै बड अपराध॥ ४०॥ मासु
हराम द पीवै॥ बिषै बिकारा सोइ॥ दादू
मशेम बिन॥ दया कहां थी होइ॥ ४१॥ ओरहि
आतमा॥ दया नहीं दिल माहिं॥ दादू मू
नाकौ मारखा जांहि॥ ४२॥ मास अहारा जेर
नरसिंघ सियाल॥ बगा मंजार सुनहां सहैं
पतिका ला॥ ४३॥ नाहर सिंघ सयाल म

मुसलमान॥मासषाइमोमिनहूये॥बडेमीयांका
गांन॥४४॥बेमिहरगुमराहगाफिल॥गोसतषुर
दनी॥बेदिलबदकारआलम॥हयातमुरदनी॥४
५॥ऊलिआलमयेकेदीदम॥अरवाहेयेक लास
बअमलबदकारदुई॥पाकयारांपास॥४६॥साव
धानजेपथमी॥दयाबिहूंणांदेस॥सगतिनहीस
गवंतकी॥नहांकेसाध वेस॥४७॥कालझालमैंका
ढिकरि॥आतमअंगिलगाइ॥जीवदयायहुपा
लिये॥दादूअमृतषाइ॥४८॥दादूबुरानबांछैजी
वका॥सदासजीवनिसोइ॥परलेबिषैबिकारसब
भावभगतिरतहोइ॥४९॥नांकोबैरीनांकोमीत॥
दादूरामभिलनकीचींत॥५०॥दादूजेसाहिबले
षालीयां॥तोसीसकाटिसूलीदीया॥मिहरिमयां
करिफिरिलीया॥तोजायेजीयेकरिजीया॥५१॥तुम्ह
कों भावै औरकछु॥हमकछुकीयाऔर॥दया
करौतौछूटिये॥नहींतौनाहींठौर॥५२॥इतिदया
ग निर्वैरताकोअंगसंपूर्ण॥सुंदरीकोअंग॥दादूनमोनमोनिरंजनं र
नमसकारगुरदेवतह॥बंदनंसर्बसाधवा॥प्र
णांमंपारंगतह॥१॥आरतिवंतीसुंदरी॥पलपल
चाहैपीव॥दादूकारणिकंतके॥तालाबेलीव जी
२॥रतिवंतीआरतिकरै॥रांमसनेही आव॥
दादूऔसरिअबमिलें॥यहुबिरहणिकाभा
व॥३॥काहेनआवहुकंतघरि॥क्यूंतुम्हरहेरि
साइ॥दादूसुंदरिसेजपरि॥जनमअमोलिकजा
इ॥४॥आतमअंतरिआवतूं॥याहैतेरीठौर
दादूसुंदरिपीवतूं॥दूजानांहीऔर॥५॥ दादू

रसजपति ।। सदायेकरसहोइ ।। दादूघेलैणीकूसी ।। तीस
औरनकोइ ।।
दादूनमोनमोनिरंजनं ।। नमसकारगुरदेव
तह ।। बंदनंसबसाधवा ।। प्रणामंपारंगतह ।। दादू
घटिकसतूरीमृगकै ।। नरमतफिरैउदास ।। अंतरग
तिजाणैनहीं ।। ताथैसूंघैघास ।। दादूसबघटमैं
बिदहै ।। सागिरहै दूरिपास ।। कस्तूरामिरगमैबसै सू
घतफेरैघास ।। दादूजीवनजाणैरामकौ ।। रामजी
व केपास ।। गुरकेसबदौंबाहिरा ।। ताथैफिरैउदा
सा ।। दादूजाकारणिजगढूंढिया ।। सोतोघटहीमाहिं ।। मै
नैघट दाजमका ।। ताथैजाणतनांहि ।। दादूहरिक
हैतेहूरिहैरामरह्यासरपूर ।। नैनडौंबिनसूझैनहीं ।। ता
औरविकत हरि ।। दादूपडदाजमका ।। रह्यासक
घटछाइ ।। गुरगोबिंदकृपाकरैं तोसहजैहीमिटिजा
।।१०।। सरवर ।। नरियादहरिसा ।। पंषीप्यासाजा
दादूगुरचसाद बिन ।। क्यूंजलपीवैआइ ।।११।। दादू
मोहरौपांयासे ।। नलधोकमंझ ।। नजाताकूपायामै
ईक्यापंथ ।।१२।। दादूकेईदौडैद्वारिका ।। केईका
हि ।। केईमथुराकौचले ।। साहिबघटहीमाहिं ।।
दादूमनकेचेलामनकिगुरु ।। मनकेईउपदेस ।। बाहरि
बावरे ।। जटाबधायेकेस ।।१३।। दादूसबघटमौं
रह्या ।। बिरलाबूझेकोइ ।। सोईबूझैरामकौ ।। जे
नेहीहोइ ।।१४।। सदासमीपरहै संगिसनमुषा
बैनगूझ ।। सुपिनैंहीसमझेनहीं ।। क्यूंकरिलहै
।।१५।। दादूजडमतजीवजाणैनहीं ।। परमस्वाद
इ ।। चेतनसमझेस्वादसुष ।। पावैप्रेमरस घ

जागतजेआनंदकरै॥सोपावैसुषस्वादु॥सूतैंसुषन
पाईये प्रेम गवायाबादु॥ ॥ दादू जिसका साहिब
जागणा सेवग सदा सचेत॥ सावधान सनमुषरहै
गिरिगिरिपडैअचेत॥ ॥ दादू माई सावधान केनहीं
सबैअचेत॥ जागणा नाथी नजागहीं॥ नाथै निरषै ...
न॥ ॥ दादू गोब्यंदकेगुणचिंतवै कोईन जाणैजा
व॥ अपणांबूझेआपगति जे जाणैतायंत व ...
... दादू
... साधका गुरदेवतद ...
साधवा॥ उणामयारगतहां॥२॥ साधूनिरमलंनहीं॥ म
रामरमैसम नाइ॥दादूश्रीगुणकाढिकरि॥जीवरसा
तलिजाइ॥२॥ दादू जबहीसाधसताईये॥तबहीऊं
धपलट॥ आकासधसैधरतीषिसै॥तीन्यूंलोकगरट
॥३॥ दादूजिहिघरिनिंद्यासाधकी॥सोघरगयेसमू
ल॥तिनकीनीवनपाईये॥नांउनठांउनधूल॥४॥दा
दूनिंदानांउनलीजिये॥सुपिनैंहीजिनिहोइ॥नाहम
कहैंनतुमसुणौं॥हमजिनिभाषैकोइ॥५॥ दादूनिं
दाकीयैनरकहै॥कीटपडैंमुषमांहि॥रामबिमुषजां
मैंमरै॥भगमुषआवैंजांहिं॥६॥ दादूनिंदकबपु
राजिनिमरै॥परउपगारीसोइ॥हमकौंकरताऊजला
आपणमैलाहोइ॥७॥दादूजिहिंबिधिआतमउधरै॥
षसैप्रीतमप्रांण॥साधसबदकौंनीदणां॥समझैचतु
रसुजांण॥८॥ दादूश्रणदेष्याअनरथकहैं॥कलिपि
थमीकापाप॥धरतीअंबरजबलगैं॥तबलगकरैक
लाप॥९॥ अणदेष्याअनरथकहै॥अपराधीस
मार॥जदिनदिलैषालेइगा॥सब्रपसिरजनहार॥

॥१०॥ दादू फिरिये लोक सौं के साधैं उठाइ। अणदेषी
जे बकी ऐसी कहैं बणाइ ॥११॥ दीसै मांणस प्रतषि का
ल जूं करि त्यूं करि दादू टालि ॥१२॥ दादू अमृत कौं बिष
बिष कौं अमृत फेरि धरैं सब नांउ। नृमल मैला मैला नि
रमल जाहिंगे किस ठांउ ॥१३॥ दादू साचे कूं झूठा कहैं झू
ठे कौं साचा राम। दादू काढिये केठ पैं बाचा ॥१४॥ झूठ
नकहिये साच कौं साच न कहिये झूठ ॥ दादू साहिब मा
नै नहीं लागै पाप अषूट ॥१५॥ दादू झूठ दिषावै साच
कौं भयानक भैसीत। साचा राता साच सौं झूठ न आ
वै चीत ॥१६॥ दादू जूं जूं नींदै लोक बिचारा त्यूं त्यूं छी
जै रोग हमारा ॥१७॥ साचे कौं झूठा कहै झूठा साच समा
न। दादू अचिरज देषिया यहु लोगों का ग्यान ॥१८॥ इति
साच कौ अंग ॥ अथ भिषारी कौ अंग ॥ दादू नमो नमो
निरंजनं नमसकार गुरदेवतः। बंदनं सर्बसाधवा
प्रणामं पारंगतः ॥१॥ दादू चंदन बावना बसै बटाऊ
८ आइ। सुष दाई सीतल कीये तीन्यूं ताप नसाइ ॥ का
ल कुहाड़ा हाथि ले काटण लागा ठाइ। ऐसा यहु स
सार है डाल मूल ले जाइ ॥२॥ सतगुर चंदन बावना
लागे रहैं भुवंग। दादू बिष छाडैं नहीं कहा करै सतसं
ग ॥३॥ दादू कीड़ा नरक का राष्या चंदन मांहि। उल
टि अपूठा नरक मैं चंदन भावै नांहि ॥४॥ सतगुर साध
सुजांण है सिष का गुण नहीं जाइ। दादू अमृत छाडि
करि बिषै हलाहल षाइ ॥५॥ कोटि बरस लौं
राषिये बंसा चंदन पासि। दादू गुण लीये रहै कदे न
लागै बास ॥६॥ कोटि बरस लौं राषिये पथर पाणी
मांहि। दादू आगा अंग है भीतरि भेदै नांहि ॥७॥

कोटि बरस लौं राखिये। लोहा पारस संग॥ दादू रोम क
अंतरा। पलटै नांही अंग॥८॥ कोटि बरस लौं राखि
ये। जीव ब्रह्म संगि दोइ॥ दादू मांहैं बासना। कदे न मे
ला होइ॥९॥ मूसा जलता देखि करि। दादू हंस दयाल
मान सरोवर लै चल्या। पंषा काटै काल॥१०॥ सब जी
व भुवंगम कूप मैं। साधू काटैं आइ॥ दादू बिसहर बि
स तरै। फिरि ताही कौं खाइ॥११॥ दादू दूध पिलाइये।
बिसहर बिस करि लेइ॥ गुण का औगुण करि लीया।
ताही कौं दुख देइ॥१२॥ बिन ही पावक जलि मूवा। ज
वासा जल मांहिं॥ दादू सूकै सींचतां। तो जल कौं दूसन
नांहिं॥१३॥ सुफल ब्रिष परमारथी। सुष देवै फल फूल॥
दादू ऊपरि बैसि करि। निगुणां काटै मूल॥१४॥ दादू स
गुणां गुण कथै। निगुणां मानै नांहिं॥ निगुणा मरि निफ
ल गया। सगुणां साहिब मांहिं॥१५॥ निगुणां गुण मानै
नहीं। कोटि करै जे कोइ॥ दादू सब कुछ सौंपिये। सो फि
रि बैरी होइ॥१६॥ दादू सगुणां लीजिये। निगुणां दीजे डा
रि॥ सगुणां सनमुख राखिये। निगुणां नेह निवारि॥१
७॥ सगुणां गुण केते करै। निगुणा न मानै एक॥ दादू
साधू सब कहैं। निगुणां नरक अनेक॥१८॥ सगुणां गुण
केते करै। निगुणां नां छेटाहि॥ दादू साधू सब कहैं। निगु
णां निरफल जाइ॥१९॥ सगुणां गुण गु केते करै। निगुणा न
मानै कोइ॥ दादू साधू सब कहैं। भला कहां थैं होइ॥२०
सगुणां गुण केते करै। निगुणा न मानै नीच॥ दादू साधू
सब कहैं। निगुणा के सिरि मीच॥२१॥ साहिब जी सब गु
ण करै। सतगुर ने
गुण न मानै कोइ॥२२॥ साहिब जी स

सतगुरमांहैआइ॥ दादूराषेजीवदे निगुणामेटैजाइ॥
॥३॥ साहिबजीसबगुणकरै सतगुरकादेसंग॥ दादूध
लैराषिले निगुणांपलटैअंग॥४॥ साहिबजीसबगु
णकरै सतगुरआडादेइ॥ दादूतारैदेषतां निगुणा
गुणनहीलेइ॥५॥ सतगुरदीयारामधन रहैसबुधि
बताइ मनसाबाचाकमनां बिलसैबैतडैषाइ॥६॥
कीयाकिरतमेटैनहीं गुणहीमांहिसमाइ॥ दादूबधे
अनंतधन कबहूंकदैनजाइ॥१२॥ इतिनिगुणा
कौअंगसंपूर्ण॥ अथगुरुदेवकौअंग॥ दादूनमोनमोनि
रंजन नमसकारगुरदेवतह॥ बंदनंसबसाधवा
प्रणामंपारंगतह॥१॥ दादूबंतबुराकीया तुम्हनकर
णारोस॥ साहिबसमाईकाधणी बंदेकोंसबदोस॥
॥२॥ दादूबुराबुरासबहमकीया सोमुषकह्यानजा
न्रमलमेरासांईयां ताकोंदोसनलाइ॥३॥ सांईसेवा
चोरमें अपराधीबंदा॥ दादूइजाकोंनहीं मुझसरी
षागंदा॥४॥ दादूतिलतिलकाअपराधीतेरा रतीरती
काचोर पलपलकामेंगुनहीतेरा बकसहुऔगुण
मोर॥५॥ महाअपराधीयेकमें सारेइहिंसंसार औ
गुणमेरेअतिघणां अंतनआवैपार॥ बेमरजादामि
नहीं ऐसेकीयेअपार मेंअपराधीबापजी मेरेतुम्हहे
येकअक्षर॥६॥ दोषअनेककलंकसब बहुतबु
मुझमांहि मेंकीयेअपराधसब तुम्हथेंछानांनांहि
गुनहगारअपराधीतेरा साजिकहांहमजाहिं
दू देष्यासोधिसब तुम्हबिनकहींनसमाहिं
॥८॥ आदिअंतिलोंआइकरि सुकृतकछूनकी
मायामोहमदमछरा स्वादसबैचितदीन्ह॥ काम

बसै सै सं दा॥ कहु कै नां नें न लीन्हा॥ पाछै फड़ चपा॥ पम
दादू ऐसे मैं छीना॥७॥ दादू बहु बंधन सौं बंधिया॥ ए
क बिचारा जीव॥ अपणे बल छूटै नहीं॥ छोड़ण
हारा पीव॥८॥ दादू बंदी वान है॥ तूं बंदि छोड़ि दिवा
न॥ अब जिनि राखहु बंदि मैं॥ मीरां मिहर वान॥९॥
दादू अंतरि कालिमां॥ हिरदै बहु बिकार॥ प्रगट
पूरा दूरि करि॥ दादू करै पुकार॥१०॥ सब कुछ व्यापै
राम जी॥ कुछ छूटा नांही॥ तुम्ह थै क्या छिपाइये॥ स
ब देषौ मांही॥११॥ सबल साल मन मैं रह्या॥ राम बिस
रि क्यूं जाइ॥ यहु दुष दादू क्यूं सहै॥ सांई करो सहाइ
॥१२॥ राषणहारा राषि तूं॥ यहु मन मेरा राषि॥ तुम्ह बि
न दूजा को नहीं॥ साधू बोलै साषि॥१३॥ माया बिषै बि
कार थै मेरा मन भागै॥ सोई कीजे सांईयां॥ तूं मीठा लागै
॥१४॥ जे साहिब कौं भावै नहीं॥ सो हम थैं जिनि होइ॥
सतगुर लाजै आपणां॥ साध न मानैं कोइ॥१५॥ जे तूं आपे
देषै आपकौं॥ सो नैनां दे मुझ॥ मीरां मेरा मिहर करि॥ दादू
देषै तुझ॥१६॥ दादू पछितावा रह्या॥ सके न ठाहर ला
इ॥ अरथि न आया राम कै॥ यहु तन यूंही जाइ॥१७॥
कहतां सुणतां दिन गये॥ ह्वै कछू न आया॥ दादू हरि
की भगति बिन॥ प्राणी पछिताया॥१८॥ सो कुछ हम थै
नां सया॥ जा परि रीझै राम॥ दादू इस संसार मैं॥ हम
आये बेकाम॥१९॥ दादू कहै दिन दिन नौतम भगति दे
दिन दिन नौतम नांव॥ दिन दिन नौतम नेह दे॥ मैं बलि
[illegible]॥ सांई सत संतोष दे॥ भाव भगति बेसा
स॥ सिदक सबूरी सांच दे॥ मांगै दादू दास॥२१॥ सांई सं
सै दूरि करि॥ करि संक्या का नास॥ सांनि

डुषद्यारन॥ समितासहज प्रकास॥२२॥ नाहीप्रगटक
रह्या है सोर द्यालुकाइ॥ सांईयां पड दा दूरि करि
मूं है प्रगट आइ॥२३॥ दादू माया प्रगट है रही यूं जे
होता राम॥ अरस परस मिलि षेलते सब जीव सब ठां
गम॥२४॥ दयाकरै तब अंगि लगावै भगति अषं
डित देवै॥ दादू दरसन आप अकेला दूजा हरि
सब लेवै॥ दादू साध सिषावै आतमा सेवा दि
ढ करि लेइ॥ पारब्रह्म सों बीनती दया करि दरसन
दे ऊ॥२६॥ साहिब साध दयाल है हम ही अपरा
धी॥ दादू जीव अभागीया अविद्या साधी॥२७॥ सब जो
व तोरै राम सों पै राम न तोरै॥ दादू काचे ताग ज्यूं टूटे
त्यूं जोरै॥२८॥ फूटा फेरि सवारि करि लेपहूंचावै ओ
र॥ ऐसा कोई ना मिलै दादू गई बहोर॥२९॥ ऐसा को
ई ना मिलै तन फेरि सवारै॥ बूढे थें बाला करै षेका
ल निवारै॥३०॥ गले बिलै करि बीनती एकमेक अर
दास॥ अरस परस करुणा करै तब दरवै दादू दास॥
भै ३१॥ सांई तेरे डर डरौं सदा रहौं तीत॥ अजा सिंघ ज्यूं
भै घणां॥ दादू लीया जीति॥३२॥ दादू पलक मांहि प्रगटै
सही जे जन करै पुकार॥ दीन दुषी तब देषि करि अ
ति आतुर तिहि बार॥ आगे पीछे संगि रहै आप उठा
ये सार॥ साध दुषी तब हरि दुषी ऐसा सिरजनहा
र॥३३॥ सेवग की रष्या करै सेवग को प्रतिपाल॥ सेव
ग की बाहर चढै दादू दीनदयाल॥३४॥ काया नाव
दिवू मंद मैं औघट आइ॥ इहिं औसर येक गाध बिन
दू को रास हाइ॥३५॥ यहु तन मेरा सो जौं कूं करि
थे तार॥ षेवट बिन कैसै तिरै दादू गहर गंभीर॥

पंडु परोहन स्यंध जल। दीसा गर संसार। राम बिनां सूझै
नहीं। दादू षेवण हार॥३६॥ आयु कृ घट बोहिथ धार मैं॥
दरिया वार न पार। सिसीतल नयां न कहै बिकरि। दादू क
री उकार॥३७॥ कलिजुग घोर अंधार है॥ तिसका वार
न पार॥ दादू तुम्ह बिन क्यूं तिरै। समर्थ सिरजनहार
॥३८॥ काया के बसि जीव है। कसि कसि बंध्या मां
हिं। दादू आतम राम बिन। क्यूं ही छूटै नांहिं॥३९॥ दादू
प्राणी बंध्या पंच सौं। क्यूं ही छूटै नांहिं। नीधणि आया
मारिये। यहु जीव काया मांहिं॥४०॥ दादू कहै तुम्ह बि
न धणी न धोरी जीव का। यूं ही आवै जाइ। जे तूं साईं स
ति है। तो बेगा आगटि आइ॥४१॥ नीधणि आया मारि
ये। धणी न धोरी कोइ। दादू सो क्यूं मारिये। साहिब सि
रपरि होइ॥४२॥ राम बिमुष जुगि जुगि दुषी। लष चौरा
सी जीव। जांमै मरै जग आवटे। राषण हारा पीव॥४३॥
समर्थ सिरजनहार है। जे कछू करै सु होइ। दादू सेव
ग राषिले। काल न लागै कोइ॥४४॥ साईं साचा नांउं दे। का
ल झाल मिटि जाइ। दादू निरभै है रहै। कबहूं काल न षा
इ॥४५॥ कोई नहीं करतार बिन। प्राण अधारण हार।
जीव दुषीया राम बिन। दादू इहि संसार॥४६॥ जिनकी
रष्या तूं करै। ते उबरे करतार। जे तैं छाडे हाथ थैं।
ते डूबे संसार॥४७॥ राषण हारा एक तूं। मारण हार अ
नेक॥ दादू के दूजा नहीं। तूं आपै ही देष॥४८॥ दादू जु
ग आसा जम रूप है। साहिब राषण हार। तुम्ह बिचि
अंतर जिनि पड़ै। ताथैं करौं पुकार॥४९॥ जहां तहां बि
षै बिकार थैं। तुम्ह ही राषण हार॥ .:
पिया। साचा सिरजनहार॥५०॥

तजि जात है ॥ तुम्ह बिन संसार ॥ कर गहि करता काढि
ले है अवलंबन आधार ॥ ॥ दादू दौं लागी जगपज
ले घटि घटि सब संसार ॥ हम थैं कछू न होत है ॥ बरषि
बुझावणहार ॥ ॥ आतम जीव अनाथ सब ॥ करता
रखवारै राम निहोरा कीजिये ॥ जिनि काहू मारै ॥ ॥
अरस जिमीं औजूद मैं ॥ तहां तपै अफताब ॥ सब ज
ग जलता देखि करि ॥ दादू पुकारै साध ॥ ॥ सकल भुव
न सब आतमा ॥ निरबिष करि हरि लेइ ॥ पड़दा है सो दूरि
करि ॥ कुसमल रहण देइ ॥ ॥ तन मन निरमल आ
तमा ॥ सब काहू की होइ ॥ दादू बिषै बिकार की ॥ बात न
बूझै कोइ ॥ ॥ समरथ धोरी कंध धरि ॥ रथ ले ओर निबाहि
मारग मांहि न मेलिये ॥ पीछैं बिड़द लजाइ ॥ ॥ दादू गग
न गिरै तब को धरै ॥ धरती धर छंडै ॥ जे तुम्ह छाडहु राम
रथ कंध को मंडै ॥ ॥ दादू जग जरै तब गगन थैं टूटै
कहां धरणि कहां ठाम ॥ लागी सुरति अंग थैं छूटै ॥ सो क
त जीवै राम ॥ ॥ अंतरजामी एक तूं ॥ आतम के आधा
र ॥ जे तुम्ह छाडहु हाथ थैं ॥ तो कोंण संबाहणहार ॥ तेरा
सेवग तुम्ह लगैं ॥ तुम्ह ही माथै भार ॥ दादू डूबत राम
बेगि उतारो पार ॥ ॥ सत छूटा सूरातन गया ॥ बल पौरि
ष भागा जाइ ॥ कोई धीर न धरै ॥ काल पहूंता आइ ॥ स
गी था के संग के ॥ मेरा अंग न साइ ॥ साथ सगति धन लू
टि ॥ दादू दुखिया दास ॥ ॥ दादू आया रे जम न्हां ॥ बि अ
मन पावै ॥ आतम पांणी लूण ज्यूं ॥ ऐसे होइ न आवै
॥ ॥ दादू तेरी खूबी खूब है ॥ सब नीका लागै ॥ सुंदर सो
भा काढि ले ॥ सब कोई भागै ॥ ॥ तुम्ह हौ तैसा कीजिये
तो छूटैंगे जीव ॥ हम हैं ऐसा जिनि करौ ॥ मैं सदिके

पाव॥४॥ अनाथौं का आसिरा॥ निरधारौं आधार॥ नि
रधन का धन रांम है॥ दादू सिरजनहार॥५॥ साहिब तू
रि दादू दखा॥ निसदिन करै पुकार॥ मीरा मेरा मिहर क
रि॥ साहिब देही दार॥६॥ दादू प्यासी प्रेम का॥ साहिब
रांम पिलाइ॥ प्रगट प्याला देहु भरि॥ मृतक लेहु जिला
इ॥७॥ अला आले नूर का॥ भरि भरि प्याला देहु॥ हम
कौं प्रेम पिलाइ करि॥ मतिवाला करि लेहु॥८॥ तुम्ह
कौं हम से बहुत हैं॥ हम कौं तुम्ह से नांहिं॥ दादू कौं जि
नि परहरौ॥ तूं रहु नैनहु मांहि॥९॥ तुम्ह थैं तबहीं हो
इ सब॥ दरस परस दरहाल॥ हम थैं कबहूं न होइगा॥
जे बीचहिं जुग काल॥१०॥ तुम्ह हीं थैं तुम्ह कौं मिलौ॥ ए
क पलक मैं आइ॥ हम थैं कबहूं न होइगा॥ कोटि कल
प जे जाइ॥११॥ साहिब सौं मिलि खेलते॥ होता प्रेम सने
ह॥ दादू प्रेम सनेह बिन॥ खरी दुहेली देह॥८॥ साहि
ब सौं मिलि खेलते॥ होता प्रेम सनेह॥ प्रगट दरसन देत
तौ॥ दादू सुखिया देह॥९॥ आपा अपरंपार का॥ बस
अंबर सरतार॥ हरे पटंबर पहरि करि॥ धरती करै सिंगा
र॥ बसुधा सब फूलै फलै॥ पिरथी अनंत अपार॥ गग
न गरजि जल थल भरै॥ दादू जै जैकार॥१०॥ काला मुंह
करि काल का॥ सांई सदा सुकाल॥ मेघ तुम्हारे घरि घणां॥
बरसहु दीनदयाल॥११॥ तुम्ह कौं भावै और कछु॥
हम कूं भावै और॥ मिहर करौ तो छूटिये॥ नहीं तो
नांहीं ठौर॥१२॥ तुझ भावै सो मैं कीया॥ तुझ भावै सो नां
हिं॥ दादू गुनहगार है॥ मैं देख्या मन मांहिं॥१३॥ दादू
खुसी तुम्हारी त्यूं करो॥ हम तौ मांनी [illegible] सो तेरे बंद
[illegible] बकसिये॥ सावै गहि करि मारि॥ [illegible] देव
लेखा लीया॥ तौ सीस काटि सूं

करि किति कीया ॥ तो आये जीये करि जीया ॥ [illegible]
[illegible] कौ अंग ॥ [illegible] दादू नमो नमो
निरंजनं नमसकार गुरदेवतह् बंदनं सब साधवा
प्रणामं पारंगतह् ॥१॥ सब देषण हारा जगत का अंत
रि पूरै साषि ॥ दादू स्यावति सो सही दूजा और न राषि
॥२॥ मांहे थै मुझ कौं कहै अंतरजांमी आप दादू दू
धंधै साचा मेरा जाप ॥३॥ करता है सो करैगा दादू सा
षी भूत ॥ कौतिगहारा कै रह्या अणकरता औधूत
॥४॥ आप अकेला सब करै घट मैं लहरि उठाइ दा
दू सिरि दे जीव कै यूं न्यारा ह्वै जाइ ॥५॥ आप अकेला
सब करै औरों के सिरि देइ दादू सोभा दास कौं अप
णां नांउ न लेइ ॥६॥ दादू जसकरि उतपति करै सानंग
करि प्रतपाल नामस करि पलै करै निरगुण कौ निग
हार ॥७॥ दादू भुल जीव हरि आतमां षेलै गोपाल कांन्ह
सकल निरंतर भरि रह्यो साषी भूत सुजांन ॥८॥ जांम
णमरणो सोतिं करि यहु पिंड उपाया साईं दीया जी
व कौं ले जग मैं आया ॥ विष अंमृत सब पावक पांणी
सतगुरि समझाया ॥ मनसा बाचा क्रमनां सोई फल पा
या ॥९॥ दादू जांणै बूझै जीव सब गुण औगुण कीजे
जांणौं बूझै पावक पड़ै दई दोस न दीजे ॥१०॥ मन ही मां
है केमरे जीवै मन ही मांहि साहिब साषी भूत है
दादू दूसण नांहि ॥११॥ बुरा भला सिरि जीव के होवै
इस ही मांहि दादू करता करि रह्या सो सिरि दीजे नां
हिं ॥१२॥ समरथ कौं राषिये कीजै पंउपगार दादू से
वग सो सला निरंजन निरकार ॥१३॥ जिस का तिस कौं
सौंपिये सुकृत पंउपगार दादू सेवग सो सला सि
रि नही लेवै आप ॥१४॥ [illegible]

मांहि बसावे।।दादू उसकौं पूछिये।।अंतर नहीं आवे।
सेवा सु कंत सब गाय।।मे मेराम मन मांहि।।दादू आप।
अबलगों।।साहिब मांनें नांहि।।६।।दादू केई उतारे
आरती।।केई सेवा करि जांहि।।केई आय पूजा करें।।
केई मुलावें मांहि।।केई सेवग केरहे।।केई साधु संति
मांहि।।केई आइ दरसन करें।।हम तें होतां नांहि
।।७।।नां हम करें करावें आरती।।नां हम पीवें पीं
वें नीर।।करे करावे साईयां।।दादू सकल सरीर।।८।।
दादू जब वा मेलें जागाराइ।।ता कौं लेबेन कोइ।।सब
जग बैठा जीति करि।।काहू लिपत न होइ।।२०।।
पूछेला कोनेआंग।। दादू मन मोन मो निरंजनां।।निमस्का
र गुरदेव तत।।बंदनं सरब साधवा।।प्रणामं पारंगत
।।१।।दादू अंम न रूपी नांउ ले।।आतम तत पोषै।।सह
जे सहज समाधि मैं।।धरणी जल सोषै।।पसे रेली न्यूं लो
कमैं।।लिपत नहीं पाषै।।सो फल लागे सहज मैं।।सुंद
र सब लोकौं।।२।।दादू बेली आतमा।।सहज फूल फ
ल होइ।।सहज सहज सत गुर कहै।।बूझे बिरला को
इ।।३।।जिसा हिब सींचे नहीं।।तो बेली कुम्हिलाइ।।दा
दू सींचे सांईयां।।तो बेली बधती जाइ।।४।।हरि तरवर
तत आतमां।।बेली करि विसतारा।।दादू लागे अमर
फल।।कोई साधु सींचण हारा।।५।।दादू सूका रूषडा
।।काहे न हरिया होइ।।आपै सींचे अमीरस।।सू फल
फलिया सोइ।।६।।कदे न सूके रूषडा।।जिम अमृत
सींच्या आप।।दादू हरिया सो फ
पा।।७।।जि घट रोपे राम जी।।सं

॥गी अमरफल॥ कबहू सूकै न जाइ॥ दादू रज्जल
बरिषै बाहिरा सूकै काया खेत॥ दादू हरिया होइगा
सींचणहारसु चेत॥ दादू अमर बेलि है आतमा
खार समंदा मांहि॥ सूकै खारे नीर सूं अमर फल ला
गै नाहिं॥ दादू बहु गुणवंती बेलि है ऊगी काल
र मांहि॥ सींचे खारे नीर सूं ताथैं निपजै नाहिं॥
बहु गुणवंती बेलि है मीठी धरती बाहि॥ मीठा पा
णी सौं सींचिये दादू अमर फल खाइ॥ अमृत बेली
बाहिये अमृत का फल होइ॥ अमृत का फल खा
इ करि॥ मृत्यान सुणिये कोइ॥ विष की बेली बा
हिये॥ विष ही का फल होइ॥ विष ही का फल खाइ क
रि अमर नहीं कलि कोइ॥ सतगुर संगति नी
पजै साहिब सींचणहार॥ प्राण विरख पीवै सदा
॥ दादू फलै अपार॥ दया धर्म का रूंखड़ा स
त सौं बधता जाइ॥ संतोष सौं फूलै फलै॥ दादू अम
र फल खाइ॥ दादू नमो नमो
निरंजनं॥ नमसकार गुरदेवतह॥ बंदनं सर्व साध
वा॥ प्रणामं पारंगतह॥ दादू संगी सोई कीजिये जे
कलि अजरावर होइ॥ ना वहु मरै न बीछुटै ना
दुख व्यापै कोइ॥ दादू संगी सोई कीजिये जे अस
थिर इहि संसार॥ ना वहु खिरै न हम खपैं ऐसा ले
हु बिचार॥ दादू संगी सोई कीजिये सुख दु
ख का साथी॥ दादू जीवण मरण का॥ सो सदा सं
गाती॥ दादू संगी सोई कीजिये जे कबहू पल
टि न जाइ॥ आदि अंति बिहड़ै नहीं ताससन यहु

मनलाइ॥५॥दादू काया बिहडै देवता॥माया संगी
निजाइ॥करतम बिहडै बापुरे॥अजरावर ल्पोना
इ॥६॥दादू अबिहड आप है॥अमर उपावणहा
र॥अबिनासी आपै रहै॥बिनसै सब संसार॥७॥
दादू अबिहड आप है॥साचा सिरजनहार॥
आदि अंति बिहडै नही॥बिनसै सब आका
र॥८॥दादू अबिहड आप है॥अबिचल रह्या
समाइ॥निहचल रमिता राम है॥जो दीसै सो जा
इ॥९॥दादू अबिहड आप है॥कबहूं बिहडै नाहि
घटै बधै नही एकरस॥सब उपजि खपैं उस माहि
॥१०॥अबिहड अंग बिहडै नही॥अपलट पल
टि न जाइ॥दादू अघट एकरस॥सब मैं रह्या समा
इ॥ जेते गुण ब्यापै ते तेते तैं अरे मन॥साहिब आपु
नै कारनै॥१२॥इति अबिहड को अंग संपूरण
समाप्तः अंग सैंतीस॥३७॥साखी॥२५३०
॥अथ स्वामी दादू दयालजी के पद राग गौडी॥
१ प्रथम राग गौडी॥ राम नाम नही छा
डौं भाई॥प्राण तजौं निकटि जीव जाइ॥टेक॥रती
रती करि डारै मोहि॥सांई संग न छाडौं तोहि॥१॥
भावै ले सिर करवत दे॥जीवनि मूरि छाडौं तोहि न
॥२॥पावक मैं ले डारै मोहि॥जरै सरीर न छाडौं तो
हि॥३॥अब दादू ऐसी बनि आई॥मिलौं गोपाल
निसान बजाइ॥४॥१॥राम नाम जिनि छाडै कोई॥
राम कहत जन निरमल होई॥टेक॥राम कहत
सुष संप

।। राम कहत जंत निरमल होइ ।। राम नाम कहि कु
समल खोइ ।। राम कहत कोको नहीं तार ।। पद
तत दादू प्राण हमारे ।। २ ।। कौण बिधि पाइऐ रे ।।
मीत हमारा सोइ ।। टे० ।। पास पीव परदेस है रे जब
लग प्रगटै नांहि ।। बिन देषें दुख पाइऐ रे ।। यहु सा
लै मन मांहि ।। जब लग नैन न देषिये ।। प्रगट मि
लै न आइ ।। एक सेज संगांही रहै ।। यहु दुख सह्या
न जाइ ।। तब लग नेडै दूरि है रे ।। जब लग मिलै
न मोहि ।। नैन निकटि नहीं देषिये ।। संग रहै क
होइ ।। क० ।। काहा करौं कैसे मिलै रे ।। तलफै मेरा जी
व ।। दादू आतुर बिरहणी ।। कारणि अपणे पीव ।।
।। ३ ।। जी पराकूं रहै रे ।। तुम्हारे दरसन बिन बे
हाल ।। टे० ।। परदा अंतरि करि रहे ।। हम जीवें किहि
आधारि ।। सदा संगाती प्रीतमा ।। अब के लेहु उबा
रि ।। गोपि गुसाई ह्वै रहे ।। अब काहे न प्रगट होइ
।। राम सनेही संगिया ।। दूजा नांही कोइ ।। अंतरजा
म्या छिपि रहे ।। हम क्यूं जीवैं दूरि ।। तुम्ह बिन व्याकु
ल केसवा ।। नैन रहे जल पूरि ।। आप अपरछन
ह्वै रहे ।। हम क्यूं रैनि बिहाइ ।। दादू दरसन कार
णे ।। तलफि तलफि जीव जाइ ।। ४ ।। आज हूं न निक
से प्राण कठोर ।। दरसन बिना बहुत दिन बीते
सुंदर प्रीतम मोर ।। टे० ।। चारि पहर चारूं जुग
बीते ।। रैनि गमाई भोर ।। अवधि गई अजहूं न
ही आये ।। कतहूं रहे चित चोर ।। कबहूं नैन
निरषि नहीं देषे ।। मारग चितवत तोर ।। दादू ऐसे

आतुर बिरहनी॥ जिसै चंद चकोर २॥५॥ साँइ न
पीव जी सा जिसवारी॥ अबके मिलै तो तन जाइ
बनेवारी॥ टेक साजि सिंगार कीया मन मांही॥ अ
जहुं पीव पती जे नाही॥ पीव मिलन को अहनिस
जागी॥ अजहुं मेरी पलक न लागी॥ जतन जतन
करि पंथ निहारौ॥ पीव भावे त्यूं आप संवारौ॥ अब
सुख दीजे जाऊं बलिहारी॥ कहे दादू सुणि बिप
ति हमारी॥ ६॥ सो दिन कब हूं आवेगा॥ दादू
पीव पावेगा॥ टेक॥ क्यूं ही आपने अंगि लगावेगा
तब सब दुख मेरा जावेगा॥ १॥ पीव आपने बेन सुना
वेगा॥ तब आनंद अंगि न मावेगा॥ २॥ पीव मेरी
प्यास मिटावेगा॥ आपहि प्रेम पिलावेगा॥ ३॥ दे
आपनी दरस दिखावेगा॥ तब दादू मंगल गावे
गा॥ ४॥ ७॥ तै मन मोह्यौ मोर रा रहिमन सकौ फेरा
मजी॥ टेक तोरै नांइ चित लाइ प्यारे॥ अब रजि न्यु
उदास॥ साँई ऐसमकाइया॥ हौं न बाडौ पास रे
॥ जानौ ति नहि नवी छुटोरै॥ जिनि पछिताव
होइ॥ गुन तेरै मन्ना जपौ॥ सुनसी साँई ... सो इरे
मौरै जनम गमाइया॥ चीन्हौं नहीं मो सार॥ अ
जहुं एह अचेत है॥ अबरन ही आधार रे॥ ३॥ पी
व की पीति तौ पाई ऐरे॥ जो सिर होवै भाग॥ सो
तो अनतन जाइसी॥ रहिसी चरनऊ लाग रे॥ ४
अनतैं मन निवारिया॥ मोहि एक हि सेती काज
॥ अनतैगा एंड घरूप जे॥ मोहि
जरे॥ साँई सौ सहजै रमौ

वे॥ तहां मन बिलंबीया॥ जहां चरन मन मेरे॥
चरनके चलत चित लाई यां॥ मोरे हीले मा बंद
ह जन अचेत है॥ सहजैहीते आवे॥ ॥ बिर
ह तिको सिंगारन मावे॥ है कोई ऐसा राम मिल
वे॥ टेक॥ बिसरे अंजन मंजन चीरा॥ बिरह बिथा
ह व्यापे धीरा॥ नवसन थाके सकल स्यंगारा॥
है कोई पीर मिटावनहारा॥ देह गेह नहीं
सुधि सरीरा॥ निस दिन चितवत चातृग नीरा॥
दादू ताहि न भावे आन॥ राम बिना भई मृत
क समान॥ ॥ २६॥ अब तो मोहि लागी बाई॥ उ
ति हरि चल चित लीयो चुराई॥ टेक॥ आन न रूचे मो
रन हीं भावे॥ अगम अगोचर तहां मन जाई॥ रूप नरष
बरन कहौ कैसा॥ तिन चरनौ चित रह्या समाई॥
॥ तिन चरनौ चित सहज समानां॥ सो रस पीनां त
हां मन भाई॥ अब तो ऐसी बनि आई॥ बिषत जे प्र
स्न मन लाई॥ कहा करौ मेरा बस नांहीं॥ और
न मेरे अंग सुहाई॥ पल इक दादू देषण पावे तो
जनम जनम की त्रषा बुझाई॥ ३॥ १०॥ तूं जिनि छाडे
केसवा मेरे औगुन निर्बाहन हारा हो॥ टेक॥ औगुन
मेरे देषि करि तूं नां करि मैला मन॥ दीनांनाथ दया
ल है अपराधी सेवग जन॥ हम अपराधी जन
म के नष सिष ले रे बिकार॥ मै टि हमारे औगुनां॥
तूं तारि केसा सिरजनहार हो॥ मै जन बहुत बिगा
रिया॥ अब तुम ही लैं संवारि॥ समरथ मेरा सांईयां
तूं आपे आप उधारि ले॥ २॥ तूं न बिसारी केसवा॥

सेजनमलातौ हि।दादूऔरि निबाहि लो।सबजि
निवाडे मो हिहो॥४॥११॥रामसे लालियेरे।विषम
दुहेली बार।टेक।मंझि समंदाना वरीरा।बूडै षेवट
बाज॥काढणहारा कोनही।एकरामबिनआज
१॥पारिनपहुंचे रामबिन।भेरा जो जलमांहि।तार
णहारा एकतूं।दूजा कोई नांहि॥२॥पारिपरोहन
तो चले।तुम्ह षेवट सिरजनहार।तौसागर मेंन
बिहै।तुम्ह बिन षांणाआधार॥३॥औघटदरियाक्यू
तिरै।बोहिथ बैसणहारा।दादू षेवट रामबिन।
कौण उतारै पार॥४॥१२॥पारनहीं पाइयेरे।रामबिना
को निरबाहनहार।टेक।तुम्ह बिनतारण नांही।दूस्तर को
र्यहु संसार।पैरत थाके केसवा।सूझै वार न पार
॥१॥विषमभयानक भौजल।तुम्ह बिन भारी होइ
।तूं हरि तारण केसवा।दूजा नांही कोइ॥२॥तुम्ह बि
न षेवट को नहीं।अतिरतिर्यौ नहीं जाइ।औघ
ट भेरा डूबिहै।नांही आन उपाइ॥३॥यहुघट औ
घट विषम है॥ डूबत मांहि सरीर।दादू कायर
रामबिन।मन नहीं बांधै धीर॥४॥१३॥कहूं हम जीवे
सगुसांई।जे तुम्ह छाड़हु समरथ सांई।टेक।जे तुम्ह
जनको मनहि बिसारा।तौ दूसर कौण संभालनहा
रा॥जे तुम्ह परहरि रहौ नियारे।तौ सेवग जाइ कौ
ण के द्वारे॥२॥जे जन सेवग बहुत बिगारे।तौ साहि
ब गरवा दोस निवारे॥३॥समरथ सांई साहिब मेरा।
दादू दास दीन है तेरा॥४॥१४॥कबहूं कर मिलेगो को
रामगुसांई।यहु बिथिया मेरे ब
मन मेरा दह दिसि

जिभ्यास्वादसबैरसलागे । इंद्रीभोगबिषेकौजा
गे २ श्रवनऊसाचकदेनहीआवै । नैनरूपतहादे
षिनुआवै ३ कामक्रोधकदेनहीछाजे । लालच
लागेहैरसपाजे ४ दाहदेषिमिलेकूआई । बिषै
बिकारबसैमनमाही ५ । १५ जोरेआइरामदया
नहीकरते । नवकानावषेवटहरिआपे योबि
नकूनिसतरतेटेक । करनीकछिनहोतनहीमो
पे कूकरिएदिनसरते । लालचलागिपरतयाव
कमे आपहिआपेजरते १ स्वादहिसेतिबिषैन
हीछूटे । मननिहचलनहीधरते । षाइहलाहल
सुषकेताई । आपेहीपचिमरते २ मैकामीकपटी
क्रोधकायामे । रूपपरतनहीमरते । करवतको
मसीसधरिआपतै । आपहिआपबिहरते । हरिआ
पनाअंगआपनहीछाडै । आपतीआपबिचरते
पतलकूपूतकोमारे । दाइयोजननिरते ४ । १६ लो
जगारूजिनिमारैमोहि । जोलगमैदेषोनहीतो
हि । टेक । इबकेबिछुरेमिलनकैसेहोइ । इहिवि
धिबऊरितचीन्हैकोइ १ दीनदयालदयाकरि
जोइ । सबसुषआनंदतुमपैहोइ २ जनमज
नमकेबंधनषोइ । देषनदाइअहनिसिराइ ३
१७ संतनगाडोमेरापांवनपाव । मैबलितेरेजी
वनेजीव । टेक । संगतुम्हारेसबसुषहोइ । चरन
कवलमुखदेषोतोहि । अनेकजतनकरिपा
यासोइ । देषोनैनऊतोसुषहोइ २ सरनतुम्हारी
अंतरिबास । चरनकवलतहांदेऊनिवास ३ अ
नेकजतनकरिपायासोइ । देषोनैनऊतोसुष

सोइ सरमितु मरी अंतरि बास॥ चरन कवल तहां दे
उ निवास॥३॥ सब दादू मन अनत न जाइ॥ अंतर छि
पि रहौ लौ लाइ॥४॥१८॥ नहीं मिल्यौ राम नहीं मिल्यौ।
मैं सो धन्या धौ नहीं मिल्यौ॥ चितत तुम्ह सौं बांधौ नहीं मि
ल्यौ॥ टेक॥ मैं तुम्ह काजै तालाबेली॥ दिवै किसू म्हनैं जा
इ मिमेली॥१॥ साहिब लिनैं मन सौं गाढौ॥ चरनन समा
नो के हीय परि काढौ॥२॥ साधि सिरि दीन्हें मा कौंस्वामी॥
मैं दुहिलैं प्रा सौं अंतरजामी॥३॥ दिवै न मिल्यौ स्वामी
माझी॥ दादू सन म्हुअ सेवग ना कौ॥४॥१९॥ राम सुन
इन विपति हमारी हो। तेरी मूरति की बलिहारी हो
टेक॥ मैं जु चरन चित चाहना॥ तुम्ह सेवग साधारना
॥१॥ तेरे दिन प्रति चरन दिखावना॥ करि दया अंतरि
आवना॥२॥ जन दादू विपति सुनावना॥ तुम्ह गोव्य
दतप तिबुझावना॥४॥२०॥ कौण जनम तिरजन मानै यु सा
ई॥ तुम्ह साथै सो मैं जानत नाहीं॥ टेक॥ के मन मानैं ना
चे गाये॥ के मन मानैं लोक रिझायें॥१॥ के मन मानैं
तीरथ न्हाये॥ के मन मानैं मूड मुंडाये॥२॥ के मन मा
नैं सब घर त्यागी॥ के मन मानैं भये बैरागी॥३॥ के मन
मानैं जटा बधायें॥ के मन मानैं भसम लगायें॥४॥ के म
न मानैं बन बन डोलें॥ के मन मानैं मुख हिन बोलें
॥५॥ के मन मानैं जप तप कीयें॥ के मन मानैं करव
त लीयें॥६॥ के मन मानैं ब्रह्म गियानी॥ के मन मा
नैं अधिक धियानी॥७॥ जे तुम्ह भावै सो तुम्ह पैं आ
हि॥ दादू न जाणौं कहि समझाइ॥८॥
णातौ रओ तुणमो रगुसांइ॥ तु

मे जात तना ही ।टे।। तुम्ह उपगार कीए हरि केते
सो हम बिसरे गए ।। आप उपाइ आनि मुरि राखे तह
अनि पालन भये हो गुसांई ।।१।। नष सष सजि कीए हो स
जीवनि ।। उदर अधार दीए ।। अंन पांन जहां जाइ स
समकै । जहां घेरा घिलीए हो गुसांई ।।२।। दिन दिन
जो निज तन करि पोषे सदा समीप रहे ।। अगम अप
रकी ए गुण केते कबहूं नांहिं कहे हो गुसांई ।।३।। क
बहूं नाहिं न तुम्ह तन चितवत । माया मोह परे दा
दू तुम्ह नजि जाइ गुसांई ।।४।।२२।। कैसे जीविए रे मां
ई संग न पास । वेचल न मन निहचल नहीं । निस
दिन फिरे उदास ।टे।। नेह नहीं रे राम का । प्री
ति नहीं प्रकास । साहिब का सुमिरण नहीं । करे
मिलण की आस ।।१।। जिस देषें फूलि परे । ष्याती
पिंड बक्षांण मांस । सो भी जलि बलि जाइगा । झूठ
भोग बिलास ।।२।। तो जीवे जे जीवणां । सुमिरे सा
सैं सास । दादू परगट पीव मिलै । तो अंतरि होइ उ
जास ।।३।।२३।। जीयरा मेरे सुमरि सार । काम क्रोध
मद तजि बिकार ।टे।। तूं जिनि भूलै मन गवार ।
सिरि भार न लीजै मांनि हार । सुणि समझायो
बारबार ।। अजहूं न चेतै हो कुसियार ।।१।। करि है
सै मन तिरिए पार । दादू कहै यहु बिचार ।।२।।२४।।
जीयरा चेती रे जिनि जारे । हेजे हरि सौं प्रीति न
कीनी । जन्म अमोलिक हारे ।टे।। बेर बेर सम
झायो रे जीयरा । अचेत न होइ गवांरे । यहु तन
है कागद की गुडियां । कछु एक चेति बिचारे ।।१।।

॥तिनतैं तनक कौं हांणि होत है जे पल रांम बि
सारै ॥ सो भारी दादू के जीव मैं ॥ कहु कैसैं करि डारै
॥२५॥ तासुष कौं कहौ का कीजै । जातैं पल पल य
हु तन छीजै ॥ टेक ॥ आसण कुंजर सिरि छत्र धरी
जै । तापैं फिरि फिरि दुष सहीजै ॥१॥ सेज सवारि
सुंदरि संगि रमीजै । षाइ हलाहल भरि भरि पीजै
॥२॥ बहु बिधि नौ जन मांस चिनीजै । स्वाद संकुटि नि
भरम पासि परीजै ॥३॥ ऐतैं जि दादू प्रांणपतीजै । सि
व सुष रसनां रांम रमीजै ॥४॥२६॥ मन निरमल तन
निर्मल भाई । आंन उपाइ बिकार न जाई ॥ टेक ॥
जो मन कोइला तौ तन कारा । कोटि करै नहीं जा
हि बिकारा ॥१॥ जो मन बिसहर तौ तन भुवंगा । क
रै उपाइ बिषै पुनि संगा ॥२॥ मन मैला तन उजला
नांही । बहु पचि हारे बिकार न जांहीं ॥३॥ मन
निरमल तन निरमल होई । दादू साच बिचारै कोई
॥४॥२७॥ मैं मैं करत सबै जग जावै । अजहूं अंध न
चेतैरे । यहु दुनियां सब देषि दिवांनां । भूलि गए हैं
केतैरे ॥ टेक ॥ मैं मेरे मां भूलि रहे रे । साजन सोइ बि
सारा । आया हीरा हाथि अमोलिक । जनम जुवा
ज्यूं हारा ॥१॥ लालच लोभै लागि रहे रे । जानत मेरी
मेरा । आपहि आप बिचारत नांहीं । तूं का को को
तेरा ॥२॥ आवत है सब जाता दीसै । इन मैं तेरा नांहीं
इन सौं लागि जनम जिनि षोवै । सोधि देषि सचु
मांहीं ॥३॥ निहचल सौं म म
निआ हौ दादू

रकीनाई॥४॥२५॥काजीवनांकामरनारेभाई॥अं
तैरांमनतरमिसिग्रघाई॥टेक॥कामुषसंपतिछत्रप
तिराजा॥बनषंडिजाइबसेकिहिंकाजा॥१॥काबि
द्यागुनपाठपुरांनां॥कामूरिषजोतैंरांमनजांनां
२॥कांआसनकरिअहिनिसजाग्यो॥कांफिरिमौन
तेरांमनलागो॥३॥कांमुक्तकांकांबंधेंहोई॥दादूरां
मनजांनांसोई॥४॥२६॥मनरेरांमबिनांतनछी
जे॥जबयहजाइमिलैमाटीमें॥तबकहुकैसे
कीजे॥टेक॥पारसपरसिकंचनकरिलीजे॥सहज
सुरतिसुषदाई॥मायाबेलिबिषेफललागे॥ता
परिभूलिनभाई॥१॥जबलगप्रांणपिंडहैनीका॥
तबलगताहिजिनिभूलै॥यहसंसारसेंबलके
सुकज्यूं॥तापरितूंजिनिफूलै॥२॥औसरऐहजा
निजगजीवन॥समझिदेषिसचुपावै॥अंगअने
कआंनमतिभूलै॥दादूजिनिडहकावै॥३॥३०॥
मोह्यौमनगादेषिबनअंधा॥सकलतनदीकालैफं
धा॥टेक॥फूल्योफिरतसकलजबनमाही॥सिर
सांधेसरसकलतनांही॥१॥उदमादैमातौबनकेठ
टा॥छाडिचलैसबबादेबाटा॥२॥फेंचौतजांनैब
नकेचाइ॥दादूस्वादिबंधानोंआइ॥३॥३१॥का
हेरेमनरांमबिसारै॥मनिषाजनमजाइजीव
हारै॥टेक॥मातपिताकोबंधनआई॥सबहीसु
पिनांकहासगाई॥१॥तनधनजोबनकूंगाजा
यौ॥रांमहिरदैधरिसारंगप्रांणी॥२॥चंचल
चितबिकूंगीमाया॥काहेनचेतैसोदिनआया

॥दादू तन मन कूं गाक हिये राम चरन गहि का
हे नरहरि॥३२॥ऐसा जुं तन मन आमोलिक साई॥जा
मैं आइ प्रेम लै राम राई॥टेक॥जामें जाग प्रेमरस पी
वै॥सदा सुहाग सेज सुख जीवै॥१॥आतम आइ रा
म सौं राती॥अखिल अमर धन पावै थाती॥२॥प
रगट परसन दरसन पावै॥परम उरि मिलि मां
हिं समावै॥३॥ऐसा जन मन हीनर आवै॥सो कू
दादू रतनगं बावेध॥३३॥कोरा जन मन कहां जा
ता है॥अरे साईं राम छाडि कहां राता है॥टेक॥मे
मेरी इन सौं लागि स्वादि पतंग न सूझै आगि
॥१॥बिषिया सौं रत गरब गुमान॥कुंजर काम बंधे
अभिमान॥२॥लोभ मोह मद माया फंध॥ज्यूं ज
ल मीन न चेतै अंध॥३॥दादू यहु तन यौं हीं जाइ॥
राम बिमुख मरि गये बिलाइ॥४॥३४॥मन मूरिषा
तैं क्या कीया॥कुछ पीव कारनि बैराग न लीया॥
रे तैं जप तप साधी क्या दीया॥टेक॥रे तैं करवत का
सी कदि सह्या॥रे तूं गंगा माहैं ना बह्या॥रे तैं बि
रह निजर दुखनां सह्या॥रे तूं पालै परबतिन्यां गल्या॥
रे तैं आप हि आपा नां दह्या॥रे तैं पीव उकारी क
दि कह्या॥१॥होइ प्यासे हरि जल नां पीया॥रे तूं ब
जर न फाटौ रे हिया॥धृग जीवनि दादू ऐ जीया॥
३॥३५॥क्या कीजै मनिषा जनम कौ॥राम न जप्यदि
गवारा॥माया के मद माता बहै॥भूलि रहे संसा
रा॥टेक॥ ८
॥हरि मारग सूझै नहीं॥क.

आपा आ निज आपसें ॥ अहि निसि जलै स
रीरा रे ॥ मावस गति आवै नहीं ॥ पीवै न हरिजल
नीरा रे ॥ मैं मेरी सब सूझई ॥ सूझै माया जा
ल रे ॥ राम नाम सूझै नहीं ॥ अंध न सूझै काल रे
॥ ऐसे ही जनम गंवाइया ॥ जित आया तित जा
ए रे ॥ राम रसाइण ना पीया ॥ जन दादू हेत लगा
इ रे ॥ ४ ॥ ३६ ॥ इन मैं क्या लीजे क्या दीजे ॥ जन्म अ
मोलिक छीजे ॥ टेक ॥ सोवत सुपिना होई ॥ जागे थैं
नहीं कोई ॥ मृगत्रिष्णा जल जैसा ॥ चेति देखि ज
ग ऐसा ॥ २ ॥ बाजी भरम दिखावा ॥ बाजीगर डह
कावा ॥ ३ ॥ दादू संगी तेरा ॥ कोई नहीं किस केरा
॥ ४ ॥ ३७ ॥ छानिक जागो जीयरा सोवै ॥ क्यूं करि
मेला होवै ॥ टेक ॥ सेज एक नहीं मेला ॥ तातैं प्रेम
न खेला ॥ साई संग न पावा ॥ सोवत जनम गंवा
वा ॥ २ ॥ गाफिल नींद न कीजे ॥ आव घटे तन छी
जे ॥ ३ ॥ दादू जीव अयाना ॥ झूठे भरम भुलाना ॥
॥ ४ ॥ ३८ ॥ पद जैपदरै रै गोंडे बणिजारिया ॥ तूं आ
या इहि संसार वे ॥ माया हार सबौ बणाल गा ॥ बि
सरया सिरजनहार वे ॥ सिरजनहार बिसारा की
या असारा ॥ मात पिता कुल नारि वे ॥ झूठी माया
आप बंधाया ॥ चेतै नहीं गंवार वे ॥ गंवार न चेतै
औगुण केते ॥ बंध्या सब परिवार वे ॥ दादू दास क
है बणिजारा ॥ तूं आया इहि संसार वे ॥ १ ॥ २ जैपद
रै रै गोंडे बणिजारिया ॥ तैं रतन तनइ यौ न्यां लि
वे ॥ माया मोह फिरै मतिवाला ॥ राम न सक्या सं

ग्यौ लिवे॥ रांमनसंभालै रतनां नै॥ अंध न सूझै
कालवे॥ हरि नहीं ध्याया जनम गंवाया॥ दहदि
सि फुटा तालुवे॥ दह दिसि फुटा नीर निखुटा
॥ लेखा डेवणसालुवे॥ दादूदास कहै बणिजा
रा॥ तैं रतन तरूणी ना लिवे॥२॥ तीजै पहरै रैणि
दै बणिजारिया॥ तैं बहुतन ठगाया सारवे॥ जो म
नि भाया सो करि आया॥ नां कुछ कीया बिचारवे
॥ बिचार न कीया नांव न लीया॥ क्यूं करि लंघै पा
रवे॥ पार न पावै फिरि पछितावै॥ डूबण लागा (
धारवे॥ डूबण लागा भेरा भागा॥ हाथि न आया
सारवे॥ दादूदास कहै बणिजारा॥ तैं बहुतन
ठगाया सारवे॥३॥ चौथै पहरै रैणि दै बणिजारि
या॥ तूं पका पिरवाणीरवे॥ जोबन गया जुरा बिया
पी॥ नाहीं सुधि सरीरवे॥ सुधि न पाई रैणि गंवाई
॥ नैनहुं आया नीरवे॥ भौजल भेरा डूबण लागा
॥ कोई न बंधै धीरवे॥ कोई धीर न बंधै जम के फं
धै॥ क्यूं करि लंघै तीरवे॥ दादूदास कहै बणिजा
रा॥ तूं पका पिरवाणीरवे॥४॥ ३७१॥ का हेरेन र का (
र ऊं डफा ताण॥ अंतिकाल घर गोर मसांण॥ टेक
पदलै बनि वंतगए बिलाइ॥ बुरसा आदि मह
खर जाइ॥ आगे होले मोटे मार॥ गए छाडि पे (
कं वर पार॥ काची देह कहा गरबांनां॥ जे उपजै
सो सबै बिलांनां॥ दादू अमर उपावणहारा॥ आ
पहि आप रहै करतार॥३॥ ४०॥ इत घरि चोर न
मूसै कोई॥ अंतरि है जे जानैं सोई॥ टे॰ जाग (

उरे जन तत न जाइ ॥ जागत है सो रह्या समाइ ॥
न जतन करि राम उसार ॥ न सक रत पजे कोण
बिचार ॥२॥ इब करि दादू जो रोजे ॥ तो माहि बिरुणे
गमिले ॥३॥४१॥ मेरी मेरी करत जग षीना ॥ देषत ही
चलि जावै ॥ काम क्रोध त्रिस्ना तन जालै ॥ ता थैं पा
र न पावै ॥ टेक ॥ मूरिष ममता जनम गवावै ॥ भूलि
रहे इहि बाजी ॥ बाजीगर कौं जाणत नाही ॥ जन
म गवावै बादी ॥१॥ परपंच पंच करै बहुतेरा ॥ का
ल कुटंब के ताई ॥ बिष के स्वाद सबै ए लागे ॥ ता
तै चीन्हत नाही ॥२॥ एता जी मै जानत नाही ॥ आ
इ कहां चलि जावै ॥ आगे पीछे समझत नाही ॥
मूरिष यौं डहकावै ॥३॥ ऐसब बहुत रै मन मा निमल
पावै सो धिलै कु सो साई ॥ सोई एक तुम्हारा सज
न दादू दूसर नाही ॥४॥४२॥ गरब न कीजिये रे
गरबै होइ बिनास ॥ गरबै गोबिंद ना मिलै ॥ ग
रबै नरक निवास ॥ टेक ॥ गरब रसातलि जाइए ॥ ग
रबै वार न पार ॥१॥ गरबै पार न पाइए ॥ गरबै जमपुरि
जाइ ॥ गरबै को छूटै नही ॥ गरबै बंधे आइ ॥२॥ गरबै
भाव न ऊपजै ॥ गरबै भक्ति न होइ ॥ गरबै पिव क्यूं
पाइए ॥ गरब करै जिन कोइ ॥३॥ गरबै बहुत बिणा
स है ॥ गरबै बहुत बिकार ॥ दादू गरब न कीजिए
सनमुष सिरजनहार ॥४॥४३॥ तू है तू है तू है
तेरा मैं नही मैं नही मैं नही मेरा ॥ टेक ॥ तू है तेरा
जगत उपाया ॥ मैं मैं मेरा धंधै लाया ॥१॥ तू है तेरा
षेल पसारा ॥ मैं मैं मेरा कहै गवारा ॥२॥ तू है तेरा

सबसंसारा॥मैं मैं मेरा तिन सिरि भारा॥३॥तू है तेरा र
काजनषा २॥मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ॥४॥तू है तेरा र
ह्यां समाइ॥मैं मैं मेरा गया बिलाइ॥५॥तू है तेरा तु
मही मांहि॥मैं मैं मेरा मैं कुछ नांहि॥६॥तू है तेरा तू
दी होइ॥मैं मैं मेरा मैला न कोइ॥७॥तू है तेरा ल
ये पार॥दादू पाया ग्यान बिचार॥८॥४४॥साहिब जी
सत मेरा रे॥लोक झषै बहुतेरा रे॥टेक॥जी बजन
म जब पाया॥मसतक लिखिया पारे॥१॥घटै न
धे कछु नांही॥करम लिख्या उस मांही रे॥२॥बिधा
ता बिधि कीन्ही॥सिरजि सब निकौं दीन्हा रे॥३॥सं
म्रथ सिरजनहारा॥सो तेरे निकटि गंवारा रे॥४॥स
कल लोक फिरि आवै॥तौ दादू दीया पावै रे॥५॥
४५॥परिहरि पच्या प्रमेसर मेरा॥श्रम सोंप्या टैवे ब
हुतेरा॥टेक॥सिरजनहार सहज मैं देइ॥तौ र
काहे धाइ मांगि जन लेइ॥१॥बिसंभर सब जग
को पूरे॥उदर काजि नर काहे झूरे॥२॥पूरक पू
रा है गोपाल॥सब की चींत करै दरहाल॥३॥सं
म्रथ सोई है जगनाथ॥दादू देखु रही संगि साथ
॥४॥४६॥राम धन षात न षूटै रे॥अपरंपार पार न
हीं आवै॥आथि न तूटै रे॥टेक॥तसकर लेइ न
पावक जालै॥प्रेम न छूटै रे॥चहूं दिसि पसर्यो
बिन रषवाले॥चोर न लूटै रे॥१॥हरि हीरा है रा
म रसांइण॥सरस न सूकै रे॥२॥दादू और आ
पि बहुतेरी॥तुस न रक कूटै रे॥३॥४७॥राम हि म
बजग मरि मरि जाइ॥

टेक ॥ जीनमरे जे आतमरांमां ॥ सदासजीवनिकी
रेतांमां ॥१॥ अमरतरांमरसपीनपीयां ॥ तातें अमर
कबीराकीयां ॥ रांमनांमकहिरांमसमांनां ॥ जन
रैदासमिलेसगावांनां ॥२॥ आदिअंत्यकेतेकलि
जागे ॥ अमरभयेअविनासीलागे ॥ रांमरसोइ
णदादूमाते ॥ अविचलभएरांमरंगिराते ॥३॥ ४८
निकटिनिरंजनलागिरहे ॥ तबहमजीवनमु
क्तिभए ॥ टेक ॥ मरिकरिमुक्ति जहांजगजाइ ॥ त
हांनमेरामनपतियाइ ॥१॥ आगेजनमलहेंअ
वतारा ॥ तहांनमांनेंमनहमारा ॥२॥ तनछूटेंगति
जोपदहोइ ॥ मतकजीवमिलेसबकोइ ॥३॥ जी
वतजनमसुफलकरिजांनां ॥ दादूरांममिले
दूरतिंनषीनजा
मनमांनां ॥४॥ ४९ माइ ॥ टेक ॥ हांथेंकी
कहांथेंउप इन
गगन

ई॥दादू देषै अचिरज होई॥३॥५१॥कौंणसबदकौं
णपरषणहार॥कौंणसुरतिकहिकौंणबिचार
टेक॥कौंणसपात्र कौंणगियांन॥कौंण उ
नमनी॥कौंणधियांन॥१॥कौंणसहजकहिकौं
णसमाध॥कौंणभगतिकहुकौंणअराध॥२॥कौं
णजापकहिकौंणअभ्यास॥कौंणप्रेम कहु
कौंणपियास॥सेवाकौंणकहौ गुरदेव॥दादू
पूछै अलष अभेव॥३॥५२॥मैंनहीं जांणौं सिरज
नहार॥जैसैं है त्यूंहीं कहौ करतार॥टेक॥मैसत
ककहौ कहौ करमाइ॥अबिगतन्यापकहौस
मभाइ॥१॥कहां मुष नैंना श्रवनां सोई॥जे नरा
इ सब कहौ गुसांई॥२॥पेटपीठिकहां है काया
पट दाहो लिकहौ गुरराया॥३॥ज्यूं है त्यूं कहि
अंतरजांमी॥दादू पूछै सतगुरस्वांमी॥४॥५३॥
साधी ज्या बकी॥ दादू सबै दिसा सो सारिषा॥स
बैं दिसा मुष बैंन॥सबै दिसा श्रवणौं सुणौं॥सबै
दिसा कर नैंन॥सबै दिसा पग सीस है॥सबै दि
सा मन चैंन॥सबै दिसा सनमुष रहै॥सबै दिसा
अंग अैंन॥ १७॥ अजब देव गुरदेउ बताइ॥क
हां रहै त्रिभुवन पतिराइ॥टेक॥धरतीगगनब
सौं कविलास॥तिहूं लोक मैं कहां निवास॥१॥जल वा
थल पवन पावक पूरि॥चंदसूर निकटि कै
दूरि॥२॥मंदिर कौंण कौंण घरबार॥आसण कौं
णकहौ करतार॥३॥अलष देव गति लषी न जा
इ॥दादू पूछै कहि समझाइ॥४॥ ॥३नरा॥

दादू मुझ ही माहै मैं रहौ ॥ मैं मेरा घरबार ॥ मुझ ही
माहै मैं बसौ ॥ आपक है करतार ॥ दादू मैं ही मे
रा अरस मै ॥ मैं ही मेरा थान ॥ मैं ही मेरी ठौर मैं ॥ आ
पक है रहिमान ॥ दादू मैं ही मेरी जाति मैं ॥ मैं ही
मेरा अंग ॥ मैं ही मेरा जीव मैं ॥ आपक है सब संग ॥
॥ दादू मैं ही मेरे आसरै ॥ मैं मेरे आधार ॥ मेरे त
किये मैं रहौ ॥ कहै सिरजनहार ॥ ॥ ५५ ॥ रामर
स मीठा रे कोई पीवै साध सुजांण ॥ सदा रस पीवै
प्रेम सौं ॥ सो अबिनासी प्राण ॥ ॥ दादू हरि रस मु
नि लागि सबै ॥ ब्रह्मा बिष्णु महेस ॥ सुर नर सा
धू संतजन ॥ सो रस पीवै सेस ॥ ॥ सिध साधिक जो
गी जती ॥ सती सबै सुखदेव ॥ पीवत नेतन आव
ई ॥ ऐसा अलख अभेव ॥ २ ॥ दादू हरि रस राते नामदे
व पीपा अरु रैदास ॥ पीवत कबीरा ना थक्या
॥ अजहूं प्रेम पियास ॥ ॥ यहु रस मीठा जिनि पी
या ॥ सो रस ही माहि समाइ ॥ मीठै मीठा मिलि
रह्या ॥ दादू अनत न जाइ ॥ ॥ ५६ ॥ मेरा मन म
वाला मध पीवै ॥ पीवै बारंबारो रे ॥ हरि रस र
तौ राम कै ॥ सदा रहै इकतारो रे ॥ ट ॥ भावत
गति माठी मन ही ॥ काया कसणी सारो रे ॥ पोत
मेरे प्रेम का ॥ सदा अखंडित धारो रे ॥ १ ॥ ब्रह्म
गनि जोबन जरै ॥ चेतनि चिंता उजासो रे ॥ सु
ति कलाली सार बे ॥ कोई पीवै बिरला दास
२ ॥ आपा धन सब सौं पिया ॥ तब रस पाया स
॥ पी नि पियाने पी वदी ॥ छिन छिन बारं

रै॥३॥ आपापर नहीं जांणिये॥ सू जौ माया जालो
रा॥ दादू हरिरस जे पीवै॥ ताकौं कदे न लागै काले
रे॥४॥ ५७॥ रस के रसिया लीन भये॥ सकल सिरोम
णि तहां राये॥ टेक॥ रांम रसाइण अम्रत माते अ
बिचल भये नर किनहीं जाते॥ रांम रसाइण भ
रि भरि पीवै॥ सदा सजीवनि जुगि जुगि जीवै॥१॥ रां
म रसाइन त्रिभुवन सारा॥ रांम रसिक सब उतरे पा
रा॥२॥ दादू अमली ब कुरि न आणे॥ सुख सागर ता
मांहि समांणै॥३॥५८॥ भेष नरी कै मेरा निज भरता
रा॥ तातैं कीजै प्रीति बिचारा॥ टेक॥ दुराचारनी र
चि भेष बनावै॥ सील साच नहीं पीव क्यूं भावै
॥१॥ कंत न भावै करै सिंगार॥ ज्यूं भय णै रीझै संसा
पे रा॥२॥ जो पतिब्रता कै है नारी॥ सो धन भावै पी
वहि पियारी॥३॥ पीव पहिचानै आन नहि कोई
॥ दादू सोई सुहाग निहोई॥४॥५९॥ सब हम नां
री एक भरतार॥ सब कोई तन करै सिंगार॥ टे
क॥ घरि घरि अपने सेज संवारैं॥ कंत पियारे पं
थ निहारैं॥१॥ आरति अपने पीव कौं ध्यावैं॥ मि
लैं नाह कब अंगि लगावैं॥२॥ अति आतुर ये खो
जत डोलैं॥ बानि परी बियोगनि बोलैं॥३॥ सब
हम नारी दादू दीनां॥ सोई सुहागनि साच सिं
गारा॥ तन मन लाइ भजे भरतारा॥ टेक॥ भाव
भगति प्रेम ल्यौ लावै॥ नारी सोई सार सुख पा
वै॥१॥ सहज संतोष सील सब आया॥ नारी ना
ह अमोलिक पाया॥२॥ तन मन जोबन सौंपि

स बदी रूो॥ तब कंत रिझाइ आपन सिकीन्हो॥
॥ दादू बहुरि बियोग न होई॥ पीव सौं प्रीति सुहा
गनि सोई॥ ६१॥ तब हम एक नगर रे नाई॥ मो
हन मिलि सब चौमनि आई॥ टे॰॥ पार सपरसि
न पैसु षदाई॥ तब उत्तीया उरम ति हरि गावाई
॥ मन या गिरम रमै लि पाया॥ तब बेसब रन
सब नरमराा चाया॥ हरिजनना री रनि कटि जे
ब आया॥ तब दहूदह मिलिसह जिसमाया
॥ नाना भेद भरम सब भागा॥ तब दादू ऐक
एक अंग लागा॥ ६२॥ अलह राम छूटि गा
या भ मेरा॥ दा॰ हुरुक भेद कुछ नांही दे
षौ दरसन तोरा॥ टे॰॥ सोई प्राण पिंड पुनि
सोई सोई लोही मासा॥ सोई नैन ना सिका सो
ई सहजै कीन्हू तमासा॥ श्रवनी सबद बाज
ता सुनियै॥ जिभ्या मीठा लागे॥ सोई भूष सब
नि कौं ब्यापै॥ एक जुगति सोई जागे॥ सोई सध
बंध पुनि सोई॥ सोई सुष सोई पीरा॥ सोई हस
त पाव पुनि सोई॥ सोई एक सरीरा॥ रासब षे
ल षालिक हरि तेरा॥ तुम्हही एक करि लीन्हा॥
दादू जुगति जांनिकरि ऐसी॥ तब यहु प्रा
णपतीना॥ ६३॥ भाई रे ऐसा पंथ हमारा
दै पष रहित पंथ गहि पूरा॥ अबरण एक अ
धारा॥ टे॰॥ बाद बिबाद काहू सौं नांही॥ मां
हि जगत थैं न्यारा॥ समदृष्टी सुभाइ सहज
मैं॥ आपहि आप बिचारा॥ मैं तैं मेरी यहु म

मांहीं॥ निरवैरी निरकारा॥ पूरण सबै देषि अ
पापर॥ निरालंब निरधारा॥ काहू के संगि सो द
न मिला॥ संगी सिरजनहारा॥ मनहीं मनसौं
समझि सया ना॥ आनंद एक अपारा॥३॥ का
ल कलपना कदे नहीं कीजे॥ पूरण ब्रह्म पि
यारा॥ इहि पिपकूं चिपारगा हिदा॥४॥ सो तत
सहज संभारा॥५॥६४॥ औसो षेल बन्यो मेरी मा
ई॥ कैसें कहौं कछू जो एपैन जाई॥ टेक॥ सुरन
र मुनि जन अचिरज आई॥ राम चरन को कू ने
दन पाई॥ मंदिर मांहें सुरं समाई॥ को कू है
सो देकु दिषाई॥१॥ मन हि विचार करे ल्यो ला
ई॥ दीवा संमांना जोति कहां छिपाई॥२॥ देह
निरंतर रिसुं तिल्पो जाई॥ लहां को गर मैं कौंण
सू तारे भाई॥३॥ दाहू न जाणैं यूं कूं चतुराई॥ सो
गुर मेरा जिति सुधि पाई॥४॥६५॥ माई रे घर ही मैं
घर पाया॥ सहजि समाइ रह्यौ ता मांहीं॥ सतगु
रु षोज बताया॥ टेक॥ ता घरका जिस बेफि रि आ
या॥ आपै आप लषाया॥ षोलि कपाट महलके दी
न्है॥ थिर असथान दिषाया॥१॥ भयो उदास रमि
सब मागा॥ साच सोई मन लाया॥ प्यंड पर्डे जहां
जीव जावे॥ ता मैं सहज समाया॥२॥ निहचल
सदा चलै नहीं कबहूं॥ देष्या सब मैं सोई॥ ताहि
सौं मेरा मन लागा॥ और न दूजा कोई॥३॥ आदि
अंति सोई घर पाया॥
इब कर रंग रंग लागा॥

इतहै नीरन्हवावो वृग जोग ॥ अनत ही भ भिल्ल
रे जोग ॥ टे ॥ तिहि तट न्हाये तिरमल होइ ॥ ब
सत अगोचर लषै रे सोई ॥ सु घट घाट अरु ति
रिवेणी तीर ॥ बैठे तहां जगत गुर पीर ॥ दादू न
जाणै तिन कालेव ॥ आपण षावै औ न रिषैव
॥ ३ ॥ ६७ ॥ ऐसा ग्यान कथौ मन ग्यानी ॥ इहि घ
रि होइ सहज सुष जानी ॥ टे ॥ गंग जमुन तहां
नीर न्हाइ ॥ सुष मन तारी रहौ लगाइ ॥ आपतें
जतन रह्यौ समाइ ॥ मैं वृलिता को देषो अघाइ
॥ वास निरंतरि सो समकाइ ॥ बिन नैनन कुं देष
तहां जाइ ॥ दादू रे यहु अगम अपार ॥ सो धन
मेरे अधर अधार ॥ ६८ ॥ अबतो ऐसी बनि आ
इ ॥ रामचरन बिन रह्यो न जाइ ॥ टे ॥ साईं को
मिलिबे के कारनि ॥ त्रिकुटी संगम नीर न्हवा
ई ॥ चरनकवलकी तहां ल्यो लागी ॥ जतन ज
तन करि प्रीति बनाई ॥ जे रस भीनां भांवरि जा
सुंदरि सहज जैसे गुसमाई ॥ अनहद बाजे ब
जन लागे ॥ जिभ्या ही गुन की रति गाई ॥ कहे
कहौ कछू बरनी न जाई ॥ अविगति अंतर
जोति जगाई ॥ दादू उनका मरम न जानै ॥ आ
प सुरंगो बेन बजाई ॥ ६९ ॥ नीके राम कहे
है बपुरा ॥ घरमाहैं घरनि रमलै राषौ ॥ पं
च नेकालकी काचरा ॥ टे ॥ सहज जसु मरया
सुमिरण सेवा ॥ त्रिवेणी तट संजम सपरा
सुंदरि मनमुष जागण लागी ॥ तहां मेहन
सुंदरि सनमुष

रामतंपकरा॥१॥ बिनरसनांमोहनगुनगावै॥ना
नांत्रांनी अनतै अपरा॥दा दूअनहदअैसेक
हिये॥भगतितततयकुमारगसेकरा॥४॥१०॥ अ
वधकांमधेनगहिरांमी॥बसिकीन्होतबअं
मृतसरवै॥आरोचारिनतांषी॥टेक॥ पोंषतांप
हलीउगिंगारजो॥पीछैहांधिनआवै॥सूंभीन
लै हूधनि।तहणां॥पीयेंऊधेनउदावे॥॥जर
जर द्रीगापडैत्यू हूसै॥मुक्तीमेल्योमारै॥घाटा
रोकि घेरि घरिआयै॥बांधीकारजसारै॥स
हजेबांधीकटेनछूटै॥करमबंधनछुटिजाई
॥ काटिकरमसहजसौंबांधे॥सदजेंमांहिस
माई॥२॥छिनछिनमांहिमनोरथपूरै॥दिनदि
नहोइअनंदा॥दादूसोईदेषतपावै॥कलि
अजरावरकंदा॥४॥७१॥ जबघटिपरगट
रांमभिले॥आतममंगलचारचहुंदिसिजा।
नमसुफलकरिजीतिचले॥टेक॥ भगतिमुक
तिअनेकरिराखे।सकलसिरोमणिआपकी
ये॥निरगुणरांमनिरंजनआपै॥अजरावरउ
रलाइलीये॥अपनैंअंगसंगकरिराखे॥नि
रभैनांवनिसांननजावा॥अबिगतनाथअ
मरअबिनासी॥परमपुरिषनिजसोपावा॥२॥
सोई बडभागीसदासुहागी॥परगटप्रीतमसं
गिभये॥दादूभागबडेबरबरिकै॥सोअज
रावरजीतिगये॥३॥७२॥
नैमोहि सेजसुहागनपी

न नांही लोढि ॥ ८ ॥ गुप्त संग एक रस नांही सदा
समीप न पावे ॥ ज्यूं रस मैं रस बकुरि न निकसे ऐसे
सै होइ न आवे ॥ १ ॥ आतम जीन नहीं निसबासुर
मग्य तिश्चषडितसे ॥ २ ॥ सनमुष सदा परसपर
नांही ॥ तातें दुष मोहि देवा ॥ ३ ॥ मगन मग्न लितम
हारसमाता ॥ तूं है तब लग पीजे ॥ दादू जब लग
अंत न आवे ॥ तब लग देषण दीजे ॥ ४ ॥ ७३ ॥ गुर
मुषि पाईए रे ॥ ऐसा ग्यान बिचार ॥ समझि समझि
समझ्या नहीं ॥ लागा रंग अपार ॥ टे ॥ जांणि जांणि
जांण्या नहीं ॥ ऐसी उपजै आइ ॥ बूझि बूझि
बूझ्या नहीं ॥ ढोरी लागा जाइ ॥ १ ॥ लै लै लै लीया न
हीं ॥ हौंस रही मन मांहि ॥ राषि राषि राष्या नहीं
मैं रस पीया नांहि ॥ २ ॥ पाइ पाइ पाया नहीं ॥ तेजै ते
जसमाइ ॥ करि करि कछू कीया नहीं ॥ आतम कै
रि लगाइ ॥ ३ ॥ षेलि षेलि षेल्या नहीं ॥ सनमुष सिर
जनहार ॥ देषि देषि देष्या नहीं ॥ दादू सेवग सार
॥ ४ ॥ ७४ ॥ [illegible] गौडी ॥ बाबा गुरमुषि पा
रे ॥ गुरमुषि ग्यांनां रे ॥ टे ॥ गुरमुषि दाता ॥ गुरमु
षि राला ॥ गुरमुषि गवना रे ॥ गुरमुषि मतवाला ॥ गुर
मुषि छवना ॥ गुरमुषि रतना रे ॥ १ ॥ गुरमुषि पूरा
गुरमुषि सूरा ॥ गुरमुषि बांणी रे ॥ गुरमुषि देया
गुरमुषि लैणा ॥ गुरमुषि जांणी रे ॥ २ ॥ गुरमुषि म
हिमा ॥ गुरमुषि रहिबा ॥ गुरमुषि न्यारा रे ॥ गुरमु
षि सारा ॥ गुरमुषि तारा ॥ गुरमुषि प्यारा रे ॥ ३ ॥ गु
मुषि राया ॥ गुरमुषि पाया ॥ गुरमुषि मेला रे ॥ गु

मुषितजा॥गुरमुषिसंजोग॥हरिबलरह्यो॥मधि॥निज
मेहेरा॥मधिमांहिपीवनेरा॥टेक॥जहांअगमअन
पअवासा॥तहांमहासुषिकावासा॥तहांजानै
गजनकोई॥हरिमांहिसमानांसोई॥१॥अषंडजो
तिजहांजागे॥तहांराममनामन्यौलागे॥तहांराम
रहेभरपूरा॥हरिसंगरहैनहींदूरा॥२॥त्रवेणीत
टितीरा॥तहांअमरअमीनिकहीरा॥उसहीरेसो
मनलागा॥तबसरमगयासोभागा॥३॥दादूदेषु
हरिपावा॥हरिसदजैसेंगलषावा॥पूरणपरम
निधांनां॥निजनिरषतहौंभगवांनां॥४॥७६॥मे
रेमनिजागासकलकरा॥हमनिसदिनरहेंदेसो
धरा॥टेक॥हमहिरदेमांहेहेरा॥पीवपरगटपा
यौरा॥सोनेरेंहीतिजजीजे॥तबसहजैअमतपी
जे॥१॥जबमनहीसोंमनलागा॥तबजोतिसरूपी
जागा॥जबजोतिसरूपीपाया॥तबअंतरमांहि
समाया॥२॥जबचितहिचितसमांनां॥हमहरि
बिनऔरनजांनां॥जांनांजीवनिसोई॥अबह
रिबिनऔरनकोई॥३॥जबआतमएकेबासा
॥परमातममांहिप्रकासा॥प्रकास्यापीवपियारा॥
सोदादूमीतहमारा॥४॥७७॥इतिगौडीसंपू
र्णा॥अथरागमालीगौडा॥१॥मोबिछैनावतेरा
जीवनिमेरा॥तारणतेंपारा॥आगेंहेंहिंनांदू
लागे॥संतनिस्त्रंधारा॥टेक॥करिबिचारततसा
र॥पूरणधनपाया॥अबिजनांवआगमगांम॥
मैंहमारेआया॥॥नगनिम

समब हरना ॥८॥ सकल सिषि नवे निधि पूरण
सब कांम्य राम रूप तन अनूप दादू निज नामे
॥९॥ गोब्यंद के से तिरिये नाव नाही षेव नाही
राम बिमुष मरिए टेक ॥ ग्यान नाही ध्यान नाही
लै समाधि नाही बिरहा बैराग नाही पंचौ गुण
माही ॥१॥ प्रेम नाही प्रीति नाही नाव नाही नेरा
भाव नाही भगति नाही कायर जीव मेरा ॥२॥ बा
ट नाही घाट नाही कैसे पग धरिए वार नाही पा
र नाही दादू बहु डरिए ॥३॥२॥ पीव आव हमारे
मिलि प्राण पियारे बलि जाउं तुम्हारे टेक
सुनि सषी सयानी रे मैं सेव न जानी रे हौं मई दिवा
नी रे ॥ सुनि सषी सहेली रे क्यूं रहूं अकेली रे
हूं षरी दुहेली रे ॥१॥ हूं करौ पुकारा रे सुनि सरज
नहारा रे दादू दास तुम्हारा रे ॥३॥ वालम ज
हमारी रे तूं आव हूं वारी रे हूं दासि तुम्हारी रे
टेक ॥ तेरा पंथ निहारौं रे सुंदरि सेज संवारौं रे जी
यरा तुम्ह परि वारौं रे ॥१॥ तेरा अंगडा पेषौं रे तेरा
मुषडा देषौं रे तब जीवन लेषौं रे ॥२॥ मिलि सुष
डा दीजै रे यहु लाहडा लीजै रे तुम देषें जीजै रे ॥३॥
तेरे प्रेम की माती रे तेरे रंगडे राती रे दादू वार
णै जाती रे ॥४॥४॥ दरबार तुम्हारे दरदवंद पीव
पीव पुकारे दीदार दरूनै दीजिये सुनि षसम ह
मारे टेक ॥ तनहा के तनि पीर है सुनि तूं ही निवा
रे करम करीमा कीजिए मिलि पीव पियारे ॥१॥ सू
ल सुलाकौ सांस है तेगा तन मारे ॥ मिलि साईं सु
ष दीजिए तूं हीं तूं संभारे ॥ मैं मुहताज नन

सोषता॥ बिरहा दुष जारै जी बतरसै दीदार कौं दा
दू न बिसारै॥३॥५॥ सांईं यां तूं हैसा हि बसेरा। मैं है
बंदा तेरा॥ टेक॥ बंदा बरदा चेरा तेरा॥ हुकमी मैं बि
चारा॥ मीरां मिहरबांन गुसांईं से सिरताज हमारा॥ त्र
गुलाम तुम्हारा मुलाजादा॥ लौंडा घर का जाया॥
राजिक रिजक जीव तैं दीया॥ हुकम तुम्हारे आया॥ सा॥ मि
दीजे बेहाज रबंदा॥ हुकम तुम्हारे मांहीं॥ जब हि
बुलाया तब ही आया॥ मैं मैवासी नांहीं॥२॥ षसम
हमारा सिरजनहारा॥ साहिब समरथ सांईं॥ मीरां
मेरा मिहर मया करि॥ दादू तुम हीं तांहीं॥३॥६॥
मुझ थैं कछू न भया रे॥ यूं ही जनम गया रे॥ पछितावा
रह्या रे॥ टेक॥ मैं सांईं ना दीया रे॥ नरि प्रेम न पीया रे॥ मैं क्या
कीया रे॥१॥ हौं रंगि न राता रे॥ रसि प्रेम न माता रे॥ नहीं
गलित गाता रे॥२॥ मैं पीव न पाया रे॥ कीया मन का भा पा
रे॥ कछू होइ न आया रे॥३॥ हौं रहौ उदासा रे॥ मुझ
तेरी आसा रे॥ कहै दादू दासा रे॥४॥७॥ मेरा मेरा छा
डि गंवार॥ सिर परि तेरे सिरजनहारा॥ अपणौं जीव
बिचारत नांहीं॥ क्या ले गइला बंस तुम्हारा॥ टेक॥
तब मेरा कत करता नांहीं॥ आवत है हंकारा॥
काल चक्र सौं षरी परी रे॥ बिसरि गया घरबारा॥
१॥ जाइ तहां का संजम कीजे॥ बिकट पंथ गिरधा
रा॥ दादू रे तन अपना नांहीं॥ तौ कैसे भया संसारा
२॥८॥ दादू दास पुकारै रे॥ सर सांधे मारै रे॥ टेक॥ ज
मकाल निवारै रे॥ मन मनसा मारै रे॥१॥ यूं जन

मन मूलन छोई रे॥२॥ मि

मैकोतिसदीजीरे ॥ अबहीजनकीजीरे ॥ यहजो
सरतेरारे ॥ पंथीजागिसवेरारे ॥ सबबाटबसेरारे ॥
सबतरबरछायारे ॥ धनजोबनमायारे ॥ यहजग
कीकायारे ॥ हसिसरमिनसूनीरे ॥ बाजीदेषित
फूलीरे ॥ सुषसागरफूलीरे ॥ रसअमृतपीजीरे ॥
विषकानांवनलीजीरे ॥ कह्यासुकीजीरे ॥ सब
आलमजांणीरे ॥ अपणीपांणिबांणीरे ॥ यहदादू
बांणीरे ॥ ९ ॥ चू जौपहलीगणपतिराइ ॥ पडि
होपायोचरनोंआइ ॥ आगैकेकरितीरलग्याइ ॥
सबजेअपनेबैनसुनाइ ॥ टे ॥ ककककथाककहूक
हीनजाइ ॥ एकतिलमैंलसबैसमाइ ॥ गुणकुंग
हीरथीरतनदेही ॥ ऐसोसमरथसबैसुहाइ ॥
जिसिदिसिदेषोवोइहैरे ॥ आपरह्यागिरतरब
रछाइ ॥ दादूरेआगेक्याहोवे ॥ प्रीतिपीयाकरजो
डिलगाइ ॥ १० ॥ नीकोधनहरिकरिमैजान्यूं ॥ मे
रेअषैबोइ ॥ आगेपीछेसोईहैरे ॥ औरनहूजा
कोइ ॥ टे ॥ कबहूंनछाडोंसंगपियाकोहरिके
दरसनमोही ॥ भागहमारेजोहोपाऊं ॥ सरनेआ
योतोही ॥ आनंदभयोसषीजीयमेरे ॥ चरनक
वलकोजोइ ॥ दादूहरिकोबावरोबहुरिविवो
गनदोइ ॥ ११ ॥ बाबामरदमरदांगोइ ॥ एदिल
पाककरदमषोइ ॥ टे ॥ तरकदुनियांदूरिकरि
दिलफकरजफारिकहोइ ॥ पैवसतपरवरदिगार
सोआपकिलासिरसोइ ॥ मनीमुरदाहिरसकाती
नपसरापेमाल ॥ बदीराबरलरफकरदा ॥ नांद
नेकीसाल ॥ जिदआनीमरदनामेद ॥ कुंजका

ट॥ श्री जन दादू जी जन वहै॥ पाकपरवरदिगार वै ॥ दी
मिलै दीदार को गोब गौता मारवै ॥ मौजूद मा
लिक तखत खालिक आसिकां रे नवे ॥ गुजर
करि दिल मरा जमीत ॥२॥ अजब है यह सैन वे ॥ अ
से ऊपरि आप बैठा ॥ दोसत दानां यार वे ॥ खोजि
करि दिल कब जकरि ले दरून दीदार वे ॥ ॥३॥ कुफि
यार हाजिर चुस्त करदम मीरां मिहर वानवे ॥ दे
खि लै दर हाल दादू आप है दीवान वे ॥ ॥१५॥ नि
मै लतत निरमलतत तिमैलतत ऐसा ॥ निर्गुण नि
ज निधि निरंजन ॥ जैसा है तैसा ॥ टेक ॥ उतपति
आकार नांही ॥ जीव नांही काया ॥ काल नांही क
रम नांही ॥ रहता राम राया ॥१॥ सीत नांही घाम नां
ही ॥ धूप नांही छाया ॥ बाव नांही बरन नांही ॥
मोह नांही माया ॥२॥ धरती आकास अगम चंद
सूर नांही ॥ रजनी निस दिवस नांही ॥ पवना नही
मांही ॥३॥ कृत्रम घट कला नांही ॥ सकल रहित सो
ई ॥ दादू निज अगम निगम ॥ दूजा नांही कोई ॥४॥
॥१६॥ राग ... ॥
॥ मन मेरे कछू भी चेति गंवार ॥ पीछे फिरि पछि
तावैगो रे ॥ आवै न दूजी बार ॥ टेक ॥ काहे रे मन भू
लो फिरत है ॥ काया सोचि बिचारि ॥ जिनि पैदा कीया
जनाहै तुझ को ॥ सो ई पेघसेवा रि ॥१॥ आगै बाट
जु बिषमी मन रे ॥ जैसी षड़े की धार ॥ दादू दास सत
साई सूं सूत करि ॥ कूड़े काम निवारि ॥२॥ ॥१७॥ जब
सो कहा हमारा ॥ देखा नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥ परम

तोजषरमंन. सुषसागरमांहिसमरा॥ किंजोम।
लिअनिआनंद॥पायापरमानंद॥ जोनिअज।
रअनंत॥षेलैफागबसंत॥३॥आदिअंतिअसथा
नो॥दादूसोपहिचांनो॥४॥ ४॥इतिरागकल्याण
संपूर्ण॥ अथरागकानडा॥ राग ३॥दे दरसन
देषनतेरा॥तोजियजकपावेमेरा॥ टेक॥पीवतेमेरीवे
दनजांनी॥मैंकहाडरांके छांनी॥मेरातुम्रदेषेमन
मांनी॥१॥पीवकरककलेजेमांही॥ सोक्यूंहीनिक
सैनांही॥पीवपकरिहमारीबांही॥२॥पीवरोमरोम
डुषसालै॥इनपीरोंपंजरजालै॥जीवजातनाकांही
वालै॥३॥पीवसेजअकेलीमेरी॥मुझआरतिमिल
नैतेरी॥धनदादूवारीफेरी॥४॥१॥आवसलौंनेदेष
णादेरे॥ बलिबलिजांउंबलिहारीतेरे॥ टेक॥आव
पीयातूंसेजहमारी॥निसदिनदेषौं बाटतुम्हारी॥१
॥सबगुणतेरे॥ औगुणमेरे॥ पीवहमारीआहिन
नेरे॥२॥सबगुणवंतासाहिबमेरा॥ लाडगहेलादा
दूकेरा॥३॥२॥आवपीयाप्यारेमतहमारे॥दरसन
देषोपावतुम्हारे॥टेक॥सेजहमारीपीवसवारी॥दा
सितुम्हारीसोधनवारी॥१॥जेतुमपांकेअंगिलगा
ऊं॥क्यूंसमझाऊं॥वारनेजांऊं॥२॥पंथनिहारौं
बाटसंवारौं॥दादूतारौंतनमनवारौं॥३॥३॥आ
ववेसजणआव॥ सिरपरिधरिपांववेसजणआव॥
जांनीमेंडाजिंदअसाडी॥तेरावैंदराववेसजण
आव॥ टेक॥ इथांउथांजिथां
नांलवे

नाल वे सजणा आव ॥ तन भी डेवां मन भी डेवां पिं
ड पराणा वे ॥ सचा सांई मिलु इथांई ॥ जे दर करा
कुरबाणा वे सजणा आव ॥ तूं पाकों सिर पाक वे
सजणा ॥ तूं खूबों सिर खूब ॥ दादू भावे सजणा आवे
॥ तूं मिठा महबूब वे सजणा आव ॥ ४ ॥ दयाल अ
पनै चरननि मेरा चित लगावहु ॥ ताकै हीकरी
टे ॥ नख सिख सुरति सरीर ॥ तूं नांव रहौ भरी ॥ मैं
अजान मति हीन ॥ जम की पासि तैं रहत हौं डरी ॥
सब दोष दादू के दूरि करि ॥ तुम्ह ही रहौ हरी ॥
५ ॥ मन मति हीन धरै ॥ मूरिख मन कछू समझत
नांही ॥ ऐसें जाइ जरै ॥ टे ॥ नांव बिसारि अवर चि
त लावै ॥ कूड़े काज करै ॥ सेवा हरि की मन हू न आ
नै ॥ मूरिख बहुरि मरै ॥ नांव संभ्रम करि लीजे प्रा
णी ॥ जम थैं कहा डरै ॥ दादू रे जे राम संभारै ॥ सा
गर तीर तिरै ॥ ६ ॥ पीव तैं अपने काज संवारे ॥ कोई
दुष्ट दीन कौं मारन ॥ सोई गहि तैं मारे ॥ टे ॥ मेर स
मान ताप तनि व्यापै ॥ सहजै ही सो टारे ॥ संतनि
कौ सुखदाई माधौ ॥ बिन पावक फंद जारे ॥ तुम्ह
थैं होइ सबै बिधि समरथ ॥ आगम सबै बिचारे ॥ सं
त उबारि दुष्ट दुख दीन्हो ॥ अंधकूप में डारे ॥ ऐसा
है सिर खसम हमारा ॥ तुम्ह जीते खल हारे ॥ दादू
सौं ऐसें निरबहिए ॥ प्रेम प्रीति पियारे ॥ ७ ॥ का
हू तेरा मरम न जांनां रे ॥ सब भए दिवांनां रे ॥ टे
माया के रसि राते माते ॥ जगत भुलांनां रे ॥ को का
हू का कह्या न मानै ॥ भए अयानां रे ॥ माया मे

मुक्ति है माता॥ मोन भांनां रे॥ निषिया रस अरस प
रस॥ सा वचानां रे॥३॥ आदि अंति जीवजंत कीयाप
यानां रे॥ दादू सब सर मन ले॥ टे बिदानां रे॥ ८॥ तू
हीं तूं गुर देव हमारा॥ सब कुछ मेरे नांव तुम्हारा॥
॥टेक॥ तुम्ह ही पूजा तुम्ह ही सेवा॥ तुम्ह ही पाती तु
म्ह ही देवा॥१॥ जोग जगि तूं साधन जापे॥ तुम्ह ही मे
रे आपे आपे॥२॥ तप तीरथ व्रत बरत असनांनां॥ तु
म्ह ही ग्यानां तुम्ह ही ध्यानां॥३॥ बेद भेद तूं पाठ पुरा
नां॥ दादू के तुम्ह पिंड परानां॥४॥९॥ तूं ही तूं आधा
र हमारे॥ सेवग सुत हम रांम तुम्हारे॥ टेक॥ माइ बा
प तूं साहिब मेरा॥ भगति हीन मैं सेवग तेरा॥१॥ मा
त पिता तूं बंधव भाई॥ तुम्ह ही मेरे सजन सहाई॥२॥ तु
म्ह ही तात तुम्ह ही मात॥ तुम्ह ही जात तुम्ह ही न्यात॥
३॥ कुल कुटंब तूं सब परिवारा॥ दादू का तूं तारण
हारा॥४॥१०॥ ऐसे नैन मधि देख्या दीजे॥ अमी महा
रस भरि भरि पीजे॥ टेक॥ अमृत धारा वार न पारा॥
निरमल सारा तेज तुम्हारा॥१॥ अजर जरंता अमी
झरंता॥ तार अनंता बहु गुण वंता॥२॥ झिलिमि
लि साईं जोति गुसांई॥ दादू मांही नूर रह्यो ई॥३॥
११॥ ऐसैं नैंक सो मीठा लागै॥ जोति सरूपी ठा
ढा आगै॥ टेक॥ झिलि मिलि करणां॥ अजरा जर
णां॥ नीझर झरणां॥ तहां मन धरणां॥१॥ निज निर
धारं निरमल सारं॥ तेज अपारं प्राण आधारं॥२॥ अ
गह गहारं

सदा हजूरं दादू सूरं ॥ १२ ॥ तौ कबहू दे की पंथा हमा द
रे ॥ राते माते नांइ तुम्हारे ॥ टेक ॥ झिलिमिलि झिलि झिलि
मिलि तेज तुम्हारा ॥ परगट खेलै प्राण हमारा ॥ नूर
तुम्हारा नैनहुं मांही ॥ तनमन लागा छूटै नांही ॥
सुष का सागर वार न पारा ॥ अमी महारस पीवणहा
रा ॥ प्रेम मगन मतिवाला माता ॥ रंगि तुम्हारे दा
दू राता ॥ [illegible]
[illegible] ॥ माई रे ऐसा सतगुर कहिए ॥ भगति
मुक्ति फल लहिए ॥ टेक ॥ अविचल अमर अविनासी अ
॥ अठ सिधि नव निधि दासी ॥ ऐसा सतगुर राया ॥
चारि पदारथ पाया ॥ अमी महारस माता ॥ अम
र अभै पद दाता ॥ सतगुर त्रिभुवन तारे ॥ दादू पा
रि उतारे ॥ १ ॥ माई रे सांति घडे गुर मेरा ॥ मैं सेव
ग तिसकेरा ॥ टेक ॥ कंचन करिले काया ॥ घडि घडि
घाट निपाया ॥ मुष दरपन मांहि दिषावे ॥ पीव पर
गट आणि मिलावे ॥ सतगुर साचा धोवे ॥ तौ बहु
रि न मैला होवे ॥ तनमन फेरि संवारे ॥ दादू कर
गहि तारे ॥ २ ॥ माई रे तें क्यौं रूडौं पाए ॥ जे गुर मु
षि मारग जाए ॥ टेक ॥ कुसंगति परहरिए ॥ संतसंग
ति अणुसरिए ॥ कामक्रोध नहीं आणे ॥ बांणी
ब्रह्म बषांणे ॥ मन विषियां थी वारे ॥ ते आपण
पौ तारे ॥ विषमं की अमर लीधौ ॥ दादू रूडौं की
धौ ॥ ३ ॥ बाबा मन अपराधी मेरा ॥ कह्या न मानै
तेरा ॥ टेक ॥ माया मोह मद माता ॥ कनक कामनी
राता ॥ कामक्रोध अहंकारा ॥ भावै विषै विका

रो॥३॥ कोलमीचलदीसकै॥ आतमरामनबकै॥
सेमरथसिरजनहारा॥ दादूकरैउकारा॥४॥मा
हरैयोंबिनसंसारा॥ कामक्रोधअहंकारा॥ टे॥लो
भमोहसैसेरा॥ मदमछरबहुतेरा॥१॥आपापरअ
भिमानां॥ केताएरबगुमांनां॥२॥तीनितिमरन
हीजांहीं॥ पंचोंकेगुनमांहीं॥३॥ आतमरांमनजा
नां॥ दादूजगतदिवांनां॥४॥४४॥ माईरेतबक्याक
थिसिगियानां॥ जबदूसरनांहींआंनां॥ टेक॥जब
ततहिततसमानां॥ जहांकातहांलेसानां॥ जहां
कातहांमिलावा॥ ज्यूंथात्यूंहोइआवा॥१॥संधेंमि
धिमिलाई॥ जहांतहांथितियाई॥३॥ सबअंगसम
बहीगाई॥ तब दादूसरनांहीं॥४॥ दादूलिब
डागांसपूरण॥ आपरामकेद्वारा॥ माझानाथ
जीताकोंतावलिवाइरे॥ रामरतन दीयामैराबे
माझवाल्हाजी बिषियौंवारी॥ टेक॥ वाल्हावांणी
नैमनमांहींमाडैं॥ चितवननाकौंचितराखे॥अ
वगनेत्रयाईजीन्यागुण॥ माझामांहिलामलतेना
खे॥ वाल्होंजीयांनोफलएआये॥ ताझन्यावलि
नांदोंजहांबाधो॥ जनदादूर्ल्यांबंधनकापे॥२॥
अरेमेरासदासंगातीरांम॥ कारणितेरैंकपया
पहौंसबजगकौं॥ बैरागनिकैटदौरेरांम॥१॥
गारवरिबांसारहूंउदासा॥ चहिसिरिमेरउकारौं
रेरांम॥ यहुतनजालौंयहुमनमालौं॥ करवत
सीसचढांऊंरेरांम॥ परिवा
रौ॥ दादूबलिब

मरनपाद्गाहाररेषालिक अमिकतेरा॥ २॥ तुम
सौं रातातुमसौंमाता॥ तुमसौं जांगारेगरेषालिक
॥ तुमसौं बेलातुमसौं मेला॥ तुमसौं लेणातु
मसौं देणा॥ तुमही सौं रतदादू रेषालिक॥ षा
लिक मेरा अमिकतेरा॥ दादू अनतनजादू रेषा
लिक॥ ३॥ ओरमेरा समरथ साहिबरेअला॥ न
रतुमारा॥ टेक॥ सब दिसि देवे सब दिसि लेवै॥ सब
दिसि वारनपाररेअला॥ सब दिसि करतायब दि
सि हरता सब दिसि तारनहाररेअला॥ सब दिसि
बकता सब दिसि सुरता सब दिसि देषणहाररे
अला॥ २॥ तहते साक दिषे मेसा दादूआनंदहा
र रेअला॥ ४॥ हाजन असांजीला लहु॥ तो कूं सब
मालुमदे॥ टेक॥ मंकेंपासांमंकि बरोला मंकेलग
णा दिंदे॥ मंकें मेंडी सुच थियो ला॥ केंदरिक रियां
छादिंदे॥ बिरहकमाइ मूगरेला॥ मंकें बदे माह
डे॥ साथोकरेकबाबजीला॥ दूषदादू जेइसां हडे॥
२॥ ५॥ पियजासेतातहलवेला॥ आतमीचामो हि
नावेरे॥ निस दिन देषों बाट तुम्हारी॥ कबमेरे
घरि आवेरे॥ टेक॥ आइ बनीहै साहिबसेती॥ ति
स बिन तिल कल जावेरे॥ दासीकूं दरसन हरि दी
जे अबक्यूं आप छिपावेरे॥ तिल तिल देषों
साहिब मेरा॥ त्यूं त्यूं आनंद अंगिनमावेरे॥ दादू
रूपदिया करि॥ कबनैन उ नैन मिलावेरे॥
२॥ ६॥ माफ्रिवालनकाजो॥ रिदेजो बा नैध
नधरां॥ आकुलप्याण आगम्हारो कहलेव

हीयरैकरो॥टेक॥संतास्यौं आवेरे वाल्हा॥वेला
येहो जोइ ठरो॥साथजी साथे पइने॥पेलीतीरे
पारतिरो॥१॥पिय पाखें दिन दुहिला जाए॥घडीबर
सासो किम भरो॥दादू रे जन हरि गुण गाला॥सू
रसास्यां मीलेह बरो॥१॥७॥मरिये मीत बिछोहे॥
जियरा जाइ अंदोहे॥टेक॥ज्यूं जल बिछुरें मीनां॥
तलफि तलफि जिय दीनां॥यो हरि हम सौं कीन्हा॥
१॥चात्रिग मरे पियासा॥निस दिन रहे उदासा॥जी
वे किहि बिसासा॥२॥जल बिन कवल कुमिलावे॥
प्यासा नीर न पावे॥क्यूं करि त्रिषा बुझावे॥३॥मिलि
जिनि बिछुरो कोई॥बिछुरें बहु दुख होई॥क्यूं ज
न जीवे सोई॥४॥मरनां मीत सुहेला॥बिछुरन ष
रा दुहेला॥दादू पीव सौं मेला॥५॥८॥ पियहीं कहा
करौं॥पाय परौं के प्राण हरौं रे॥अब हौं मरने नांहि
डरौं रे॥टेक॥गालि मरौं के जालि मरौं रे॥के हूं क
रवत सीस धरौं रे॥१॥खाइ मरौं के घाइ मरौं रे॥के हूं
कतहूं जाइ मरौं रे॥२॥तलफि मरौं के झूरि मरौं रे॥
के हूं बिरही रोइ मरौं रे॥३॥टेरि कह्यां मैं मरण
गह्यां रे॥दादू दुखिया दीन भयां रे॥४॥९॥वाल्हा
हौं जांणों जे रंग भरि मिलों॥माहों तां पण नि सरण
हीं मेल्हो रे॥अंतरजांमी नां हन आवे॥तो दिन
आंवो छेहलो रे॥टेक॥वाल्हा सेज हमारी एक
लडी रे॥तिहां तुझ नें कांइ न पांमो रे॥आटला
म्हारो परिखलो रे॥
पिटि मार्ग.

नदीजेर । दाहनो अपराधीताको । नापउधारीलो
जेर ॥२॥१० ॥ वाल्हातके माफोरामगुसाइ । दीनवि
ताफे बाधीर । तुक बिनादोअनतरडबढ़ि यो
कीधीकमाई लाधीर । टे । जीउजे तिलहरावि
नारे । दहडीउथे दाधीर । एतो ओतारेकाभजा
रायो । माथै टाकरपाधीर । छुटिकमाफोकेदी
परिपासी । सक्यो नरामअराधीर । दाह कुपरिदय
मयाकरि । होताफो अपराधीर ॥२॥११ पावघरि
आवेर । बेदनमाफीजाणीर । बिरहमतपेकव
गायरिकीजे । कहोंको उपनीकहाणीर । टे । आ
तरजामानाथ अहारा । तुक बिनहौसीदाणी
मंदरिमाफे कांइ नआवे । रजीनीजाइ बिहाण
रे ॥ ताहरीबाटहोजोइ जोइथाकी । नेनम
पाणीर । दाह तुक बिनदीनउधारे । तुमाथेरा
छेताणीर ॥२॥१२ कवमिलिसोपीयगाह आती
आरासीरी । मलती । टे । तिसजल्यागी तिसद
री । जनमिजनमिसोसाथी । मीतहमारा आ
यारा । ताफारेमनेरातो । पीवबिनमूनेना
आवे । गुणताफालेगाती । दाह कुपरिश्याम
करि । ताफेवारोजाती ॥२॥१३ तूहीतूलि
फेगुसाई । तूबिनतूकेन कहूं रे । तूलाल
हरहोरे । मरगितुम्हारीज कहूं रहोरे । टे
मनमांहे जोइ ये कता । तुजदीठाहोसुख
तूलाजेतिलनतजारहोरे । तिमतिमताहो
बिनमाफोकोइनहीरे । होतो

नांबहौ।दादूरेजनहरिगुणगाता।मिलेल्योमाड़
नहौ२।१४।हमारेतुम्हहीदोरदयाल।तुम्हबि
नऔरनहींकोमेरेभौदुषमेटणहार।टेक।बेरी
पंचनिसषनहींप्यारे।रोकिरहेजमकाल।हाजरा
हीसदासदुषपावें।स्वांसेंकरऊंसंभाल।तुम्ह
बिनरांमदहैऐसेंदर।दसौंदिसासबसाल।देष
तदीनदुषीकरुंकीजे।तुमहौदीनदयाल२।निर
मैनांवहेतहरिदीजे।दरसनपरसनलाल।दादू
दीनलीनकरिलीजे।मेटऊंसबैजंजाल३।१५।
ऐमनमाधेबरजिबरजैऔतिगतिबियासौरत।उ
ठतजुगरजिगरजि।टेक।विषैबिलासअधिकअ
तिआतुर।बिलसतसंकनमांनें।षाद्रहलाहल
मरानमायामैं।विषअंमतनकरिजानें।।१।पंचनके
संगिबहतचहूंदिसि।उलटिनकबहूंआवे।।
जहांजहांकालजाइतहांतहां।मृगजलज्यूंमन
धावे२।साधकहैंगुरग्यांननमांनें।सावधजनतनु
म्हारा।दादूकेतुम्हसजनसहाई।कछूनबसा
रहमारा३।१६।होहमारेजियरांरांमगुणगाइ।ऐ
हीबचनविचारेमांनि।टेक।केतीकहौंमनकार
नैं।तूंछाडीरेअभिमांन।कहिसमझांऊंबेरबे
रा।तुझअजहूंनआवेग्यांन।।ऐसासंगकहांप
इऐ।गुणगावतआवेतांन।।चरनोंसौंचितरा
षिऐ।।निसदिनहरिकाध्यांन२।बेसीनेषांदेहिंगे
आपकहांवेंमांन।जनदादूरेगुणगाइरे।पू
रनहेनिरबांन३।।१७।।बिटाऊचलनांआजकि

कोऊ सम किन देषै कहा सुषि सोवै रे मन गा
ऊ संभालि टेक जेसैं तरवरि बिरषि बसेरा पंषी बै
आइ असैं यह सब हाट पसारा आप आप कूं जा
इ कोई नहीं तेरा सजन संगाती जिनि षोवै मू
न मूल यह संसार देषि जिनि भूलै सब ही सेवल
फूल तन नहीं तेरा धन नहीं तेरा कहा रह्यौ इहि
लागि दादू हरि बिन क्यूं सुष सोवै काहे न देषै जा
गि ॥१८॥ जागत क्यूं न मरै को मूरा तोरै तन धन जोबन
देषि गरबानौ माया राती तोरे टेक अपनौ ही रूप दे
न भरि देषै कामनि कौ संग मानावे रे बारबार वि
षै रूचि माने मरिबौ चीत न आवै रे मैं बड आ
गे और न आवै करत केत अभिमान नाँ रे मेरी मे
री करि करि फूल्यौ माया मोह मुलाना रे मैं मैं
करत जनम सब षोयौ काल सिरानै आयौ रे दादू दे
षि मूढ नर प्राणी हरि बिन जनम गमायौ रे ॥१९॥
जागत क्यूं कटै न मूसै कोई जागत जानि जतन
करि राषै चोर न लागै होई टेक सोवत साह बस
त न ही पावै चोर मुसै घर घेरा आसि पास पहरे
को नाहीं बसतैं कीन्ह नबेरा ॥ पीछै कहु क्या जा
गे होवे बसत हाथ थैं जाइ बीते रैनि बहुरि नहीं
आवै तब का करिहै भाई ॥ पहलैं ही पहरै
जे जागै बसत कछू नहीं छीजै दादू जुगति
जानि करि ऐसी करणा है सो कीजै ॥२०॥ सजा
नी रजनी घटती जाइ पल पल छीजे अवधि दि
न आवै अपनौ लाल मनाइ टेक आतिगति नी

रकहेसुबिसोवे॥यकुऔसरचलिजा१॥यकुन
नबिछुरेंबकुरिकहापावे॥फिरपीछेपछिताइ
प्राणपतिजागेसुंदरिक्युंसोवे॥उठिआतुरगहि
पि१॥कोमलबचनकरुणांकरिआगे॥नषसि
षरकुलपटा१॥सषीसुहागसेजसुषपावे॥प्री
तमप्रेमबटाइ॥दादूभागनडेपीवपावे॥सकल
सिरोमनिराइ३॥२१॥कोईजाणोरेमरममाधईया
केरो॥कैसेरहेकरेकासजनीप्राणमेरो॥टेक॥कौ
नबिनोदकरतरीसजनी॥कवननिसंगिबसेरो
संतसाधगमिआएउनकेकरतजुप्रेमघनेरो॥
१॥कहांनिवासबासकहांसजनी॥गवनतेरो॥घट
घंमाहेंरहेनिरंतर॥एदादूनेरो२॥ २२॥मनबेरा
गीरांमकोसंगिरहेसुषहोइ॥टेक॥हरिकारणि
मनजोगीया॥क्युंहीमिलेमुझसोइ१॥निरषणका
मोहिचावहे॥क्युंआपदिषावेमोहि॥हिरदेमे
हरिआवतूं॥मुषदेषोंमनधोइ२॥तनमनमेंतूंहीं
बसेदयानआवेतोहि॥दादूनिरषणकामोहिचा
वहे॥एदुषमेरापोइ३॥दादूतुम्हारादासहे॥नै
नदेषनकोरोइहो४॥२३॥धरणीधरिबाह्यांध
तारे॥अंगपरसनहीआपेरे॥कह्योंम्हारोका
इनमानें॥मनिभावेतेपापेरे॥टेक॥वाहीवाइ
नेसबसलीधां॥अबिलाकोईनजाणेरे॥अल
गरहेएगोयरितेड॥

वा

पिरहुतेकोईनजाणे॥ए

माता बालक रुदन करंता ॥ वाही वांनै राषै
जै कोई छै तेहौ आपणापौ ॥ दादू तेन ही दाषै ॥
३४ ॥ सिरजनहार थै सब होइ ॥ उतपति परलै क
रै आप ॥ दूसर नांही कोइ ॥ टे ॥ आप होइ कुलाल
करता ॥ बूंद थै सब लोइ ॥ आप करि अगोच बैठा
दुनी मन कौ मोहि ॥ आप थै उपाइ बाजी निरष
दे षै सोइ ॥ बाजीगर कौ यहु भेद आवै ॥ सहजि
सौ जस मोइ ॥ २ ॥ जे कुछ कीया सु करै आपै ॥ एह उ
पजै मोहि ॥ दादू रे हरि नांव सेती ॥ मैल कुसमल
धोइ ॥ ३ ॥ ३५ ॥ देहुरे मंझे देव पायो ॥ बसत अगोच
लषायो ॥ टे ॥ अति अनूप जोति पति सोई ॥ अंत
रि आयो ॥ प्यंड ब्रह्मंड सम तुलि दिषायो ॥ सदा
प्रकास निवास निरंतरि ॥ सब घट मांहि समायो ॥
नैन निरषि नैरो हरि देहत्न लायो ॥ पूरब भाग
सुहाग सेज सुष ॥ सो हरि लेन पठायो ॥ देव कौ ॥
दादू पार न पावै ॥ अहो पै उनही चितायो ॥ ३ ॥
३६ ॥ इति केदारा रागु सं० ॥ अथ राग मारू ॥
मनां भजि राम नांम लीजै ॥ साध संगति सुमरि सु
मरि ॥ रसनां रस पीजै ॥ टे ॥ साधु जन सुमरन क
रि ॥ केते जपि जागे ॥ आगम निगम अमर कीये ॥
काल कोई न लागे ॥ १ ॥ नीच ऊंच चिंतन करि ॥ स
रनां गति लीये ॥ भगति मुकति आपनीं गति ॥
ऐसे जन कीये ॥ २ ॥ केते तिरि तीर लागे ॥ बंधन मो
छूटे ॥ कलि मल बिष जुग जुग के ॥ राम नाम सू
टे ॥ ३ ॥ भरम करम सब निवारि ॥ जीव निज पिसो

दाईं ३ ब हरिकरन इजा नहींकोई॥४१॥ मना
अपिरांमनांमकहिरे॥ रांमनांमम नि बिश्रांम मं
गीसोग हिरे॥ टेक॥ जागि जागि सो वेकहां॥ काजके
धनेरौ॥ बारंबारकरिधिकार॥ आवत दिन नेरे
१॥ सोवृतसोवृतजनसबतें॥ आज [illegible] जीयजा
गो रांमसंभारिनींदतिवारि॥ जनमजुरा लागो २
आसिया सिमर सब धौ॥ नारी निदमेंगा औत
काजआडि चाल्यो॥ कोई नहीं तेरा ३ तजिका
म क्रोध मोह माया॥ रांमरांमकरणो॥ जनजा
गजी वर्षा [illegible] डा॥ दादू गहि सरणां॥ ४॥ कि
बिसरै मेरा पीव पियारा॥ जीव की जीवनि
प्राणहमारा॥ टेक॥ क्यूं करि जीवै मीन जल बिछु
रैं॥ तुम्ह बिन प्राणसनेही॥ च्यंतामणि जब कर
थैं छूटै॥ तब दुख पावै देही॥ मातावालिक १४
न दैवै सो कैसें करि पावै॥ निरधन का धन अ
[illegible] सो कैसें करि जीवै॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पो [illegible]
कोजै [illegible]

मी व्याकुल होइ गाइहै। ४ अम्हे बिरह गि
री मन तुम्हार हि यो तुम्ह बिन नाथ अनाथ को
बिसार हि यो। ८ अम्ह नेत्र गि अन लपर जा
नाथ निकट नही आवै रे हम न कार नि बिरह
नि व्याकुल और न कोई भावे रे आप आयर
न अम्ह नेदषे आपन पोल दिषावे रे प्राणी
पंजर देवदेक रिदरसन मागे अंतरजामी अ
पेरे दाह बिरह नि बिन बनि टूटे ये तुम को हन
का पेरे ५ कवन हुं ऐसा बिरह उपावेरे पिय बि
न देषे जीय जावे रे ८ बिपति हमारी सुन ऊस
हेली पीव बिन चैन न आवे रे ज्यूं जल मीन
मीन तन तलपे पीव बिन बज्र बिहावे रे ऐ
सी प्रीति प्रेम की लागी ज्यूं पंषी पीव सुनावे रे
त्यूं मन मेरा रहे निसबासुरि कोई पीव कों आ
णि मिलावे रे नो मन मेरा धीरज धरई कोई
आगम आणि जणावे रे तो सुषजीव दाइ का
पावे पलपी वजी आप दिषावे रे १ ६ पंषी डा
बूझे बिरहनी कहि नै पीव की बात कब घरि
आवे कब मिले जोऊं दिन अरु राति पंषी डा
० कहा मेरा बालम कहां बसे कहा रहे करि
बास कहां ढ ढो कहा पाइ ए कहा रहे किस
पास पंषीडा २ कवन देस कहां जाइ ए कीजे
कौ णउपाइ कौणअंगके से रहै कहां करे
समझाइ पंषीडा ३ परम सनेही प्राण का सोक
न देकु दिषाइ जीव नि मेरे जीव की सो मुझ आ

गि मिलाइ पंषीडा ॥३॥ नैनन आवै नींदडी ॥ नि
स दिन तलफत जाइ ॥ दादू आतुर बिरहनी ॥
क्यूं करि रैंणि बिहाइ पंषीडा ॥४॥ ७ ॥ पंषीडा पं
थ पिछांणी तीरिया ठका ॥ गहि बिरहे की बाट ॥ जी
वत मृतक कै चलै ॥ लै घेऔ घं घाट पंषीडा ॥ ट
टेक सतगुर सिर परि राषीऐ ॥ निरमल ग्यान बि
चार ॥ प्रेम लगा तिक रिषी तिसौं ॥ सनमुष सिरज
नहार पंषीडा ॥ पर आतम सौं आतमा ॥ ज्यूं जल
जल हि समाइ ॥ मन ही सौं मन लाइऐ ॥ लै कै मार
गि जाइ पंषीडा ॥ तालाबेली ऊपजै आतुर पी
उ पुकार ॥ सुमरि सनेही आपणां ॥ निस दिन बा
रंबार पंषीडा ॥ देषि देषि पग राषिऐ ॥ मारग षं
डा धार ॥ मनसा बाचा क्रमनां ॥ दादू लंघै पार पं ष
डा ॥ ८ ॥ साध कहै उपदेस बिरहनी ॥ तन भूले
तब पाइऐ ॥ निकट भया परदेस बिरहनी ॥ टेक ॥
आतम अंतरि ले बसै ॥ तहां रहै करि बास ॥ तहां
ढूंढै पीव पाइऐ ॥ जीव निजी कै पास बिरहनी ॥ १
॥ परम देस तहां जाइऐ ॥ आतम लीन उपाइऐ ॥
कनें गयौ सै रहे ॥ ज्यूं जल जलहि समाइ बिरह
नीं ॥ सदा संगाती आपणां ॥ कबहूं दूरि न जाइ
परम सनेही पाइऐ ॥ तन मन लै कै लगाइ बिर
हनी ॥३॥ जागे जगपति देषिऐ ॥ परगट मिलि है आ
इ ॥ दादू सनमुष है रहै ॥ आनंद अंगि न माइ बि
रहनी ॥ ९ ॥ गोबिंदा गाइबा दे रे गाइबा दे आ
डडी आंणि निवारि रे ॥ अनं

नग्रामे रेक मे ॥ निरभै कोइ नकी जेरे ॥ अमी महा
रस अमृत न आये ॥ अमृर मिक रसपीजे रे ॥ अवि
चल अमर अषे अविनासी ॥ ते रस कोइ नदी जे रे
॥ आतम राम अधार आम्हारो ॥ जनम सुफल क
रि लीजे रे ॥ दादू दयाल क्रिपा लद मोदर ॥ प्रेम बि
नां किम रहिये रे ॥ दादू राम रिराम रमाडो ॥ भ
गत बछल तकहिये रे ॥ १० ॥ गोमंद्या ॥ जोइ बा
दे रे जोइ बादे जे बर जे तेवा रिरे ॥ आदि पुरिष तू
छे अम्हारो ॥ कंत तुम्हारी नारि रे ॥ टे ॥ अगें सारे
गै रमिये ॥ देवा हूरि नको जेरे ॥ रस माहे रस इम थ
रहिये ॥ ये सुष अमृत नै दीजे रे ॥ सेज हि ये सुष रा
म रिरमिये ॥ प्रेम लगति रस लीजे रे ॥ ऐक मेकर
स केलि करता ॥ अम्हे अबला इम जीजे रे ॥ स
मथ स्वामी अंतरजामी ॥ बार बार कांइ बाहेरे
॥ आदै अंते तेज तुम्हारो ॥ दादू देषे गाए रे ॥ ११
॥ तुम्ह सरसी रंग रमाडि ॥ आप अपर छून थई
करि ॥ म्हूनै म सर माडि ॥ टे ॥ म्हूनै मोल किकांइ
पइ बेगलो ॥ आपणापो दिषाडि ॥ किम जीकं इ
ऐकली ॥ विरहनियां नारि ॥ म्हूनै बाहि सिमा
अलगो थई ॥ आतमा नधारि ॥ दादू सौरमि ऐस
दा गणीय परिनारि ॥ १२ ॥ जागि रे किस नींदडी
सूता रेणि बिहांणी सब गई दिन आइ पहूता
॥ टे ॥ सो कां सोवे नींदडी जिस मरणां हो चैरे ॥ जो
रा बैरी जागणां जीवन कां सोवै रे ॥ जाके सिर
परि जम षडा सर सांधे मारे रे ॥ सो कां सोवै नींद
डी कहि क्यों न पुकारे रे ॥ दिन प्रति निसकाल

ऊपजै दिन ज्यागै रे। दादू स्नानी दडी उसज्यै गि
न लागै रे॥१३॥ जागि रे सब रैणि बिहांणी॥ जा
इ जनम अंजुरी को पांणी॥ टेक॥ घडी घडी घडि
याल बजावे॥ जो दिन जाइ सु बहुडि न आवे॥
सूरिज चंद कहै समझाइ॥ दिन दिन आव घटती
जाइ॥ सरवर पांणी तरवर छाया॥ निस दिन का
ल गरासै काया॥ हंस बटाऊ प्रांन पयांना॥ दा
दू आतम राम न जांना॥४॥१४॥ आदि काल अंति का
ल मधि काल नाई॥ जनम काल जुरा काल॥ काल
ऊपै आई॥ चलत काल फिरत काल॥ कबहूं लै
जाई॥ आवत काल जात काल॥ काल कठिन
षाई॥ लेत काल देत काल॥ काल ग्रसै धाई॥ कह
त काल सुनत काल॥ करत काल सगाई॥ कांम क
ल क्रोध काल॥ काल जाल छाई॥ आगै काल
पीछै काल॥ काल संगि समाई॥ काल रहित रा
म सहित॥ दादू ल्यौ लाई॥५॥१५॥ तौ को केता क
हा मन मेरे॥ षिण एक मांहै जाइ अनेरे॥ पांन उ
धारी लेरे॥ टेक॥ आगै है मन षरी बिमासणि॥ ले
षा मांगै देरे॥ का है सौवैनी दम हरि॥ कृत बिचा
रे तेरे॥१॥ ते परि कीजे मन बिचारे॥ राखै चरनौं नेरे
॥ रती इक जीवन मोहिं न सूझै॥ दादू चेति सवेरे
॥२॥१६॥ मन बालूरे कछू बिचारी॥ षेलौ पड सा
रे गोठ तेल॥ टेक॥ बहु मांते
ज्यूं तिल मैं ली जे तेल॥
॥ होसी रस रहेला

ला मांहि सेती मिलि ॥ दादू संगि छाडि आपको काय
ई देह गुण की बेलि ॥ १७ ॥ मन बावरे हो अनत जि
जाइ ॥ तो तूं जीवै अमीरस पावै ॥ अमर फ
ल नै खाइ ॥ टेक ॥ रे कूं चरन सरन सुख पावै ॥ देख
लै नैन अघाइ ॥ भाग तेरे पीव नेरे ॥ थीर थान दि
खाइ ॥ संगि तेरे रहै घेरै ॥ सहजैं अंगि समाइ ॥ सरी
र मांहि सो धि साईं ॥ अनहद ध्यान लगाइ ॥ पीव
पासि आवै सुख पावै ॥ तन की तपति बुझाइ ॥ दा
दू रे जहां नाद उपजै ॥ पीव पासि दिखाइ ॥ १८ ॥
निरंजन अंजन कीन्हा रे ॥ सब आतम लीन्हां
रे ॥ टेक ॥ अंजन माया अंजन काया ॥ अंजन छाया
रे ॥ अंजन राते अंजन माते ॥ अंजन पाया रे ॥ अंज
न मेरा अंजन तेरा ॥ अंजन मेला रे ॥ अंजन लीया
अंजन दीया ॥ अंजन षेला रे ॥ अंजन देवा अंज
न सेवा ॥ अंजन पूजा रे ॥ अंजन ग्यानं अंजन ध्या
नं ॥ अंजन दूजा रे ॥ अंजन बकता अंजन सुरता
॥ अंजन भावै रे ॥ अंजन राम निरंजन कीन्हा रे
॥ दादू गावै रे ॥ १९ ॥ अैन बैन चैन होवै ॥ सुणतां
सुख लागे रे ॥ तीन्यूं गुण त्रिबिधि तिमर ॥ भरम करम
भागे रे ॥ टेक ॥ होइ प्रकास अति उजास ॥ परम तत
सूझै ॥ परम सार निरबिकार ॥ बिरला कोई बूझै
॥ परम थान सुख निधान ॥ परम सुंनि षेलै ॥ सहज
भाइ सुख समाइ ॥ जीव ब्रह्म मेलै ॥ अगम नि
गम होइ सुगम ॥ दूतर तिरि आवै ॥ परम पुरष द
रस परस ॥ दादू सो पावै ॥ २० ॥ कोई राम का राता

२ कोई घेमका मातारे टेक कोई मनकामीरे,
कोई तनको तोरे॥ कोई आपउवारेरे॥ कोई
जोगजुगतारे कोई मोषसुषतारे कोई देनग
वंतारे॥ कोई सद्गतिसारारे॥ कोई तारगाहा
रारे कोई पीवकाप्यारारे॥ कोई पारकायारे
कोई मिलिकरिआयारे कोई मनकामायारे
कोई देबड भागीरे कोई सेजसुहागीरे कोई
देअनरागीरे॥ कोई सबसुषदातारे कोई रूप
विधातारे कोई अछतघातारे॥ कोई नूरपिछा
णेरे॥ कोई तेजके जाणेरे॥ कोई जोतिबषाणेरे
कोई साहिब जैसारे कोई साई तैसारे कोई दा
दू ... मन्हेसारे॥ २९ सद्गतिसाधवारे सन
मुषसिरजन हार भौजल आप तिरें ते त्यारें
प्रानउधरनहार॥ टेक पूरणब्रह्मरांमरंगिरा
ते निरमलनावअधार सुषसंतोषसदासति
संजम मतिगतिवारनपार॥ जुगिजुगिराते
जुगिजुगि माते जुगिजुगि संगतिसार॥ जुगि
जुगिमेलाजुगिजुगिजीवनि॥ जुगिजुगि ग्यानवि
चारु॥ सकलसिरोमनिसबसुषदाता॥ दुर्लभ
इहि संसार दादू हंसरहै सुषसागर॥ आऐ पर
उपगार॥ ३२ अमृत घरिया कुणाणे॥ आव्याव्या
तमरांम टेक चउदिहि सिमंगल चारा॥ आनंदअ
तिघणारे वरत्याजैजैकारा॥ हिरषिव्यावणां

...१९..

ऐ आनंद अपिनमाइ॥

नाद्भगतिअपार। सेवाकीजियोरे। सतगुर
सिरजनहार सदासुमरीजियोरे। धनीअम
रानाम। आत्मा अमरगीरे। दादूसेजसुषम
णा तूं त्रिभुवनधणीरे ॥४॥८३॥ इतिरागकेदार
१७३ संपूरणा॥ अथरागसोरठ ली॥ सबदसमांनां
जेरहे। गुरवाइकबीधा। उनहीलागाएकसौं
सोइजनसीधा। टे। ऐसीलागीमरमकी
ततमतसबभूला। जीवतमृतकह्वैरहैग
हिआतमसूला। चेततिद्धिवहनबीसरे। म
हारसभीना। सबदनिरंजनगहिरहे। उनिस
हिबदीना। एकसबदिजनउधरे। सुनिसद
जेजागे। अंतरिरातेएकसौं। सरसनमुषला
गे। सबदिसमांनांसनमुषरहै। उआतमआ
गे। दादूसीझेदेषतां। अविनासीलागे ॥१॥
हो तरनौकाहैहरिनांव। इजानहीनाव
बितनौका। कहिजेकेवलराम। टे। निरम
लसदाएकअविनासी। अजरअकलरसऐ
सा। दिढगहियाषिमूलमनमांही। निरषिदे
षिनिजकैसा। उघडरसभीगामहाअमीर
स। अमरअनूपमपीवै। रातारहैप्रेम सौं
माता। ऐसैजुगिजुगिजीवै। इजानहीऔ
रकोऐसा। गुरअंजनकरिसूझै। दादूमोटे
भागहमारे। दासबिबेकीबूझै ॥२॥ राकबत्र
वेगाकबआवैगा। पीवपरगटआयदिषावै
गा। मिलडागसुफकौंनावैगा। टे। कंठेलागि

रडोरे नैनों मैं बाहि धरी रे॥ भीव तुम्ह बिन क्यूं रि
रौरे॥ पांकै मसतक मेरा रे॥ तब मन भीव जी तेरा
रे॥ हूं रापों नैन ढूंनेरा रे॥१॥ हियडे हेत लगां कै ए
अब के जे पीव पां करे॥ तो बेर बेर बलि जां ऊं रे
सेज डिऐ पीव आवै रे॥ तब आनंद अंग न मावै
रे॥ जब दादू दरस दिषावै रे॥२॥३॥ पिरी तूं पां रा
पसाइ डे॥ मूं तन लगी माहि डे॥ टेक॥ पांधी वंदी
ति करी ला॥ अंसां सां राग ल्हाइ डे॥ सांई सिका
सडु के ला॥ गुझी गाल्हि सुनाइ डे॥१॥ पसां पाक
दीदार के ला॥ सिक असां जी लाहि डे॥ दादू मां
झि कलूब मैं ला॥ तो डे बिपान काइ डे॥२॥४॥ को
मेडी दोसजण॥ म्हारी सूरति केला॥ नपेडीह
घणां॥ टेक॥ पिरीयां संदी गाल्हडी ला॥ पांधी डा
पूछां॥ कडीई दो मेगारे ला॥ डीदो बाद असां
हां॥१॥ आदे सिक दीदार जी ला॥ पिरी पूरि पसां
दादू जे जिंद ऐला॥ सजणां सांगर ल्हां॥२॥५॥
हरि हांदि षावडु नैनां॥ सुंदर मूरति मोहनां
बोलि सुनावडु बैनां॥ टेक॥ प्रगट पुरातन षेड
नां॥ महिमा न सुषमेड रणां॥ अबिनासी अपर
परां॥ दीन दयाल गगन धरां॥१॥ पारब्रह्म पर पूर
णां॥ दरस दे दुष दूर करनां॥ करि क्रिपा करुणा
मई॥ तब दादू देषे तुम्ह दई॥२॥६॥ रांमसुष सेव
गजानै रे॥ दूजा दुष करि मानै रे॥ टेक॥ और अग
की आला॥ फंध रोपे है जमजाला॥ सम काल क
ठिन सर पेषो॥ यहु सिंघ रूप सब देषो॥ बिषम

।नयांनकमारी ॥ रिपदारतमीच बिचारी ॥ पऊ
ऐसारूपक्षल्याद्या ॥ गगपासीहाराख्यावा ॥ सब
ऐसाद्देषिबिचारे ॥ घातघातबटपारे ॥ ऐसाजन
सेवगसोई ॥ मतिश्रोरभावेकोई ॥ हरिप्रेममगन
रंगिराता ॥ दादूरामरमैरसिमाता ॥ ७ ॥ आपति
रजनयोंकहै ॥ कीरतिकरतार ॥ मैंजनसेवगदोइ
नहीं ऐकैअंगसार ॥ टे ॥ ममकारतिसबपरह
रे आपाअभिमान ॥ सदाअखंडतिउरधरै ॥ बोलै
भगवान ॥ अंतरपटजीवैनहीं ॥ तबहीमरिजाइ
॥ बिछुरेतलफैमीनज्यू ॥ जीवैजलिआइ ॥ नीर
षीरज्यूंमिलिरहै ॥ जलजलहिसमांन ॥ आतम
पाणीलूणज्यूं ॥ दूजानहीआंन ॥ मैंजनसेवगहेत
हौ मेरा बिश्रांम ॥ मेराजनमुझसा ॥ रिषा दादूक
हैरांम ॥ ८ ॥ सरनितुम्हांके सेवा ॥ मैंअनतसु
षपाया ॥ भागबडेतूंभेटिया ॥ हूंचरनौंआया
॥ टे ॥ मेरीतपतिमिटीतुम्हदेषतां ॥ सीतलभ
यामारी ॥ भवबंधनमुकताभये ॥ जबमिलेमुरारी
॥ भरमभेदसबभूलिया ॥ चेतनिचितलाया ॥ या
रससौपरचाभया ॥ उनसहजिलषाया ॥ मेरा
चंचलचितनिहचलभया ॥ अबअनततजाई ॥
मगनभयासरबेधिया ॥ रसपीयाअघाई ॥ स
नमुषकैसुषदीया ॥ पऊदयातुम्हारी ॥ दादू
दरसनपावई ॥ पावनअधारी ॥ ९ ॥ गोब्यंद
राषौ कृपापतीओट ॥ कांमक्रोधमनबटपारे
नकिमारैउरिचोट ॥ टे ॥ बैरीपंचसबलसंगिमि
[illegible]किरहै ॥ कालअहेडीबधिकह्वै

रो॥ उनजी व्रजाजगदे॥ ग्यांन ध्यांन हिरदै हे
जीन्को॥ सेगांदी घेरहे॥ समझि नपरई बापर
मईया॥ तुम्ह बिन सूनसदे ॥८॥ सरणि तुम्हारी
राम कृगोप्ये॥ इनसौं संगात दीजे॥ इनकै संगि
बकुत दुष पाया॥ दाइकूं गहि लीजे॥ ॥१०॥ राम
कृपा करिहो दयाला॥ दरसन देकु करौ प्रति
पाला॥ टेक॥ बालक इधन देवै माता॥ तौ कर्‌क
रि जीवैहि निध्रता॥ गुन औगुन सब कुं छनबि
चारै॥ अंतरहित प्रीति करि पारै॥ अपनौ जांनि
करै प्रतिपाला॥ नैन निकटि उरि धरै गोपाला॥ दा
दु कहै नहीं बस मेरा॥ तुम्ह माता मैं बालिक तेरा
॥११॥ भगति मांगो बाप भगति मांगो॥ मनैना
का नाम मैं प्रेम लागो॥ सिवपुर ब्रह्मपुर अब
सो की जिए अमरथांन नहीं लोक मांगो॥ टेक॥ आ
पिआनंद बनता का अंगनौ॥ भगति सजीवनी र
गिराचो॥ देहनैं गेहनैं बास बैकुंठ लगो॥ इन्द्र
आसण नहीं मुक्ति जाचौ॥ भगति बालीष
री आपि जा निचल हरी॥ निरमलौं नाम रसपा
नता के॥ रिधि नै सिधि नै राज रूडो नहीं॥ देवपट
माफेका जिनादे॥२॥ आतमां अंतरि सदा निरंत
रि॥ ताकी बापजी भगति दीजे॥ कहै दादू हिवै
कोडि दत आपे॥ तुम्ह बिनां ते अम्हे नहीं लीजे
॥१२॥ एको एक तेरा रामजी नाम रूडो॥ ता ज्ञान
म बिनां बीजौ सबै कूडो॥ टेक॥ तुम्ह बिनां औरे

गतहीकाये॥ संतनैसांकडोदुष्टपीडाकरै॥
हरैबहिलोनैभिआवै॥ पापनांपुंजसहोकरी
छै॥ मांजियासेमरमजोतिन्यावै॥ साधनैदुहि
लोतिहांदूनआकुलो॥ मांफोमांफोकरीनेधा
दुष्टनैमारिवासंतनैतारिबा॥ प्रगटथावा
हांआपजाए॥ नामलेतांछिणनांपातैऐकले॥
कोटिनांकरमतांछेदकांधा॥ कहेदादूहिवैतु
म्हबिनांकोनहीं॥ साधबोलेजेमरणीलीधा॥ १
हरिनामछेकुनिरंजनतेरा॥ हरषिहरषिजपैजीयमे
रा॥ टेक॥ भावभगतिहेतहरिदीजे॥ प्रेमउमंगिमन
आवै॥ कोमलबचनदीनतादीजे॥ रामरसाइण
भावै॥ बिरह बैरागप्रीतिमोहिदीजे॥ हिरदेसाच
सतिभाखौ॥ चितचरनौचिंतामणिदीजे॥ अंतरि
दिढकरिराखौ॥ सहजसीलसंतोषसबदीजे॥ म
ननिहचलतुमलागै॥ चेतनिचिंतनसदानिवा
सी॥ संगितुम्हारेजागै॥ ग्यानध्यानमोहनमोहि
दीजे॥ सुरतिसदासंगितेरे॥ दीनदयालदादूकौं
दीजे॥ परमजोतिघटिमेरे॥ १४॥ जैजैजैजगदी
सतंतूंसमरथसांई॥ सकलभुवनमांनैघडै॥ दूजा
कोनांहीं॥ टेक॥ कालमीचकरुणांकरै॥ जमकिं
करमाया॥ महाजोधबलिवंतबली॥ भैकंपेराय
जुरामरा तुम्हतैंडरै॥ मनकौमैमारी॥ का
मदलनकरुणामई॥ तूंदेवमुरारी॥ सबकंपैकं
रतारतैं॥ जीवबंधनपासा॥ अरिरिपभंजनभैगता
॥ सबबिघनबिनासा॥ सिरऊपरिसांईषडा॥ सो

१५ हरिके चरनपकरिमनमेरा। यहुअविना
सी घरतेरा। टेक। जबचरनकवलरजपावै। त
बकालब्यालनखौरावै। तबत्रिबिधितपतबिना
सै। तबसुषकीरासिबिलासै॥ जबचरनकव
लचितल्यावै। तबमायेमाचनजागै। तबजन
मजुरासबषीनां। तबपदपावनउरलीनां। जब
चरनकवलरसपीवै। तबमायानब्यापैजीवै॥
तबभरमकरमभौताजै। तबतीनंलोकबि
राजै॥ जबचरनकवलरुचितेरी। तबचारिप
दारथचेरी। तबदादूऔरनबांछै। जबमनला
गैसाचै॥ १६ संतौऔरकहौकाकहिऐ। ह
मतुमसीषइहै सतगुरकी। निकटिरामकेर
हिऐ। टेक। हमतुम्हमांहिबसैसोस्वामीं। साचे
सौंसचुलहीऐ। दरसनपरसन जुगिजुगिकी
जे। काहूकोदुषमकहिऐ। हमतुमसंगिनिकटि
रहैनेरैं। हरिकेवलकरगहिऐ। चरनकवल
छाडिकरिऔसे। अनतकाहेकौंबहिऐ। हम
तुम्हतारणतेजघ नसुंदर। नीकैसौनिर
बहिऐ। दादूदेषुऔरदुषसबही। तामैंतनकू
दहिऐ३॥ १७ मनरेबकुरिनऐसैहोई। पीछैपि
पिछितावैगारे। नीदमःरेजितिसोई। टेक। अ
गमसारैसंचुकरीलै। तौसुषहोवैतोहीः प्रीति
करीपावणदयो। चरनौराषिमोही। संसारसाग
रबिषमअतिभारी। जि
रैजनरामनामसौं

नरजांणी कहां सौं इसकाक हिये टे बाबा बाट
घाट कछु समझि न परई हरि गावन हम जांनां
परदेसी पंषि चलै अकेला औघट घाट पयांन
बाबा संगि न साथी कोई नहीं तेरा यहु सब ह
टपसारा तरवर पंषी सबै सिधाये तेरा कौन गंवा
रा बाबा सबै बटाऊ पंथ सिरांनैं असथिर ना
हीं कोई अंति कालि कौ आगै पीछै बिछुरत बा
र न होई बाबा काची काया कौन भरोसा रैं
णि गई क्या सोवै दादू संबल सुकृत लीजे साव
धांन किन होवै ॥ १९ ॥ मेरा मेरा काहे कूं कीजे
जे कछु संगि न आवै अनत करी नें धन धरीला
रे ते कै तौ रीता जावै माया बंधन अंध न चेतै रे
मेर मांहि लपटाया तेजांणैं हौं एह बिलासौ
रे अनत बिरांधै पाया आप सवारथ एह बि
लूधा आगम मरम न जांणें रे जम कर मांथै
बांण धरीला तेतौ मन न आंणें रे मन बिचा
री ते लीजै तिल मांहें तन पडिबा दादू रे तिहां
तन ताडीजे जेणें मारगि चढिबा ॥ २० ॥ मन
मुष न कह्या तत अगह ला ऐ मेरे प्रांण आधारी
निराकार निरंजन देवा रे लेवा तेह बिचारी
टे अपरंपार परम ति जसोई अलष तोरा
बिसतारे अंकूर बीजे सहजि समांनारे ऐसा
संम्रथ सारं जे ते कीन्हा किन्हू कंचीन्हां मे
लातै परि मांणां अविगत तोरी बिगति न जांनौं
रे मैं मूरिष अयांनं सहजैं तोरा ऐ मन सोरा
साधं सोरंग आई दादू तोरी बिगति न जांणौं रे

हमारा देस मी। सुखसागर पाया। दादू को
दरसन की। मिलि त्रिभुवनराया॥३॥४७॥ निरं
जन नांव के रसिया ते। केई पूरे प्राणी राते॥ टे
॥ सदा सनेही राम को। सोई जन साचे॥ तुम्ह बि
न और न जानही। रंग तेरे राचे॥१॥ आन न भा
वे एक तूं। सति साधु सोई॥ प्रेम पियासे पीव के
ऐसा जन कोई॥२॥ तुम्ह ही जीवनि उर रहे। आ
नंद अनरागी॥ प्रेम मगन पीव प्रीति ही। लै
तुम्ह सौं लागी॥३॥ जे जन तेरे रंग रंगे। दूजा रंग ना
ही॥ जन्म सुफल करि लीजिये। दादू उन्ह मां
ही॥४॥४८॥ चलु रे मन जहां अमृत बनां। निर
मल नीके संत जनां॥ टे॥ निर्गुण नांव फल अग
म अपार। संतनि जीवनि प्राण अधार॥१॥ सीत
ल छाया सुखी सरीर। चरन सरोवर निरमल
नीर॥२॥ सुफल सदा फल बारह मास। नाना बा
णी धुनि प्रकास॥३॥ जहां बास बसि अमर अने
क। तहां चलि दादू इहै बबेक॥४॥४९॥ चलौ म
न म्हारा जहां मित्र हमारा॥ जहां जामण मर
ण न जाणिये नहीं जाणिये॥ टेक॥ जहां मोह न ला
या मेरा न तेरा॥ आवागमन नहीं जम फेरा॥ जहां
पंड पड़ै नहीं प्राण न छूटै। काल न लागै आ
वन षूटै॥२॥ अमर लोक जहां अछिन सरीरा॥ व्या
धि बिकार न व्यापै पीरा॥३॥ राम राज कोइ भिड़ै
न भाजी॥ अ
थ निरंजन और न कोई

रामरससींचे॥ दिनदिनबधतीजाइ॥टे॥ सत
गुरसहजैबाहीबेली॥ सहजगगनघरछाय॥
सहजैसहजैकूपलमेलै॥ जाणैंअौधूराय॥
आतमबेलीसहजैफूलै॥ सदाफूलफलहो
इ॥ कायाबाडीसहजैनिपजै॥ बूझैबिरलाको
इ॥२॥ मनहठबेलीसूकनलागी॥ सहजैजुगिजु
गिजावै॥ दादूबेलिअमरफलजागे॥ सहजि
सदारसपीवै॥३॥३६॥ संतोरामबानमोहिलागे
मारतमिरगामरमजबपाया॥ सबसंगीमिलि
जागे॥टे॥ चितचेतनचिंतामणिचीन्हें॥ उल
टिअपूठाआया॥ मंदरिपैसिबहुरिनहीनिक
सै॥ परमतत्तघरपाया॥१॥ आवैनजाइजाइन
हींआवै॥ तिहिरसिमनवामाता॥ पानकरत
परमानंदपायो॥ थकितभयाचलिजाता॥२॥
भयाअपंगपंकनहींलागै॥ निरमलसंगिस
हाई॥ पूरणब्रह्मअषिलअबिनासी॥ तिहि
तजिअनतनजाई॥३॥ सोसरलागिप्रेमप्रकासा
प्रगटीप्रीतमबाणी॥ दादूदीनदयालहिंजा
णी॥ सुषमैंसुरतिसमाणी॥४॥३७॥ मधिनैननि
रषौंसदा सोसहजसरूप॥ देषतहीमनमो
हिया॥ हैतत्तअनूप॥टे॥ त्रिबेणीतटिपाइया
मूरतिअबिनासी॥ जुगिजुगिमेरामनलागा
सोईसुषरासी॥१॥ तारुणीतटिदेषिहौंत
हांअस्थानां॥ सेवगस्वामीसंगिहैं॥ बैठेभग
वानां॥२॥ निरमैथानसुहावनां॥ तहांसेवग
स्वामी॥ अनेकजतनकरिपाइया॥ मैंअंतर

नामी॥१ तेजतारपरमितिनहीं॥ ऐसाउजियै
रा॥दादूपारनपाइये सोस रूपसेनारा॥३८॥
निकटि निरंजन देषिहौं॥ छिन इरिन जाई॥
बाहरि भीतरि ऐकसा॥ सब रह्या समाई॥टेक॥
सतगुर भेद बताइया॥ तब पूरा पाया॥ नैन नि
हौं निरषौं सदा॥ घरि सहजैं आया॥१॥ पूरे सौंप
चौ भया॥ पूरी मति जागी॥ जीव जानि जीवनि
मिले॥ ऐसे बडभागी॥२॥ रोम रोम मैं रमि रह्या॥
सो जीवनि मेरा॥ जीव पीव न्यारा नहीं॥ सब स
गि बसेरा॥३॥ सुंदर सो सहजैं रहै॥ घटि अंतर
जामी॥ दादू सोई देषिहौं॥ सारौं संगि स्वामी॥४॥३९॥
सहज सहेलडी है॥ तूं निरमल नैन निहारि
॥ रूप अरूप निरगुण आगुण मैं॥ त्रिभुवन देव
मुरारि॥ टेक॥ बारंबार निरषि जगजीवन॥ इहि घ
रि हरि अविनासी॥ सुंदरि जाइ सेज सुष बिल
से॥ पूरण परम निवासी॥१॥ सहजैं संगि परसि
जगजीवन॥ आसण अमर अकेला॥ सुंदरि जा
इ सेज सुष सोवै॥ जीव ब्रह्म का मेला॥२॥ मिलि आ
नंद प्रीति करि पावन॥ अगम निगम तहां राजा
॥ जाइ तहां परसि पावन कौं॥ सुंदरि सारै काजा
॥३॥ मंगलचार चहूं दिसि रोपे॥ जब सुंदरि पिव पा
वै॥ परम जोति पूरे सौं मिलि करि॥ दादू रंग लगा
वै॥४॥४०॥ तहां आपै आप निरंजनां॥ तहां निस
बासुरि नहीं संजमा॥ टेक॥
तहां

हां आप एक विना रांमी । तहां चंदन ऊंसूरा
मुष्टिका लत बाजे तूरा । तहां सुक्र दुषकाग मिनां
ही । ओतो अगम अगोचर मांही ॥ तहां काल मीच
नहीं लागै । तहां कोसो वैको जागै । तहां पाप पुंनि
नहीं होई । तहां अलष निरंजन कोई ॥ तहां सह
जि रहै सो स्वांमी । वो सब घटि अंतरजांमी । सक
ल निरंतर निबासा । रहि दास संगम प्यासा । ४१ । अ
वधू बोलि निरंजन बांणी । तहां एकै अनहद जा
णी । टेक । तहां बसुधा का बल नांही । तहां गगन घा
मन ही छांही । तहां चंद सूर नही जाई । तहां का
ल काया नहीं साई । तहां रैंणि दिवस नहीं छा
या । तहां बावन बरन नहीं माया । तहां वेद अंसत
नहीं होई । तहां मरै नहीं पाठ पुरांनां । तहां अगम
निगम नही जांनां । तहां विद्या बाद नहीं ग्यांनां
नहीं तहां जोग रध्यांनां ॥ तहां निराकार निज
ऐसा । तहां जांण्यां जाइ न तैसा । तहां सब गु
ण रहिता गाहिए । तहां दास अनहद कहिए ।
४२ । बाबा कोई ऐसा जन जोगी । अंजन छाडि र
है निरंजन सहजि सदा रस भोगी । टेक । छाया
माया रहै बिबरजित पंड ब्रह्मंड नियारे । चंद
सूर थै अगम अगोचर सो गहि तत बिचारे ॥
पाप पुंनि लिपै नहीं कबहूं दे पष रहिता सोई
धरनि अकास ताहि तै ऊपरि तहां जाइ रहै तहो
ई ॥ जो वृण मरण न बांछै कबहूं । आवागव
न न फेरा । पांणी पवन परस नहीं लागै तिहिं

तिकरेबसेरा॥१ गुण अकारजहाग मिनाहूं ॥
आपंत्र के ज्यो॥ दाद् जाइ न हाँ ज न जोगी॥ परम
तुरिषसों मेलाइ॥ ४३॥ जोगीजा गिजा गिअनजीवै
बिनही मनमामन क्षिबिचोरै॥ बिनरसनारसपीवै
टेक॥ बिनहीलोचन निरषनयन बिन॥ श्रवनरहि
तसुनिसोई॥ असें आतमरहै एकरस॥ तोदूसरना
हनहोई॥ बिनहीमारग चलेचरन बिन॥ निहच
लबैगजाई॥ बिनहीकाया मिलैपरसपर॥ ज्युंज
लजलहिसमाई॥२॥ बिनही ठाहर आसणपूरे॥ बि
न कर बैन बजावै॥ बिनहीपांऊनांचे निस दि
न॥ बिनजिभ्या गुणगावै॥ सबगुणरहिता सकल
बियापी॥ बिन इंद्री रसभोगी॥ दादूऐसा गुरूह
मारा॥ आपनिरंजन जोगी॥ ॥ ४४॥ इहै परमगुरजो
ग॥ अमी महारसभोग॥ टेक॥ मनपवनथिर साध
॥ अविगतनाथ आराध॥ तहां सबद अनाहदनां
द॥१॥ पंचसषी प्रमोध॥ अगमग्यान गुर बोध॥ तहां
नांथ निरंजनसोध॥२॥ सतगुर मांहि समाया॥ नि
राधार घर छाया॥ तहां जोतिसरूपीपाया॥३॥ सह
जैसदा परकास॥ पूरण ब्रह्म बिलास॥ तहांसे
वग दादू दास॥ ४५॥ मनें ऐह अचंभा थाए॥ की
डीयें हसती बिडार्यो॥ तेतें बेठी षाए॥ टेक॥ जाणा
ऊतो तेनें बेठो हारे॥ अजांण तेनेंनांनाहै॥ पांगु
लो उजाड़ वाल्यों॥ तेतें कर को साहै॥१॥ नांन्हों
ऊतो ते मोटो थयो॥ गगनमंडल नहीं माए॥ मो
टेरो बिस्तार भरगो जे॥ तेतो कीहें जाए॥२॥ तेजांणे

निरखी जोवै सोजी नैंबूलीमाहै॥ दादू तत्तै
सरमनजाणै॥ जेजिन्याहूं राणे गाए॥ ३॥ ८६॥
[illegible]
तूं ही मेरे रसना॥ तूं ही मेरे बैना॥ तूं ही मेरे श्रवना॥
तूं ही मेरे नैना॥ टेक॥ तूं ही मेरे आतम कवल मंझा
री॥ तूं ही मेरे मनसा तुम्ह परिवारी॥ १॥ तूं ही मेरे म
नही॥ तूं ही मेरे सासा॥ तूं ही मेरे सुरतें प्राण निवासा॥
तूं ही मेरे नख सिख सकल सरीरा॥ तूं ही मेरे जी
यरे ज्यूं जल नीरा॥ तुम्ह बिन मेरे और को नाही॥
तूं ही मेरे जीवनि दादू मांही॥ ४॥ तुम्ह रे नाइ ल्यौ
हरि जीवनि मेरा॥ मेरे साधन सकल नाव निज
तेरा॥ टेक॥ दान पुनि तप तीरथ मेरे॥ केवल नाव
तुम्हारा॥ ऐसब मेरे सेवा पूजा॥ ऐसा बरत हमा
रा॥ ऐसब मेरे वेद पुरानां॥ सुचि संजम है सोई॥
ग्यान ध्यान ऐ ई सब मेरे॥ और न दूजा कोई॥ २॥
काम क्रोध काया बसि करणा॥ ऐसब मेरे नाम॥
मुकता गुप्ता प्रगट कहिऐ॥ मेरे केवल रामा॥ ३॥
तारण तिरण नाव निज तेरा॥ तुम्ह ही एक अ
धारा॥ दादू अंगि एक रस लागा॥ नाव गहै भौ पा
रा॥ ४॥ हरि केवल एक अधारा॥ सोई तारण
तिरण हमारा॥ टेक॥ नां मैं पंडित पढि गुनि जा
नौं॥ नां कुछ ग्यान बिचारा॥ नां मैं आगम जोति
ग जानौं॥ नां मुझ रूप सिंगारा॥ १॥ नां तप मेरे इं
द्री निग्रह॥ नां कुछ तीरथ फिरणा॥ देवल
पूजा मेरे नांही॥ ध्यान कछू नही धरणा॥ २॥

तोगसुरातिन: हीकछूमेरे॥नामैसाधनजाने
ओषदमूलीमेरे नाँदी॥नामैदेसबषानों॥
मैंतोओरकछूनहीजानों॥कहोओरक्याक
जै॥दादूएकगलितगोबिंदसों॥इहिबिधिप्रा
णधतीजे॥॥३॥पीवघरिआवनैरे॥अहोमो
भावनोते॥टे॰॥मोहनलीकोरीहरी॥देषोंगी
अंषियांनरी॥रांषोंगीउरिधरीप्रीतिमरी॥॥मो
हनमेरोरीमाई॥रहोंहोंचरंनधाई॥आनदब
धाई॥हरिकेगुनगाई॥दादूरेचरंनगहिरे॥जाइ
नेतिहांतोरहिरे॥तनमनसुषलहिरे॥बिन
तीकहिरे॥४॥होमाईमेरोरांमबैरागीतजिजि
निजाइ॥टे॰॥रांमबिनोदकरतउरअंतरि॥
मिलिहोबैरागनिधाइ॥॥जोगनिकेकरि
फिरोंगीबदेसा॥रांमनांमल्योंलाइ॥दादूकौ
स्वांमीहैरेउदासी॥रहिहोंनैनदोइलाइ॥५
रेमनगोबिंद गाइरेगाइ॥जनमअबिरथाजा
इरेजाइ॥टे॰॥ऐसाजनमतबारंबारा॥तार्थें
जपिलेरांमपियारा॥॥यहुतनऐसाबहुरिन
पावै॥तार्थेगोबिंदकाहेनगावै॥बहुरिनपावै
मनिषादेही॥तार्थेकरिलेरांमसनेही॥इहब
केदादूकीयानिहाला॥गाइनिरंजनदीनद
याला॥६॥मनरेसोवतरैंणिबिहांणी॥तैंअ
जहूंजातनजांनी॥टे॰॥बीतीरैंणिबहुरिन
हीआवै॥जीवजागिजिनिसोवै॥चारयूं दिसा
चोरघरिलागे॥जागिदेषिक्याहोवै॥सोवत

रपछितावैगा लागा॥ मांहि महल नक छुनाहीं ज
ब जाइ काल काया करलागा॥ तब सोधै घरमां
हीं॥ जा बिजतन करि राखी सोई॥ तब तन नि
तन जाई॥ चेतनि पहरे चेतनतां ही॥ कहै दादू
समझाई॥ ३७॥ देखत ही दिन आइ गए॥ पलटि
केस सब सेत भए॥ टेक॥ आइ जुरा मीच अरु मर
णां॥ आया काल अबै क्या करणां॥ श्रवनौं सु
रति गई॥ नैनन सूझै॥ सुखि बुखि नावी कह्या न बू
झै॥ मुख तैं सबद बिकल भई बांणी॥ जनम गया
सब रैणि बिहांणी॥ प्रांण पुरिष पछितावै
णलागा॥ दादू औसरि काहे न जागा॥ ३८॥ हरि
बिन टांहौ क हूं सच नांहीं॥ देखत जाइ बिषै फ
ल खाहीं॥ टेक॥ रस रसनां के मीन मन भीरा॥ ज
ल थैं जाइ यों ही मै सरीरा॥ गज के ग्यांन मग्न
मद मांता॥ अंकुस डोरि गहै फंदि धरि गाता॥ म
रकट मूठी मांहिं मन लागा॥ दुख की रासि भ्रमि भ्रमि
भागा॥ दादू देखु हरी सुखदाता॥ ताकौं छाडि
कहां मन राता॥ ३९॥ सोई बिनां संतोष न पावै
भावै घर तजि बन बन धावै॥ टेक॥ भावै पढि गु
नि बेद उचारै॥ आगम निगम सबै बिचारै॥
भावै नव खंड सब फिरि आवै॥ अजहूं आगे का
हे न जावै॥ भावै सब तजि रहै अकेला॥ भाई बं
धन काहू मेला॥ दादू देखै साई सोई॥ साच बि
नां संतोष न होई॥ ४०॥ मन माया रातौ भूले॥
मेरा मेरी करि करि बौरे॥ कहा मुगध नर फूले॥

टे॥ माया कारनि मूल गवावे॥ समझि देषि मन
मेरा॥ अंतकाल जब आइ पहूता॥ कोई नहीं
तब तेरा॥१॥ मेरी मेरी करि करि जांनें॥ मन मेरी क
रि रहिया॥ तब पहु मेरी को मिन आवे॥ प्रांण पु
रिस जब गहिया॥ राव रंक सब राजा राणा॥
सब हनि को बौरावे॥ छत्रपति भूपति तिन हू
के संगि॥ चलती बेर न आवे॥२॥ चेति बिचारि जा
नि जी पत्र अपनें॥ माया संगि न जाई॥ दादू हरि भ
जि समझि सयानां॥ रहौ राम ल्यौ लाई॥३॥१११॥ र
हसी एक उपावण हारा॥ और चलिसी सब
संसारा॥टे॥ चलसी गगन धरनि पुनि चलसी
॥ चलसी पवन रु पांनी॥ चलसी चंद सूर सी च
लसी॥ चलसी सबे उपांणी॥१॥ चलसी दिवस रे
नि भी चलसी॥ चलसी जुग जम वारा॥ चलसी
काल ब्याल भी चलसी॥ चलसी सबै पसारा॥
२॥ चलसी सरग नरक भी चलसी॥ चलसी भव
न हारा॥ चलसी सुष दुष भी चलसी॥ चलसी
करम बिचारा॥३॥ चलसी चेत न चलत चल
हसी॥ चलसी जे कुछ कीन्हां॥ दादू देषु रहै
अबिनासी॥ और सबै घट षीनां॥४॥११२॥ इक
लि हम मरणे कूं आए॥ मरण मीत उनि सों बि
पगाए॥टे॥ जब थे यहु हम मरण बिचारा॥ त
ब थे आगम पंथ संवारा॥ मरणां देषि हम मगन
न कीन्हां॥ मरण पठावा सो
णां मीठा लागे मोहि॥ इहि मर

॥२॥ मरणेपहली मरैजेकोइ ॥ दादू सो अजरा
मर होइ ॥ १३ ॥ रे मन मरणे कहा डराइ ॥ आगै
पीछै मरणा रे भाई ॥ टे ॥ जे कुछ आवै थिर न
हाइ ॥ देखत सबै चल्या जग जाइ ॥ पीर पैकंब
र की पाय प्रानां ॥ सेष मसाइक सबै समानां ॥
ब्रह्मा बिसन महेस महाबलि ॥ मोटे मुनिजन
गए सबै चलि ॥ निहचल सदा सोई मन लाइ ॥
दादू हरि षरा सगुण गाइ ॥ १४ ॥ ऐसा तत अ
नूप भाइ ॥ मरै न जीवै काल न षाइ ॥ टे ॥ पाव
कि जरै न मार्‍यो मरई ॥ काट्यो कटै न टार्‍यो ट
रई ॥ अषिर षिरै न लाग्यो काई ॥ सीत घाम ज
लि भि न जाई ॥ माटी मिलै न गगन बिलाई ॥
अघट एक रस रह्यो समाई ॥ ऐसा तत अनू
पम कहिये ॥ सो गहि दादू काहे न रहिये ॥ १५
मन रे सेवि निरंजन राई ॥ ताको सेवक रै चित
लाइ ॥ टे ॥ आदि अंति सोई उपावै ॥ परलै लेइ
छिपावै ॥ बिन थंभे जिनि गगन रहाया ॥ सो
रच्या सबनि में समाई ॥ पाताल माहि जे आ
राधे ॥ बासिग रे गुन गाई ॥ सहस मुष जिभ्या
है ताके ॥ सो भी पार न पाई ॥ सुरनर जाको पा
र न पावै ॥ कोटि मुनीजन ध्याई ॥ दादू रे तन ता
को है रे ॥ जाको सकल लोक आराधै ॥ १६ ॥
निरंजन जोगी जानि लै चेला ॥ सकल बिया
पी रहे अकेला ॥ टे ॥ षपर न झोली डंड न अ
धारी ॥ मढी न माया लेहु बिचारी ॥ सींगी मु

दा बिसूतिनकथा॥ जटाजापञ्रासणमपट
तीरथबरतनबनषेडिवासा॥मो तिनषा२
नहीजंगञ्रासा॥ञ्रमरगुरूञ्रबिनासीजोगी
दादूचेलामहारससोगा॥४॥१७॥जोगीयाबे
रागीरेबाबा॥रहैञ्रकेलाउनमनिलागा॥टे
ञ्रातमजोगीधीरजकंथा॥निहचलञ्रास
णञ्रागमपंथा॥सहजैमुद्राञ्रलषञ्रधारी
ञ्रनहदसींगीरहणिहमारी॥कायाबनषं
डपांचौचेला॥ग्यांनगुफामेंरहैञ्रकेला॥
दादूदरसणकारणिजागै॥निरंजननीभिष्या
मांगै॥१८॥सुषदुषसंसाहरिकीया॥तनबहम
केवलरोगालीया॥टे॥सुषदुषदोऊभरमबि
चारा॥इनसौंबंध्याहैजगसारा॥मेरीमेरासुष
केतांई॥जाइजनमरचेतैनांहीं॥सुषकेतांई
रूठाबोलै॥बांधेबंधनकबहूंनषोलै॥दा
दूसुषदुषसंगिनजाई॥प्रेमप्रीतिपीवसौंल्यौ
लाई॥१९॥बाबाकहैंहजाकहूंकहिये॥ता
थेंइहिसमेंदुषसहिये॥टे॥पहुमतिञ्रौसीप
सुवाजैसी॥काहैसमझैनांहीं॥ञ्रपणाञ्र
गञ्रापनहीजांणै॥देषैदरपणमांहीं॥इहि
मतिमीचमरणकेतांई॥कूपसिंघतहांञ्रा
या॥डूबिमूवामनिमरमनजांण्या॥देषिञ्र
पणीछाया॥२॥मदकेमातेसमझैनांहीं॥
मैगलकीमतिञ्राई॥ञ्रापहीञ्रापपकडमदीन्ह
देषिञ्रापणीकांई॥३॥
हौ॥नि

...कहाथे आवे ॥ ४ २० ॥ बाबा
दीह्जा कोई एक अनेक नाम तुम्हारे मांपे
और न होई है अलष ह्जाही एक तूं तेरे
रेभरहीम तूं हीमालिक मोहंन्या केसोनां
बकरीम ॥ सांइ सिरजनहार तूं तूं पावन ते
पाक तूं कोइ मकरत्या रतूं तूं हरि हैजरि आप
रमिता राजिक एक तूं तूं सारंग्या सुबहान को
दिर करता एक तूं तूं साहिब सुलितान अ
बिगति अलह एक तूं गनी गुसांई एक अज
ब अनूप तूं आपहे दाहू नाव अनेक ॥ २१ ॥
जीवत मारे मुए जिलाए बोलत रंग गरा बुला
ई है जागत निस भरि सोई मुलाए सोवत र
गोसैइ जगाए ॥ सूकत नैनों नाइ दनी ए अ
ष बिचारे तिन सु षदीए ॥ वलतै मारा ते बिठला
ए अपने बिचारे समेई चलाए ॥ ऐसा अलह तर
मक छु पावा दाहू सतगुर कहि समझावा ॥ २२ ॥
वरू करिय ऊ जगार चोगु सांई तेरे को नबि
नो दर्स्यो मन माही है केतुम्ह आप पर
गट करता केयकुर चिले जीवनधरता
केयकु तुम्ह कोसे वग जाने केयकुर चिले
तके माने केयकु तुम्ह केसेवग माये के
र चिले षेल दिषावे केयकु तुम्ह के षेल
पारा केयकु मावे को रूप मारा यकुम
दाहू अकथ कहाणी कहि समझावो सार
ग्याणी ॥ २३ ॥ हरे हरे सकल भुवन भरे जु
जुगि सबकरे जुगि जुगि सबधरे अकल

सकलजरैहरहरीटे॥ सकलभुवनराजे स
कलभुवनराजे सकलकदेधरती अंबरगहे
चंदसूरसुमिलहे पवनप्रगटबहे॥ घटघ
टआपदेवे घटघट आपलेवे॥ महिलमाया
जहांतहांआपराया जहांतहांआपछाया॥
अगमआगमपाया रसमांहैरसराता रसमांहे
रसमाता॥ अमलपीया॥ नूरमांहेनूरलीया॥
तेजमांहेतेजकीया॥ दादूदरसदीया॥ ४॥ पी
वपीवआदिअंतिपीव परसिपरसिअंगसंग॥
पीवतहांजीव॥ टे॥ मनपवनभवनगवन अ
नकवलमांहि॥ निधिनिवासबिधिबिलास॥
रातिदिवसनांहि॥ मासनासआसपासी॥ आन
मअरीलगाइ॥ औनबैननिरषिनैना॥ गाइगाइ॥
रिझाइ॥ १॥ आदितेजअंतितेज सहजिसहजि
आइ॥ आदिनूरअंतिनूर॥ दादूबलिबलिजाइ
॥ २॥ ५॥ नूरनूरअवलिआषिरनूर॥ दादूमकांइ
मकांइमदांइम॥ हाजिरहैभरपूर॥ टे॥ असमांन
नूरजिमींनूर॥ पाकपरवरदिगार॥ आबनूरबाद
नूरषूबषूबांयार॥ जाहिरबातनिहाजिरना
जिर दानांतंदीवांन॥ अजबअजाइबनूरदीद
म॥ दादूहैहैरांन॥ २॥ ६॥ मैं अमलीमतिवाला
माता॥ प्रेममगनमेरामनराता॥ टे॥ अमीमहा
रसभरिभरिपीवे॥ मनमतिवालाजोगीजीवे॥
॥ रहैनिरंतरगगनमंझारी॥ प्रेमपियालासहै
जिषुमारी॥

नी नै रांमर मांदू गायी बूत बाके ॥ २७ ॥ कासौं क
हौं हो आदि रिषाला ॥ गगन न धरणि दिवस न होरा
ता ॥ टे ॥ संतन साधी गुर न चेला ॥ आसन पासये
रहै अकेला ॥ वेद न भेद न करत बिचारा ॥ अव
रण बरण सबनि थैं न्यारा ॥ प्राण न पिंड रूप नहिं
रेषा ॥ सो तत सार नैंन बिन देषा ॥ जोग न भोग मोह
नहीं माया ॥ दादू देषु काल नहीं काया ॥ २८ ॥ मेरा
गुरु ऐसा ग्यांन बतावै ॥ काल न लागै संसा भागै
ज्यूं है त्यूं समझावै ॥ टे ॥ अमर गुरू के आसणि
रहिये ॥ परम जोति तहां लहिये ॥ परम तेज सो दि
ढ करि गहिये ॥ गहि लहि रहिये ॥ मन पवन
गहि आतम षेला ॥ सहज सुनि घर मेला ॥ अग
म अगोचर आप अकेला ॥ अकेला मेला षेला ॥
धरती अंबर चंद न सूरा ॥ सकल निरंतर पूरा ॥ शब
बद अनाहद बाजे तूरा ॥ तूरा पूरा सूरा ॥ अवि
चल अमर अभै पद दाता ॥ तहां निरंजन राता
ग्यान गुरू ले दादू माता ॥ माता राता दाता ॥ २९
मेरा गुरू आप अकेला षेलै ॥ आपै देवै आपै ले
वै ॥ आपै दुक रमैं लै ॥ टे ॥ आपै आप उपावै माया
पंच तत करि काया ॥ जीव जनम लै जा मैं आया
आया काया माया ॥ धरती अंबर महल उपाया
सब जग धंधै लाया ॥ आपै अलष निरंजन राया
राया लाया उपाया ॥ चंद सूर दोइ दीपक कीन्हे
राति दिवस करि लीन्हे ॥ राजिक रिजक सबनि
कूं दीन्हे ॥ दीन्हे लीन्हे कीन्हे ॥ परम गुरू सो
... ॥ सबद सबदै मारा ॥ दादू षेलै न्या

ततअपारा॥ अपारासाराहमारा॥ ३०॥ पाकेतेम
नोमनकह्योनजाई॥ सहजसमाधिरहैल्यौलाई॥
टे॥ जेकुछकहिऐसोचिबिचारा॥ ग्यानअगोच
रअगमअपारा॥ सायरबूंदकैसेंकरितोलै॥ आ
पअबोलकहाकहिबोलै॥ अनलपंषिपरेपर
हरि॥ ऐसेंरामरह्यौभरपूर॥ ऐबमनमेरासो
सेरेमाई॥ दादूकहिबाकहणनजाई॥ ३१॥ अ
बिगतकीगतिकोनलहै॥ सबअपणांउनमा
नकहै॥ टे॥ केतेब्रह्माबेदबिचारैं॥ केतेपंडि
तपाठपढैं॥ केतेअनभैआतमषोजैं॥ केतेसुर
नरनांवरटैं॥ केतेईसुरआसणबैठे॥ केतेजो
गीध्यानधरैं॥ केतेमुनियरमनकूंमारैं॥ केते
ग्यांनीग्यानकरैं॥ केतेपीरकेतेपैकंबर॥ के
तेपढैंकुरांनां॥ केतेकाजीकेतेमुलां॥ केतेसे
षसयांनां॥ केतेपारिषअंतनपावैं॥ वारपार
कछुनांहीं॥ दादूकीमतिकोईनजांणैं॥ केतेआ
वैंजांहीं॥ ३२॥ ऐसौबूझिरह्योपीव॥ जैसाहैतैसा
कोनकहै॥ अगमअगाधअपारअगोचर॥ सु
धिबुधिकोनलहैरे॥ टे॥ वारपारकोईअंतनपा
वे॥ आदिअंतमधिनांहीरे॥ षरैसयांनेभए हि
वांनैं॥ कैसाकहांरहैरे॥ १॥ ब्रह्माबिसनमहेसर
बूझै॥ केताकोईबतावैरे॥ सेषमसाइकपीरपै
कंबर॥ हैकोअगाहगहैरे॥ अंबरधरतीसूरससि
बूझे॥ बाबबरणसबसोधैरे॥
रांनां॥ कोहैकरमदहैरे॥ ३॥ ३३

[illegible] हंससरोव
तिहारमें सूनरहरिजलनीर प्राणीआपप
लिए निरमलसदाहोसरीर टे मुकमहल
मनमांतियां चुगैहंससुजांण मधिनिरंतर
लिये मधुकरबिमलरसपांन भवरकवलरस
बासना रातोरामधीवंत अरसपरसआनंद
करे तहांमनसदाहोजीवंत मीनमगनमा
हैरहे सुदिलसरोवरमांहिं सुषसागरकीला
करे पूरणपरमितिनांहिं निरमेलहांनेकोन
हों बिलसेबारंबार दादूदरसनकीजियेसन
सुषसिरजनहार ३ सुषसागरमेंफूलिबो
कुसमलफूडेहोअपार निरमलप्राणीहोरबो
फूलिबोसिरजनहार टे तिहिसंजमियांव
नसदा पंकललामेप्राण कवलबिगासेति
नगो उपजेबुधिगियांन आगमनिगमदि
होगमिकरे तंतहिंतंतमिलांन आसपिसु
केआइबो सुकेमहलिसमांन प्राणीपति
जाकरे पूरेप्रेमबिलास सहजैसुंदरसेलिए
लागीलेकबिलास रैणिदिवसदीसेनहीं
सहजैपुंजप्रकास दादूदरसनदेषिए रहि
रमिराताहोदास ४ अबिनासीसौंआत
मारमैरिरादि रांम एकनिरंतरतेजै
हरिहरिप्राणीनाम टे सदाअषंडितपुरिबे
मैमनजाणीले सकलनिरंतरपूरिमब
सैंतमरातौते निराधारनिजबैसणों तिहि

ततिआसण पूरा गुर मिष आनंद ऊपजे मन
षसदा हजूरि ॥ निहचल ते चालै नहीं ॥ प्रांणी
तेघ रिमांण्या ॥ साथी साधे ते रहे ॥ जांणेजांण
सुजांण ॥३॥ ते निरगुण आगुण धरी ॥ मांहै कौ ति
गहार ॥ देह अछित अलगौ रहे ॥ दादू सेवि अ
पार ॥४॥३॥ पारब्रह्म भजि प्रांणीयां ॥ अविगति
एक अपार ॥ अविनासी गुर सेविए ॥ सहजै प्रांण
अधार ॥ टेक ॥ ते पुरणी तेहनो ॥ अविचल सदार
हंत ॥ आदि पुरिष ते आपणो ॥ पूरण परम अनंत
॥ अविगत आसण की जिए ॥ आपै आप निधांन ॥
निराले बस जितेहनौ ॥ आनंद आतम राम ॥२॥
निरगुण निहचल थिर रहै ॥ निराकार निज सोइ
ते सति प्रांणी सेविए ॥ ते समा थिरत होइ ॥३॥ अम
र आपु रमिता रहे ॥ घटि घटि सिरजनहार ॥ गुण
अतीत भजि प्रांणीयां ॥ दादू ऐह विचार ॥४॥४॥ कंवू
मा जैसे वृगं तेरा ॥ औसा सिरिसा हिवसेरा ॥ टेक ॥ जा
के धरती गगन अकासा ॥ जाके चंद सूर कविला
सा ॥ जाके तेज पवन जल साजा ॥ जाके पंच तत
के बाजा ॥ जाके अठारह भार वनमाल्या ॥ गिरप
रबत दीन दयाला ॥ जाके सायर अनंत तरंगा
॥ जाके चौरासी लष संगा ॥२॥ जाके औसे लोक
अनंता ॥ रचिया बिबिधि बऊसंता ॥ जाके औसा
षेल पसारा ॥ सब देषे कौतिगहारा ॥ जाके का
लमी चढ़रनांहीं ॥

के छुटै हैं सब सुख देहा ॥ सब सुति जन लागे अै
॥ जाके साध सिध सब मांही ॥ परि पूरण पर मि
नाही ॥ सोई सातै घड़े संवारे ॥ जुग के तेक
हुतं हारे ॥ ऐसा है साहिब पूरा ॥ सब जीव तिस
तम हरा ॥ सो सब हृदनि को सुधि जाण्यो ॥ जे जो
सा तैसो वाणो ॥ सर बगीरा मसयानो ॥ हरि करे
सु होइ निदानो ॥ ३ ॥ जे हरि जन सेवग साजे तो
अैसा साहिब लाजे ॥ इव मरणा मांडि हरि आ
॥ तब दादू बाण न लागे ॥ ४ ॥ हरि सजन ता कि
मना जिये ॥ सागं सलतनाही ॥ सांगा मलक
पाइये ॥ पछितावे मांही ॥ ३ ॥ सूरो सा सहजे
मिडे सार उरि फिलै ॥ रण रो कुजा साजे नहीं ते
मो राम न मेलै ॥ सती सतसाचो ग है ॥ मरणो न ड
राई ॥ प्राण पति जे जग देषतां ॥ पीव डोउरि लाई
॥ प्रांण पत सांइ सत जे ॥ चोआग न मोडे ॥ जो
बन जारे जो तिसो ॥ नेना मल जोडे ॥ ४ ॥ सेवग सो
स्वामी भजे ॥ तन मन तजि आसा ॥ दादू दर
न ते लहै ॥ सुष संग म पासा ॥ ५ ॥ सुणि तू मन
रे मूरिष मूढ बिचार ॥ टे ॥ आवेल हरि बिद
वणी ॥ ऊमे देह अयार ॥ १ ॥ करि बोहे तिम की जि
ये ॥ सुमरि सो आधार ॥ १ ॥ चरण बिहूणों चालि
बोरे ॥ संभालो रे सार ॥ २ ॥ दादू तेह जनी जिपेरे ॥
साचो सिरजनहार ॥ ३ ॥ रे मन साथी मांझा ते
समझायो केता रोरे ॥ रातो रंगि कसूंभ के ॥ ते
बी सारचो आधरा रोरे ॥ टे ॥ सुपना सुष के का

रनै फिरि पीछे दुख होई रे॥ दीपक दृष्टि पतंग उ
ये मर भिजरे जिनकी ई रे॥२॥ जिह्यास्वादपिआ
परौ॥ मीन मरे जल जिनी रोरे॥ मांहे जानत जानि
यो॥ तापें अपनों दुख सरीरो रे॥ त्यौं देही से कुटि
पड्यो॥ देषत ‍ नरक्रेषौ रे॥ मरकट मूठी छाडि
दे॥ होइ रहो ‍ बंधौ रे॥३॥ मो निसि भाव गि मा
हरी॥ हरिसे जिम ‍ जनहारी रे॥ सुषसागर सोई से
वि पे जन दास रामसे मारी रे॥४॥ ॥ इति श्री
... पूरणा॥ अथ राग गौरी॥ सरणि तु
म्हारी आइ परो॥ जहां तहां हम सब फिरि आए
राषि राषि हम दुखित भरो॥ टेक॥ कसि करि काया न
पवित करि करि॥ नरम तन नरम तहम मूलि परे
॥ कहूं सीतल कहूं लपलि दहे तन॥ कहूं हम
करवत सीस धरो॥ कहूं बन तीरथ फिरि फिरि
पाको॥ कहूं गिर पर बति जाइ चढे॥ कहूं मिष
र चढि पर धरनि परि॥ कहूं हति आप प्रान हरे
२॥ अंध भए हम तिक टिन सूझे॥ तापें तुम्हतें जि
जाइ जरे॥ हाहा हरि अब दीन लीन करि॥ दाइ
ब कुअपराध न रे॥२॥ बोरी तूं बारबार बौरा
नी॥ सब सुहाग न पावे ऐसे॥ केसे सर मितुला
नी॥ टेक॥ चरनों चेरी चितन हीरा ख्यौ॥ पति ब्रत
नां हिन जान्यो॥ सुंदरि से ज संग न ही जानें॥ पा
वसौ मन नहीं मान्यो॥१॥ न
पौ॥ सी सनाइ नहीं गाढी॥
हीकबहूं॥

सबासु रिक्षा नित रक्षे तरि परम पुजिन हो जानी
पतिब्रत आयौ जिति जितिपा ल्यो। सु दृष्टि
न सबब्बा जे दाइ पीवे बिन ओरत आने ताहि
सु हाय बिराजे २ मन मूरिष्या नेयो हो जनम
गमा वायो। साइं केरी सेव न कीन्ही इहि कलि
काहे के आयो ८ जिनि बालनि तेरो कूटिक
ना हो। सोम निते रे नायो। कामी होइ बिषीया से
गलायो। रोम रोम लपटायो। कछु इक चेतनि बि
चारी देख्यो कहा पाप जाय लायो। दाइ दास म
जन करि लीजे। सुणिते जगडह कायो। [illegible]
[illegible]
वाल्हा हो ताक्रो तूं माक्रो नाथ। तुम्ह सो पहली
प्रीतडी पूरिबलो साथ ८ वाल्हा मे तूं माक्रो
बोल ब्रियो रे। राषि मित ने रिद्धा म कारि। हो प्राणि
या ने आय रो ३ मुबणादाता देव मुरारि। वा
ल्हा मन माक्रो मन माहीं राषिसि। आतम एक
निरंजन देव। चित माहि चिन सदा निरंतर। ऐसी
परे तुम्हारी सेव। बालानाव सगति हरि सजन।
तुम्हारो प्रेम पूरि सिक वजन बिगास। स्वामि
न रिस्या ने दास बिनासी। दाइ नी हिवे पूरि बिस्रा
स। [illegible] बाराबारी कहूं रेम हिला। येमन तो म
कांइ बिसास्यौ रे। जनम अमोलिक पामीयो
ऐ ही रतन कांइ हास्यौ रे। ८ बिषीया बास्यौ
नेति हाध्यायो। कोधे न हो माक्रो वालूं रे। मा
या धन जोई ने भूल्यो। घर घर इंगेहा स्यूं रे। ग
रभवास देह दबतो प्राणी। आश्रम तेह समा

रूरे॥ दादूरे जन राम मन गी जे॥ नहीं तो जथा ब
धहास्थूरे॥ २॥ २॥ इति कैरान्ने रास पूरण॥ राग
वंजिया॥ नररव्या मरपूर॥ अमीरस पीजिए रे
रस मांहे रस होइ॥ जाहाली जिऐरे॥ टेक॥ परम
टते जअनंत॥ पार नहीं पाइऐरे॥ झिलि मिलि
झिलि मिलि होइ॥ तहां मन लाइऐ॥ सहजै सदा
प्रकास जो तिज लपूरिया॥ तहां रहै निज दास सै
वग स्थूरिया॥ २॥ सुष सागर वार न पार॥ हमारा बास
है॥ हंस रहें ता माहि॥ दादू दास है॥ ३॥ १॥ इति
परजिया संपूर्ण॥ अथ राग सोरठ मली॥ माफ्न
बाल्हा रेता कै सरणि रहेस॥ बीनतडी बाल्हा
तेंक हतो॥ अनंत सुष लहेस॥ टेक॥ स्वामीतणों
हों संग न मेल्हौ॥ बीनतडी कहेस॥ हो अबला
तवलिव् तराजा॥ तोफा वनो वहेस॥ संगिर
हों तो सब सुष पांमो॥ अंतर पीव दहेस॥ दादू
ऊपरि दया करीने॥ आवे ऐणी वेस॥ ३॥ चर
ण दिषाडि तोप रमांण॥ स्वामी माफ्नो ने णी निर
षों॥ लागो रेह जमांण॥ टेक॥ जो ऊ तुफ ने आस
मुफ ने॥ जाणो रेह जथाणे॥ वाल्हो माफ्नो मेल्हो
रेसहिऐ॥ आवे केवल जाण॥ जेणी परे हों देषों
तुफ ने मुफ नै आलो जाण॥ पीव तणी हों परि
न जांणो॥ दादूरे अजाणा॥ २॥ लेह रिमे
फौनाथ॥ ज॰ ॥ ४
साथ॥ टेक
[illegible]

तरी मूनै तोति ॥१॥ एक बार घरि आवे वाल्हा मेर
रे मेल्हौ क दौय ॥ एक बीनती सांत लिस्यांमी
दादू ताको दास ॥२॥ ते किम प्रांमि एरि ॥ उलत
जे आधार ॥ ते बिन ताट्यक्के नहीं ॥ किम कुत
रि एयार ॥ टे ॥ केही परिकी जे आप गौरे ॥ तत
वते छैसार ॥ मन मनोरथ छूटे मांक्रा ॥ तनचोत
पति वारि ॥१॥ संमांस्यूं आवे रे वाल्हा ॥ वेल्यां ए आ
वार ॥ बिरहनी बिलाप कैरे ॥ तिम दादू मनि बिचा
र ॥२॥४॥ अथ राग मारू ॥ हौं ऐसा ग्यांन ध्यान
गुर बिनां क्यूं पावे ॥ वार पार पार वार ॥ दूतैं मि रिग्रा
वे हो ॥ टे ॥ भव न गावन रावन भवन ॥ मन ही मन
लावे ॥ रवन छवन छव न रवन ॥ सतगुर समका
वे हो ॥ षीर नीर नीर षीर ॥ प्रेम भगति भावे ॥ प्रांण
कवल बिगसि बिगसि ॥ गोब्यंद गुन गावे हो ॥१॥
परम तूर परम तेज ॥ दादू दिषलावे हो ॥२॥५॥ तौ
नि बदै जन सेवग तेरा ॥ ऐसै दया करि साहिब
मेरा ॥ टे ॥ ज्यूं हम तोरै त्यूं तू जोरै ॥ हम तोरै पै तू न
हीं तोरै ॥१॥ हम बिसरै पै तू न बिसारै ॥ हम बिग
रै पै तू न बिगारै ॥२॥ हम भूलै तूं आंनि मिलावे ॥ ह
म बिछुरै तूं अंगि लगावे ॥३॥ तुम्ह भावै सो हम पै
नांही ॥ दादू दरसन देहु गुसांई ॥४॥६॥ माया स
सार की सब झूठी ॥ मात पिता सब ऊभे भाई ॥ ति
नहीं देषतां लूटी ॥ टे ॥ जब लग जीव काया मैं
थारे ॥ षिण बैठी षिण ऊठी ॥ हंस जु था सो षे
लि गया रे ॥ तब थैं संगति छूटी ॥१॥ ए दिन पूगे आ

वूघटांणी॥तबतिच्यंतकैसरती॥दादूदासकं
अैसीकाया॥जैसीगगरीयाफूटी॥२॥३॥अैसैग
हैमैकूंनरहे॥मनसाबाचारांमदहे॥टेक॥सं
पतिबिपतिनहीमैमेरा॥हरिषसोकदोऊनांही
॥रागदोषरहितसुषदुषथैं॥बैठाहरिपदमां
हीं॥१॥तनधनमायामोहनबंधै॥बैरीमीतनकौ
ई॥आपापरसमिरहैनिरंतर॥निजजनसेवग
सोई॥२॥सरवरकवलरहैजलजैसैं॥दधिमथिघृत
करिलीन्हों॥जैसैंबनमैंरहैबटाऊ॥काहूहित
नहींकीन्हों॥३॥भावसगतिरहैरसिमाता॥प्रेमम
गनगुनगावै॥जीवतमुकतिहोइजनदादू॥अमर
अभैपदपावै॥४॥चलिचलिरेमनतहांजाइऐ
॥चरनबिनचलिबौश्रवनसुनिबौ॥बिनकरबै
बेनबजाइऐ॥टेक॥तननांहींतहां मननांहीं
तहां॥प्राननहींतहांआइऐ॥सबदनहींजहांज
वनहींतहां॥बिनरसनांमुषगाइऐ॥१॥पवनपाव
कनहीं॥धरनिअंबरनहीं॥उभैनहींतहांला
इऐ॥चंदनहीजहांसूरनहींतहां॥परमजोति
सुषपाइऐ॥२॥तेजपुंजसोसुषकासागर॥झिलिमि
लिनूरनहाइऐ॥तहांचलिदादूअगमअगोचर
॥तामैंसहजिसमाइऐ॥३॥५॥ अथ रागटोडी
६३॥सैतितसहजैसुषमनकेहरणा॥साचपकडि
मनजुगिजुगिरहणा॥टेक॥प्रेमप्रीतिकरिनीकांरा
षै॥बारंबारसहजिनरभाषै॥मुष
संभारी॥ति

ईसो इनीका जाणी ॥ निमष न बिसरै सुख नखा
णी ॥ सोई सुजांण सुधारस पीवै ॥ दादू ईसे जुगि
जुगि जीवै ॥ ४१ ॥ नांव रतां वरे ॥ सकल सिरोमणि
नांउं रे ॥ मैं बलिहारी जाउं रे ॥ टेक ॥ दूतर तारे पा
रि उतारे नरकि निवारे नांव रे ॥ तारण हारा भौ
जल पारा निर्मल सारा नांव रे ॥ १ ॥ नूर दिखावै ते
ज मिलावै जोति जगावे नांव रे ॥ २ ॥ सब सुख दाता
अंमृत राता दादू माता नांव रे ॥ ३ ॥ राइ रे राइ
रे सकल भुवनपति राइ रे ॥ अंम तदे कुछ घाइ
रे राइ ॥ टेक ॥ परगट राता परगट माता ॥ परगट
नूर दिखाइ रे राइ ॥ १ ॥ अस्थिर थांनां अस थिर ध्या
नां ॥ अस थिर ते जमिल्याइ रे राइ ॥ २ ॥ अविचल अभे
नां अविचल लषे न्या ॥ अविगत जोति जगाइ रे रा
२ इ ॥ निहचल बैनां निहचल नैनां ॥ दादू बलि
बलि जाइ रे राइ ॥ ३ ॥ हरि रस माते मगन भए सुम
रि सुमरि भए मतिवाले ॥ जोमण मरण सब भू
लि गये ॥ टेक ॥ निरमल भगति प्रेम रस पीवै आन
न दूजा भाव धरै ॥ सहजैं सदा राम रंगि राते मुक
ति बैकुंठै कहा करै ॥ १ ॥ गाइ गाइ रस लीन भये हैं
कछू न मागैं संत जनां ॥ और अनेक देहु द
त आगैं आन न भावै राम बिना ॥ २ ॥ इक टग ध्या
न रहैं ल्यौ लागै छाकि परे हरि रस पीवैं ॥ दादू
मगन रहैं रस माते ईसे हरि के जन जीवैं ॥ ३ ॥
४ ॥ तै मैं कीया चारा राम जे तैं वार्यू ते मारग मैं
लिया मारग आगा समरि ॥ अकरम करम हरे ॥ टे

॥ साधूनौंसंग छाडीनैं ॥ असंग तिन्ह णसरियो
॥ सुरुतनसंकिन्ह विद्यासाधी ॥ विषियाविसत्त
रियो ॥३॥ ओनकत्यौ ओनरसेंम लियो ॥ नैरो ओन
दीगो ॥ ओम तकड्चौ निषरम लागो ॥ षातया
तिमागौ ॥४॥ रामरिदाष्यौं विसार्या नैं माया मनदी
ध्यौ ॥ पांचेप्रांणीगुरमुषिबरज्यो ॥ तेदादूकी ध्यौ ॥
३।५॥ कहौक्यूंजतजीवैसाईयां ॥ दिचरनकवल
आधारहो ॥ डूबतहैंमौसागरा ॥ कारीकरौक
रतारहो ॥ टेक ॥ मीनमरैबिनपांणीयां ॥ तुम्हबि
नयौहबिचारहो ॥ जलबिनकैसैंजीवहीं ॥ इब
नौकितीइकबारहो ॥ ज्यूंपरैपतंगजोतिमां
देषिदेषिनिजसारहो ॥ प्यासाबूंदनपावई ॥ त
बबनिबनिकरैपुकारहो ॥१॥ निसदिनपीरपुका
रहीं ॥ तनकी तापनिवारिदो ॥ दादूबिपतिसु
नोंवहीं ॥ करिलोचनसनमुषचारिहो ॥ ३।६॥
तैसाथासाहिबमेरा ॥ करमकरीमकिपालनिहा
रौ ॥ मैंजनबंदातेरा ॥ टेक ॥ तुम्हदीवांनसबहनि
कोजानौं ॥ दीनांनांपदयालां ॥ दिषाइदीदार
मौजबंदेकौं ॥ कांइमकरौनिहाला ॥ मालि
कसबैमुलिककेसांई ॥ संमृथसिरजनहारा
षैरषुदाइषलकमैंषेलतादेदीदारतुम्हा
रा ॥ मैंसिकसतादरिगहतेरी ॥ हरिहजूरितूं
कहिये
लहियै ३।७॥ कुछचौ
मैंबेगाफूलिककरी ॥ तेंदेई

जां नैं तन धन मेरा ॥ मू रिम दे षि मुलाया ॥ आजक
ल्हि कलि जावैंदे ही ॥ ऐसा सुंदर काया ॥ १ ॥ रामतां
मनि जलां जिये ॥ मैं कछि समझाया ॥ दादू हरि की
सेवा कीजे ॥ सुंदर साज मिलाया ॥ २ ॥ ८ ॥ नेटि रेमा
टी मे मि लनां ॥ मोडि मोडि देही काहे कूं चलनां
टे ॥ काहे कूं अपनां मन भुलावे ॥ यहु तन अपनां
नी का धरनां ॥ कोटि बरस तूं काहे न जावे ॥ बिचा
१ रि देषि आगे है मरनां ॥ काहे न अपणी बाट संवा
रे ॥ संजम रहै यां सुमिरण करणां ॥ गहिलां दादू
र बन काजे ॥ यहु संसार पंच दिन भरणां ॥ २ ॥ ९ ॥ जा
इ रे तन जाइ रे ॥ जनम सुफल करि लेकू रांम रमि
॥ सुमरि सुमरि गुन गाइ रे ॥ टे ॥ नर नाराइन सक
ल सिरोमनि ॥ जनम अमोलिक आहि रे ॥ सो तन
जाइ जगत नहीं जानैं ॥ सक हि तउ ठाहर लाइ रे
॥ १ ॥ जुरा काल दिन जाइ गरासै ॥ तासौं कुछ न ब
साइ रे ॥ छिन छिन छीजत जाइ मुगध नर ॥ अंति का
ल दिन आइ रे ॥ २ ॥ प्रेम भगति साध की संगति ॥ नांव
निरंतर गाइ रे ॥ जे सिरि भाग तो सौंज सुफल का
रि ॥ दादू बिलंब न लाइ रे ॥ ३ ॥ १० ॥ काहे बकिम
ल गवांवे ॥ रांम के नांइ न लेस चुपावे ॥ टे ॥ बाद
बिबाद न कीजे लोइ ॥ बाद बिबाद न हरि रस हो
इ ॥ मैं तैं मेरा मानैं नांही ॥ मैं तैं मेटि मिले हरि मां
हीं ॥ १ ॥ हारि जीति सौं हरि रस जाइ ॥ समझि देषि
मेरे मन भाई ॥ मूल न छाडी दादू बौरे ॥ जिनि
भूले तूं बकिबे औरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ ॐ मियां रहा किम

न्यावेहै॥ साईके दीवान कुलिकादसेवकेग्या
॥ सम्रुझि मुसलमान॥ टेक॥ नापतनेकी सालि
हो॥ रासतरई मान॥ २॥ षजासअदरिआपसौ
॥ रषणा सुविहान॥ ३॥ हकमहाजिरहोज्वा
बा॥ मुसलम मिहरवान॥ अकलि सेती आ
पमौ॥ सो धिलै सुजाण॥ ४॥ हक सो हजूरि रू
णा॥ देषणां करि पांन॥ दोसत दांनादा [illegible] ना
का॥ मन गांफुरमान॥ ५॥ सुसाहेवांनी ६॥ रिकफि
॥ कौडि देश्रभिमान॥ ६॥ रैदरगांनां दिसुम्य
॥ दाहले कपिञ्यांणि॥ ॥ १२॥ निरपषरदगा
॥ रामरामकहैग्या॥ कामक्रोधसे टेढ़न [illegible]
॥ टेक॥ जे गैमारगि से सासु ज्यारहला तिनां [illegible]
॥ आपवहाइला॥ जेजेकरणी [illegible]
ला॥ सोकरणी संतह [illegible]
करांता॥ तेगैपथे साधन [illegible]
मत्रैमैकहिए॥ रांमरसत [illegible]
ए॥ ॥ ३॥ हमघ्याग्यहसण [illegible]
स्त्रैसीमतिआइ॥ टेक॥ [illegible]
जांनै कहै सुझा गानिक्य [illegible]
यसौ परचानाही॥ २॥ सु [illegible]
दी रसाई सुपतिकर [illegible]
सैमहलि वु न्याव॥ ३॥ [illegible]
जस्रावे यट सकौ गंप [illegible]
हागतिस्त्रैसुकाई॥ [illegible]
॥ ६॥ ॥ ४॥ स्रैसे [illegible]

अंतरनहीकी जी॥टेक॥ जेसैंआलमआपालेषे जीवजंतअसेकरिदेषे॥१॥ ऐक रामअसेंसेंकरि जानै॥ आपापरअंतरनहींआनै॥२॥ सबघटि आतमऐक विचारै॥ रामसनेहीप्राणहमारै॥३॥ दादूसाचीरामसगाई॥ असाभावहमारेभाई॥४॥ माधईयोमाधईयोमीठीरामाई॥ माहवोमाहवोसेटिपोआई॥टेक॥ कानईयोकानईयोकरताजाई॥ केसवोकेसवोकेसवोधाई॥ भूधरोभूधरोभूधरोमाई॥ रामईयोरामईयोरमसमाई॥ नरहरिनरहरिनरहरिराई॥ गोबिंदोगोबिंदोदादूगाई॥३॥१६॥ ऐक हिंऐकेंभयाअनंद॥ ऐक हिंऐकेंभागेदंद॥टेक॥ ऐक हिंऐकेंसमान॥ ऐक हिंऐकें पदनिरबान॥१॥ ऐक हिंऐकेंत्रिभुवनसार॥ ऐक हिंऐकेंअगमअपार॥२॥ ऐक हिंऐकेंनिरभेहोइ॥ ऐक हिंऐकेंकालनकोइ॥३॥ ऐक हिंऐकें घटिपरकास॥ ऐक हिंऐकें निरंजनबास॥४॥ ऐक हिंऐकेंआपहिआप॥ ऐक हिंऐकेंमाइनबाप॥५॥ ऐक हिंऐकेंसहजसरूप॥ ऐक हिं ऐकेंभएअनूप॥६॥ ऐक हिंऐकेंअनतनजाइ॥ ऐक हिंऐकेंरह्यासमाइ॥७॥ ऐक हिंऐकेंभए लैलीन॥ ऐक हिंऐकेंदादूदीन॥८॥१७॥ आदि हैआदिअनादिमेरा॥ संसारसागरभगतिमेरा॥ आदिहैअंतिहैअंतिहैआदिहैबिड़द तेरा॥टेक॥ कालहैझालहैझालहैकालहै

राम नेरा भिले प्राण घेरा॥ जीव का जनम को
जनम का जीव का॥ आपही आप लेमो निकेरा
१॥ मरम का करम का करम का मरम का॥ आ
इ बा जाइ आमे टि फेरा॥ नाभि नेया खिले पाखि
ता खिले॥ जीव सों सीव है निकट नेरा॥२॥ आत
मां राम है राम है आतमा॥ जोति है जुगति सौं क
रो मेला॥ तेज है सेज है सेज है तेज है॥ एक रस
दादू खेले खेला॥३॥१४॥ सुंदर रांम राया॥ परम ग्या
न परम ध्यान॥ परम आप आया॥ टेक॥ अकल सक
ल अति अनूप॥ छाया नहीं माया॥ निराकार नि
राधार॥ वार पार न पाया॥१॥ सीर खीर निधि सरीर
॥ निरगुण निरकार॥ अविगत अमर परम पुरिस
॥ निरमल निज सार॥२॥ परम नूर परम तेज परम
जोति परकास॥ परम पुंज परा परं॥ दादू निज दा
सा॥३॥१५॥ अछिल भाव अछिल भगति अछि
लं नांव देवा॥ अछिल प्रेम अछिल प्रीति अछि
ल सुरति सेवा॥ टेक॥ अछिल अंग अछिल संग
॥ अछिल रंग रांमा॥ अछिल आरत अछिल मत
॥ अछिल निज नांमा॥ अछिल पान अछिल
ध्यान॥ अछिल आनंद कीजे॥ अछिल लै अछि
ल मै॥ अछिल रस पीजे॥२॥ अछिल मगन अछि
ल मुदित॥ अछिल गलित सांई॥ अछिल दरस
अछिल परस॥ दादू तुम मांही॥३॥१६॥ राग
राग जैसी ... ॥
कांन्हो॥ नंदी मेरे जांन निगार

तूंहीमेरेसादरपदर आलंमबेगांनांमाहि
बसिरताजमेरे तूंहीमुलितांनां १ दोस्तदिल
तूंहीमेरे किसकाषिलषांनां २ नूरचसमजि
दमेरे तूंहीरहिमांनां ३ एकेअल्लाहमेरे तूंही
हमजांनां जो जिबाजीजमेरे षबषजांनां
नेकनजरमिहरमीरां बंदामेंतेरा दादूदर
बारतेरे षबसाहिबमेरा ४१ तूंघरिआवसुल
छिनपीव हिकतिलमुषदिषलावेतेरा क्या
तरसावे जाव टे निसदिनतेरापंथनिहारों
तूंघरिमेरेआव हिरदातीतरिहतमोरवाल्हा
तेरामुषदिषलाव वारीफेरीबलिगई मो
मिलसाईकपोल दादूऊपरिदयाकरीने मु
नाइसुहावेबोल ४२ रागतटनारी
११ ताकोकाहेनप्रांणसंभाले कोटि
अपराधकलपकेनांमें माहिमहूरतटाले टे
अनेकजनमकेबंधनबाढे बिनपावकं
फंधजाले असोहेमननांवहरीको कबहू
दुषनसाले ॥ चिंतामणीजुगनिसोंराषे ज्यूं
जननीसुतपाले दादूदेषुदयाकरेऐसा १
गोविंदकबहूमिलेपीवमेरा चरनकवंलक
हीकरिदेषों राषोंनेनडिनेरा टे निरषणक
मोहिचावघणेरा कबमुषदेषोंतेरा प्राणमि
लनकोभईउदासी मिलितूमीतसबेरा
व्याकुलतातेभईतनदेही सिरपरिजमका
हेरा दादूरेजनराममिलनको तपईतन
६ जनकूंजालनराखै

ऊतेरा॥२॥ कबदेषौंनैंनऊरेषरती॥ पांगपि
जनकौं भईमती॥ हरिसौं छैलौ हरीगती॥ कब
मिलिहैमो हिप्राणपती॥ टेक॥ बलिकीलौंकूं
देषौंगीरे॥ मुझमांहैं अतिबातझकेरी॥ सुनि
साहिबइकबीनती मेरी॥ जनमजनमहौंदा
सीतेरी॥१॥ कहै दादूसो सुनिसांई॥ हौं अबल
बल मुझमैं नांहीं॥ करमकरी घरि मेरे आंई॥
तौसौं मापी व्हैरैंताई॥२॥३॥ नीके मोहनसौं प्री
तिलाई॥ तनमनप्राणदेतबजाई॥ रंगरसकेबन
ई॥ टेक॥ येहीजीयरबैही पीयरा॥ छोड्यौ नजाइम
ई॥ बांनभेदके देतलगाई॥ देषतही मुरझाई
॥१॥ निरमलनेहपियासौं लागौ॥ रतीनराषीकाय
ई॥ दादूरे तिलमैं तनजावै॥ संगनछाडौंमाई
॥२॥४॥ तुम्हबिनऐसैंकौंनकरै॥ गरीबनिवा
जगुसांईमेरौ॥ माथैमुकटधरै॥ टेक॥ नीचऊं
चलेदकरैगुसांई॥ टार्यौहूंनटरै॥ हसतकब
कीछायापारायो॥ काहूथैंनडरै॥ जाकीछोति
जगतकौंलागौ॥ तापरितूंहीटरै॥१॥ अमरआप
लेकरैगुसांई॥ मार्यौहूंनमरै॥ नामदेवक
बीरजुलाहा॥ जनरैदासतिरै॥ दादूबेगिन
रनहींलागौ॥ हरिसौंसबैसरै॥२॥५॥ नमोन
हरिनमोनमो॥ ताहिगुसांईनमोनमो॥ अक

ल जि

सिरजेजलसीसबरतकर.

रब तन सब वारि तैं न रसनां मुख ॥ ऐसो चित करि पो
॥ आप लयाइ कीए जग जीवन ॥ सुर नर संकर
साजे ॥ पार पैके बर मिथ अरु साधिक ॥ अपने
नांइ निवाजे ॥२॥ धरती अंबर चंद सूर जिनि
पांणी पवन कीए ॥ भांन न घड़ण पलक में के
ते सकल सवारि लीए ॥३॥ आप अलेख है तनांही
सब स मिपूरि रहे ॥ दादू दीन ताहि नइ बंदित
अगम अगाध कहे ॥४॥५॥ हम थें दूरि रही गति
तेरी ॥ तुम्ह होतैसे तुम्ह हीं जांनो ॥ कहा ब
पुरा मति मेरी ॥टेक॥ मन थैं अगम द्रिष्टि अगो
चर ॥ मनसा की गमि नांहीं ॥ सुरति समाइ चेता हीं ॥
॥१॥ जोग न ध्यान न ग्यांन गमि नांहीं ॥ समझि समझि
सब हारे ॥ उनमनी रहत प्रांन घट साधे ॥ पार न
गहत तुम्हारे ॥२॥ खोजि परे गति जाइ न जांनी ॥
अगह गहन कैसे आवे ॥ दादू अविगति देहु दया
या करि ॥ भाग बड़े सो पावे ॥३॥७॥
[illegible] ॥ कोली साल न छाड़ै
रे ॥ सब घाव र का ठै रे ॥टेक॥ प्रेम पाण लगाइ धा
गे ॥ तत तेल निज दीया ॥ एक मनां इस आरम्भ
लागा ॥ ग्यांन राछ भरि लीया ॥ नांव नली भ
रि बुणकर लागा ॥ अंतर गति रंग राता ॥ तांणै ब
णै जीव जुलाहा ॥ परम तत्त सो माता ॥२॥ स
ल मिरोमनि बुणै बिचारा ॥ सांनां सूत न तोड़ै
॥ सदा सुचेत रहे ल्यौ लागा ॥ ज्यूं टूटै त्यूं जोड़ै
॥३॥ ऐसे तनि बुणि गहर गजीनां ॥ सांई के मनि

जावे॥पाइकोली करताके संगि॥ बकु रिनरहि
जपित्र्यावे॥४८१॥ बिरहणीबपुसंभारे॥ निसदिन
तलफैरामकेकारनि॥ अंतरिएकबिचारे॥ टेक॥
आतुरसइ मिलनकेकारनि॥ कहिकहिरामपुका
रे॥ सासउसासनिमषनहीबिसरे॥ जितनितपंथ
निहारे॥१॥ फिरेउदासचहूदिसिचितवत॥ नैननी
रनरिआवे॥ रामबिओगबिरहकीजारी॥ औरन
कोइनावे॥२॥ व्याकुलसइसरीरनसमझे॥ बिसम
बानहरिमारे॥ दादूदरसनबिनक्यूंजीवै॥ रामस
नेहीहमारे॥३॥१९॥ मनरेरामरटतक्यूंरहिए॥ यहु
ततबारबारक्यूंनकहिए॥ टेक॥ जबलगजिभ्यावा
णी॥ तोलोंजपिलेसारंगपाणी॥ जबपवनाचलि
जावे॥ तबप्राणीपछितावे॥१॥ जबलगश्रवणसु
णीजे॥ तोलोसाधसबदसुणिलीजे॥ श्रवणोंसु
रतिजबजाई॥ एतबकासुणिहैमाई॥२॥ जबलग
नैनऊंपेषो॥ तोलोचरणकंवलकिनदेषो॥ जबनै
नऊंकछूनसूझे॥ तबमरिषक्याबूझे॥ जबल
गतनमतनीका॥ तोलोजपिलेजीवनिजीकाज
बदादूजीयआवे॥ तबहरिकेमनिभावे॥३॥
मनरेतेराकोनगावारा॥ जपिजीवनिप्राणअधारा
टेक॥ मातपिताकुलजाती॥ धनजोबनसजनसं
घाती॥ गृहदारासुतभाई॥ हरिबिनसबकूणाके
जाई॥१॥ रितंत्रंतिअकेलाजावे॥ काहूकेसंगिन
आवे॥ रेतूनांकरिमेरीमेरा॥
तेरा रतूचेतनिदेषेअंधा॥

ध्धा रेकाल मीच सिर जागे हरि सुमिरण काहे
न लागे ॥ यकु औसर बकु रिन आवै फिरि मति
बाजन मन पावै ॥ अबदा इहै लन न कीजे हरि सि
मरत जतन करि लीजे ॥४॥ मन रे देषत जनम गयौ
ताथें काज न कोई भयो ॥टे॥ मन इन्द्री पातिबि
चारा ताथें जनम जुवा ज्यूं हारा ॥ मन कूं नसाव
करि जानै दरि साधक है नहीं मानै ॥ मन बुद्धि
है चतुराई ताथें मन सु अबात बनाई ॥ मन आप
आपको थापे करता होइ बैग आपे ॥२॥ मन स्वा
दी बकुल बनावे सो जान्या बिषे बलावे ॥ मन मा
गे सो इह दीजे हमसी राम उषी का सकी जै ॥३॥ मन म
वही छाडि बिकारा पानी होइ गुनन सो न्यारा
निरगुन निजरा हि रहिया दादू साधक है तेकदि
र ॥४॥ मन रे अति क्रमल हि न आया ताथें पकुम्ब
म पापराया ॥टे॥ भवन सु गेन नैनौं कुसूझे रस
नां कव्या न ज्याड़े सीस चरन कर कंपन लागे सो
हि न पकु च्या आइ ॥१॥ काले छोले बरन पलटा
तन मन का बल मागा ॥ जोबन गया जुरा चलि आ
ई तन पछितावन लागा ॥२॥ आव घटे घट छी
जै काया यकु तन न्याव भराना ॥ पांचौ थाकेक
ह्या न माने ताका मर मन जाना ॥३॥ हंस बटाऊ
पानपयाना समकि दे छि मन माहीं ॥ दिन दिन का
ल गरासे जीवरा दादू चेतें नांहीं ॥४॥ ॥६॥ मन रे तूं दे
षै सो नाहीं है सो अगम अगोचर माहीं ॥टे॥ निस
अंधियारी कछू न सूझे संसै सरप दिषावा ॥ ऐ

सेऊंध जगत नहीं जांनैं। जीव जेवड़ी धावा। भ
गउ लदेषित हो मन धावै। दिन दिन फूटी आसा
॥ जहां जहां जाइ तहां जल नांहीं। निहचै मरै
पियासा॥१॥ भरम बिलास बहुत बिधि कीन्हां। ज्यूं
सुपनैं सुष पावै। जागत फूटत हां कुछ नांही
॥ फिरि पीछै पछितावै॥३॥ जब लग सूता तब ल
ग देषै। जागत भरम बिलानां। दादू अंति इहां कु
छ नांहीं। है सो सोधि सयांनां॥४॥७॥ गाई रे बाजी
गर टेल्हा। ऐसैं आपै रहै अकेला। टेक। यहु बा
जी षेल पसारा। सब मोहे कौतिग हारा। यहु बा
जी षेल दिषावा। बाजीगर किनहूं न पावा॥१॥ इ
हि बाजी जगत भुलांनां। बाजीगर किनहूं न जां
नां। कुछ नांही सो पेषा। है सो किनहूं न देषा
॥२॥ कुछ ऐसा चेटक कीन्हां। तन मन सब हरि
लीन्हां। बाजीगर भुरकी बाही। काहू पै लषी
न जाई॥३॥ बाजीगर परकासा। यहु बाजी झूठ
तमासा। दादू पावै सोई। जो इहि बाजी लिपत न
होई॥४॥८॥ गाइ रे ऐसा एक बिचारा। यौं हरि गु
रु कहै हमारा॥ टेक॥ जागत सूते सोवत सूते॥
जब लग रांम न जांनां। जागत जागै सोवत जा
गै जब रांम नांम मन मांनां॥१॥ देषत अंधे अंधे
अंधे। जब लग सत्य न सूझै। देषत देषे अंधे साटे
षे जब रांम सनेही बूझै॥२॥
मीपसै जब जागत सूता चीन्हां
गरभ पी बोले॥

जीवतमूएमरैभीमरे ॥ जबलगमतदीप्रकासा ॥ जी
वतजीरेमूएभीजीरे ॥ दादूरामनिवासा ॥ ९ ॥
रामजीनातेछिनातूषलारी ॥ तेरेसाधनिकही
बिचारी ॥ टे० ॥ केईजोगध्यानगहिरहिया ॥ के
ईकुलकेमारगबहिया ॥ केईसकलदेवकौ
ध्यावै ॥ केईरिधिसिधिचाहैपावै ॥ केईबेदपुरा
नौमातै ॥ केईमायाकेमंगिरातै ॥ केईदेसदिसंत
रडोलै ॥ केईग्यानीह्वैबहुबोलै ॥ केईकायाक
सेअपारा ॥ केईमरेंषड्गकीधारा ॥ केईअनतजी
वनकीआसा ॥ केईकरहिगुफामैबासा ॥ आ
अंतिजेजागे ॥ सोतौरामनामल्यौलागे ॥ अबदा
दूइहैबिचारा ॥ हरिलागाप्रांणहमारा ॥ १० ॥ मा
धौहरिसौहेतहमारा ॥ जिनिषडुकीन्हपसा
रा ॥ टे० ॥ जाकारणिब्रतकीजै ॥ तिलतिलयहुत
नछीजै ॥ सहजैहीसोजाना ॥ हरिजानतहीं
मनमाना ॥ जाकारणितपिजइये ॥ धूपसीतसि
रसहिये ॥ सहजैहीसोआवा ॥ हरिआवतहीं
सचुपावा ॥ जाकारणिबहुफिरिये ॥ करितीर
थभ्रमिभ्रमिमरिये ॥ सहजैहीसोचीन्हा ॥ हरि
चीन्हिसबैसुषलीन्हा ॥ प्रेमलगतिजिनिजा
नी ॥ सोकाहेभरमैप्रानी ॥ हरिसहजैहीभ
लमानै ॥ ताथैदादूऔरनजानै ॥ ११ ॥ राम
जीजिनिभरमावैहमकौ ॥ ताथैकरौबीनती
तुम्हकौ ॥ टे० ॥ चरनतुम्हारेसबहीदेषौं ॥ त
पतीरथब्रतदांना ॥ गंगजमुनपासियाइकेत

नि

होदेऊअसनोत्यो॥सोगितुम्हारेसबहीलागो॥
॥जोगिज्ञायजेकीजे॥साधनसकलरईसबसेरे
॥संगआपणोदीजे॥१॥पूजोपातीदेवीदेवल
॥सबदेषौतुम्हमाहीं॥मोकौवोटआपणीदी
जे॥चरनकवलकीछांहीं॥२॥ऐंअरदासदासकी
सुंणिये॥हरिकरोज्ञममेरा॥दादूतुम्हबिन
औरनजाने॥राषोचरनोचेरा॥३॥१२॥सोईदेव
पूजोजेटांकीनहींघड़िया॥गरभवासनांहीं
औतरिया॥टेक॥बिनजलसंजमसदासोईदेवा
॥भावभगतिकरौहरिसेवा॥पातीप्राणहरि
देवचढाऊं॥सहजसमाधिप्रेमल्यौलाऊं॥१॥
हिबिधिसेवासदातहांहोई॥अलषनिरंजन
लषेनकोई॥२॥एपूजामेरेमनमाने॥जिहिबिधि
होइसुदादूनजाने॥३॥१३॥रामराइमोकौंअचि
रजआवे॥तेरापारनकोईपावे॥टेक॥ब्रह्मादि
कसनकादिकनारद॥नेतिनेतिजेगावे॥सर
नितुम्हारीरहैनिसबासुरि॥तिनकौंतूंनल
षावे॥१॥संकरसेससबैसुरमुनिजन॥तिनकूं
तूनजनावे॥तीनिलोकरटैंरसनांभरि॥ति
नकौंतूंनदिषावे॥२॥दीनलीनरांमरंगिराते
॥तिनकौंतूंसंगिलावे॥अपनेअंगकीजुगति
नजाने॥सोमनतेरेभावे॥३॥सेवासंजमकरें
जपपूजा॥सबदनतिनकौंसुनावे॥मैंअछो
पदीनमतिमेरी॥दादूकौ

इतिरागगौडीसंपूर्ण॥२४७

दरसन दे दरसन दे ॥ हूं तो तेरी मुक तिनमा
ार ॥ टे० ॥ छिन छिन मांगो तो छिन मांगो ॥ तुम्ही
मांगो तो भिछ्या ॥ जोगन मांग्यो भोगन मांगो
तुम्ही मांगो रामजी ॥ १ ॥ घर नहीं मांगो बन न
ही मांगो ॥ तुम्ही मांगो देवजी ॥ २ ॥ दास तुम्ह
बिन और न मांगो दरसन मांगो दे ऊ जी ॥ ३ ॥
तू आप ही बिचारि ॥ तुझ बिन कूं रही भरे
और न हजा कोइ ॥ दुष किसकों कहौं ॥ टे० ॥ मैं
तहमारा सो इस आवे जे पीया मुके मिलावे को
वे जी वतिजीया ॥ तेरे नैन दिषाइ जी कै जि
मत्रा मिरे ॥ सो धन जीवे कूं न हौ जिसणा मि
रू ॥ प जर मांहे प्राणा तुम्ह बिन जाइ सी ॥ जो
दास मांगो मान कब घरि आइ सी ॥ २ ॥ हो जो
रही रैवाट तक घरि आवि नि ॥ ताका दरसन
सुष होइ तन न्या विने ॥ टे० ॥ चरणा जो बा
सा तितन दिषाडिने ॥ तुम्ह बिना जी वंदे
हे ताका पिती ॥ नेन निहारी बाट कनी च
वनी ॥ तं अंतर पे रह्यो आवदेहा जा वनी
तूं दया करि घरि आव दास गावनी ॥ जन
हूं राम सम्हालि बेन सुनावनी ॥ ३ ॥ पीव दे
बिन कर है जीय ॥ तलप मेरा सब सु
नेद पाइ ॥ मुष देषौ तेरा ॥ टे० ॥ पीव बिन के
जीवनी मो हि चैन न आवे ॥ निरधन ज्यूं धन
हरी जब दरस दिषावे ॥ तुम्ह बिन कल धर
धरो ॥ जो लो तो छिन पाके सनमुष के सु

जिये॥ बलिहारी जांऊ॥२॥ बिरहनि वेगनसहि
सकै॥ काइर घट काचा॥ पांवन परसन पाइ
रे सुनि साहिब साचा॥३॥ सुनिये मेरी बीनती॥ द
बद रस न दीजे॥ दादू देखन पावही॥ तैसै कुछ
कीजै॥४॥४॥ इहि बिधि बेध्यौ मोर मनां॥ ज्यूं लै भ्रं
गी कीट तनां॥ टेक॥ चाचिग रटै रैनि बिहाइ
॥१॥ प्यंड परै पै बांनि न जाइ॥ मरै मीन बिसरै नहीं
पांनी॥ प्रांन तजे उनि और न जांनी॥२॥ जलै सरीर
न मोडै अंगा॥ जोति न छाडै पडै पतंगा॥३॥ दादू
इब थें ऐसे होइ॥ प्यंड पडै नहीं छाडौं तोहि
॥४॥५॥ आवो राम दया करि मेरे॥ बार बार बलिहा
री तेरे॥ टेक॥ बिरहनि आतुर पंथ निहारै॥ राम
राम कहि पीव पुकारै॥१॥ पंथी बूझै मारग जोवै॥
नैन नीर जल भरि भरि रोवै॥२॥ निस दिन तलफै
फिरै उदास॥ आतम राम तुम्हारे पास॥३॥ बउ
बिसरे तन की सुधि नांही॥ दादू बिरहनि म्रतक
मांही॥४॥६॥ निरंजन क्यूं रहै॥ मौनि गहै बैराग
केते जुग गाये॥ टेक॥ जाको जगपति राइ॥ हसि बो
लै नहीं॥ परगट घूंघट मांहि॥ पट खोलै नहीं॥१
॥ सदिके करौं संसार॥ सब जग वारणै॥ छाडौं
सब परिवार॥ तेरे कारणै॥ वारौं प्यंड परांण॥ प्यं
के सिर धरौं॥ ज्यूं ज्यूं भावै राम॥ सो सेवा करौं॥३
॥ षीतैं ताथ दया जबि लंबन कीजिए॥ दादू बलि
बलि जाइ॥ सेज सुख दीजिये॥७॥
काइ...

गुण नहीं लागौ कोइ ॥ ५ ॥ धरअंबर लागै नहीं
नहीं लागौ ससिहर सूर ॥ पाणी पवन लागै नहीं
जहां नहीं भरपूर ॥ ६ ॥ निसबासुरि लागै नहीं
नहीं लागौ सीतल घाम ॥ क्षुध्या तृषा लागै नहीं
घटि घटि आतमराम ॥ ७ ॥ मायामोह लागै नहीं
नहीं लागौ काया जीव ॥ कालकरम लागै नहीं
परगट मेरा पीव ॥ ८ ॥ इकलस एकै नूर है इक
लस एकै तेज ॥ एकलस एकै जोति है दादू खेले
सेज ॥ ९ ॥ ८ ॥ जगजीवन प्रांन अधार बाचा पा
लनां ॥ टेक ॥ हौ कहा पुकारौ जाइ मेरे लालनां ॥ टे
मेरे बेदन अंगि अपार सो दुष टालनां ॥ साम्हर्थ
निसतार । गहरा अतिघणा ॥ अंतर है सो टालि
कौ जे आपणा ॥ मेरे तुम्ह बिन और न कोइ इ
है बिचारणां ॥ तापै करौ पुकार यहु तनचा
णां ॥ दादू कौ दरसन देहु जाइ दुष सालणां
॥ ९ ॥ मेरे तुम्ह ही राषणहार इजा कोनहीं ए
चल चहुँ दिसि जाइ कालत हीं नहीं ॥ टे ॥ मै
तेकौ रहि आइ निहचल नां रहै ॥ जहां बरजौ
तहां जाइ मछिमा तो बहै ॥ जहां बरजौ तहां जा
तुम्ह थे नाहिं डरै ता सौं कहा बसाइ ॥ मैं केता कह
गुर अंकुस मानैं नाहिं ॥ निरभै होइ रहा ॥ तु
बिन और न कोइ ॥ इस मनकौ गहै ॥ त्यं राषै
राहार दादू तौ रहै ॥ १० ॥ निरंजन काइ कै
पीलिया देषि पड़ै दरिया वारंपार सूझै नहीं
मन मेरा डरिया ॥ टे ॥ अति अथाह यहु जो जल
सकल पुकारै सा

॥ आसंघतही आवे॥ टेक॥ देषि डरपे घणा। प्रा
णी उधपावे॥ विष जल भरिया सागरा॥ सब थके
सयाना॥ तुम्ह बिन कउ के से तिरे॥ मैं मूढ अया
ना॥२॥ आगे ही डरपे घणा॥ मेरी का कहिए। करणा
हि कारटै कि सबा॥ पार तौ लहिए॥ एक भरोसा तेरा है
॥३॥ जे तुम्ह हो कृपाला॥ दादू कउ के से तिरै ते
तारि गोपाला॥४॥११॥ समरथ मेरा साईंयां॥ सकल अ
घ जारे॥ सुषदाता मेरे प्राण का॥ संकोच निवारे॥ टे
॥१॥ त्रिविध ताप तन की हरै॥ चौथे जन राषे॥ आपस
मागम सेवग॥ साध्यौं भाषै॥ आप करै प्रतिपाल
ना॥ दारन दुष टारै॥ इछ्या जन की पूरवै॥ सब का
रिज सारे॥२॥ करम कोटि भै भंजना॥ सुष मै मन सोई
॥ मन मनोरथ पूरना॥ ऐसा औरन कोई॥ ऐसा
और न दूजा देषिहौं॥ सब पूरन कामा॥ दादू साध संगी
कीए॥ उनि आतम रामा॥४॥१२॥ तुम्ह बिन राम क
वण कलि माही॥ जिवया थी कोई वारे रे॥ मुनिय
र मोटा मनवे मारया॥ पन्हां को ण मनोरथ मारे रे
॥ टेक॥ छिनेक मनवौ मरट माड्यौ॥ घरि घरि बारि व
न चावे रे॥ छिन एक मनवौ चंचल माड्यौ॥ छिन
एक घर मैं आवै रे॥१॥ छिन एक मनवौ मीन अमरो
रो सचराचर मांध्याए रे॥ छिन एक मनवौ उद
म दि मातो॥ स्वादै लागो धाइ रे॥२॥ छिन एक मन
वौ जोति पतंगा॥ मरमि मरमि स्वादै दाझे रे॥ छि
न एक मनवौ जो मैं लागो॥
छिन एक मनवौ कुंजर माहरो॥

माडेरे छिनएकमनचौकामीमाहरो छिपिया
रामसाडेरे छिनएकमनचौमगानमूहारो
२ नाचेमोव्यौजा ऐरे छिनंकमनचौमायारा
नो छिनएकअमूनेबाहेरे छिनएकमनचौ
मवरअमारो बासेकवलव भांगोरे छिनऐ
कमनचौचकु हिसिजाए मनवानेकोईआल
रे तुम बिन राषेकोरगानिधाता सुनिवरसाष
आगोरे दाइमनकछिनमेजीवे मनवानाव
रतनजागोरे १३ क रागोगोचसोचसुषकर
है सोहीकीनावकेसेसवजलतिरई टे दछि
नजानतपडिमकेसेआवे नेनविनसूजिबाट
कतयाक्रे विषबनबेलिभ्रमतफलचाहै या
इहलाहलअमरतमाहे अनिगहेपेसिक
रिसुषकूसावे जलगिजागीघरोसीतलक्यू
होवे पापपाषंडकीऐतुनयंकूपाइऐ कूप
लिपडिबागमनकंजाइऐ कंहेदादू सो हिय
हिरजमारी हटेकपटक्यू मिलेमुरारी १४
मेरामनकेमनसोमनलागा
सबदकेसबदसोनादबागा टे१
बनकेश्रवणसुणिसुषपाया नेनकेनेनसोदि
रषिराया प्रानकेप्रानसोषेलिप्रानी मुषकेमु
षसोबोलिबानी जीवकेजीवसोरंगिरात
चितकेचितसोप्रेमप्राता सीसकेसीसकौर
समेरा देषिलेदादूसागतेरा १५ मेरमिषर
हिबोलिमनमोरा रामजलबरिषेसबदसुनि

रा॥ट॥ आरतआतुरपीवपुकारे। सोवतजागत
पंथनिहारे॥१॥ तिसबासुरिकहिअमनबांणी। रामर
नामल्यौलाइल्लेप्राणी॥२॥ टेरिमनमाईजबलगजी
वे॥ पीतिकरिगाढीप्रेमरसपीवे॥३॥ दादूऔसरिजेम
नजागै। रामघटादलबरिषणलागै॥४॥१६॥ न्यारीने
हनकीजिये। जितुकरामपियारा। मायामोहनबंधि
ये। तजिएसंसारा॥ टे॥ बिषियाविकाराचेतहौ। नहीं
करेपसारा। देहगेहपरिवारमें। सबथेंरहैन्यारा॥
॥ आपापरउरझैनहीं। नाहींमैंमेरा। मनसावाचा
करमना॥ साईसबतेरा॥१॥ मनइंद्रीअसथिरकरे। क
तहूंनहींडोलै॥ जगविकारसबपरहरै॥ मिथ्यान
हीबोलै॥२॥ रहैनिरंतररामसौं॥ अंतरगतिराता॥
गावैगुणगोबिंदको। दादूरसिमाता॥४॥१७॥ तूंराखे
त्यूंहीरहै। तेरेजनतेरा॥ तुझबिनऔरनजानही
सोसेवगतेरा॥ टे॥ अंबरआपेहीधस्या॥ अजहूंउ
पगारी॥ धरतीधारीआपथें॥ सबहीसुषकारी॥१॥ प
वनपासिसबकेचलै॥ जैसैंतुमकीनां॥ पांनीपर
गटदेषिहौ॥ सबसौंरहैलीनां॥२॥ चंदचिरागीचहु
दिस॥ सबसीतलजांनैं॥ सूरिजभीसेवाकरे॥ जैसें
भलमानैं॥३॥ एनिजसेवगतेरडे॥ सबआज्ञाकारी
॥ मोकोंऐसैकीजिये॥ दादूबलिहारी॥४॥१८॥ नंदके
बाबाबीरहमारा॥ बिनहीकोडै बहैबिचारा॥ टे॥
करमकोटिके कुसमलकाटे॥ काजसंवारे बिन
हीसाटे॥ आपणहूबैऔरकौंतारे॥ ऐसाप्रीतम
पारउतारे॥१॥ जुगिजुगिज

देवतुम्हकौंनिहोरा ॥ न्येदक बउरापरउपगारी
दाइतियाकैरेहमारी ॥ १८ ॥ देऊजीदेऊजी
प्रेमपियालादेऊजी ॥ टेक ॥ रिषिकऊरिनलेऊजीदे
ऊंऊंनरतनदेषोतेरा ॥ ऊंऊंजोपरातमंनपैमेरा
ऐसीमहारसनावनआवै ॥ ऊंऊंप्रानवऊ
तइषपावै ॥ प्रेमसगतिरसपावैनाही ॥ ऊंऊंसा
लेमननहीमाही ॥ २ ॥ सेजसुहागसदासुषदीजे ॥ दा
दूदुषीयामिलनकीजे ॥ ४ ॥ २० ॥ बरिषऊरामत्र
मतधारा ॥ झिलिमिलिझिलिमिलिसीचणहारा
॥ टे ॥ प्राणवेलिनिजनीरनपावै ॥ जलहरबिना
कवलकुमिलावै ॥ १ ॥ सुकैवेलिसकलवनराइ ॥
रामदेवजलवरिषौआइ ॥ २ ॥ आतमवेलीमरैपि
यास ॥ नीरनपावैदादूदास ॥ ३ ॥ २१ ॥
दयातुम्हारीदरसनप ॥ टे ॥ जान
तहोतुम्हअंतरजामी ॥ जानराइतुम्हसौंका
कहिए ॥ टे ॥ तुम्हसौंकहाचतुराईकीजे ॥ कौ
नकरमकरितुम्हप्यारे ॥ कोईनहीमिलेप्रानव
लिअपनै ॥ दयातुम्हारीतुमआए ॥ कहाहमा
रेआनितुम्हआगै ॥ कौनकलाकरिबसिकीए
जीतेकौनबुधिबलषोरिय रूं ॥ चिअपनीतें
रनलीरे ॥ २ ॥ तुम्हहीआदिअंतिसुतितुम्हही
तुम्हकरताभियलोकमंझा ॥ ३ ॥ कुछनाहीपै
कहाहोतहै ॥ दादूवलिपावेदीदार ॥ ४ ॥ १ ॥ मा
कमिहरवांनकरीम ॥ गुनहगारहरोजहरद
पनहराषिरहीम ॥ टे ॥ अवलिआषरिदं

थांघगादारा॥ तिंकूं कोइरनादी॥३॥ सोचैझूठनइ
कबहूं सतिनलागैकाई॥ दादूसाचासहजिसमान
फिरिझूठबिलाई॥४॥ साईकूंसाचपियारा॥ साचे
सुहावैदेषो॥ साचासिरजनहारा॥५॥ झूठजगत गारा
रघडीजे॥ झूठसबैफडिजाई॥ धणकेधांकंसारहै
॥ झूठनमोदिसमाई॥६॥ जसे घृतकों लेतातकों
॥ तातावाहततकीन्हो॥ तैतेततरहैगाभाई
झूठसबैजलिषीनां॥७॥ कनककसौटीआग
नेमुषदीजे॥ कपसबैजलिजाई॥ योतौकस
णीकाचरैगा॥ झूठसहैनदीजाई॥ योतौक
सणीसाचसहैगा॥ साचाकसिकसिलेवे॥ दा
दूदरसनसाचापावै॥ झूठेदरसनदेवे॥८॥ प
बातेंबाद्दिजादिगीसई॥ तुम्हजिनिजानहु
बातनियहुरीटि॥ जबलगअपनाआपनजाणै
तबलगकथणीकाची॥ आपाजाणिसांईकूं
जाणै तबकथणीसबसाची॥ करणीबिनाकै
तनहीपावै॥ कहैसुणैक्याहोई॥ जैसीकहैकरै
जौतैसी॥ पावैगाजनसोई॥९॥ बाततैंहीजेनिरम
लहोवै॥ तौकोइकौंकसिलीजे॥ सोनांअगनि
दहैदसबारा॥ तबयहुप्राणपतीजे॥ योहमजा
णीमनपतियांनां॥ करनीकठिनअपारा॥ दादू
तनकाआपाजारै॥ तौतिरतनलागैबारा॥१०॥
पद्यपटिबेद७

त॥ ९

ब्रषांनै

निग्याधीसाई

॥ निरबाहौ करताई ॥ २१ ॥ हरिमारगि मसतक
दीजै रे ॥ तब निकटि परमपद लीजिए ॥ टेक ॥ इस म
रणां माहै मरणां ॥ तिन पीछै पावन धरणां ॥ इब
आगे है इस महा होई ॥ पीछै सो चन करणां कोई ॥
॥ जप सूरा रिण कूं कै ॥ आपा पर तही बूझै ॥ सिर स
हित काज संवारे ॥ घणा घाव आपा डारै ॥ सती
सत गहि साचा बोले ॥ मन निहचल निमष न डो
लै ॥ वाके सोच पोच नहीं आवै ॥ जग देषत आप
३ जरावै ॥ इसि सिर सौं साटा कीजे ॥ तब अविनासी
पद लीजे ॥ ताका तब सिर स्याबति होवै ॥ जब दा
दू आपा षोवै ॥ २२ ॥ कूड़ा कलिजुग कस्या न जा
इ आंम सके ॥ निष्क है बनाइ ॥ टेक ॥ धन कौं निरध
न निरधन कौं धन ॥ नीति अनीति पुकारै ॥ निरमल
मैला मैला निरमल ॥ साध चोर करि मारै ॥ कंचन
कांच कांच कौं कंचन ॥ हीरा कंकर भाषै ॥ माणि
क मणियां मणियां माणिक ॥ साच कूठ करि नां
षै ॥ पारस पथर पथर पारस ॥ कांमधेन पसु गावै
॥ चंदन काठ काठ कूं चंदन ॥ असी बहुत बता
वै ॥ रस कौं अनरस अनरस कौं रस मीठा षारा क
है ॥ दादू कलिजुग ऐसा बरतै ॥ साचा बिरला कोई ॥
॥ २३ ॥ दादू मोहि भरोसा मोटा ॥ तारण तिरण सो
ई संगि मेरे ॥ कहा करै कलि षोटा ॥ टेक ॥ दौ लागी
दरीया तै न्यारी ॥ दरिया मंझि न जाई ॥ मछ कछ
रहैं जल जेते ॥ तिन कौं काल न षाई ॥ जब सुवै प
जर घर पाया ॥ बाजर सा बन मांही ॥ जिनका

नहीं॥ अमलबद बिसयार॥ गरक हुतियां सतारसा
हिब॥ दरदवंद हुकार॥ फरामोस नेकी बदी कर
दस॥ बुराई बदफेल॥ बक सिदतं आं जाब आषरि
॥ हुकम हाजिर सैल॥ नाव नेकर हाभरा जिक
पाक परवरदिगार॥ गुनह फिअक रिटे हुदाइ
तल बदरदीदार॥ ॥२॥ कौण आदमी कसी न बि
चारा॥ किसकों पूजो गरीब पिंजारा॥ टे॥ मैं जन
ऐक अनेक पसारा॥ जो जल भरिया अधिक अपा
रा॥ ॥ एक होइ ती कहि समझाऊं॥ अनेक अरू
झे क्यूं सुरझाऊं॥ ॥ मैं हौं तिबलस बल पैसारे
॥ करू करि पूजो बहुत पसारे॥ पाव हुकारों समझ
नैं हीं॥ दाइ देषु दसौं दिसि जांहीं॥ ॥३॥ जा बाहु
जि परा का ह सोवे॥ से विकरी माते सुष होवे॥ टे॥
जाथे जीव नासो ते बिसारा॥ पछिम जांना पंथ तम
वारा॥ मैं मेरा कछि बहुत सुलांना॥ अजहूं न चेते
इरि पयांना॥ ॥ सांई केरी सेवा नांहीं॥ फिरि फिरि
झूबे दरीया मांहीं॥ ओर न आवे पार न पावा॥ झूठा
जीवन बहुत सुनावा॥ मुलन राष्या लाहा न ली
या॥ कौडी बदले हीरा दीया॥ फिरि पछितांनां सं
बलु तांहीं॥ हारि चल्या क्यूं पावे सांई॥ ॥ इब सुष का
रणि फिरि दुष पावे॥ अजहूं न चेतै कहं डहि कावे
॥ दादू कहै सीष सुनि मेरी॥ करू करीम संभालि
सवेरी॥ ॥४॥ बारबार तन नहीं बावरे॥ काहे कों बा
हु

सिक हांको पावै रे॥ टे॥

कीन्हो। कनक रिचित्रबनावै रे। सो तन लेइ विषमे डा
रे कंचन छार मिलावै रे ॥२॥ तुम तजि जानै बकुरिया
इ रो। अबके जितिड हिकावै रे। तीनि लोक को पू
जी तेरी। ब्रन जिके तिसो आवै रे ॥२॥ जब लग घट मैं
सास बास रे। तब लग काहे न धावै रे। दास तन धा
रि नोच नली न्हो। सो आरोपि पछितावै रे ॥४॥ ५। राम
बिसार्यौ रे जग नाथ। हीरा हार्यो देषतही। को
डी की न्हौ हाथ। टे॥ काच कुलाके चन करि जानै
। न लैरे बमपास। सांचे सो पलपर चानाही क
रिका चेकी आस ॥१॥ बिषता कौ अमन तक रिजानै
सो संगानआवै साथ। सैबलके फूलनिपरिफल्यो
चकोअबकी घात। हरिनजि रेमनसहजिपिछा
नी। रेसुन्यै साची बात। दादू रे अबषोक रि लीजे
आवै घटै दिन जात ॥२॥ ६। मन च चलमैरो क्यो
नमानै। दसो दस दौरावै रे। आवत जानबार नही
लागै। बहुत भांति बौरावै रे। टे॥ बेर बेर बरज त
या मनकौ। कंचितसीष नमानै रे। ऐसे निकसि
जात या तन थै। जैसें जीव न जानै रे ॥१॥ कोटिक ज
तन करत या मनको। निहचल निमष न होइ रे
चंचल चपल चहूं दिसि भरमै। कहा करै जन को
इ रे ॥ सदा सोच रहत घट भीतरि। मन थिर कैसे
कीजे रे। सहजै सहज साध की संगति। दादू हरि
भजि लीजे रे ॥३॥ ७। इन को मन निघर घालै रे। प्रीतिल
गाइ प्राण सब स्यो षे। बिनपावक जियजालै रे। टे॥
अधि लगाइ मारसब लेवे। इन थै को इं बाचे रे। प्र

ऊसंसारजीतिमत्रलीया॥मिलनतनदेइसोतेरे॥
हेतलगा२सबैधनलेवै॥बाकीकछूनराषेरेमां
षणमांहिसोधिसबलेवै॥छाछिछियाकरिनाषे
२२जेजलजातिजुगतिसोंत्यागै॥तिनकोतिजप
दपरसेरे॥कालनषा२मरैनहीकबहूं॥दा२शति
नकौदसेरे॥ च॥जितिमतछाडेबावरे॥सुरिक
हैपूरा॥सिरजेकीसबचिंत हैदेबैकौंसूरा॥टे
॥गरभवासजितिराषिया॥पावकथैन्यारा॥जुग
तिजतनकरिसीचिया॥देअनअक्षारा॥कुंजक
हांधरिसचैरे॥तहांकोरषवारा॥हेमहरतजिति
राषिया॥सोषसमहमारा२॥जलजथजीवजितैर,
हे॥सोसबकोपूरे॥सपटमिलासेंदेतहे॥काहेन
रफूरे॥जितियऊमारतठाइया॥निरवाहैसोरै
॥दा२छिननबिसारिये॥ताथेंजीवनहोइ॥टे॥
सोईरामसेमालिजियरा॥आणण्यंडजितिदीन्हे
रे॥थमरक्षापउपावगहारा॥मांहिचित्रजिनि
कीन्हांरे॥टेलचंदसूरजिनिकीयेचिराक्या॥चरनों
बिनांचलावैरे॥इकसीतलइकतातडोलै॥अ
नतकलादिषलावैरे॥॥धरतीधरतबरतबऊवां
नीरषिलैसप्तसमंदारे॥जलथलजीवसंभाल
नहारा॥सूरिरत्यासबसंगारेर॥प्रगटपवनपां
नीजितिकीन्हो॥बरिषावैबऊधारारे॥अठारभा
रबिरषबऊबिधिके॥ दि
पेचततजि॥
गारे॥तिहचलरांमजपी

जागारे॥१०॥जबमैंरहतेकीरहजानी॥काल
कायाकेनिकटिनआवै॥पावतहैसुषआनी॥टे॥
॥सोगसंतापनैननहीदेषौ॥रागदोषनहीआ
वे॥जागतहैअसोरुचिमेरा॥सुपिनैसोइदिषावे
॥भरमकरममोहनहीममिता॥बादबिवाद
नजानी॥मोहनसोमेराबनिआई॥रमतासोइ
बषानी॥निसबासुरिमोहननितिमेरा॥चरनक
वलमनमानै॥सोइनिधिनिरषिदेषिसचुपाकै॥
दादूऔरनजानै॥११॥जबमैंसाचेकीसुधिपाई
॥तबथैअंगिऔरनहीआवै॥देषनहीसुष
दाई॥टे॥तादिनथैतनितापनआवै॥सुषउ
बसनिनजाकै॥पावनपीवपरसिपदलीन्हा॥
आनंदनिरगुनगाकै॥सबसोसंगनहीउनिमे
रे॥अरसपरसकुछनाही॥एकअनंतसोइसंगि
मेरे॥निरषनहीनिजमाही॥तनमनमांहिसोधि
सोलीन्हा॥निरषनहीनिजसारा॥सोइसंगस
वेसुषदाई॥दादूलागाहमारा॥१२॥हरिबिन
निहचलकहीनदेषो॥तीनिलोकफिरिसोअ
॥जेदीसेसोबिनसिजाइगा॥ऐसागुरिपरमाध
रे॥टे॥धरतीगगनपवनअरूपांणी॥चंदसूर
थिरनाहीरे॥रैनिदिवसरहतनहीदीसे॥एक
रहैकलिमांहीरे॥पीरपैकंबरसेषमसाइक
॥सिद्धबिरंचसबदेवारे॥कलिआयासोकोइ
रहसी॥रहसीअलषअलेषभवारे॥सबालाषमे
परबत॥समदनरहसीपारारे॥नहीनिव

कछुनहींदीसैरहसीअकलसरीरारे॥१॥अविना
सीओरऐकरहैगा॥जितियहसबकुछकीन्हारे
॥दादूजातासबदेषो।एकरहतसोचीन्हारे॥१३॥
मूलसींचिबधैज्यूंबेला॥सोततत्वरहैअकेला
॥टेकदेवीदेषतफिरैज्यूंभूलै।षाइहलाहलबि
षकोफूलै।सुषकौचाहैपड़ैगलिफासी।देषतहीं
रहापैजासी॥१॥केपूजारचिध्याननगावै।देवल
देषैषबरिनपावै।तोरैपातीजुगतिनजानी।इहि
भ्रमिभूलिरहैअभिमानी॥२॥तीरथव्रतनपूजैआ
सा।बनषंडिजाइरहैउदासा।योंतपकरिकरि
देहजलावै।भरमतफोलैजन्मगवावै॥३॥सतगुर
मिलैनसंसाजाइ।ऐबंधनसबदेइछुटाइ।तबदा
दूपरमगतिपावै।सोनिजमूरतिमांहिलषावै॥४॥
१४॥सोईसाधसिरोमणी।गोबिंदगुनगावै।रामभ
जैबिषियातजै।आपानजनावै॥टेक॥मिथ्यामुष
बोलैनहीं।परनिंद्यानांहीं।औगुणछाडैगुण
गहै।मनहरिपदमांहीं॥१॥निरवैरीसबआतमा
परआतमजानै।सुषदाईसमितागहै।आपान
हीआनै॥२॥आपापरअंतरनहीं।निर्मलनिजसा
रा।सतवादीसाचाकहै।लैलीनबिचारा॥३॥निरभै
भजिन्यारारहै।काहूलिपतनहोई।दादूसबसं
सारमें।ऐसाजनकोई॥४॥१५॥राममिल्यायोंजांनि
ये।जोकालनव्यापै।जुरामरणताकोंनहीं।अरु

ब

सबजगसूकै

मोजनरहै ॥ अरुजु

रुकै ॥ टे० ॥ नाटनदे सोजनरहै ॥ कछुकाईनलागै

धिजाबो ॥ अनरजामीरहै ॥ अरुसुनिविचारे ॥ दा०

कामसदहै सहजेरहै ॥ १६ ॥ इन

नासवकीलहै ॥ अरुकनकनहारे ॥ उत्तियादोहनदीनरमैतरि

ब्रातविसंगमनमानै ॥ टे० ॥ पूरणब्रह्मतेदे

एकएककरिपापकोजानै ॥ हैपैसानै ॥ दोइहै

ऐसवदिनमैं ॥ अमनजीयकाहै ॥ किसानै

याल दीनलामनमैं ॥ अरिपवनिकोकरै ॥ हरिभजेकेवल

आपापरसमसमतनदवीन्हें ॥ संकुटम

६ जसमानै ॥ दा० ॥ रसोईसजिघरि आनै ॥ औरते

है जीवकेमानै ॥ १७ ॥ ऐसमनमेरामवसो ॥ पंचपं

सोनाहीपावविनपलहिनजीवसो ॥ तहांध्यान

माही ॥ टे० ॥ दरिदैपिमुखजावसो ॥ नाथेमनलेजा

ही ॥ अजरावरिमनवधिया ॥ तहांरसपाही ॥ आ

तेजपुजफलपाइया ॥ पावपावअघाही ॥ दा०

वेलिमेमनकरै ॥ जहांनटिममाही ॥ १८ ॥ चरन

तहांपाइया ॥ हिनलाही ॥ मकावि

वानया ॥ दोरेहिमानवै ॥ टे० ॥ ना

रवद ॥ नामलिलानवै

है जननकै

नहै ॥ इथाय

जनरवा

थांईंग्रासांनवे३॥१९॥ग्रासगरमतारांमदा॥हरि
इथांग्रविगतिग्रापवे॥कायाकोसी वंजरा॥ह
रिइथांपूजाजापवे॥टेक महादेवमुनिदेवते॥सि
धेंदा बिश्रामवे॥सुरगसुर्षसगाइ लगे॥हरिइथें
ग्रातमरांमवे॥१ ग्रमीसरोवरग्रातमा॥इथांई
ग्राधरवे॥ग्रमरथांनग्रविगतरहै॥हरिइथेंसि
रजनहारवे॥२॥सबकुछइथेंग्रांववे॥इथांपरमांन
दवे॥दाइग्रापंहूरिकरि॥हरिइथांईंग्रानंदवे॥
३॥२०॥ग्राजिपरभाति मिलैहैलाल॥दिलकी बिथा
पीडसबन्यारी॥मिटगोहैजीवकोकाल॥टेक
देषतैंनैंनसंतोषभयोहै॥इहैतुम्हारोष्याल॥दाइ
जनसौंहिलमिलिरहिबो॥तुम्हहोदीनदयाल
॥२१॥ ग्रथराग सूहो॥ ॥तुम्ह बिचिग्रंत
रजिनिपरै॥माधवे भावैतनधनलेऊ॥भावैसर
गनरककरसातऊ॥भावैकरवतदेऊ॥टेक भावै
बिपतिदेहदुषसंकुट॥भावैसंपतिसुषसरीर
॥भावैघरबनरावरंककरिमाधव॥भावैसागर
तीरमाधव१॥भावैबंधमुकतिकरिमाधव॥भा
वैत्रिभुवनसार॥भावैसकलदोषधरि
वैसकलनिवारिमाधव२॥
माधव॥तूंजिनिदोवैहरिमाधव३॥
॥२
पनांकरिलीजै॥ ...

दादू गुरमुखि पाइए। सबकुछ कायामांहि ... को
यामांहै सबकुछ जोणि। कायामांहै लेकु पिछो
णि। कायामांहै बेकु बिसतार। कायामांहै नि
नपार। कायामांहै अगम अगाध। कायामांहै
जेसाध। कायामांहै कछ्यान जाइ। कायामांहै करे
लोजाइ। कायामांहै साधन सार। कायामांहै सार
बिचार। कायामांहै अमृत बाणी। कायामांहै पदनि
राप्राणी। कायामांहै बोले प्राणी। कायामांहै स
रबाणी। कायामांहै मूल मांहि रहै। कायाम
बकुछ लहै। कायामांहै निज निरधार। कायामांहै
है अपरपार। कायामांहै सेवा करै। कायामांहै
उर धरै। कायामांहै बास करि रहै निरंतर छो
दादू पाया आदि घर। सतगुरु दीया दिखाइ॥ कायामांहै करै बिचार
यामांहै अनत ने सार। कायामांहै लागै ध्यान
यामांहै उपजे ग्यान। कायामांहै आतम
यामांहै अमर अस्थान। कायामांहै क
कायामांहै कला अनेक। कायामांहै सा
क। कायामांहै लागै रंग। कायामांहै बं
कायामांहै सरवर तीर। कायामां
कीर। कायामांहै केकु वैन। काया मां
वैन। कायामांहै कवल प्रकास। कायाम
करबास। कायामांहै नाद कुरंग। काय
तिपतंग। कायामांहै चात्रिग मोर। का
रचकोर। कायामांहै प्रीति करि। का
... कायामांहै प्रेम रस। दादू गुरम

कायामांहैतारणहार।कायामांहैउतरेपार।काया
मांहैदूतरतारै।कायामांहैआपउबारै।कायामां
हैदूतरतिरै।कायामांहैहो दूजभिरै।कायामांहै
तिपजैष्याइ।कायामांहैरहैसमाइ।कायामांहैषु
लैकपाट।कायामांहिनिरंजनहाट।कायामांहै
हैदीदार।कायामांहैदेषणहार।कायामांहैराम
रंगिराते।कायामांहिप्रेमरसिमाते।कायामांहैत्र
बिलभरे।कायामांहैनेहचलरहे।कायामांहैजी
वैजीव।कायामांहैपायापीव।कायामांहैसदानं
नंद।कायामांहैपरमांनंद।कायामांहैकुसलहै
सोहमदेष्या आइ।दादूगुरमुषिपाइए।साधकं
हैसमझाइ।।७।।कायामांहैदेष्यानूर।कायामांहै
रह्यापूर।।कायामांहैपायातेज।कायामांहैसुंद
रसेज।कायामांहैपुंजप्रकास।कायामांहैसदा
उजास।कायामांहैझिलिमिलिसारा।कायामांहै
सबथेंन्यारा।कायामांहैजोतिअनंत।कायामांहै
।कायामांहैमेलैरास।कायामांहैबिबिधबिलास
।कायामांहैंजहिबाजे।कायामांहिनादधुनिसा
जे।कायामांहैसेजसुहाग।कायामांहैमोटेभाग
।कायामांहैमेरालचार।कायामांहैजैजैकार।।
कायाअगमअगाधहै।मांहैंतूरबजाइ।दादूरूप
गैटपीवमिल्या गुरमुषिरहैसमाइ।।८।।इतिकं
वाबेलीसंपूर्नः।शबकंस।।निरमलनांवनलीया
जाइ।जाकेभागबडेसोईफलषाइ।।टे।।मनमा
यामोहमदमाते   ९

बेघिनिकारमांनिमनमांही सकलमनोरथसुखदर्षे
॥ कामक्रोधएककालकलपना मैंमेंमेरीभ्रतिमें
कार तृस्नाविपतिनमानैंकबहू सदाकुसंगापेच
विकार॥ अनेकजोधरहैंरिपवाले उलमहरिफ
लज्ञामअधार जाकेसामावडेसोइम तेपावें
दाहदातासिरजनहार॥१॥ तूघरिआवेनेमा
केरहोजाऊंवारणैताके रे॥टे॥ रेतिदरस
मूकेनिरखेताजाए बहतोयथईघरिआवेवाल्हा
आकुलथाए॥१॥ तिलतिलजोतोताकीबाटडी
जाऊं॥ एगीरआसूठेवाल्हा॥ मुषडौधीके॥ता
कीदयाकरीघरिआवेरेवाल्हा॥ दाहूलौलाको
केरे॥ सकरिटाला॥२॥ मोहनउमदारघनूति
वारि॥ मोहसेतावेबारबार॥टे॥ कामकविलघ
रहेमांहि॥ ताथैंगमेनध्यानदोकूदेनांहि॥ गति
मतिमोहतविकलमोर॥ ताथैंचीलिनआवेनाव
नोर॥ पांचोंइंदरदहंपूरि॥ ताथैंसहजंसी ल
नरहेहरि॥ सुधिबुधिमेरीगाइसाजि॥ ताथैंतुम
सरहोमहाराजि॥२॥ क्रोधनकमहंतजेसंग॥
चेमावलजनकाहोइमेरा॥ समकितकाइम
ऊरि॥ ताथैंचरनबिसुमनए श्रीमुरारि॥२॥ क्री
जोमोकरिसहाइ॥ तेरोदीनउधिलनयोज
जाइ॥ त्राहित्राहिप्रभुतूदयाल॥ कहेदाहृदे
रिसभार॥३॥ मेरमोहनमूरतिराविमो
सवासुरिगुनरमोतोहि॥टे॥ मनमीनदो
तातकिनामोजलपेजाइ॥

संतीमातोअपार। कामअंधगजलहैनसार॥
मनमततेपापाचकिपरै। अनिनदैठेउरजरै॥ मन
मगाउरसुनैनाद। प्राणतजेयौनाइवाद॥ मन
मक्षकरजेमैलुबधिबास। कदलबंधावेहोस्या
सा। मनसा बाचासरननोर। दाइकोरागीगोबिं
दमोरह। धा। बहुरिनकीजेकपटकाम। हृदैजा
पिएरामनामटे। हरिपाछेनहीकछुगाम। पिव
बिनषडभडगामगामा। तुम्हराषकुजियराअप
नीमाम। अनतजिनिजाहुरकुबिस्राम। कपट
कामनहीकीजेहाम। रकुचरनकवलकउरामं
नामजबअंतरजामीरहैजामं। तबअषेपदजन
दाइपामं॥४॥ तहांषेलौपीवसौनितहीफाग।
देषिसषीमेरेभाग। टे॥ तहांदिनदिनअतिअ
नंदहोइ। प्रेमपिलावैआपमोइ॥ संगिपनसेतीर
मैराम। तहांपूजाअरचाचरनपास॥ तहांबच
नअमोलिकसबहिसार। तहांबरनेलीलाअति
अपार। उमंगिदेइतबमेरेमाग। तिहितरवरफ
लअमररलागा। अलषदेवकोइजानैभेव॥
तहांलषदेवकीकीजेसेवं। दाइबलिबलिबा
रबार। तहांआपनिरंजननिराधार॥६॥ मोहि
नमानीसहजिसमाना॥ कोइजानैसाधसुजा
ना॥ टेकै॥ कायाबाडीमाहैमाली। तहांरासबना
या। सेवगसौस्वामीषेलणकौ आपदयाकरि
आया॥१॥ बाहरिभीतरिसकलनिरंतरिसब
मैरह्यासमाहि॥

वे गत लखी न जाइ ॥२॥ ता माली की अकथ कहांणी ॥
कहत कही नहीं आवै ॥ अगम अगोचर करत अनं
दा ॥ दादू ये जस गावै ॥३॥३०॥ मन मोहन मेरे मन हीं मां
हिं ॥ कीजै सेवा अति तहां ॥ टे० ॥ तहां पायो देव नि
रंजनां ॥ परगट भये हरि ऐत नां ॥ नैन निरखि देखौं अ
घाइ ॥ प्रगट्यो है हरि मेरे माइ ॥१॥ मोहि करि नैन
न की सैन दे ॥ प्राण मूसि हरि मोर ले ॥२॥ तब उप
जै मो कौं इहै बांनि ॥ निज निरषत हौं सारंग प्रान
॥३॥ अंकुर आदै प्रगट्यो सोइ ॥ बैन बांन तां थैं ला
गे मोहि ॥ सरयौं दादू रह्यौ ज्याइ ॥ हरि चरणां दिखा
वै आप आइ ॥४॥३१॥ टै मतिवाले पचौं प्रेम पूरि ॥ निम
ष न इत उत जांहि दूरि ॥ टे० ॥ हरि रस माते दया दी
न ॥ राम रमत कै रहे लीन ॥ उलटि अपूठे भये थीर
॥ अमृत धारा पीवहि नीर ॥१॥ सहज समाधि तजि
विकार ॥ अविनासी रस पीवहि सार ॥ थकित भये
मिलि महल मांहि ॥ मनसा वाचा आन नांहि ॥२॥ म
न मतिवाला राम रंग ॥ मिलि आसण बैठे एक सं
ग ॥ सुस्थिर दादू एक अंग ॥ प्राणनाथ तहां प
रमानंद ॥३॥३२॥ इति राग बसंत संपूर्ण: राग भैरूं ॥
सतगुर चरणां मस्तक धरणां ॥ राम नाम कहि दु
स्तर तिरणां ॥ टे० ॥ अठ सिधि नव निधि सहजैं पावै
॥ अमर अभै पद सुख मैं आवै ॥१॥ भगति मुकति
बैकुंठा जाइ ॥ अमर लोक फल लेवै आइ ॥२॥ परम
पदारथ मंगल चार ॥ साहिब के सब भरे भंडार
॥३॥ नूर तेज है जोति अपार ॥ दादू राता सिरजनहार ॥

॥तनहीरांममनहीरांम॥रांमरिदैरमिराषीले॥
मनसारांमसकलपरिपूरण॥सहजसदारसचा
षीले॥टेक॥नैनारांमबैनारांम॥रसनारांमसंभारी
ले॥श्रवनांसुनमुषरांम॥रमित्यांरांमबिचारीले॥१
॥सासैरांमसुरतैरांम॥सबदैरांमसमाईले॥अंत
रिरांमनिरंतरिरांम॥आतमरांमधाईले॥२॥सरबैरां
मसगैरांम॥रांमनांमल्यौलाईले॥बाहरिरांमनांतरि
रांम॥दादूगोबिंदगाईले॥३॥२॥ऐसीसुरतिरांमल्यौ
लाइ॥हरिहिरदैजिनिबीसरिजाइ॥टेक॥छिनछि
नमातसंभारेपूत॥बिंदराषैजोगीअवधूत॥त्रिया
कुरूपरूपकौरहै॥नटणीनिरषिबंसबृतचढै॥
कछिबदृष्टैधरैधियांन॥चात्रिगनीरप्रेमकीबांनि
॥कुंजीकुरलिसंभारैसोइ॥भंवराध्यांनकीटकौंहो
इ॥श्रवणौसबदज्यूंसुनैकुरंग॥जोतिपतंगनमो
रैअंग॥जलबिनमीनतलपिज्यूंमरै॥दादूसेवगऐ
सैकरै॥३॥उं॥गुणरांमरहैल्यौलाइ॥सहजैसहज
मिलैहरिजाइ॥टेक॥ज्यौंजलब्यापिलिपैनहीकब
हूं॥करमनकोईलागैआइ॥तौल्यूंतापजरैनहीजि
यरा॥सोपदपरसैसहजसुभाइ॥जनमजुराजोनि
नहीआवै॥मायामोहनलागैताहि॥पंचौपीडप्रां
णनहीव्यापै॥सकलसोधिसबरहैउपाइ॥२॥संकु
टसंसानरकनतैनहूं॥ताकौंकबहूंकालनषाइ
॥कंपनकाईभ्रमभागै॥सबबिधिऐसीएकल
गाइ॥सहजसमाधिगहीजे.
सोईआहि॥नंगीलोइकीटनोंई

धंनि
कि दिखाइ ३ ॥ धंन्य धंन्य तूं धणी तुम्ह सौं मेरा
साइ घणी ॥ टे ॥ धंनि धंनि तूं तारे जगदीस सुरन
र मुनिजन सेवैं ईस ॥ धंनि धंनि तूं केवल राम से
स सहस मुष लै हरि नाम ॥ धंनि धंनि तूं सिरजन
हार तेरा कोई न पावै पार ॥ धंनि धंनि तूं निरंजन
देव दादू तेरा लषै न भेव ॥ ५ ॥ का जाणौं मोहि क
लेकरसी तन हिताय मोहि छिन न बिसरसी ॥ टे ॥
आगम मोपैं जाण्यूं न जाइ ॥ इहै बिसासणि जियरे म
हि ॥ मैं नहीं जाणौं क्या सिरि होइ ॥ तापैं जियरा ड
रपै रोइ ॥ काहू पै लेक चूक रै ॥ तापैं मरया जीव
डरै ॥ दादू न जाणौं कैसैं कहै ॥ तुम्ह सरणागति
आइ रहै ॥ ६ ॥ का जाणौं राम को गति मेरी ॥ मैं बि
बई मन मान दी फेरी ॥ टे ॥ जे मन गैसो ईदी रूं
जाता देषि फिरि नहीं लीन्हा ॥ देवा हूं दरसी छिकप
सारे पंचौं पकरि पटकि नहीं मारे ॥ इन बातनि घ
ट मेरे बिकारा ॥ त्रिष्णा तेज मोह नहीं हारा ॥ इन
हिं लागि मैं सब न जाणी ॥ कहि दादू सुणि करम
कहाणी ॥ ७ ॥ डरिये रे डरिये ॥ तापैं राम नाम चित
धरिये ॥ टे ॥ जिनि ऐपं चपसारे ॥ मारे रे ले मारे ॥ क
ब्रि बजू करि लीए ॥ जीयरे ते जाए ॥ मैंगी को टस
मानारे ॥ आनारे यहूं आनारे ॥ आजु सिघ
हिरेरे ॥ दादू दरसन लहिरे ॥ ८ ॥ तहां मुक
मीनकी कौन चलावै ॥ जाको अजहूं मुनि म
न पावै ॥ टे ॥ सिव बिरंच नारद जस गावै ॥ कौन
न करि निकटि बुलावै ॥ देवा समकत ते तैसौ

सिरहैहरमारगटेकरजोरि॥२॥सिधसाधिकरहे
ल्यो लाइ॥अजहूं मोटे महपुन पाइ॥३॥सबथैंनी
चमैं नावन जानां॥कहि दादू कत मिलै सयानां॥
॥२॥ तुम्ह बिन कहि क्यूं जीवन मेरा॥अजहूं नर
देष्या दरसन तेरा॥टेक॥दादू दयाल दीन के दा
ता॥तुम्ह पति पूरण सब बिधि साचा॥जो तुम्ह क
रो सोई तुम्ह छाजे॥अपणे जन कौं काहे न निवा
जे॥१॥अकरण करण ऐसैं अब कीजै॥अपनो जा
नि करि दरसन दीजे॥२॥दादू कहै सुनहु हरि साई
॥दरसन दीजै मिलौ गुसांई॥३॥१०॥ कागरे करके
परि बोले॥षड़मास अरू लगहीं डोले॥टेक॥जात
न कौं रचि त्रिषधिक सवारा॥सो तन लै माटी मैं डारा
॥१॥जालन देषि अधिक नर फूले॥सो तन गाडि च
ल्या रे मूले॥२॥जालन देषि मन मैं गरबानां॥मिलि
गया माटी तजि अभिमानां॥३॥दादू तन की कहा
बडाई॥निमष मांहि माटी मिलि जाई॥४॥११॥ज
पि गोबिंद बिसरि जिनि जाइ॥जनम सुफल करि
लिसदिन ध्याइ॥टेक॥हरि सुमिरयां सूं हेत लगा
इ॥भजन प्रेम जस गोबिंद गाइ॥मनिषा देह मुक
ति का द्वारा॥राम सुमरि जग सिरजनहारा॥जब
लग बिषम ब्याधि नहीं आई॥जब लग काल काया
नहीं षाई॥जब लग सबद पलटि नहीं जाई॥तब
लग सेवा करि राम राई॥१॥औसरि रांम कहसि न
हीं लोई॥जनम गया न बहुकै है न कोई॥जब लग
जीवै तब लग सोई॥पीछे फिरि पछितावा होई

न त्रिजा गोविंद ॥ सकल देवपति सेवा करै ॥ मुनिजन
लेक एक चित धरै ॥ चित्र बिचित्र लिखै दरबार ॥ धरमरा
द गावै गुण सार ॥ रिधि सिधि दासी आगै रहै ॥ चारि
पदारथ जी जी कहै ॥ सकल सिध रहै ल्यौ लाइ ॥ सब
परिपूरण ऐसो राइ ॥ मलकमजीता मरे भंडार
ता घरि बिरतै सब संसार ॥ पूर दिवान स हुज सब
है सदा निरंजन ऐसो है ॥ नारद गाइन गुण गोबिंद ॥ गा
सारद करै सब छंद ॥ नटवर नाचै कला अनेक
आपन देखै चरित अलेख ॥ सकल साध बाजै नीसा
न जै जै कार न मेटै आन ॥ मालनि पडु पक्षगरहमा
र आपण दाता सिरजनहार ॥ ऐसो राजा सोइ ख्या
हि चौदह भुवन में रह्यौ समाइ ॥ दादू ताकी सेवा क
रे जिनि यहु रचिले अक्षर धरै ॥४॥१९॥ जब यहु मैं मैं
मेरी जाइ ॥ तब देखत बेगि मिलै राम राइ ॥टे॥ मैं मैं मेरी
तब लगाइ ॥१॥ मैं मैं मेटि मिलै भरपूर ॥ मैं मैं मेरा तब
लगा नाहि ॥ मैं मैं मेटि मिलै मन माहि ॥ मैं मैं मेरा तप
वे कोइ ॥ मैं मैं मेटि मिलै जन सोइ ॥ दाइ मैं मैं मेरा भ
हि तब लू जागि राम सौं भेटि ॥४॥२०॥ नाही रंमता
हीरे सतराम सब मा हैरे ॥टे॥ नाही धरणि अका
सारे ॥ नाही पवन प्रकासा रे ॥ नाही रवि ससि तारा
नहीं पावक परजारा रे ॥ नाही पंच सारा रे ॥ ना
सब संसारा रे ॥ नहीं काया जीव हमारा रे ॥ नहीं बा
केतिग हारा रे ॥ नाही तरवर छाया रे ॥ नहीं पंखी
माया रे ॥ नाही गिरवर बासा रे ॥ नाही समंद नि
सारे ॥ नाही जलथल खंडा रे ॥ नाही सब ब्रह्मं

३ नांही आदि अनंतारे। दादू राम रहंतारे ४२१ अ
लह कलो साधै राम कहो॥ डालत जो सब मूल गहो
टे॥ अलेह राम कहि कर रहो॥ झूठे मार पाकड़ाव
हो॥ साधु संगति तौ निबहो। आइ घरे सो सीस महो
१ काया कवल दिल लाइ रहो॥ अलष अलादी दरल
हो॥ सतगुर की सुणि सीष अहो। दादू पऊचै पार पहो
४॥२५॥ स्य। हदू तुरक न जांणौ दोइ॥ साँई सबनि का
सोई है रे॥ और न दूजा देषौं कोइ॥ टेक॥ कीट पतंग
सबै जोनि मैं॥ जल थल संगि समानां सोइ॥ पीर पैगं
बर देवा दांणव॥ मीर मलिक मुनि जन कौं मोहि॥ क
रता है रे सोई चीन्हौ॥ जिनि वै क्रोध करै रे कोइ॥ जैसें
आरसी मंजन कीजे राम रहीम देही तन धोइ॥ साँई
केरी सेवा कीजे॥ पायौ धन काहे कौं षोइ॥ दादू रे जन ह
रि जपि लीजे॥ जनमि जनमि जे सुरजन होइ॥२॥३३॥
कौ स्वामी को सेषक कहै॥ इस भ्रम निरै कोमरम न कोई
लहै॥ टेक॥ कोई रांम कोई अलह सुनांवै॥ अलप अलह
राम कहाँ भेद न पावै॥ कोई हिंदू कोई तुरक करि मां
नै॥ हिंदू तुरक की षबरि न जानै॥ यहु सब कर
णी दून्यूं बेद॥ समझि परी तब पाया भेद॥ दादू दे
षै आतम एक॥ कहिबा सुनिबा अनंत अनेक॥ २४
॥ नीदत है सब लोक बिचारा॥ हम कौं भावे रांम पि
यारा॥ टेक॥ निरसं सै निरदोष लगावे॥ ता पैं मौ कौं
अचिरज आवे॥ उ बिधि दे पष रहतां जे। नासति
क है गणरे पे॥ निरबैरी निहकाम
रि देतव ऊंत स्यांप गाम ॥

न ॥ तासनिक दतकरतत्रतिमान ॥ न्येग्यांग्रसुति
कैतोले ॥ तासकैदैंग्रपवादैबोले ॥ दादूतिंच्या
ताकौमावे ॥ जाकै टदै राम न आवै ॥ ४ ॥ रूपमाङ्गौ
सूजे हौंग्रापौ ॥ ताकौ छैतूनैप्याये ॥ ट ॥ अबजी
वनोतूदातार ॥ तेसिरज्यानेतूप्रतपाल ॥ ततधत
ताकौतेदीधी ॥ दौलाकौनैतैकीधी ॥ सडवेंना
कौसाचौए ॥ मैनेमाकौकूवेतै दादूनेमति
ओरत आवे ॥ तैकरतानेतूहीजुमावै ॥ २६ ॥
ओसाओधराम पियारा ॥ प्राणपिंड थैरहैति
मारा ॥ ट ॥ जबलगकायातबलगमायारहैति
रंतर ओधराया ॥ अठसिधिताईनौ निधिआई
तिकटिनजाईरामउदाई ॥ अमरआनेपदबे
कुंठबास ॥ मायामारहेत्रदास ॥ माईमेबासबदि
बलावे ॥ दादूदजाईछिनआवे ॥ २७ ॥ तूसाहिब
मैसेवकतेरा ॥ भावेसिरदेसूलीमेरा ॥ ट ॥ भावेच
२ ब तै सिरछरिसारि ॥ भावेलेकरिंग्रदतिमां
र ॥ भावेचकडिसिअगिनलगाई ॥ भावेपिव
गगननिराई ॥ भावेदरियामांहिबहाई ॥ भावे
कनककसौटीदेई ॥ दादूसेवगकसिकसिले
ड ॥ २८ ॥ कामक्रोधनआवैमेरै ॥ तायेतंमध
पायानेरै ॥ ट ॥ मरमकरमजारिसबदीना ॥ रम
रामसबनिमेचीन्हा ॥ उबिमडरमतिहरिभाव
हैरामरमतसाचीमनिआई ॥ चैमध्यम
कोनाही देखौरामसबनि ॥ दा
सिंपेमोई ॥ मे

हाजिरादजूरसाई॥हैहरिनेडाइहरिनांही।टेक
मनांमेहिमहलमेपावे॥कादेषोजणइहरिजावे॥
॥दरसनहोइगुसाईसबमाई।तापैसंयांइहरिनजा
इ॥३ईहरिदरोगनहोइ॥मालिकमनमेदेषेसो
ईअरिरिपैचसोक्षिसबमारे॥दाइदेषैनिकटिबि
चारै॥४॥३०॥रांमरसमतैदेषैनहीकोई॥जोदेषैसोपं
वनहोई।टेक।बाहरिभीतरिनेडानहरि॥ख्वांमीसब
लरह्यासरपूर॥जहांदेषौतहांहरसरनांहि॥सबघ
टिरांमसमांनांमांहि॥जहांजांतंतहांसोईसाथ॥पू
रिरह्याहरित्रिभुवननाथ॥दाइहहरिदेषैसुषहोइ
॥निसदिननिरंषादीजेसोइ॥३१॥मनपवनलेउ
नमनिरहै।आगमनिगममूलसोलहै।टेकपंचबाइ
जैसहजिसमावै।ससिहरकेघरिआणैसूर।सीतल
सदामिलैसुषदाई।अनहदसबदबजावैतूर।बंक
नालिसदारसपीवै॥तबयहुमनवांकहीनजाइ॥
बिगसैकवलप्रेमजबउपजै।ब्रह्मजीवकीकरैस
हाइ॥बैसिगुफामेजोतिबिचारै।तबतीहिसूकैत्रि
भुवनराइ।अंतरिआपमिलैअबिनासी।पदआनं
दकालनहींषाइ॥जामणमरणजाइभौनाजे॥
अवरणकेघरिबिरणसमाइ।दादूजाइमिलैजग
जीवन।तबयहुआवागमनबिलाइ॥३२॥जीवनि
मरीमेरेआतमरांम॥भागबडेपायोनिजधांम।टे
क।सबदअनाहदउपजेजहां।सुषमनरंगलगावै
तहां॥तहांरंगलागोनिरमलहोइ।
तेसोइ॥सरवरतहांहंसारहै।

षलहै सुषदाइ कौतैल कु जोइ ॥ सूतौ मनि अतिथो
नंद होइ ॥ सोहै सासरनागति जाइ ॥ सुद रितहांपष
लैपाइ ॥ पाबै प्रेम तनोकरनीर ॥ बैठै तहां जगतगु
रपीर ॥ तहां साद प्रेमकौ पूजा होइ ॥ जा परिकृपा
जानैसोइ ॥ कृपाकरी हरि दिइउ संग ॥ तजति पायौति
रसैसंग ॥ तबहंसा मनि आनंद होइ ॥ बसत अगोच
र लषैसोइ ॥ जाकौ हरी लषावै आप ॥ ताहि नलि
पै पुन्यं न पाप ॥ तहां अनहद बाजे अतुल षेल दी
पक जलै बाति बिन तेल ॥ अषंड जोति तहां भयो प्र
कास ॥ फाग बसंत जु बारह मास ॥ त्रिय अस्थान ति
रति निरधार ॥ तहां अनु बैठै ब्रह्म अपसार ॥ नैनकुन
षौतौ सुष होइ ॥ ताहि पुरिसकौ लषै न कोइ ॥ गै
साहै हरिदास दयाल ॥ सेवग कौ जानै प्रतिपाल ॥ च
तुर्हसा तहां चरन समांन ॥ तहां दादू पकुचै परिवा
न ॥ ३३ ॥ घटि घटि गोपी घटि घटि कान्ह ॥ घटि घटि
राम अमर असथान ॥ गंगा जमुना अंतर बेद सु
रसती नीर बहै परसेद ॥ कुंज केलि तहां परम बिला
स ॥ सब संगी मिलि षेलै रास ॥ तहां बिनि बैना बाजै तू
र ॥ बिगसै कवल चंद अरु सूर ॥ पूरण ब्रह्म परम
परकास ॥ तहां निज देषै दादूदास ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ रामतू मेरा हौं तो
रा ॥ पोइन परत निहोरा ॥ टेक ॥ एकै संगै बासा तुम
गकुर मैं दासा ॥ तन मन तुमकौ देबा ॥ तेज [illegible]
हम लेबा ॥ रस माहै रस होबा ॥ जोति सरूपी जो
बा ॥ ब्रह्म जीवका मेला ॥ दादू नूर अकेला ॥ १ ॥

मेरेपिवआवहोगुरमेरा॥मैंबालिकसेवगतेरा।टे
॥मातपितातंअरुचास्वांमी॥टे।वहमारेअंतरजा
मी॥अंसे चासजनअरुचंधू॥प्राणहमारेअं
अरुचाजिऊ॥अरुचाप्रीतमअरुचामेला॥अंसे
वीजीवनिआयअकेला॥अंसेचासाथीसंगसने
ही।रामबिनाउपदाइदेही॥४॥२॥वाल्हामाकापे
मपियालिर.सपीजिपे।रमिएरमतारांममाकावाल्हा
रे॥इदाकवलमैंराषिये॥उत्मपहजगांममाकवाल्हा
रे॥टेक॥वाल्हामाकासतगुरसरणेआणसरे॥साध
समागमथाइमाकावाल्हारे॥बांणीब्रह्मबषांणी
ये॥आनंदमांदिनजाइमाकावाल्हारे॥१॥वाल्हामा
काआतमअनंतैरूपजे॥तपजेब्रह्मगियांनमाका
वाल्हारे॥सुषसागरसेंझूलिये॥साचोएस्नांनमाका
वाल्हारे॥२॥वाल्हामाकामनबंधनसबछूटिये॥कर
मतलागैकोइमाकावाल्हारे॥जीवनिमुक्तिफल
पांमिये॥आनेअमरपदहोइमाकावाल्हारे॥३॥वा
ल्हामाकाअठसिधिनौनिधिआंगणे॥परमपदारथ
चारमाकावाल्हारे॥दाइजनदेषेनहीं॥रातौसिरज
नहारमाकावाल्हारे॥४॥३॥हमारेमनमाईरांमनांम
रंगरातौ॥पीवपीवकरे. पीवकौजांनै॥मगनरहे
रसिमांतौ॥टेक॥सदासीलसंतोषसुभावत॥चरन
कवलमनबाधौ॥इदामांहिजतनकरिराषौ॥मांनौ
रंकधनलाधौ॥प्रेमभगतिप्रीतिहरिजांनैं॥हरिसेवा
सुषदाई॥ ।६
काइ॥१॥संतोसदाहेतहरिलागो॥

॥४॥ मिहरवान मिहरवान आवबादपाकआत
म आदमनासान ॥टे॥ सीसप्रावहायकीधे नैन
की ऐकान सुषकीपांजीवदीया राजिक रहिमान
मादरपदरपरदपोस माईसुबहान ॥ सेसीस्है
दसतगीहै साहिबसुलतान ॥२॥ याकरीमयारहीम
दानादीवान पाकनूरहै हजूर दादूहैरान ॥३॥
॥ इति [illegible] ॥ तेरनातेंकीब
बलिजांउं ॥ जहांरहौ जसथोत ॥टे॥ तेरबैनोंकी
बलिहारी तेरनैनऊ रूपरिबारी ॥१॥ तेरीमूरतकी
बलिकीनी दारियारिहौदीतौ ॥२॥ मोमितनरतुम्ह
रा सुंदरजो जितजारा मोकोप्रानपियारा ॥३॥ तूंहै
पीवहमारा ॥ तेजतुम्हाराकहिए निरमलकाहे
नलहिए दादूबलिबलितेरे आवपीयातूमेरे ॥४॥
॥१॥ मेरेजियकीजानैजंनराइ तुम्हपैमैंवाकहा
उराइ ॥टे॥ जलबिनतजेंमैंजाइ जीयलपत तु
म्हबिनतैसेंहमबिहाइ ॥ तनमनव्याकुलहोइ
बिरहनी दरसपियासप्रांनजाइ ॥१॥ जैसेंचितच
कोरचंदमन ऐसेंमोहनहमहिआहि ॥ बिरह
अगनिदहतदादूकौ दरसनपरसनतनसिरा
॥२॥२॥ इति [illegible] ॥ अथ राग [illegible] ॥
॥ रंगलागोरेरामको सोरंगकदेनजाईरे ॥टे॥ सो
बिनासीरंगरूपनो रचीमचिलागोचोलोरे ॥ दादू
रंगसदासुहावणो ऐसोरंगअमोलोरे ॥१॥ [illegible]
कदेनऊतरै दिनदिनहोइसुरंगोरे ॥२॥ सांचो
नवोनिरनाराहि कदेनहोलाभंगोरे ॥ भाम बि
[illegible]

रूपाईए॥सबरंगमांहि सारोरे१॥अबरणकाकाव
रणोपै॥सोरंगसदजसरूपोरे॥बलिहारीउसरंग
की॥जनदाइदेखिअनूपोरे॥७॥१॥जागिरहौम
नरांमसौं॥अबअनतैं नहीं जाएरे॥अचलसौंथिर
कैरहौ॥सकेनचितडुलाएरे॥टेक॥ज्यूंधुनिमचंदति
रहै॥परमलरहैलुभाएरे॥त्यूंमनमेरारांमसौं॥अब
कीबेरअघाएरे१॥भवरनछाडैबासकौं॥कवल
हिरहौबंधाएरे॥त्यूंमनमेरारांमसौं॥बेधिरहौचि
त [illegible] लाएरे२॥जलबिनमीननजीवई॥बिछुरतही
मरिजाएरे॥त्यूंमनमेरारांमसौं॥ऐसीप्रीतिबनाएरे
॥ज्यूंचात्रिगजलकौंरटै॥पीवपीवकरतबिहाएरे
॥त्यूंमनमेरारांमसौं॥जनदाइदेतलगाएरे॥८॥२॥
मनमोहनहोकठिनबिरहकीपीर॥सुंदरदरस
दिषाइऐ॥टेक॥सुनऊनदीनदयाल॥तवमुषबै
नसुनाइऐ॥करयामैंकिरपाल॥सकलसिरोम
णआइऐ१॥मयजीवनिप्रांनअधार॥अबिनासी
उरलाइऐ॥इगहरिदरसनदेऊ॥दाइप्रेमबढाइ
ऐ२॥३॥कतहूरहेहोबदेस॥हरिनहींआएहो ज
नमसिरांनीजाइ॥पीवनहींपाएहो॥टेक॥बिपति
हमारीजाइ॥हरिसौंकोकहैतो॥तुम्हबिननाथ
अनाथ॥बिरहनिकूंरहैहो॥पीवकेबिरहबियो २
ग॥तनकीसुधिनहींहो१॥तलपितलपिजीवजाइ
म्रतककैरहीहो२॥उषितसईहमनाशि॥कनह
रिआवैहो॥तुम्हबिनप्रांणअधार॥ज. दू
हो३॥प्रगटऊदीनदयाल॥

र तनमनमयाकुलहोतहै दरसबिनआवोआइ
नैनरहेपथजोवतो रोवतरैनिबिहाइ बाल
नतैहीकबमिलै मोपैरह्योनजाइ छिनछिन
जेगिनतलहै हरिजीकबमिलिहैआइ अंतर
जामीजानिकरि मेरेतनकोतपतिबुझाइ तुम
सूरतासुषदेतहो हाहासुनिहौनदयाल चाहैनै
नउतावलेहाहाकब देषोंलाल चरनकवल
काबदेषिहौ सनमुषमिरजनहार साइमनिमदार
हो हाहोतबभागहमार जीवनिमेराजबमिलै
हाहोतबहीसुषहोइ तनमनमेंतूंहीबसै हाहा
कबदेषोंसोइ तनमनकोतूंहीलषै हाहासूर
तुरसुजान तुमदेषेबिनक्यूंरहौं हाहामोहिला
गोबोन बिनदेषेदुषपाइए हाहाइबबिलंबन
लाइ दाइदरसनकरनै हाहासुषदीजेआइ
१५ सुरिजनमेराघू कोदेपारलहाउ जेसुरिजनषु
रिआवे दिककहांगकहाउ ? तोबाजिमेकौ
चैननआवे एदुषकादककहांउ जोबाजिमेकोनि
ज्रनआवे अधिरातीरमराउ जेतूंमेकोसुआन
डेवे सोहोसासमहाउ एजनहाइसुरिजनआवै
दरगहसेवकराउ ६ एषूहिपएसबसागबिला
सन तेसकूबाजोछत्रसिंघासन टे जनतिहरा
तिसतनमावै नालपलिगकयाकीजे भाहिलो
इहिसिजसुषासरा मकोटेषरगटेजे वैकुंठ
कतिसरगक्याकीजे मकनसुबननहीआवै लो
छिपएसबमंडपछाजे जेघरिकंतुनआवे दाइ
मेबिरहीजनतेरा

मनदेषणदीजै।ऐसुणिसाहिबमेरा ३।७। अलाह्मा
मिकोंईमांना।सिसतदोजकदीनउनियां।चि कोरे
हिमांन।टेक।मीरमीरीपीरपीरी। फरेसतोफुरमांन
।आबआतसअरसकुरसी। दोदनीदीवांन। हर
उआलमषलकषांना।मोमिनांइसलाम। हज्याहा
जीकजाकाजी। षांनते सुलितांन।२।इलमअलम
मुलिकमालुम।हाजतेहैरांन।अजबयांराषबर
दारां सूरतेसुबहांन।३।अवलिआषरिएकतूंही
जिंदहैकुरबांन।आसिकोंदीदारदा।२।नूरका
नीसान।४।८।अलातेराजिकरफिकरकरतेहैं।
आसिकांमुसताकतेरे।तरसितरसिमरतेहैं।टेक।
मलकषसेदिमारंनेस।बैठेदिनभरतेहैं।१।दांइमद
रबारतेरे।गैरमहलडरतेहैं।तनसहीदमनसही
द।रातिदिवसजरतेहैं।ध्यांनतेराध्यांनतेरा।इसक
आगिजरतेहैं।२।जांनतेराजपंदतेरा।पांऊंसिरध
रतेहैं।दाहदीयांनतेरा।जरषरीदघरकेहैं।३।९।
मुषिबोलिस्यांमी अंतरजांमी।तेरासबदसुहावै
रांमजी।टेक।धेनचरावतबेननजावत।दरसदि
षावनकोंमतीं।बिरहिउपावनतपतिबुझावन
अंगिलगांवनमोंमिनी।सेगिछिलावनरासबनां
वनगोपीमोंचनमूधरा।२।तारणउरतितिवा
रण।संतसधारणरांमजी।३।१०।हाथदेहोरांम
।तुमसबपूरणकांम।हौंतौउरझिरह्यौसंसार।
टेक।अंधकूपगृहमैंपर्यो।मेरीकरउसेंभाल तु
म।बिनइजाकोनहीं।मेरेदीनांनाथदयाल।मा

ा कोसूं ऊ नही । दह दिसि माया जाल । काल पासि
कसि बंधियो । मेरो कोइ न छुडावण हार ॥ राम छि
मा छूटै नही । कीजै बहुत उपाइ । कोटि बंधाया सुरझै
न्ही । अधिक अलूझत जाइ ॥ दीन दुखी तुम देख
ना । मो उबसं जन राम । दादू कहै के हो पदै । तुम रस
ब पूरण काम ॥११॥ जिनि छाडे राम जिनि छाडे ह
म हि बिसारि जिनि छाडे । झिप जानत लागे बार जि
नि छाडे टेक ॥ माता कूं बालंत जे सुत अपराधी हो
इ । कबहू न छाडे जीव पै । जिनि दुख पावै सोइ ॥ गा
कुर दीनदयाल है । सेवग सदा अचेत । गुन औगुण ह
रि नां गिणो । अंतरि तासौं हेत ॥ अपराधी सुत सेवग
तुम हो दीनदयाल । हम थे औगुण होत है । तुम
पूरण प्रतिपाल ॥ जब मोहन प्राणी चले । तब देही
किहि काम । तुम जानत दादू कहै । अब जिनि छाडे
राम ॥१२॥ बिषम बार हरि अधार । करणा बहुनां
मी । भगति भाव बेगि आइ । भीड भंजन स्वामी टेक
अति अरसंत सभार । सुंदर सुखदाई । काम क्रोध क
लमसत । पापटो हरि आइ । पूरण प्रतिपालक दि
रा सुमस्यापै आवै । भरम करम मोह लागे । काढेन
छुडावै ॥ दीनदयाल होद कृपाल । अंतरजामी का
हिए । एक जीव अनेक लागे । कैसें उबस हिरे । पावे
पीव चरन सरन । जुगि जुगि तैं तारे । अनाथ नाथ
हू के हरिजी हमारे ॥१३॥ साजनियां तैं दनतारी
जे हम तोरैं महापराधी । तैं तूं मोरी रे टेक । प्रेम बिन
रस फीका लागे । मीठा मधुर न होई । सकल सि

मणिसबथैंनीका॥ कडवालागौमोई१॥जबलगप्रीति
प्रेमरसैंसांही॥ त्रिषाबिनांजल औसा॥ सबथैंसुंदरऐ
कअमीरसै॥होइहलाहलजैसा२॥सुंदरैसाईषरा॥
पियारा॥नेहनवांतितहोवे॥दादूमेरातबमनमानें
॥सेजसदासुषसोवै३॥ २४॥ काइमांकीरतिकरौल
॥तूंमोटोदातार॥सबतेंसिरजीहासाहिबजी॥तूंमो
टोकरतार॥टेक॥चौदहभवनसांतैंघडे॥घडतनं
लागीबार॥थापैउथपैतंध र्या॥धनिधनिसिरजन
हार१॥धरतीअंबरतैंधर्या॥पांणीपवनअपार॥चं
दसूरदीपकरच्या॥रैंणिदिवसबिसतार२॥ब्रह्मा
संकरतैंकीया॥बिसनदीयाअवतार॥सुरनरसाधू
सिरजिया॥करिलेजीवबिचार३॥आपनिरंजनह्वै
रह्यो॥काइमोंकीतिणहार॥दादूनिरगुणगुणाक
हैंजांकैलीहौंबलिहार४॥१५॥जौघरारांमभजनक
रलीजै॥साहिबलेषामांगैगारे॥ऊतरकैसेदीजै॥टे
क॥आगैजाइपछितावनलागौ॥पलपलयहतनछी
जै॥ताथैंजीयसमझाइकहौरे॥सुकृतअबथैंकी
जै१॥सांगिरहैजतनजौजै॥दादूदाससजनकभैलजुं
हरिजीकीरासिरसीजै२॥२६॥का लकायागढभेल
सी॥छीजैदसौंदुवारोरे॥देषतडांतेलूटिए॥होसाहा
हाकारोरे॥टेक॥नाइकनगरनैंमेंसी॥एकलडौतेजा
हैरे॥संगनसाथीकौ आइसी॥तिहांकोजांणौकिमथां
ईरे॥सनजतसाथीमाझामाईडी॥का.
सारोरेभारतिषिपमेंचालिबो॥
गोरे॥जिसनीरतिनांग्यांछाहरे॥

समरथ माई सेविये तो काया न लागै कालो रे
रै॥ दादू थिर मन आणिये तौ निहचल थिर थाए रे।
प्राणी ने पूरो मिलै तौ काया न मेल्ही ए रे॥१७॥ डरिये
रे फिर परमेस्वर थैं डरिये॥ लेखा लेवै भरि भरि देवै तातै
बुरा न करीए रे डरिए॥ टे॥ साचा लीजी साचा दीजी॥ सा
चा सौदा कीजी रे॥ साचा राखौ झूठ न भाखौ॥ बिष ना पीजी
रे॥ निर्मल गहिये निरमल रहिये॥ निर्मल कहिए रे
॥ निर्मल लीजी निरमल दीजी॥ अनत न बहिए रे॥ सा
हिब गया बनिज न आया॥ जिनि डहकावै रे॥ झूठन
सावै केरि पगवै॥ को पापा वैरे॥ पच इहै लाजा स्य
केला॥ मारत लीजै रे॥ दादू मला होइ सुहेला॥ सो कुछ
कीजी रे॥१८॥ डरिए रे डरिये॥ देषि देषि पग धरिये तारे
तिरिये मारे मरिये॥ ला पै गरब न करिए रे डरिए॥ टे॥
देवै लेवै समथ दाता॥ सब कुछ छाजै रे॥ तारै मारै ग
रब न वारै॥ बेगा गाजै रे॥ राषैं रहिए बाहें बहिए॥ अ
नत न हिए रे॥ मानै घडे सवारै आपै॥ ऐसा कहि
ए रे॥ निकटि बुलावै दूरि पठावै॥ सब बनि आ
वै रे॥ पाकै काचे काचे पाकै॥ ज्यू मन भावै रे॥ पाव
क पाणी पाणी पावक॥ करि दिषलावै रे॥ लोहा कं
चन कंचन लोहा॥ कहि समझावै रे॥ ससिहर सू
सूर तैं ससिहर॥ परगट षेलै रे॥ धरती अंबर अं
रती॥ दादू मेलै रे॥१९॥ मन सा मन सबद सुरति
चौ थिर कीजे॥ एक अंग सदा संग॥ सहजै रस पीजे
टे॥ सकल रहित मूल गहित॥ आपा नहीं जानैं
तरमति निरमल तौ॥ एकै मन निमानै॥ हृदै सुध
मल बुध॥ पूरन परकासै॥ रसना निज नांव निर

अंतरगतिनासै२।आनममतिपूरणागति।प्रेमभग
तिराता।मगनगलितआरसपरस।दादूरसिमाता
३२०।।बौद्धकेचरनौंही।ल्यौलाऊ।जैसेचात्रिग
बनमैबोले।पीवपीवकरिधांऊं।टेक।सुरिजनमेरा
सुनऊंबीनती।मैंबलितेरेजांऊं।बिपतिहमारीतो
हिसुनांऊं।देदरसनक्यूंहीपांऊं२।जातदुषसुष
पजलतनकौं।तुम्हसरनागतिआंऊं३।दादूकौंदया
करिदीजे।नांवतुम्हारागांऊं४।।३२१।।प्रेमभगतिबि
नरह्योनजाई।परगटदरसनदेहुअघाई।टेक।।
तालाबेलीतलफैमांहीं।तुम्हबिनरामजीयरेजक
नांहीं१।।निसबासुरिमनरहैउदासा।मैंजनव्याकुल
सासउसासा२।एकमेकरसहोइनआवै।तापैंप्रा
णबहुतदुषपावै३।अंगसंगमिलियहसुषदीजे।दा
दूरांमरसांइनपीजे४।।३२२।।तिसघरिजांनांवे।जहांवे
अकलसरूप।सोईअबध्याइरे।सबदेवनिका
भूप।टेक।अकलसरूपपीवका।बांनबरननपाइ
ए।अषंडमंडलमांहिरहै।सोईप्रीतमगाइए।गा
वऊंमनबिचारंवै।मनबिचारासोईसारा।प्रग
टपीवतेपाइये।सोईसेतीसंगसाचा।जीवततिस
घरिजाइए।।अकलसरूपपीवका।कैसेकरिआलि
षिये।सुंन्यमंडलमांहिसाचा।नैननरिसोदेषिये।देषो
लोचनसारिवे।देषोलोचनसारिसोई।प्रगटहोई
यहअचंभापेषिये।दयावंतदयालऐसो।बरणअति
बिसेषिये२।अक
ईमननेपावई।दयावंतदया।७

आगमबैनसुनावही॥ सबदुषभागारेलाग्या
काहेनमंगलगावही॥ अकलसरूपपीवका
करिकैसैकहिआगाये॥ निरंतरनिरअंतरआये
तरिसोईजागीये॥ जोगीकूमनबिचारावे॥ मनबि
चारासोईसारा॥ सिवरिसोईबषांणिये॥ श्रीरंगसे
तीरंगलाग्या॥ दादूतोसुषमांहिपिये॥४२३॥ रामतहां
प्रगटरहेभरपूर॥ आतमकवलजहां॥ परमपुरि
षतहां॥ झिलिमिलिझिलिमिलिनूर॥ टेक॥ चंद
सूरमध्यभाइ॥ तहांबसेरांमराइ॥ गंगजमुनके
तीर॥ त्रिबेणीसंगमजहां॥ निरमलबिमलतहां
॥ निरषिनिरषिनिजनीर॥ आतमउलटिजहां
॥ तेजपुंजरहेतहां॥ सहजिसमाइ॥ अगमनिगम
अतितहांबसेप्राणपति॥ परसिपरसिनिजआ
इ॥ कोमलकुसमदल॥ निराकारजोतिजलवार
नपार॥ सुंनिसरोवरजहां॥ दादूहंसरहेतहां॥ बिल
सिबिलसिनिजसार॥४२४॥ गोबिंदपायामनिमाया
॥ अमरकीयेसंगलीये॥ अषैअभेदांनदीये॥ छाया
नहींमाया॥ टेक॥ अगमगगनअगमतूर॥ अगमचं
दअगमसूर॥ कालझालरहेदूरि॥ जीवनहींकाया
॥ आदिअंतिनहींकोइ॥ रातिदिवसनहींहोइ॥ उदै
अस्तनहींहोइ॥ मनहीमनलाया॥ अमरगुरुअ
मरग्यांन॥ अमरपुरिषअमरध्यांन॥ अमरब्रह्मअ
मरथांन॥ सहजिसुंनिआया॥ अमरनूरअमरबास
॥ अमरतेजसुषनिवास॥ अमरजोतिदादूदास॥ स
कलभुवनराया॥४२५॥ रामकीरातीभईमाती॥ लो
कबेदबिधिनिषेद॥ भागेसबभरमभेद॥ अमृतरसपी

वे टि लागो मनका जक्ता जा छूटै सब जगजाल
बिसरै सब हाल जचाल हरि की सुधि पाई। पांन पवन त
हां जाई। आमति मिलै आइ। प्रेम मस तर दंस
इ। विलसै बहुतां ही। प्रमनृरूप मैं तै ज। परम पुंज प
मसेज परम जो तिप्रम दैज। सुंदर सिसु मणां वे। प्रम
उ रिषपरमरस। परम जा जसुष विजास परमा
तजदास दास पीवसो मिजि पेले ॥४॥२९॥

राम ज्ञानार्थी आरत ॥ ॥ संदिविशियार
तो रामकी कीजे। आत मंत्र तरिवार ण्यो जीजे ॥ टे
॥ तनमन चंदन प्रेमकी माला। अनहद घंटा दीन
याला। ग्यांनका दीपक पवनकी बाती। देवनिरंजन
पंचोंपाती। आनंद संपज जाव की सेवा। मनमा मह
रचाप्रसदेवा। सनपति निरंकार विधि जि दारा। टाइ
तग्यांन सैबतुकारी है ॥ आरती जग जीवन की
मैं वंनक वडपछिराग फेरी। टेक चिंतन चंदन
तमरै टौर हरि कायां तनो त्रिद्वचीरे [illegible]
देवनद [illegible]
आदर [illegible]
मद [illegible]
मोवन [illegible]
विमुद [illegible]
सुवधु [illegible]
[illegible]
नीजौ [illegible]
बेक [illegible]
[illegible]

…निराकार की आरती…

…रकनिवा २॥१३॥ …सुरनर सब सेवा करै बूझो

…तु बनके राम ॥ है ॥ अनुभ राम ने बन जानै धारना

…सनम है स ॥ है ॥ चंद सूर आरती करै ॥ नमो निरंजन देव

…सेस ॥ धरनि पवन आकास अराधै ॥ सबै अनुभ री सेव

॥ सकल भुवन सेवा करै ॥ मुनियर सिध समाध

दीनलीन ह्वै रहे संतजन ॥ अविगति के आराध

॥ जै जै जावै राम हमारी ॥ भगति करै ल्यौ ल…

६ निराकार की आरती की जै ॥ दादू बलि बलि

जाइ ॥४॥१४॥ तेरी आरती ए ॥ जुग जुग जै जै कार

है ॥ जुग जुग आतम राम ॥ जुग जुग सेवा की

जिये ॥ जुग जुग लंघे पार ॥ जुग जुग जगपति

को मिले ॥ जुग जुग तारणहार ॥ जुग जुग द…

सन देखीए ॥ जुग जुग मंगलचार ॥ जुग जुग…

दादू गाइये ॥५॥१५॥ इति श्री आरती [illegible]

…समाप्तः॥ ग्रंथ ३॥ सबद ४३॥ २५६०॥ गुरदेव को अंग ॥

…[illegible] माइयो ॥

कबीर सतगुर सवान को सगा ॥ सोध सवीन…

॥ हरिजी सवांन को हितू ॥ हरिजन सई जा…

॥१॥ कबीर बलिहारी गुर आपणो ॥ द्यौंहा…

बार ॥ जिनि मानिष तैं देवता कीया ॥ क…

न्यागी बार ॥२॥ कबीर सतगुर की महि…

नंत ॥ अनंत कीया उपगार ॥ लोचन अ…

घाड़ीया ॥ अनंत दिखावणहार ॥३॥ जि…

…कीया ॥ मन की लार सरीर…

पाछै चारकां॥ एक कहै दास कबीर॥३॥ कबीर राम
नि॥ मिके पटंतरै देबेकौं कुछ नांहि॥ क्या ले गुरू सं
तोषिये हौंस रही मन मांहि॥४॥ कबीर सतगुर के स
दिकै करौं॥ दिल अपणी का साच॥ कलिजुग हम स्यों
लड़ि पड़्या॥ मुकम मेरा बास॥५॥ कबीर सतगुर
लईक मांण कर॥ बाहन लाग्या तीर॥ एक जु बाह्या
प्रीति सौं॥ भीतरि रह्या सरीर॥७ कबीर सतगुर सा
चा सूरिवां॥ सबद जु बाह्या एक॥ लागत ही भैं म
लिगया॥ पड्या कलेजे छेक॥८॥ कबीर सतगुर मा
र्‍या बांण भरि॥ धरि करि सूधी मूठि॥ अंगि उघाड़े
लागीया॥ गई दवा सूं फूटि॥९ कबीर हसै न बोले
उनमनी॥ चंचल मेल्ह्या मारि॥ कहै कबीर भीतरि
भिद्या॥ सतगुर के हथियार॥१०॥ कबीर गूंगा हूवा
बावला॥ बहरा हूवा कांन॥ पांऊं थैं पंगुल भया॥ स
तगुर मार्‍या बांन॥११॥ कबीर पीछै लागा जाइथा
॥ लोक बेद कै साथि॥ आगे थैं सतगुर मिल्या दीप
क दीया हाथि॥१२॥ कबीर दीपक दीया तेल भरि॥ बा
ती दई घट॥ पूरा कीया बिसाहूंणां॥ बहुरि न आवौं
हाट॥१३॥ कबीर ग्यांन प्रकास्या गुर मिल्या॥ सो जिनि
बीसरि जाइ॥ जब गोबिंद क्रिपा करी॥ तब गुर मि
लिया आइ॥१४॥ कबीर गुर गरवा मिल्या॥ रलि
गया आटै लूंण॥ जाति पांति कुल सब मिटे॥ नांव ध
रौगे कौंण॥१५॥ कबीर जाका गुर भी अंधला॥ चेला
है जाचंध॥ अंधे अंधा ठेलिया॥
॥ कबीर सतगुर मिल्या न सिष भया॥

...वा। इनूं बूडे धारमैं। चढि पाथरकी नाव ॥१७॥ क-
बीर चौसठि दीवा जोइकरि। चौदह चंदा मांहि। ति-
हि घरि किसकौ चांनिणौ। जिहि घरि गोविंद नांहि ॥१८॥
कबीर निस अंधियारी कारनै। चौरासी लष चंद।
अति आतुर उदै कीया। तौउ द्रिष्टि नहीं मंद ॥१९॥ क-
बीर भली भई जु गुर मिल्या। नहीं तर होती हांणि।
दीपक द्रिष्टि पतंग ज्यौं। पडता पूरी जांणि ॥२०॥ कबी-
र माया दीपक नर पतंग। भ्रमि भ्रमि इवै पडंत।
कहै कबीर गुर ग्यानतैं। एक आध उबरंत ॥२१॥ कबी-
र सतगुर बपुरा क्या करै। जौ सिषही मांहै चूक।
भावै त्यूं प्रमोधि ले। ज्यौं बांसि बजाई फूंक ॥२२॥ क-
बीर संसै खाया सकल जग। संसा किनहूं न षध। जे
बेधे गुर अष्यिरां। तिनि संसा चुणि चुणि षध ॥२३॥ चे-
तनि चौकी बैसि करि। सतगुर दीन्हां धीर। निरभै
होइ निसंक भजि। केवल कहै कबीर ॥२४॥ कबीर स-
तगुर मिल्या त का भया। जे मनि पाडी भोल। पासि
बिनठा कपडा। क्या करै बिचारी चोल ॥२५॥ कबी-
र बूडे थे परि ऊबरे। गुर की लहरि चमंकि। भेरा
देख्या जरजरा। तब ऊतरि पडे फरंकि ॥२६॥ क-
बीर गुर गोबिंद तौ एक है। दूजा यहु आकार। आ-
पा मेटि जीवत मरै। तौ पावै करतार ॥२७॥ कबीर स-
तगुर ना मिल्या। रही अधूरी सीष। स्वांग जती का
पहरि करि। घरि घरि मांगै भीष ॥२८॥ कबीर स-
तगुर साचा सूरिवा। तातै लोह लुहार। कसणी दे
कंचन कीया। ताइ लीया ततसार ॥२९॥ पाप...

पाइ पिति भई। सतगुर दीन्हीं धीर॥ कबीर हीरा बणजिया। मानसरोवर तीर॥३०॥ निहचल निधि मिलाइ तत। सतगुर साहस धीर॥ निपजी मैं साझी घणा। बांटै नहीं कबीर॥३१॥ चौपड़ि मांडी चौहटै। अरध उरध बाजार॥ कहै कबीर राम जन। खेलौ संत बिचारि॥३२॥ पासा पकड्या प्रेम का। सारी कीया सरीर॥ सतगुर डाव बताइया। खेलै दास कबीर॥३३॥ कबीर सतगुर हम सौं रीझि करि। एक कह्या परसंग॥ बरस्या बादल प्रेम का। भीजि गया सब अंग॥३४॥ कबीर बादल प्रेम का। हम परि बरस्या आइ॥ अंतरि भीगी आतमां। हरी भई बनराइ॥३५॥ कबीर पूरे सौं परचा भया। सब दुख मेल्या दूरि॥ निरमल कीनी आतमां। ता थैं सदा हजूरि॥३६॥ गुरदेव कौ अंग संपूर्ण

॥अथ सुमिरन कौ अंग॥ ॥कबीर कहता जात हौं। सुणता है सब कोइ॥ राम कहें भल होइगा। नहिं तर भला न होइ॥१॥ कबीर कहै मैं कथि गया। कथि गया ब्रह्म महेस॥ राम नाम तत सार है। सब काहू उपदेस॥२॥ तत तिलक तिहूं लोक मैं। राम नाम निज सार॥ जन कबीर मस्तकि दीया। सो भा अधिक अपार॥३॥ भगति भजन हरि नांउं है। दूजा दुक्ख अपार॥ मनसा बाचा क्रमनां। कबीर सुमिरण सार॥४॥ कबीर सुमिरण सार है। और सकल जंजाल॥ आदि अंति सब सोधिया। दूजा देखौं काल॥५॥ कबीर च्यंता तौ हरि नांउं की। और न च्यंता दास॥ जे कछु चितवै राम बिन। सोई काल

कीपास ९॥ घंचसंगी पीवृपावृकरै॥ मगजुंसुमि
मन॥ आइ सतिकबीरकी॥ पाया राम रहीन १०॥
कबीर मेरा मन सुमिरै राम कों॥ मेरा मन रामहि आ
हि॥ इब मन रामहि है रह्या॥ सीस नवाऊं काहि
११॥ कबीर तूं तूं करता तूं भया॥ मुझ में रह्या न हूं
॥ वारी फेरी बलि गई॥ जित देषों तित तूं १२॥ कबी
र निरभै राम जपि॥ जब लगि दीवै बाति॥ तेल घट्या
बाती बुझी॥ तब सोवैगा दिन राति १३॥ कबीर सूता
क्या करै॥ जागि न जपै मुरारि॥ एक दिनां भी सोव
णा॥ लांबे पांव पसारि १४॥ कबीर सूता क्या करै॥ का
है न देषै जागि॥ जाको संग तें बीछुट्या॥ ताही
के संग लागि १५॥ कबीर सूता क्या करै॥ ऊठि न
रोवै दुष॥ जाका बासा गोर मैं॥ सो क्यूं सोवै सुष १६
॥ कबीर सूता क्या करै॥ गुण गोबिंद के गाइ॥ ते
रे सिर परि जम षड़ा॥ षरच कदे का षाइ १७॥ कबी
र सूता क्या करै॥ सूता होइ अकाज॥ ब्रह्मा का
मन छिस्या॥ सुनत काल की गाज १८॥ कबीर के
क छिक छिकै किये॥ नां सोइ असार॥ राति दिव
के कूकता॥ मत कबहूं लगै पुकार १९॥ कबीर
हि घटि प्रीति प्रेम रस॥ फुनि रसना नहीं रा
॥ तेन रुआइ संसार में॥ उपजि षपै बेकाम २०॥
बीर प्रेम न चषिया॥ चषि न लीया साव॥ सूने घर
थाहुणा॥ ज्यूं आया त्यूं जाइ २१॥ कबीर पदे
राक माइ करि॥ बांधी बिष की पोट॥ कोटि कर
... न क मैं॥ जब आया हरि की ओट २२॥ च

कोटिकरमपेलैपलकमैं॥जैरंचकआवैनांउ॥अ
नेकजुगजेपुंनिकरै॥नहरांमबिनठांउ॥१०
॥कबीरजिनिहरिजैसाजांणियां॥तिनकौं
तैसालैंस॥वोसोंप्यासनभाजई॥जबलगधसै
नआभ॥११॥कबीररांमपियाराछाडिकरि॥
करैआनकाजाप॥बेस्याकेरापूतज्यूं॥कहैकौं
नसौंबाप॥१२॥कबीरआपणरांमकहि॥औरां
रांमकहाइ॥जिहिमुखिरांमनऊचरै॥तिहिमुख
फेरिकहाइ॥१३॥कबीरजैसेमायामनरमै॥यूंजे
रांमरमाइ॥तौतारामंडलछाडिकरि॥जहां
केसौतहांजाइ॥१४॥कबीरलूटिसकैतौलूटियौ
॥रांमनांमहैलूटि॥पीछैहीपछिताहुगे॥यहु
तनजैहैछूटि॥१५॥कबीरलूटिसकैतौलूटि
यौ॥रांमनांमभंडार॥कालकंठतैंगहैगा॥रूंधैद
सौंदुवार॥१६॥कबीरलांबामारग॥दूरिघर॥
विकटपंथबहुमार॥कहौसंतौक्यूंपाइये॥दु
र्लभहरिदीदार॥१७॥कबीरगुणगायेंगुणनांकटै॥र
टैनरांमबियोग॥अहनिसिहरिध्यावैनहीं॥
क्यूंपावैदुर्लभजोग॥१८॥कबीरकठिनाईखरी॥सु
मिरतांहरिनांम॥सूलीऊपरिनटविद्या॥गि
रौंतौनांहीठांम॥१९॥कबीररांमरिझाइलै॥मुखि

ल की पास ॥ पंच संगी पीव पीव करै ॥ छठा जु सुमि
रै मन ॥ आई सूति कबीर की ॥ पाया राम रतन ॥१७॥
कबीर मेरा मन तसुमिरै राम कौ ॥ मेरा मन तौ रामहि आ
हि ॥ अब मन रामहि ह्वै रह्या ॥ सीस नवाऊं काहि ॥
॥१८॥ कबीर तूं तूं करता तूं भया ॥ मुझ मैं रही न हूं
॥ वारी फेरी बलि गई ॥ जित देखौं तित तूं ॥१९॥ कबी
र निरभै राम जपि ॥ जब लग दीवै बाति ॥ तेल घट्या
बाती बुझी ॥ तब सोवैगा दिन राति ॥२०॥ कबीर सूता
क्या करै ॥ जागि न जपै मुरारि ॥ एक दिनां भी सोव
णां ॥ लांबे पांव पसारि ॥२१॥ कबीर सूता क्या करै ॥ का
हे न देषै जागि ॥ जाका संग तैं बीछुट्या ॥ ताही
के संग लागि ॥२२॥ कबीर सूता क्या करै ॥ ऊठि न
रोवै दुष ॥ जाका बासा गोर मैं ॥ सो क्यूं सोवै सुष ॥२३॥
॥ कबीर सूता क्या करै ॥ गुण गोविंद के गाइ ॥ ते
रे सिर परि जम षडा ॥ षरच कदे का षाइ ॥२४॥ कबी
र सूता क्या करै ॥ सूतां होइ अकाज ॥ ब्रह्मा का आ
सन छिस्या ॥ सुनत काल की गाज ॥२५॥ कबीर केसो
क हि क हि कूकिये ॥ नां सोइ असार ॥ राति दिवस
के कूकणैं ॥ मत कबहूं लगै पुकार ॥२६॥ कबीर जि
हि घटि प्रीति न प्रेम रस ॥ फुनि रसनां नहीं राम ॥
॥ ते नर आइ संसार मैं ॥ उपजि षपै बेकाम ॥२७॥ क
बीर प्रेम न चषिया ॥ चषि न लीया साव ॥ सूनै घर का
पाहुणां ॥ ज्यूं आया त्यूं जाइ ॥२८॥ कबीर पहलै बु
रा कमाइ करि ॥ बांधी बिष की पोट ॥ कोटि करम फि
ल पलक मैं ॥ जब आया हरि की ओट ॥२९॥ कबी

कोटिक रसपेलेपलक मै॥जेरंचकआवैनाउ॥वो
त्रीनकजेता जेउभिकरै॥नहरांमबिनगंउ॥
॥कबीरजिनिहरिजैसा जांणियां॥तिनकौ
तैसालैसा॥वोसोंप्यासनमाजई॥जेबलगधसै
नत्रालर१॥कबीररांमपियाराछाडिकरि॥
करैआनकाजाप॥बेस्यांकेरापूतज्यूं॥कहैको
नसौबाप२२॥कबीरआपणरांमकहि॥औरो
रांमकहाइ॥जिहिमुषिरांमनउचैरै॥तिहिमुष
॥फेरिकहाइ२३ कबीरजैसैमायामनसौ॥योजे
रांमरमाइ॥तौतारामंडलछाडिकरि॥जहां
केसौतहांजाइ२४॥कबीरलूटिसकैतोलूटियो
॥रांमनांमहैलूटि॥पीछैहीपछितांइगो॥इऊ
तनजैहैछूटि२५॥कबीरलूटिसकैतोलूटि
यो॥रांमनांमभंडार॥कालकंठतैंगहैग्या॥रूंधैद
सोंउद्वार२६॥कबीरलांबामारगदूरिघर॥विक
टपंथपऊमार॥कहौसंतौक्यूंपाइये॥दुर्लभह
रिदीदार२७ कबीरगुणगायेंगुणनांकटै॥र
टैनरांमबियोग॥अहनिसहरिध्यावैनहीं॥
क्यूंपावैदुर्लभजोग२८ कबीरकठिनाईषरी॥सु
मिरतांहरिनांम॥सूल। ॥गि
चैतनांहीगांम२९ क

प्रेम न सुणगाइ॥ फूटा नग ज्यूं जोरि मन संधे संधि
मिलाइ॥४४॥ कबीर चित चमकिया॥ चहुं दिसि ल
गी लाइ॥ हरि सुमिरण हाथौं घडा॥ बेगे लेहु बुझा
इ॥४५॥ साषी ६०॥ अथ बिरह कौ अंग॥ राति रूंनी
बिरहनी॥ ज्यूं बच्यां कौं कुंज॥ कबीर अंतर
ज्या॥ प्रगटे बिरहा पुंज॥१॥ कबीर अंबर कुं
जां कुरलियां॥ गरजि भरे सब ताल॥ जिनते गोविं
द बीछुटे॥ तिनके कौंण हवाल॥२॥ कब
वी बीछुटी रैणि की॥ आइ मिली परभाति॥ जे नर
बिछुटे राम सौं॥ ते दिन मिले न राति॥३॥ बासु
रि सुष न रैंणि सुष॥ नां सुष सुपिनै मांहिं॥ कबी
र बिछुट्या राम सौं॥ नां सुष धूप न छांह॥४
॥ कबीर बिरहनि ऊभी पंथ सिरि॥ पंथी बूझै
धाइ॥ एक सबद कहि पीव का॥ कबर मिलैंगे
आइ॥५॥ कबीर बहुत दिनन की जोवती॥ बा
ट तुम्हारी राम॥ जीव तरसै तुम मिलन कौं॥ म
नि नांही बिश्राम॥६॥ कबीर बिरहनि ऊठै भी
पड़ै॥ दरसन कारनि राम॥ मूंवां पीछैं देहुगे
॥ सो दरसन किहि कांम॥७॥ मूंवां पीछैं जिनि
मिलै॥ कहै कबीरा राम॥ पाथरि घाटा लोह स
ब॥ तब पारस कौंणे कांम॥८॥ कबीर अंदेस

मनाजिस्॥संदेसोकहियां॥केहरिआयांनाजिसी
केहरिपांसिगयांरे॥कबीरआइतसकौतुकपै
॥सकौतकबुलाइ॥जीयरायहीलेकगो॥बिरह
तपाइतपाइ१०॥कबीरयऊतनजालौमसिकरौ॥
॥धवांजाइसरगि॥मतिवैरामदयाकरै॥बरसिबु
झावैअगि॥११॥कबीरपीडपीरावनी॥पंजरिपडन
जाइ॥एकजपीडप्रीतिकी॥रहीकलेजाछाइ॥१२
कबीरचोटसतावणी॥बिरहकी॥सबतनजजरहो
इ॥मारणहाराजाणिहै॥केहजिहिलागीसोइ॥१३
॥कबीरकरकमोगासरसांधिकरिछेंविजुमारया
माहि॥मातरिभिव्यासुमारहिकै॥जीवैकिजीवैनां
हिं॥१४॥कबीरजबहूमारयाषेचिकरि॥तबमैपा
ईजाणि॥लागीचोटमरमकी॥गईकलेजाछा
णि॥१५॥कबीरजिहिसरिमारीकाल्हि॥सोसरमेरेम
नबस्या॥तिहिसरिअजहूंमारि॥सरबिनसचपाऊं
नहीं॥१६॥कबीरबिरहभुवंगमतनिबसै॥मंत्रनला
गैकोइ॥रामबियोगीनांजीवै॥जीवैतबौराहोइ॥
१७॥कबीरबिरहभुवंगमपैसिकरि॥कीयाकलेजे
घाव॥साधअंगनमोडहीं॥ज्यूंभावैत्यूंषाव॥१८॥क
बीरसबरगतंतरबाबतन॥बिरहबजावैनित्त
॥औरनकोइसुनिसकै॥कैसांईकैचित्त॥१९॥कबी
रबिरहाबुरहाजिनिकहौ॥बिरहाहैसुलितान॥
जिहिघटिबिरहानसंचरै॥सोघटसदामसान॥
२

श्रीमद्धियोछाज्यपड्या॥रामडकार

७

बीरसतन कादीवा करो। बाती मेल्हूं जीव ॥
सी चौले लज्यू। कबमुष देषौ पीव २२। कबीर नैना
झर लाइया। रहट बहे निसजाम। पपीहा ज्यू पीव
पीव करै। कबरा मिलहुगे राम २३। कबीर अंषडि
यां प्रेम कसाइयां। लोग जाणे दुषडियां। साईं अपणे
कारणै रोइ रोइ रतडियां २४ कबीर सोई आंसू सज
णा। सोई लोक बिडा। जे लोइण लोही चुवै। तो जा
णो हेत हीया २५ कबीर हसणा दूरि करि। करि रोव
णा सौ चित। बिन रोया क्यूं पाइये। प्रेम पियारा मित
२६। कबीर जे रोवौ तौ बल घटै। हसौ त राम रिसाइ
मनही माहि बिसूरणा। ज्यूं घुण काठहि षाइ ॥२७
कबीर हासि हासि कंत न पाइये। जिं पाया तिनि रो
ने
तौ नही दुहागनि कोइ
२ जे हासे ही हरि मिलै। तो को ग्रासै दुषर स
कबीर हासी षेलौं हरि मिलै। ताहि मिलै भगवा
ण। कामक्रोध त्रिष्णा तजै। गोहनि लागा ध
२८ कबीर पूत पियारौ पिता कौ। आपण गया भुलाइ ॥
लोभ मिठाई हाथि दे। अंति रिरास उप
कबीर डारी बाडपटकि करि। पिता पिया रजाइ ३१। कबी
रावल्लो बहु मिलि गया। निस दिन राषौं तोहि। कबी
ना अंतरि आवहं। निस दिन राषौं तोहि। कब
दरसन देहुगे। सो दिन आवे माहि ३२। कबीर
न दिन गया। निस भी निरषा न जाइ। बिरहनि
नहीं। जिम रातल पे माइ ३३ कबीर के बिरही
मीहडे के आपणा दिषालाइ। माठ

तोपैमदूसूतजाइ ३४ कबीरबिरहै तिथांते [illegible]
लगतपावकै नालि रकर कसूल्या [illegible]
जोमारि ३५ कबीर हो रबिरह कौ जाव [illegible]
मकिंधधाइ ॥ छूटिपडौ या बिरहतै [illegible]
मातंइ ३६ कबीर ततमनयौ जल्या ॥ विरह [illegible]
मतकपीड़नकांगाइ ॥ आवी [illegible]
रबिरहजल्यादेमैजल्यो जलंत [illegible]
बाजलदरजले सत्ती कहां कहुं [illegible]
तिबरह हिति फिल्या [illegible]
नदी जापैजवेति [illegible]
धजकरो [illegible]
जिन [illegible]
जिय [illegible]
बैसे [illegible]
मरके [illegible]
हि [illegible]
देखे [illegible]
मरके [illegible]
औ [illegible]
कहै [illegible]
लेख [illegible]
तौ [illegible]
पके [illegible]
दर [illegible]
सौं [illegible]

नीजली षपरा फूटि मफूटि ॥ जोगी था सो रमि गया
आसणि रही भभूति ॥ कबीर कागद निज नाम सा
रमे कंइ जलिया झारि उतर दषिण के पंडिता रहे
बिचारि बिचारि ॥ कबीर दौ लागी सायर जल्या
पंषी बैठे आइ ॥ दाधी देह न पालवै सतगुर गया
लगाइ ॥ कबीर गुर दाधा चेला जल्या बिरहा ला
गी आगि ॥ तिनका बपुडा ऊबर्‍या गलि पूरे कै ला
गि ॥ कबीर अहेडी दौ लाइया मृग पुकारै रोइ
जा बन मैं क्रीला करी दाझत है बन सोइ ॥ क
बीर षोगी मै देषि जल्या महै अपबन आगि ॥ ब
हिती सलिता रहि गई मछ रहे जल त्यागि ॥ कबी
र समंदरि लागी आगि नदियां जलि कोइला भई
देषि कबीरा जागि मछी रूषां चढि गई ॥ १०१ ॥ १८
॥ इति ग्यान बिरह कौ अंग ॥ अंग ॥ ४ ॥ कबीर तेज अनंत
का मानो ऊगी सूरिज सेणि पति संग जागी सुंद
कौतिक दीठा तेणि ॥ कबीर कौतिग दीठा दे
बिन रवि ससि बिनां न जास साहिब सेवा माहि
है बेपरवाही दास ॥ कबीर पारब्रह्म के तेज
का कैसा है उनमान ॥ कहिबे कौ सोभा नहीं
देष्यां ही परवान ॥ अगम अगोचर मिन नहीं त
हां जगमगै जोति ॥ जहां कबीरा बंदगी तहां पा
प पुनि नहीं छोति ॥ कबीर हद छाडि बेहद गु
या हवा निरंतर बास ॥ कवल जु फूल्या फूल बि
न कौ निरषै निज दास ॥ कबीर मन मधुकर
भया रह्या निरंतर बास ॥ कवल जु फूल्या जें

ह्वि नो को नषै निजदास॥९॥ कबीर संत रिकव
नपका मिया॥ ब्रस्त बास तहां होइ मनतो यन
दालु नभिया॥ जोगैगा जनको॥७॥ सायरनां
ही सो पवित्र स्वांति बूंद नी नांहि॥ कबीर मोती
नीपजे सुनि सिषरगढ मांहि॥ कबीर घट मां
हे औघट पाइया॥ औ घट मांहे घाट॥ कहि कबी
र पचा नया॥ गुरू दिषाई बाट॥टै॥ कबीर सुर समां
नां चंद सौं दहू कीया घर एक॥ मन का चिंता तब
भया॥ कछू पूरबला लेष॥१०॥ कबीर हद छाडि बे
हद गया॥ कीया सुनि असनांन॥ मुनि जन महल न पा
वई॥ तांही कीया बिश्रांम॥११॥ देषौ करम कबीर
का॥ कछू पूरबजनम का॥ लेष॥ जाका महल न
मुनि लहैं॥ सो दोसत कीया अलेष॥१२॥ कबीर पं
जर प्रेम प्रकासिया॥ जाग्या जोग अनंत॥ संसा
छूटा सुष भया॥ मिल्या पियारा कंत॥१३॥ कबीर पं
जर प्रेम प्रकासिया॥ अंतरि भया उजास॥ मुषि
कसतूरी महमही॥ बांणी फूटी बास॥१४॥ कबी
र मन लागा उनमन सूं॥ गगन पहूंता जाइ॥ दे
ष्या चंद बिहूणा चांदणा॥ तहां अलष निरंज
न राइ॥१५॥ कबीर मन लाग्या उनमन सो॥ उनमन
मनहि बिलग॥ लूंण बिलगा पांणियां॥ पांणी लूं
ण बिलग॥१६॥ कबीर थां थी हीतैं हिम भया॥ हिम
के गया बिलाइ॥ जे कछु था सोई भया॥ अब कछ
कह्या न जाइ॥ कबीर स्वांनी भई ७

गईहसासबन्हलि पालागालि पाणीमैयां टुलि
मिलिपातसकूलि १८ कबीर चौहटै च्यं नामति
चढी हाडी मारत हाथि मीयां मुकसो मिहरक
री इवा मिलेंनका कूसाथि १९ कबीर पंषनउडा
णीगगनकौ प्यंड रह्या प्रदेस पाणीपीया चं
चमरि भूलि गया यहु देस २० कबीर पंषि उडा
णीगगनकूं उड चढ्या असमान जिहिसरि म
डल भेदिया सो सरत्या गाकौ नि २१ कबीर सुर
तिसमाणीं निरतिमे निरति रही निरधार सुरति
रतिपरचा भया तब षूले स्यंभ दुवार २२ कबीर
सुरति समाणीं निरतिमे अजपा माहै जाप लेष
समाणा अलेष मैं यो आपा माहै आप २३
संसार मै देषणा कौ बहु
पड़ि गया न जरि स्वरूप २४ अकथ रिमरि मेटि
या मनमैं नाही धीर कहै कबीर तेकूं मिलैं ज
ना दोषन्ह सरीर २५ कबीर सचपाया सुष ऊपना
अर दिल दरिया पूरि सकल पाप सहजै गए ज
साई मिल्या हजूरि २६ धरती गगन पवन नही
ते नहीं तोया न ही तारा तब हरि हरि के जन हो
कहै कबीर बिचारा २७ जा दिन कृतम नां हु
होता हट न पट हूंता कबीरा राम जन जिनि
देष्या घट घट २८ कबीर थिति पाई मन थिर हुवा
सतगुरु करी सहाइ अनिन कथा तनि आच
हिरदै त्रिभुवन राइ २९ कबीर हरि संगति सु

निनयां मिटि मोह की नाम। तिनि नासु रि सुख निधि
अंसा। जब अंतरि प्रगटया आप ३०॥ कबीर रतन
श्रोतरि मन नैं भो नियां। बाहरि कह्यां न जांइ॥ ज्वाला
ते फिरि जल भया बुझी बलंती लाइ ३१॥ कबीर रत
न पाया तन की सस्या। जब भ निधरिया ध्यान। तप
ति गई सीतल भया। जब सुं लि कीया अस्नान ३२
कबीर जिनि पाया तिनि सुं गह गह्या रसना लागी
स्वादि रतन निराला पाइया जगत ढंढोल्या बादि
३३ कबीर दिल स्याबति भया पाया फल संम्रथ
सायर मांहि ढंढोलता हीरै पड़ि गया हथ ३४ क
बीर जब मैं था तब हरि नहीं। अब हरि है मैं नांहि
सब अंधियारा मिटि गया। जब दीपक देख्या मांहि
३५ कबीर जा कारणि मैं ढूंढता। सनमुख मिलिया
आइ॥ धन मैली पीव ऊजला। लागि न सकूं पाइ
३६ कबीर जा कारणि मैं जाइ था। सोई पाई ठौर
सोई फिरि आपण भया। जासौं कहता और ३७
कबीर देख्या एक अंग। महिमां कही न जाइ। ते
ज पुंज पारस धणी। नैनौं रह्या समाइ ३८ कबी
र मांन सरोवर सुभर जल। हंसा केलि कराहिं। मु
कताहल मुकता चुगै। अब उड़ि अनत न जांहि ३९
गगन गरजि अंम्रत चवै। कदली कवल प्रका
स तहां कबीरा बंदगी। कै कोई निज दास ४०
नींव बिहूंणां देहुरा देह बिहूंणां देव। कबीर त
हां बिलंबिया करै अलख की सेव ८
सू मांहे देहुरा। तिल ८

हि जल माँहै पूजणहार ॥२॥ कबीर कवल
सिपा ऊग्या निरमल सूर ॥ निस अंधियारी मिटि गि
ई बाजे अनहद तूर ॥३॥ अनहद बाजे नीझर
झरै उपजै ब्रह्म गियान ॥ अविगति अंतरि प्रगटै
प्र धियान ॥४॥ आकासे मुखि औंधा कूवा ॥ पाताले पनि
हारि ॥ ताका पाणी को हंसा पीवै ॥ बिरला आदि बि
चारि ॥ सिव सकती दिसि कौण जु जोवै ॥ पछिम
दिसा उठै धूरि ॥ जल मैं स्यंघ जु घर करै ॥ मछली च
ढ़ै खजूरि ॥ अमृत बरिषै हीरा निपजै ॥ घंटा पड़ै
टकसाल ॥ कबीर जुलाहा भया पारषू ॥ अनभै उत
र्या पार ॥५॥ कबीर ममिता मेरा क्या करै ॥ प्रेम उ
घाड़ी पोलि ॥ दरसन भया दयाल का ॥ सूल भई
षसोड़ि ॥ [illegible] ॥ रस को अंग ॥ कब
ीर हरि रस यौं पीया ॥ बाकी रही न थाकि ॥ पाका क
लस कुंभार का ॥ बहुरि न चढ़ई चाकि ॥ राम रसा
इन प्रेम रस ॥ पीवत अधिक रसाल ॥ कबीर पीव
ण दुलंभ है ॥ मांगै सीस कलाल ॥ कबीर भाठी क
लाल की ॥ बहुतक बैठे आइ ॥ सिर सौंपै सोई पी
वै ॥ नहीं तौ पीया न जाइ ॥ कबीर हरि रस पीया
जाणिये ॥ जे कबहूं न जाइ खुमार ॥ मैमंता घूमत
रहै ॥ नाहीं तन की सार ॥ कबीर मैमंता तिण ना
चरै ॥ सालै चिता सनेह ॥ बारि जु बांध्या प्रेम कै ॥ डा
रि रह्या सिरि षेह ॥ कबीर मैमंता अविगत रता ॥ अ
कलप आसा जीति ॥ राम अमलि माता रहै ॥ जीव
त मुकति अतीत ॥ कबीर जिहि सर घड़ा न डूबता

ता। अवसौगा लमलिमलिन्हाइ। देवल ढहा कल
समौ। पषितिमाई जाइ। ७। कवीर सबैरसो इनमैकी
या। हरिम औरनकोइ। तिनएक घटमैसंचैरा तो
सबतनकैचनहोइ॥ प। १७८॥ अंग॥ ६॥ लो
चिकोअंग॥ कवीर कायाकमंडल भरि लीया उ
जल निर्मल नीर। तन मन जोवन भरि पीया। प्यास
नमिटी सरीर१। कवीर मन उजल दिया दरिया सि
न्या। लागा मलि मलिन्हांण। प्यास न ष्याइन आव
इ। तूं परारहि मांन।२। देरत देरत हे सषी। रह्या क
वीर हिराइ३। बूंद समानी समद मैं। सो कत हेरी जा
जाइ३। हेरत हेरत हे सषी। रह्या कबीर हिराइ।
समंद समाणा बूंद मैं। सो कत हेस्या जाइ। ४।
॥१८१॥ अंग॥७॥ जरणा कौ अंग॥ कवीर भारी क
हौं तब डरौं हलुका कहौं तौ झूठ। मैं का जांणौं
राम कौं नैंनौं कबहुं न दीठ। १। कवीर दीठा है
तौ कस कहौं। कह्यां न को पतियाइ। हरि जैसा है
तैसा रहौ। तूं हरषि हरषि गुन गाइ। २। कवीर ऐसा
अदबुद जिनि कथै। अदबुद राषि लुकाइ। बेद कु
रांनौं गमि नहीं। कह्यां न को पतियाइ। ३। कवीर क
रता की गति अगम है। तूं चलि अपणैं उनमांन।
धीरैं धीरैं पाव धरि। पहुंचौगे निरवांन। ४। कबीर प
हूंचैंगे तौ कहैंगे। अमडैंगे बैसांग। अजहूं बेरा स
मंद मैं। बोलि बिगूचैं काइ॥५॥१८७॥ चा। हेरान
कौ अंग॥ कबीर पंडित सेती कहि रहे। कह्यां न
मानै कोइ। ओ अगाध एका कहै भारी

हि॥ बसै अपंडी पिंड मैं॥ ताका लिषै न कोइ॥ क
है कबीर सम तहीं॥ बडा अचंभा मोहि॥ २॥ [illegible]
[illegible]॥ जिहि बन सींह न संच
र पंषि उडै नही जाइ॥ रैंणि दिवस का गमि नहीं
तहां कबीर रह्या ल्यो लाइ॥ कबीर सुरति ढीकु
ली लेजल्यो मन नित ढोलन हार॥ कवल कुवा
मै प्रेम रस पीवै बारंबार॥ गंग जमुन उर अंतरै
सहज सुंनि ल्यो घाट॥ तहां कबीरै मठ रच्या मु
नि जन जोवैं बाट॥ ३॥ १६७॥ [illegible]
[illegible]॥ कबीर प्रीतडी तो तुझ सौं
बहु गुणियाले कंत॥ जे हसि बोलौं और सौं
तौ नील रंगाऊं दंत॥ कबीर नैनां अंतरि आव
तूं ज्यूं हौं नैन झपेउं॥ नां हौं देषौं और कूं नां तुझ
देषन देउं॥ कबीर मेरा मुझ मैं कछु नहीं॥ जो
कछु है सो तेरा॥ तेरा तुझ कौं सौंपतां॥ क्या लागै
गो मेरा॥ कबीर रेष सिंदूर की काजल दीया न
जाइ॥ नैनां रमइया रमि रह्या दूजा कहां समाइ॥
[illegible] कबीर सीप समंद की रटै पियास पियास॥ सम
द हि तिणा का करि गिणै॥ स्वांति बूंद की आस॥
कबीर सुष कौं जाइ था॥ आगै आया दुष॥ जाहि
सुष घरि आपणै॥ हम जाणैं अरु दुष॥ कबीर
दोजग तौ हम अंगिया यहु डर नाहीं मुझ॥ भिस्त
तिन मेरे चाहिये बाक पियारे तुझ॥ कबीर जेति
गा के जाणिया तौ जाण्यां सब जाणि॥ जे आप कन
जाणियां तौ सब नहीं जाणै जाण॥ कबीर रूप

नजाणिया। तौबहु जाण्यां क्या होइ। एकतैं सब
होत है। सबतैं एक न होइ॥ जबलग भगति
कामता। तबलग निरफल सेव। कहै कबीर वै
क्यूं मिलै। निहकामी निज देव॥९॥ कबीर आस
एक जु रांम की। दूजी आस निरास। पांणी मांहे
घर करै। तेभी मरै पियास॥११॥ कबीर जे मन लागै
एक सौं। तौ निरवाल्या जाइ॥ तूरा दुइ मुषि बा
जणां। न्याइ तमाचे षाइ॥१२॥ कबीर कलिजुग
आइ करि। कीये बहुत जु मीत। जिनि दिल
बांधी एक सौं। ते सुष सोवैं नचीत॥१३॥ कबीर
कूता रांम का। मुतिया मेरा नांउं। गलै रांम की
जेवडी। जित षैंचै तित जांउं॥१४॥ कबीर तो लौं
कै रतबा कूडौ। उरि उरि कैरे जांउं। ज्यूं हरि राषै
त्यूं रहौ। जो देवै सो षांउं॥१५॥ कबीर मन प्रतीति
न प्रेमरस। नां इस तन मैं ढंग। क्या जांणौं उस पी
व सौं। कैसें रहसी रंग॥१६॥ कबीर उस समरथ
का दास हौं। कदे न होइ अकाज। पतिब्रता नां
गी रहै। तौ उसही पुरिस कौं लाज॥१७॥ कबीर
धरिप मेरु षरणो कुरणो। सुणौं मने सीहास घट
रस भोजन भगति करि। ज्यूं कदे न छाडौं पास
॥१८॥२१०॥ अंग॥१०॥ चितावणी कौ अंग॥
कबीर नौबति आपणी। दिन दस लेहु बजाइ।
ए पुर पटन ए गली। बहुरि न देषै आइ॥१॥
जिनकै नौबति बाजती। मैंगल
कै हरिकै नांउं बिन

कबीर दौलवमां मांउंड बडौ महनाई भाग
ारि औसरि चलि नवजाइ करि है कोराघै फेरि
कबीर साती सबटज बाजते घरघरि है
ोराग ते मंदिर खाली पडे बैसण लागे काग
कबीर थोडा जीवणा माडे बहुत मंडाण
सबही ऊभा मेल्हि गया राव रंक सुलितान कबी
र इक दिन ऐसा होइगा सबसूं पडै बिछोह रा
जा राणा छत्रपति सावधान किन होइ कबी
र पटण का बिणां पंच चोर दस द्वार जमराणो गढ
मेलिसी सुमिरि लै करतार कबीर कहा गरबिये
इस जोबन की आस केसू फूलै दिवस चारि षष
र भये पलास कबीर कहा गरबियो देही देषि सु
रंग बीछुडियां मिलिबो नहीं ज्यूं कांचली भुवं
ग कबीर कहा गरबियो ऊंचे देषि अवास का
ल्हि परस्यूं भ्वै लेटणां ऊपरि जामै घास कबी
र कहा गरबियो चाम पलेटे हाड हैवर ऊपरि छ
त्र सिरि ते भी देबे गड कबीर कहा गरबियो क
ल गहे कर केस नाजाणौं कहां मारसी कै घरि
परदेस कबीर यहु ऐसा संसार है जैसा सेंब
ल फूल दिन दस के ब्यौहार कौं झूठे रंगि न भूल
कबीर जामणा मरणा बिचारि करि कूडे कांम
वारि जिनि पंथौं तुझ चालणां सोई पंथ संवा
कबीर बिन रखवाले बाहिरा चिडियै षा
त आधा परधा ऊबरै चेति सकै तो चेति
जलैं ज्यूं लकडी केस जलै ज्यूं घास सब तन

ला देषि करि ॥ मया कीवी रहदास ॥ कबीर मैं दिर
ठ हि पड्या ईंटस ई सैंवार कोई चेजारा चिणिगया
मिल्या तहजीवार १७ कबीर देवल ढहि पड्या ईं
ट भई सैंवार कोई चेजारे सो प्रीतड़ी ढहे न हूजा ब
र १८ कबीर मंदर लाष का ॥ जड़िया हीरै लालि ॥ दि
वस चारि का पेषणां ॥ बिनसि जाइगा कालि ॥ कबी
र धूलि सकेलि करि ॥ पुड़ी जु बांधी एह ॥ दिवस चा
रि का पेषणां ॥ अंति षेह की षेह २० कबीर जे धंधै तौ
धूलि ॥ बिन धंधै धूलै नहीं ॥ ते नर बिनठे मूलि ॥ जिनि
धंधै मैं ध्याया नहीं २० कबीर सुपिनै रैणि के ॥ ऊघ
ड़ि आये नैन ॥ जीव पड्या बहु लूटि मैं ॥ जागै तो लै
णा न देण २१ कबीर सुपिनै रैणि कै ॥ पारस जीय मैं छे
क ॥ जे सोऊं तौ दोइ जणां ॥ जे जागूं तो एक २२ कबी
र इस संसार मैं ॥ घणे मनिष मतिहीण ॥ राम नाम जा
णै नहीं ॥ आए टापा दीण २३ कबीर कहा कीया हम
आइ करि ॥ कहा कहैंगे जाइ ॥ इत के भये न उत के
चाले मूल गवाइ २४ कबीर आया अणआया
पा ॥ जे बहु रंता संसार ॥ पड्या भुलावा गाफिलो
गए कबुधि हारि २५ कबीर हरि की भगति बिन धृ
ग जीवण संसार ॥ धूवां केरा धौलहर ॥ जात न लागै
बार २६ कबीर जिहि हरि की चोरी करी ॥ गए राम गु
ण भूलि ॥ ते विधना बागुलि कीये ॥ रहे ऊरध मुषि झू
लि २७ कबीर माटी मलणि कुंभार की ॥ घणी सहै
सिरि लात ॥ इहि औसरि चेत्या नहीं ॥ चूका अबकी
घात २८ कबीर इहि औसरि चेत्या नहीं

यालीहेत रामनामजाण्यानही भ्रांतिपडीमुषिषेह
कबीररामनामजाण्यानहीलागीमोटीषोडि
कायाहांडीकाठकी नांऊचढैबहोडि कबी
ररामनामजाण्यानही बातबिनठीमूलि हरत
हरतहीहारिया परतिपडीमुषिधूलि कबीर
रामनामजाण्यानही पाल्योकटककुटंब धंधा
हीमैमरिगया बाहरहुईनबुंब कबीरमनिष
जनमदुलंभहै देहनबारंबार तरवरथैफलझ
डिपड्या बहुरिनलागैडार कबीरहरिकी
भगतिकरि तजिबिषियारसचोज बारबारनही
पाइये मनिषजनमकीमौज कबीरयहुतन
जातहै सकैतोठाहरलाइ कैसेवाकरिसाधकी
कैगुनगोबिंदकेगाइ कबीरयहुतनजातहै
सकैतोलेहुबहोडि नागेहाथ्योतेगये जिनकेला
षकरोडि कबीरयहुतनकाचाकुंभहै चो
टचहूंदिसिषाइ एकरामकेनांवबिन जदित
दिपरलैजाइ कबीरयहुतनकाचाकुंभहै
लियांफिरैथासाथि ढबकालाग्याफूटिगया
कछूनआयाहाथि काचीकाराजिनकरै
दिनदिनबधैबियाधि रामकबीरैरुचिभई याहि
ओषदिसाधि कबीरअपणौजीवते एदोइ
नैधोइ लोभबडाईकारणौ अछतामूलनषो
इ कबीरषेमायकापदहोइ कछूकरिकधरि
कबीरषेमायकापदहोइ कछूकरिकधरि
रि मानिकरैतोपीवनही पीवतोमानिनिवारि
मानिकरैतोपीवनही पीवतोमानिनिवारि
कबीरदीनगवायाडुनीसो दुनीनचालीसा

षि पाहनु हाडा मारिया । या फिरि आपणो हाथे ॥३२॥
पकुलतो सब बन मय । करम लै पै कुहाडि ॥ आप
आपकों काटिहे । कहे कबीर बिचारि ॥३३॥ कबीर कु
ल षोयो कुल ऊबरै । कुल राष्या कुल जाइ ॥ राम नि
कुल कुल भेटिलो । सब कुल रह्या समाइ ॥३४॥ कबी
र दुनिया के धोषे मूवा । चलै जु कुल की कानि ॥ त
ब कुल किसका लाजसी । जब लै धर्‍या समसानि ॥३५॥
कबीर दुनिया भांडा दुष का । भरी मुहा मुह भूष ॥ अ
दया अलह राम की । कुरलै ऊणीं कूष ॥३६॥ जिहि जेव
डी जग बंधिया । तूं जिनि बंधे कबीर ॥ ह्वैसी आटा लू
ण ज्यूं । सोना सवां सरीर ॥३७॥ कहत सुनत जग जात
है । बिषै न सूझै काल ॥ कबीर प्याले प्रेम के । भरि
भरि पीवै रसाल ॥३८॥ कबीर हद के जीव सौं । हित
करि मुषां न बोलि ॥ जे लागे बेहद सौं । तिन सौं अंत
र षोलि ॥३९॥ कबीर केवल राम की । तूं जिनि छाडै
वोट ॥ घण अहरणि बिचि लोह ज्यूं । घणी सहै सि
रि चोट ॥४०॥ कबीर केवल राम कहि । सुध गरीबी
मालि ॥ कूड बडाई बूडसी । भारी पड़सी कालि
॥४१॥ कबीर काया मंजन क्या करै । कपड धोइ म धो
इ ॥ उजल हूवा न छूटिये । सुष नींदडी न सोइ ॥४२॥
कबीर उजल कपडा पहरि करि । पान सुपारी षा
हि ॥ एकै हरि का नांव बिन । बांधे जमपुरि जांहि
॥४३॥ कबीर तेरा संगी को नहीं । सब स्वारथि बंधी लो
इ ॥ मन परतीति न ऊपजै । जीव बिसास न होइ ॥४४॥
कबीर माइ बिडांणीं बाप बिड । हम भी मंझि बिड

...सपंथ केरी नाव ज्यूं ॥ संजोगि मिलिया ॥५८॥ कबीर हू
र घर उतम घर ॥ बाँगा जगा आये हाट ॥ करम किरा
ना वे बिकरि ॥ उठि जु लागा बाट ॥५९॥ कबीर कौ
ती चितइ ॥ महँगो मोलि बिकाइ ॥ गाहक राजा
महै ॥ औरन देइ आइ ॥६०॥ कबीर डागा लऊ पछिदेड
या ॥ सुपनी दड़ी न सोइ ॥ ऊने पापे त्यौं दहै ॥ औरो
गोरन षोइ ॥६१॥ कबीर मैं मैं बड़ी बलाइ है ॥ सके तो
निकसी भाजि ॥ कब लग राषौं हे सषी ॥ रूई पलेटी प
आगि ॥६२॥ कबीर मैं मैं मेरी जिनि करै ॥ मेरी मूल बिना
स ॥ मेरी पग का पैषड़ा ॥ मेरी गल की पास ॥६३॥ कबी
र नाव जरजरी ॥ कूड़े षेवणहार ॥ हलके हलके ति
रि गये ॥ बूड़े जिनि सिरि भार ॥६४॥२०१॥१११॥
मन कौ अंग ॥ कबीर मन के मतै न चालिये ॥ छाडि
जीव की बाणि ॥ ताकू केरे सूत ज्यूं ॥ उलटि अपूठा
आणि ॥१॥ कबीर चिंता चित निवारिये ॥ फिर बूझी
ये न कोइ ॥ इंद्री पसर मिटाइये ॥ सहज मिलैगा सो
इ ॥२॥ कबीर आसा का ईंधण करौं ॥ मनसा करौं बि
भूति ॥ जोगी फेरी फिल करौं ॥ यौं बिनना वै सूति ॥३॥
कबीर सेरी सांकड़ी ॥ चंचल मनवा चोर ॥ गुण
गावै लैलीन न होइ ॥ कछू येक मन मैं और ॥४॥ क
र मारू मन कूं ॥ टूक टूक है जाइ ॥ बिष की क्या
री बोइ करि ॥ लुणत कहा पछिताइ ॥५॥ कबी
र इस मन कौ बिसमिल करौं ॥ दीठा करौं अदीठ ॥ जे
सिर राषौं आपणां ॥ तौ परसि रिलौ आगीठ ॥६॥ क
ज
मन जाणौं सब बात ॥ जाणत ही औगुण कै

काहू की कुसलात । कर दीपक कूवे पड़ै ॥७॥ कबीर रिदै
रहासी तरि आरसी । मुख देषणा न जाइ ॥ मुख तौ तौ परि
देखिये । जे मन की दुबिधा जाइ ॥८॥ कबीर मन दीयां म
न पाइये । मन बिन मन नहीं होइ ॥ मन उनमन उस
अंग ज्यूं । अनल अंबर सों जोइ ॥९॥ कबीर मन गोरष
मन गोविंदो । मन ही औघड़ होइ ॥ जे मन राषै ज
तन करि । तौ आपै करता सोइ ॥१०॥ कबीर एक जु दो
सत हम कीया । जिसु गलि लाल कबाइ ॥ सब जग धो
बी धोइ मरै । तौ भी रंग न जाइ ॥११॥ पांणी ही तै पतला
धूंवां ही तै झीणां । पवनां बेगि उतावला । सो दोसत
कबीरै कीन्ह ॥१२॥ कबीर तुरी पलांणिया । चाबक ली
या हाथि । दिवस थकां सांई मिलौं । पीछै पड़ि है राति
॥ कबीर मन वा तौ अधर बस्या । बहुतक झीणांह
२ । आलोकत सचु पाइया । कबहूं न न्यारा सोइ ॥१४॥
कबीर सतन मास्या मन करि । सके न पंच प्रहारि सी
ल साच सरधा नहीं । इंद्री अजहूं उधारि ॥१५॥ कबीर
मन बिकरै पड्या । गया स्वाद कै साथि । गल का षा
पा बरजता । अब क्यूं आवै हाथि ॥१६॥ कबीर मन गा
फिल भया । सुमिरण लागौ नांहि ॥ घणी सहैगा सा
सणा । जम की दरिगह मांहि ॥१७॥ कबीर कोटि क
रम पल मैं करै । यहु मन बिषिया स्वादि ॥ सतगुर स
बद न मांनई । जनम गवाया बादि ॥१८॥ कबीर मैं मं
तो मन मारि रे । घट ही मांहै घेरि ॥ जब ही चालै पी
ठि दे । अंकुस दे दे फेरि ॥१९॥ कबीर मैं तो मन मा
रै लोका रिकरियासि । तब सुष पावै सुंदरी
ना

ीभे हरि को मिलै सो मनि मोटी आस हरि विचि घालै अं
तरा माया बडी बिसास ॥११॥ कबीर माया मोहणी मो
हे जांण सुजांण भागां ही छूटै नहीं भरि भरि मारै बांण
॥१२॥ कबीर माया मोहनी जैसी मीठी षांड सतगुर की
कृपा भई नहीं तौ करती भांड ॥१३॥ कबीर माया मोहणी
सब जग घाल्या घांणि कोई येक जन ऊबरै जिनि
तोडी कुल की कांणि ॥१४॥ कबीर माया मोहणी मा
गी मिलै न हाथि मनह उतारी झूठ करि तब ल
गी डोलै साथि ॥१५॥ कबीर माया दासी संत की ऊ
भी देइ असीस बिलसी अरु लातौं छडी सुमरि
सुमरि जगदीस ॥१६॥ माया मूई न मन मूवा मरि म
रि गया सरीर आसा त्रिस्नां नां मुई यौं कहि गया
कबीर ॥१७॥ कबीर आसा जीवै जग मरै लोग मरै मरि
जाइ सोई मूये जे धन संचते सो ऊबरे जे षाइ
॥१८॥ कबीर सो धन संचिये जो आगै कौ होइ सीस
चढाये पोटली लै जात न देष्यां कोइ ॥१९॥ कबीर
त्रिया त्रिस्नां पापणी तासौं प्रीति न जोडि पैडी च
ढि पाछा पडै लागै मोटी षोडि ॥२०॥ कबीर त्रिस्ना
सींचीं ना बुझै दिन दिन बधती जाइ जवासा के
रूष ज्यूं घण मेहां कुमिलाइ ॥२१॥ कबीर जग की
को कहै जो जल बूडै दास पारब्रह्म पति छाडि
करि करै मांनि की आस ॥२२॥ कबीर माया तजी तौ
का भया जे मांनि तजी नहीं जाइ मांनि बडे मुनि
वर गले मांनि सबनि कौं षाइ ॥२३॥ कबीर राम हि
षोडा जांणि कै दुनियां आगै दीन जीवौ कौ

उकहै।माया केआधीन ९ कबीर रजनी रूंजैकी
कली।तापरि साजपारूप।रामनाभै बिनदडिहै क
नककामिनी कूप।८ कबीर माया तरवर त्रिविधिका
।साषा उषसंताप।सीतलता सुपिनै नहीं।फलफी
कात नितापः१० कबीर माया फाकणी।सबकिसही
कूं षाइ।दांतउपाड्यौपापणी।जेसंतौ नेडीजाइ।
११ कबीर नलनी साइर घरकीया।दौ लागी बउ
तेणि।जलहीमांहे जलमूई।रूरबजनम लिखेणि
१२ कबीर गुंणकी बादली।तीतरवाणी छांहा।बा
हरिरहैते ऊबरे।भीगे मंदर मांहि १३ कबीर माया
मोहकी।भई अंधारी लोइ।जेसू ताते मुसिलीया
रहा बसतको रोइ १४ कबीर संकर लहीं थैम बल
है मयाइहिसमा रि।तेक्कू छूटै बापड़े।बांध्या
सिरजनहारि १५ कबीर बाड़ चढंती बेलिज्यूं
उलकी आसा फध।छूटै पर छूटै नहीं।मइ गुंथा
चा बंध १६ कबीर सब आसण आसातणा।नि
रवृति के को नाहि।निरवृति के निवेनहीं।नि
वृति पंच मांहि १७ कबीर इस संसार का।भू
ग माया मोहा।जिहि घरि जिता बधावणा।तिहि
घरि तेता अंदोह १८ कबीर माया हमसूं पूंकहो
तूं मति दे रे रूठि।औरहमारा हम बलूं।गयाकबी
रा रूठि १९ कबीर बगुलानी रबिटालिया माय
रं चंढपाकेलेक।औरपंमेरूपीगई
चंच २० कबीर माया जिनि मिलै
हं तारदसे मुति पर गिलै किसीभर।

तैतौंहि मनिषनहीक्यौं नगति ॥ कोधमजमदु
रिजांहि ॥ कबीरपदगाया मनहरषिया ॥
साषीकह्यौंआनंद ॥ सोनतननांवंनजांणिया
गलमैंपड्याफंध ॥ कबीरकरतादीसैकी
रतन ॥ ऊंचाकरिकरितंड ॥ जाणौबूफैकछु
नहीं ॥ यूंहीआंधाकूंषंड ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कबीरमैंजान्यौ
पढिबौभलौ ॥ पढिबाथैभलौजोग ॥ रामनाम
सूंप्रीतिकरि ॥ भलभलनींदौलोग ॥ कबीर
पढिबादूरिकरि ॥ पुसतकदेइबहाइ ॥ बांवन
अषिरसोधिकरि ॥ ररैममैंचितलाइ ॥ कबीरप
ढिबादूरिकरि ॥ आपिपढ्यासंसार ॥ पीडनउ
पजीप्रीतिसूं ॥ तौक्यूंकरिकरैपुकार ॥ कबी
रपोथीपढिपढिजगमूवा ॥ पंडितभयानकौ
इ ॥ एकैआषररांमका ॥ पढैसुपंडितहोइ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कामीनरकौ अंग ॥ कबीरकाम
णिकालीनागनी ॥ तीन्यूंलोकमंझारि ॥ रामस
नेहीऊबरे ॥ विषईषायेझारि ॥ कबीरकामया
मीनांषांणिकी ॥ जेछेडूं तौषाइ ॥ जेहरिचरणां
राचिया ॥ तिनकैनिकटिनजाइ ॥ कबीरपरना
रीराताफिरै ॥ चोरीबिढताषांहि ॥ दिवसचारि
सारहै ॥ अंतिसमूलाजांहि ॥ कबीरपरनारीप
रसुंदरी ॥ बिरलाबंचैकोइ ॥ षातांमीठीषांडसी
अंतिकालिबिषहोइ ॥ कबीरपरनारीकै
वलौ ॥ औगुणहैगुणनांहि ॥ षारसमंद

नौ केतावहिवहिजाहि कबीरपरनीफकीर
गी जैसी ल्हसनकीबानि इाोवसिरबाइये
गटहोइछिवान ॥ नरनारीसबनरकहै न
लगदेहसकाम कहैकबीरतेरामके जेसुमि
रनिकाम ॥ कबीरनारीसेतीनेह बुधिबमेकस
बहीहरै काइगमांवदेह कारिजकोईनासरै
कबीरनानांभोजनस्वादसुष नारीसेतीरंग वे
गिछाडिपछिताइगा कैहैमूरतिसंग ॥ कबीर
नारिनसावेलीनिसुष जानरपासैहोइ भगति
मुकतिनिजग्यानमैं पैसिनसकैकोइ ॥ कबीर
एककनकअरुकामनी विषफलकीयेउपाइ
देषेहीविषचढै षायांसूमरिजाइ ॥ कबीर
एककनकअरुकामनी दोअगनिकीझाल
देषैहीतनप्रजलै परस्यांहोइपैमाल ॥ कबीर
जगकीप्रीतडी केतेगएगडंत केतेअजहूंजा
सी नरकिहमंतहसंत ॥ कबीरजोरूजूठ
निजगतकी भलेबुरेकाबीच उतमतेअलगेर
हैं निकटिरहैतेनीच ॥ कबीरनारीकुंडनर
कका बिरलाथंभैबाग कोईसाधजनऊबरै
सबजगमूवालाग ॥ कबीरसुंदरिथेंसू
ली बिरलाबचैकोइ लोहनिहालाअगनिमैं
जलिबलिकोइलाहोइ ॥ कबीरअं
नहीं कटैनससेसूला औरगुनहोह
सोसीहालनमूला ॥ कब
फाइडीकेरैस्वादि हीराषोयाहाथथें

ई ॥ कबीरकामीक्रूंसंमीनभावईं ॥ विष
सोधि कूंनगिनजाईजीवकी आवइंमरही
ती धि ॥ कबीरबिषेबिलेबीआतम ॥ ताकां
कि गागाथासाईंधि ॥ ध्यानअंबरकमाई मा
जपरमोधि ॥ कबीरबिषेकरमकोकंचली प
रिकुवानरनाग ॥ फिरफोड़ेसूजैनहीं कोग्या
तातासलावा ॥ कबीरकामीकलेनहरिभजे ज
पनकेसोजाप ॥ रामककासेजलिमरे कोपूरिब
लोपाप ॥ कबीरकामीलज्यानाकरे मनमाहै
अहिलाद ॥ नीदनमांगेसाथरा भूषनमांगेस्वाद
कबीरनारिपराईआपणी ॥ भुगत्यानरकहि
जाइ ॥ आगिआगिसबएकहै ॥ तामेंहाथनब
हि ॥ कबीरकहताजातहूं ॥ चेतेनहींगव
बरागमिलीकहां ॥ कामीबारनपार ॥ कबी
पानीतोनोडरभया ॥ मानैनाहीसकी ॥ कबीरक
रबसिपडया ॥ चेबिषेविनिसके ॥ तायेब
मलगवाईपा ॥ आपरामलेकरता ॥ २०॥
रामना ॥ मनमेंरहैहरता ॥ कबीरसहजसहजसब
॥ जिन्हसहजैबि
ई सहजनचीन्हेकोई ॥ कबीरसह
लेजी सहजकहीजेसोइ ॥ प
जसबकोकहै सहजनचीन्हैकोइ ॥ सहजैसं
सरता ॥ सहजकहीजेसोइ ॥ एकमेक
मापे सुतबिलकामनिकाम ॥ कबीरसं
कबीरराम

सहज न चीन्है कोइ जिन्ह सहजै हरि जी मिलै
सहज कहीजै सोइ ॥४॥ ७०३ ॥ साच कौ अंग ॥
कबीर पूंजी साह की तूं जिनि खोवै ख्वार, खरी बिगू
चनि होइगी लेखा देती बार ॥१॥ कबीर लेखा देणां
सहरा जे दिल साचा होइ उस चंगे दीवान मैं प
लन पकडै कोइ ॥२॥ कबीर चित चमंकिया कीया
पयांनां दूरि, काइथि कागद काढिया तब दरि
गह लेखा पूरि ॥३॥ कबीर काइथि कागद काढिया
तब लेखै वार न पार, जब लग सास सरीर मैं तब
लग रांम संभार ॥४॥ कबीर यहु सब झूठ बंदगि
बिरियां पंच निवाज, साचै मारै झूठ पढि काजी
करै अकाज ॥५॥ कबीर काजी स्वादि बसि ब्रह्म
हतै तब दोइ ॥ चढि मसीति एकै कहै दरि क्यूं सा
चा होइ ॥६॥ कबीर काजी मुलां भ्रमियां चल्या दु
नीं के साथि, दिल थैं दीन बिसारियां करद ल
ई जब हाथि ॥७॥ कबीर जोरी करि जिबह करैं क
हतैं है जु हलाल, जब दफतर देखैगा दई तब है
गा कौंण हवाल ॥८॥ कबीर जोरी कीयां जुलं
म है मांगै न्याव खुदाइ, खालिक दरि खूनी
खडा मार मुहै मुहि खाइ ॥९॥ कबीर साईं सेती चो
रियां चोरां सेती गुझ, जाणैंगा रे जीवडा मार
पडैगी तुझ ॥१०॥ कबीर सेख सबूरी बाहिरा क्या ह
ज काबै जाइ, जिन्ह की दिल स्याबति नहीं तिन
कौं कहां खुदाइ ॥११॥ कबीर खूब खांणां है खीचडी
मांहि पडै टुक लूंण, हेडा रोटी खाइ करि गला

कबीर मन तो मैं मैवासी मूडिलै केसौ मूंडै काइ
। कछु कीया सु मन किया केसौ कीया नांहि कबी
र मूंड मुंडावत दिन गए अजहूं न मिलिया राम रा
मनाम कहु क्या करै मन के औरै काम कबीरस्वा
गप हरि सौ रहा भया माया पीया बूटि जिहि से नी
साधनी कले सोतो मैल्ही मूंडि कबीर बैष्णो भया
तो का भया बूझ्या नहीं बिमेक छापा तिलक बना
इकरि दगध्या लोक अनेक कबीर तन को जो
गी सब करै मनकू बिरला कोइ सब सिधि सहजै पा
इये जे मन जोगी होइ कबीर पष तो एक है प
डहादीया लेष भरम करम सब दूरि करि सबही मा
हि अलेष कबीर सरम लागा जीव का अनत छाडि
धरिया लेष सतगुर परचे बाहिरा अंतरि रह्या अले
ष कबीर जगत जहंदम राचिया झूठे कुल की
लाज तन बिनसै कुल बिनसि है रह्यो न राम जि
हाज २० कबीर पष ले बूडा पिरथमी झूठे कुल की
लार अलष बिसार्या भेष मैं बूडे काली धार २१
कबीर चतुराई हरि ना मिलै ए बातां की बात ऐक निस
प्रेही निधार का गाहक गोपीनाथ २२ कबीर नवसा
साजे कामनी तनमन रही संजोइ पीव के मन मानै नहीं
पटंबर कीयै क्या होइ २३ कबीर जब लग पीव परचा न
हो कन्या कंवारी जाणि हथलेवा होसै लीया मुसकल
पड़ी पिछांणि २४ कबीर हरि की सगति का मनमें
घरनउलास मैवासा ताजै नहीं हूंन मतै निज दास २५
कबीर मैवासा मोई कीया दुरिजन काढे दूरि राज पियार ।

रैसां मकां ॥ नगर बस्या भर पूरि ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कबीर तिसि रै नव दस का सको
घड़िया ईसो भि खिकार ॥ मूल बिनठा लानदी ॥ खिन संग
तिम ठछार ॥ कबीर मूरिष संग न कीजिये ॥ जो हा
जलि न तिराइ ॥ कदली सीप भुवंग मुषि ॥ एक बूंद ति
ऊं भाइ ॥ कबीर हरिजन सेती रूसणां ॥ संसारी सूं हे
त ॥ तै नरक हैं नवी पजे ॥ ज्यूं कालर का षेत ॥ कबीर मा
री मरूं कुसंग की ॥ केला काठै बेरि ॥ वो हालै वो चीरिये
साषित संग न बेरि ॥ मेर निसांणी मीच की ॥ कुसंगति
ही का जा ॥ कबीर कहै रे आंगणां ॥ बांणी भूरत संग
जा ॥ कबीर कहि नैं क्यूं बणो ॥ अणमिलता सूं संग दी
पक के भावै नहीं ॥ जलि जलि मरै पतंग ॥ कबीर मा
षी गुड मैं गडि रही ॥ पंष रही लपटाइ ॥ ताली पीटै सि
र धुनैं ॥ मीठै बोई माइ ॥ ७ ॥ कबीर ऊंचे कुल क्या जनमि
यां ॥ जे करणी ऊंच न होइ ॥ सोवन कलस सुरै भरया ॥
साधौ नींद्या सोइ ॥ ८ ॥ [illegible]
ग ॥ कबीर देषादेषी पाकडे ॥ जाइ अपरचै छूटि ॥
बिरला कोई ठाहरै ॥ सतगुर सांमी मूठि ॥ कबीर
देषादेषी भगति है ॥ कदे न चढई रंग ॥ बिपति पड्या
यूं छोडिसी ॥ ज्यूं केंचली भुवंग ॥ कबीर करिये तो क
रि जाणिये ॥ सारीषा सूं संग ॥ लीर लीर लोई थई ॥ तऊ
न छाडया रंग ॥ कबीर यहु मन दीजि तामकूं सुठि
से वग न लसोइ ॥ सिर ऊपरि आरा सहै ॥ तऊ न दूजा
होइ ॥ कबीर पांहन तां कि न...
मैंद. गायारा ता सांनदी ॥
गो ासं प्रीत करि जो निरवाहै ओ

ाचिये वेषतजागैषोडि ॥ कबीरतनपंषीभया ॥
हांमनतहांउडिजाइ ॥ जोजैसीसंगतिकरिसोतै
फलषाइ ॥ ९ ॥ कबीरकलजलकेरीकोढडी तैसायुस
सार बलिहारीतादासकी पेसिरतिकसगाहा
॥ कबीरसेष
बाहरिदीसेसा
तिनका करतूतिकरिअपराध ॥ कबीरऊजलदेषितधी
धगति मांहैमहाअसाध ॥ ११ ॥ औरेबैसिचपेटिसी पूले
जिये बगाज्यूं मांडे ध्यान ॥ तेतासाधन
बूडे ग्यान ॥ १२ ॥ कबीरजेतामीठाबोलणां ऊंडेदेसीआणि
जांणि ॥ पहलीपाछदिषाइकरि ॥ कबीरसंगतिसाध
चेदनहोसीबावना ॥ नी
की कदेननिरफलहोइ ॥ कबीरसंगतिसाधकी बेगक
बनकहिसीकोइ ॥ दुरमतिहरिगंवारसी देसीसुमतिबत
री जैजाइ ॥ कबीरमपूराजाउतावैधारिका ॥ मावेजाउ
६२ ॥ साधसंगतिहरिभगतिबिन ॥ कछूनक
नापि ॥ कबीरमेरेसंगीदोइजणा ॥ एककैष्ण
वेहापि ॥ १४ ॥ वोहेदातामुकतिका ॥ वोसुमिरावेनाव
राकराम ॥ कबीरबनबनमैंफिरया ॥ कारतिअपनैं
रामसनेहीकारणै ॥ तिनसारेसबकाम ॥ १५ ॥
रसोइदिनभला ॥ जादिनसंतमिलाइ ॥ १६ ॥ कबीर
रेसिरहै ॥ पापसरीरोजांहि ॥ आपसरी
कैबिडेबैठोआकपरलास ॥ कबीरआई
जीचैजेहोतैउनपास ॥ १७ ॥ जाइमिलैजबसंगी
पांगपाबैनकोइ ॥ कबीरजातिबूं
तिकहोइ ॥

नओ। करेंकूं वसूं नेह। ताकीसंगतिरामजी सुपिनेंही
जिनिदेह॥ कबीरतासमिलाइ आसदियानीसव
से। नहीतरबेगिउठाइ नितकागंजनकोसहे॥ क
बीरकेनीजहरिससंदकी। कततउपजेकतजाइ ब
लिहारीतादासकी॥ ३ जटीमांहिसमाइ॥ कबीर
काजलकेरीकोठडी। काजलहीकाकोट। बलिहा
रीतादासकी। जेरहेरामकीवोट॥ १२ कबीरजगतह
जारीकपडा। तामिमलनससाइ। साषितकाजौको
बजी। तावेतहांबिछाइ॥ १३॥ ४ २ ३ सा धसाधिमूत
कोअंग॥ कबीरनिरबेरीनिहकांमता। सांइसेतीनेह
बिषियासूंन्यारारहे। संतनिकाअंगएह॥ कबीरसंतन
वूडेसंतइ जेकोटिकमिलेअसंत॥ चंदनभवंगाबेटि
या तऊसीतलगतनजंत॥ कबीरहरिकासांवता
इरेपेदीसंततनिधीनामनिउनमनां॥ जगिरूंगंडा
फिरंतइ कबीरहरिकासांवतां जीगणपंजरतास॥
रोगिनआवेनीदडी अपानचटेइमास॥ कबीरअ
गरतासुघिसोवेगा रतेनीदनआइ॥ ज्यूंजलटेमन
छली। यूंबेलंतबिहाइ॥ कबीरजिनिकरजोग्यो
नहीं। तिनसुधिनीदडी बिहाइ मेरअबकीवूकिया
फूलीपडीबलाइ॥ कबीरजांणजगतकानितमगा
अणजांणेकाराज। असरपसरसमकैनहीं। पेटभर
तसूंकाज॥ कबीरजिहिघटिजांणबिनांणहे॥ ति
हिघटि ... बिनउघि
सैनसूंकूफंगाइ
तासिनचीतूंकोइ तबोल।

नादोइ कबीरप्रीतकदौ दीसांइया जोगकहैप्रं
रोग ज्यांनैलंघणानितकैरै रांमपियारेजोग कबी
रकांमभिनावरांमकू जेकोजाणेराखि कबीरनि
चाराक्याकरै जेसुषदेवबोलेसाखि कबीर
कांमणिअंगबिरकतभया रतभयाहरिनाइ सा
षीगोरषनाथज्यूं अमरभयेकलिमांहि कबीर
जहिबिषेबिषारीप्रीतिसूं तबअंतरिहरिनाहि जे
बअंतरिहरिनाहि जबअंतरिहरिजीबसे तबबि
षियासूंचितनाहि कबीरजिहिघटमेंसबसे
तिहिघटिरांमनजोइ रांमसनेहीदासबिचि ति
णांनसंचरहोइ कबीरस्वारथकासबकोसगा
जगसगलाहीजाणि बिनस्वारथआदरकरै सो
हरिकीप्रीतिपिछांणि कबीरजिहिहिरदैह
रिआइया सोक्यूंछांनांहोइ जतनजतनकरिदा
बिये तऊउजालाहोइ कबीरफाटेदीदमेंकि
रू नजरिनआवेकोइ जिहिघटिमेरासांइया
सोक्यूंछांनांहोइ कबीरसबघटिमेरासांइया
सूंनीसजनकोइ भागतिन्हूंकोहेसषी जिहिघ
टिप्रगटहोइ कबीरपावकरूपीरांमहे घटि
घटिरह्यासमाइ चितचकमकलांगेनहीं ताथै
धूवांहैहैजाइ कबीरषालिकजागिया और
नजागेकोइ कैजागेबिषईबिषभरया कैदास
बंदगीहोइ कबीरचाल्याजाइथा आगेमि
ल्याखुदाइ मीरीमुझसूंयूंकह्या किनिफुरमा
ईगाइ

कबीर चंदन की कुटकी भली ॥ नां बबूर की अंबराउ
बैसनौ की छपरी भली ॥ नां साकत का बड गाउ ॥ ३ ॥ क
बीर भरपा टगा सूब सबसे ॥ आनंद गये बाढ ॥ राम
सनेही ना दिया उजड मेरे भाइ ॥ ४ ॥ कबीर दि घरि
साधन पूजिये ॥ हरि की सेवा नांहि ॥ ते घर मड हट
सारिषे ॥ भूत बसैं तिन मांहि ॥ कबीर है गै गैवर स
घन घन ॥ छत्रधजा फहराय ॥ ता सुष तें भिष्या भली
हरि सुमिरत दिन जाइ ॥ ५ ॥ कबीर है गै गैवर सघन
घन ॥ छत्रपती की नारि ॥ तास पटंतर नां तुलै ॥ ह
रिजन की पनिहारि ॥ कबीर क्यूं नृप नारी नींदि
ये ॥ क्यूं पनिहारी कूं मांन ॥ वा मांग संवारै पीव कूं
वा नित उठि सुमिरै राम ॥ ६ ॥ कबीर धनि ते सुंदरी
जिनि जाया बैसनौ पूत ॥ राम सुमिरि निरभै हुवा
सब जग गया अऊत ॥ ७ ॥ कबीर कुल तौ सो भला ॥ जि
हि कुलि उपजै दास ॥ जिहि कुलि दास न ऊपजै ॥ सो
कुल आक पलास ॥ ८ ॥ कबीर साषित बांमण मति
मिलौ ॥ बैसनौ मिलौ चंडाल ॥ अंकमाल दे भे
टिये ॥ जांनि मिले गोपाल ॥ ९ ॥ कबीर राम जपत दा
लिद भला ॥ टूटी घर की छांनि ॥ ऊंचे मंदिर जालि
दे ॥ जहां भगति न सारंगपांनि ॥ १० ॥ कबीर भया है
केतकी ॥ भवर भये सब दास ॥ जहां जहां भगति क
बीर की ॥ तहां तहां राम निवास ॥ ११ ॥ प २५ ॥ ३५ ॥
साधि को अंग ॥ कबीर मक्षि अंगि जे कोइ रहै तो ति
रत न लागै बार ॥ ऊँ ऊँ अंग सूला गि करि हू
वत है संसार ॥ कबीर उ नि षा हरि के रि पक्ष

कुतपति है॥ दोकुकहि
ढोला॥ बकुसी तन जब कासो हक कीया मधि
खा॥ कबीर अनन ञ्ज बिगतारहे॥ बिनता
तेरत रिनास बसु ध्रम्योम रिगमि नैरतिगामि॥ नासुप
हर बिस धास बासु निल बिया जहा खाहडी
नतराम कबीरा तहा तगाये॥ ३ निया पहोबहार
न धम॥ जिहि पहेपडि तिहि चढि रस्ता कबी
२॥ खोघटघाटी गुरि कही॥ मतगुर के परसा
२॥ कबीर सरगान रकथे हरस्या॥ रहि सके तिरखादि
दि॥ चरन कवल की मोज मे मुसलमान खुदाइ
कबीर हिंदू मुये राम कहि॥ दुइ मे कदे न जाइ॥ क
कहे कबीर सो जीवता॥ सुखया सुख के कूरि॥ सदा
रहु बियाम बाउ बक॥ जिति सुख दुख मे कूइ२॥ कबीर ह
नेही राम के॥ चेतातउ जल नाइ॥ राम सनेही यर्धि ले
दीपीयरी॥ १॥ कावा फिरि कासी भया॥ राम
इन्हू बैरागवाइ॥ मोठ चून मेदा भया॥ बैठि कबीर
मया रहीम॥ कबीर धरती असमान बिचि॥ दोइ कू
॥ कबीर धरती अस मान मे पड्या अरू चोरा
अबधू॥ दबदरस तन मे
सध॥ नीरखान बा
कबीर खार कूप दरिना र है॥ तनका जरा न दार
हंस रूप को रेसाध है॥ सबै बेखो जाणी॥
बीरसा बितकोन ही॥ ताही तन की हाणि॥
राम न उचे॥ कबीर राम नाम सबको कहे॥ कहि
॥ सोई राम सता कहे॥ सोई को तिगा
बिचार॥

कबीरआगिकह्यांदाझैनहीं। जेनदीचेंपैपाइ। जबल
गिदवजांणिये। रांमकह्यानोकोइ॥ कबीरसोचि
चारिया दूजाकोईनांहि। आपापरजबचीन्हिया। तब
उलटासमांन्यांमांहि॥ कबीरपांणींकेराषूतला। राप्या
पवनसंवारि। नांनांबांणींबोलिया। जोतिधरीकरता
रि॥ नौमरगसूनअनूकिया। कबीरअरघरबारि॥
तिनिसुलभायाबापुडे। जिनिजांनीमगविसुरारि॥ ५
कबीरआर्षींसाषी सिरकटै। तौरबिचारीजाइ। म
तिषतीतिनऊपजे। तौरातिदिवसमिलिजाइ॥ कबी
रसोईअघिरसोइबयेन। जनजजुवाचवंत। कोईएक
मेलैकेवलनि। अंमीरसोइगांऊंत॥ ७ कबीरहरिमोत्पी
कीमालहै। मोइकाचेतागि। जतनकरीकेंटाघणां।
टूटैगीकहूंलागि॥ ८ कबीरमननहींछाडैबिषै। बिं
षैनछाडैबिषै। बिषैनछाडैमनकूं। इनकाइहैसुभा
व॥ हरिजागीजुगजनंको। षंडितमूलबिनास। कहौ
किमबिगदकिजे। ज्यूंजलमैंप्रतिब्यंब। त्यूंसकलंरा
मजांणीजे। सोमनसोतनसोबिषै। सोत्रभुवनपतिक
हूंकस। कहिकबीरबिंदऊनरा। ज्यूंजलपूरयासक
लरस॥ १० ॥ ५४७ ॥ ३३ ॥ उपदेसकोअंग॥ हरिजीइहै
बिचारिया। साषीकहीकबीर। भौसागरमैंजीवहैं। जे
कोइएकहैतीर॥ कबीरकलीकालततकालहै। बुरा
नकरियोकोइ॥ अनबांवैजोहांदाहियौं। बोवैसुलुणा
तांहोइ॥ कबीरसंसाडीवमै। कोईनकहैसमझाइ
विविधिबिधिबांणीबोलता
बीरंसेसाइरिकरि जांमगमदरपन्नंम

मिलै सुरतिसमानोमन ॥ ॥ कबीरमहीतीमी
ली बैरागीलोसोष ॥ ३ ॥ कोट्यांविधिजीव्है सो
नैसंतोसीष ॥ ॥ कबीरबैरागीलोबिकैटमनामि
ची चितउदारा ॥ ३ ॥ चूकारीतापडै ॥ ताकूवारन
पार ॥ ॥ कबीरजैसीउपजैपडसूं ॥ बैसीनिबहैवोरि
तोपैकापैकाजोडता ॥ जुडिसोलाषकरोरि ॥ ॥ कबी
रहरिकेनांउसूं ॥ प्रीतिरहैइकतार ॥ तोमुषतैमोती
कडै ॥ हीरेवारनपार ॥ ॥ कबीरऐसीबाणीबोल
ये ॥ मनकाआपाषोइ ॥ अपनांतनसीतलकरै ॥ और
नकूसुषहोइ ॥ ॥ कबीरकोईएकराषैसावधान
चेतनिपहरेजागि ॥ बसंतबासनसूंषिसे ॥ चोरन
सकईलागि ॥ १० ॥ ५० ॥ ३ ॥ [illegible] ॥
कबीरजितिनरजठराहि ॥ उदिकथीपिंडप्रगट
कीयो ॥ सिरजेश्रवनकरचरन ॥ जीवजीभमुषताम
यो ॥ उरधपावऊधसीस ॥ बीसपंषाइसरषीयो ॥ अं
नतहांजरै ॥ जहांतैअंतरचषियो ॥ हिमातिमय
नकउदमैं ॥ उदनकबकूंछूटै ॥ कष्टकरयाल
बीरकहि ॥ ८ ॥ बप्रतिपालक्यांकरै ॥ ॥ कबीरसू
षावाकरै ॥ कहासुनावैलोग ॥ माडाघडिजि
षदीया ॥ साईपूरनजोग ॥ ॥ कबीरचरनद
चीन्हिले ॥ षेबेकूंकहारोइ ॥ दिलमदिरमैं
रि ॥ तागापक्षैवडासोइ ॥ ॥ कबीररामनाम
बाढडा ॥ बाढीबीजअघार ॥ अतिकालि
है ॥ तोनिरफलकदेनजाइ ॥ ॥ कबीरबि
मनमैंबसे ॥ साईचितमेंआंणि ॥ बिनवि

करै रहै प्रभू की बांणि ॥ कबीर कालूं चितवैं का
तैरचंताहोइ ॥ आमन चिंता हरि करै जो तोहि ॥ क
बीर जाकूं जेता निरमला ॥ ताकूं तेता होइ ॥ रती घटै
ना तिल बधै ॥ जो सिर कूटै कोइ ॥ कबीर चिंतानक
रिए चितरऊ ॥ सांई है समरथ ॥ पसू पंषेरू जीवजंत
तिनकी गांठी किसा गरथ ॥ कबीर संतन बांधैग
ठडी पेट समाता लेइ ॥ सांई सूं सनमुष रहै ॥ जहां मा
गैतहां देइ ॥ कबीर रांम नाम सूं दिल मिलो ॥ जेम हं
म पड़ी बिराइ ॥ मो हि भरोसा इष्ट का ॥ बंदा नरकि न जा
इ ॥ कबीर तूं का है डरै ॥ सिर परि हरि का हाथ ॥ हस
ती चढि नही डोलिये ॥ कूकर भसै जु लाष ॥ कबीर
हसती चढिया ग्यांन के ॥ सहज दुलीचा डारि ॥ स्वांन
रूप संसार है ॥ पडा भसु झौष मारि ॥ कबीर माग
णों मरण करी ॥ मां तिसा तिका नो ज ॥ सबा किस ही
का नही ॥ चिल बिलाइ ते बडराज ॥ कबीर मांनि महा
तम प्रेम रस ॥ गरवा तणा गुण नेह ॥ ए सब ही अहलाग
पा ॥ जबर कह्या कछु देह ॥ कबीर मांगण मरण मां
न है ॥ बिरला बंचै कोइ ॥ कहै कबीर रघुनाथ सूं
कबीर पांडल पंजर मन भवर ॥ अरथ अनूप मबास
रांम नाम सींच्या अमी ॥ फल लागा बेसास ॥ कबीर
मेर मिटी मुकता भया ॥ पाया ब्रह्म बिसास ॥ अब मे
रे दूजा को नहीं ॥ एक तुम्हारी आस ॥ कबीर जाकी
दिल मैं हरि बसै ॥ सो नर कलपै कोइ ॥ एकै लहरि सं
मंद की ॥ दुष दालिद सब जाइ ॥ कबीर पद गाये लै
लीन कै ॥ कटी न संसै पास ॥ सत्रेपिछ प.

कबिनाबेसास, कबीरगावगाहीमेराजहैरा
वगाहीमेराग। २कबेरागी मिहमें स्कगहीही
बराग कबीरगापानिनिपायानही क्षणगांपा
यें २१ जिनिगायाविसवासस्ं तितरामरत्माम
रपूरि
कबीरसेपदमाहिसमाइया सोसाहिबनहीहो
६ सकलमांडमेरमिरह्या साहिबकहियेसोइ
रहैनिरालामाहइपे सकलमांडतामाहि क
बीरसेवेतासको २जाकोइनाहि कबीरमो
लैमूलीषसमके बङुतकीयाबिमचार सतगुरि
सरूबताइया पूरिबलाभरतार २ कबीरगाके
मुहमाथानही नहीरूपकरूप पुङुपवासथें
पतला ऐसातत्तअनूप
कबीरमेरेमनमेपरिगइ ऐसापकदर
र फाटाफटकपषाराज्यूं मिल्यानइजीबार क
बीरमनफाटाबाइकबुरे मिटीसगाइसाक कबी
पर इधतिवासका कुकटिहुवाम्राक कबी
रचंदनमागागुलाकरे जैसेचोलीपन दोइजन
मागेनामिलै मोताहलअरुमन पामिबिन
कपडाकहेसुर मन होइ कबीरत्यागेग
नकरि कनककामिनीदोइ कबीरचितचे
लमैगारकहो चेतनिहैपेमंत कनकनकीसंलि
डिये गलबलसहरअनंत कबीरजातहैसं
जागाहै तेरीहसानजाइ बेवटयाकीनावज्यं
घरोमिलेगेआइ कबीरनारमिला वतक

फिरे।साधुरघरघरबार।जोरूषावतहोइगा।साध
बैगाऊषमाहिं।७।कबीरसतगांठीकोपीनहे।साध
नमानेसंक।रांमअमलिमातारहे।गिणैइदकोरं
क।८।कबीरदावेदाझणिहोतहे।निरदावेनिर
संक।जेनरनिरदावेरहे।गिणैइदकोरंक।९।क
बीरसबजगहंढिया।मंदलकंधिचढाइ।हरिबि
नअपनांकोनहीं।सबदेषेठोकिबजाइ।१०।
।२८।।संमरथाइकोअंग।।नांकछुकीयानकरि
सक्या।नांकरणेजोगसरीर।जेकछुकीयासुह
रिकीया।ताथैभयाकबीरकबीर।१।कबीरकीया
कछूनहोतहे।अनकीयासबहोइ।जेकीयाक
छुहोतहे।तौकरताओरेकोइ।२।कबीरजिसहि
नकोइतिसहितूं।जिसहितूंतिससबकोइ।दरि
गहतेरीसाइंयां।नांमहरूमनकोइ।३।कबीरए
कघडेहीनालहे।औरघडाबिनलाइ।साइंमे
रासुलषनां।सूतांदेइजगाइ।४।कबीरसातसमं
दकीमसिकरौं।लेषनिसबबनराइ।धरतीसब
कागदकरूं।तऊहरिगुणलिष्यानजाइ।५।क
बीरअबरनकोंकाबरनिये।मोपेलष्यानजाइ
अपणांबांणांबाहिया।कहिकहिथाकोमाइ
।६।कबीरफलबांछैफलदांहिगै।फलहींमांहि
मोहार।आगोपीठैफलमई।राषेसिरजनहार
।७।कबीरसाइंमेराबांणिया।सहजिकरैब्योपार
बिनडांडीबिनपालडे।तोलेसबसंसार।८।कबी
रषालानांवपरि।कीयाराइंरूंग।जिसहिचला
वैपीव्रत।तिसहिलगावैरंग।।कबीरकरणी

क्याकरै जैरोम्रम कै मदाइ जिहि जदि डालीप्रा
धैरे सोइ नदिन दिजाइ कबीर जदि का मांइम
न मिया कइ न पाया सुष डाली डाली मै फिरया
पाती पाती दुष कबीर साइं सै सबद होत है बंदे
पैक चुलांहि राइ पै परबत करै परबत राइ माहि
[illegible] कबीर त्रंगो सु
हेली सेवकी पडतां लेइ उसास चोट सहारै सबद
की तास गुरू मै दास कबीर षूटन ते धरती सहै
बाढ यास है बन राइ कुसबद ते हरि जन सहै इ
जैस हान जाइ कबीर सीतल तत बजो गिये
स मिलत है समाइ पष छाडे निरष रहे सब दिन इ
छ्याजाइ कबीर सीतल तत मइ पाया बूल्या पि
न जिहि बिसरइ जग जल्या सो मेरे उदिक समान
[illegible] कबीर सबद सरी
र मै बिन गुण बाजै तांति बाहरि भीतरि भरि रह्या
ता पै छूटि भ्राति कबीर संतोसी सोतो षी सा न छा
न सबद भेद सु बिचार सतगुर के परसाद थै स
ह जसी लम त सार कबीर सतगुर ऐसा चाहिये
जैसा सिकलीगर होइ सबद मसकला फेरि करि
देह द्रपन करै सोइ कबीर सतगुर साचा सूरि
वा सबद जु बाह्या एक लागत ही भैं मिलि गया
पड्या कलेजै छेक कबीर हरि रस जे जन बेधि
या सर गु यासी नाहि लागी चोट सरीर मै
करक कलेजै मांहि कबीर ज्यूं ज्यूं हरि गुन सां
भलूं त्यूं त्यूं लागे तीर सांगी सांबी फूटि झडी
सूके कार रह्या सरी [illegible] ज्यूं ज्यूं हरि गुन सांभलूं

सूनूं नामैंतीर ॥ नामैंपैंमागान ही ।सांईनहा
रकबीर ॥ सारान ऊनषुका रिया पीड षुकारैंमो
र ॥ नां जामी चोटसबद की ॥ रह्या कबीरा ठौर ॥ २
॥ इति श्री जीवन मृतक को अंग ॥ कबीरजीव
नम्रतक ह्वैरहै ॥ तजैजगतकीआस ॥ तबहरिसे
वाआपणकरै मतिदुखपावैदास ॥ १ ॥ कबीरमनम्र
तकभया दुरबलभयासरीर ॥ तबपैडे लागाहरि
फिरै कहतकबीर कबीर ॥ २ ॥ कबीरमरिमड़हटि
रह्या ॥ तबकोईनबूझैसार ॥ हरिआदरिआगैंलीया
ज्यूं गऊ बछकी लार ॥ ३ ॥ कबीर घरजालूं घरऊब
रै ॥ घरराखूं घरजाइ ॥ एकअचंभादेषिया मड़ांकाल
कोषाइ ॥ ४ ॥ मरतांमरतां जगमूवा ॥ औसरिमूवानं
कोइ ॥ कबीराऐसैंमरिमूवा ॥ ज्यूं बहुरिनमरनांहो
इ ॥ ५ ॥ बैदमूवा रोगीमूवा ॥ मूवासकलसंसार ॥ एक
कबीरानांमूवा ॥ जिनिकेरांमअधार ॥ ६ ॥ कबीरम
नमास्यामसितामुई ॥ अहंगईसबछूटि ॥ जोगीथा
सोरमिगया ॥ आसणिरहीबिभूति ॥ ७ ॥ कबीरजीव
नपैंमरिबौभलौ ॥ जौमरिजांणैंकोइ ॥ मरनैपहलौ
जेकोमरै ॥ तौकलिअजरावरहोइ ॥ ८ ॥ कबीरखरी
कसौटीरांमकी ॥ षोटा टिकैनकोइ ॥ रांमकसौटी
सोटिकै ॥ जौजीवतम्रतकहोइ ॥ ९ ॥ कबीरआपामे
ट्यांहरिमिलै ॥ हरिमेट्यांसबजाइ ॥ अकथकहांनी
प्रेमकी ॥ कह्यांनकोपतियाइ ॥ १० ॥ कबीरनिरगुसां
वांबहिजाइगा ॥ जाकैथाघीनांहीकोइ ॥ दीनगरीबी
बंदगी ॥ करतांहोइसुहोइ ॥ ११ ॥ कबीरदीनग
रीबीदीनकूं ॥ दुंदरकूंअभिमांन ॥ दुंदरदिलबिषैं
भरी ॥ दीनगरीबीरांम ॥ १२ ॥ कबीरचेरासंतका ॥ दन
सनिकापरदास ॥ कबीराऐसैंह्वैरह्या ॥ ज्यूं

ाकरै जेरामनकै सदाइ॥ जिहि जदिह डाली प्रग
सोई नवितन द्रिजाइ॥ कबीर ज दिका मांइम
मिया॥ क रूं न पाया सुष॥ डाली डाली मैं किस्या॥
ातौ पातौ उष॥ कबीर सांई सूं सब होत है॥ बंदे
ये कछु नांहि॥ राई थें परबत करै॥ परबत राई मांहि॥
॥ कबीर स्त्रगोसु
हेलीसेलकी पडतां लेष उसास॥ चोट सहारै सबद
की तासगुरू मै दास॥ कबीर षूंदन तौ धरती सहै
बाटघास सहै बनराइ॥ कुसबद तौ हरिजन सहै॥ दू
जैसह्या न जाइ॥ कबीर सीतलता तब जाणिये॥
समिता रहै समाइ॥ पष छाडै निरपष रहै॥ सबद न दू
ष्या जाइ॥ कबीर सीतलता मइ॥ पाया बुह्म गिया
न॥ जिहि बैसंदर जग जल्या॥ सो मेरे उदिक समान
॥ सूषम कौ अंग॥ कबीर सबद स
रमै बिनगुण बाजै तंति॥ बाहरि भीतरि भरि रह
ताथै छूटि भ्रांति॥ कबीर सती सांतोषी सावध
न सबदभेद सुबिचार॥ सतगुर के परसाद थैं
हज सील मत सार॥ कबीर सतगुर ऐसा चा
जैसा सिकलीगर होइ॥ सबद मसकला फेरि
देह द्रपन करै सोइ॥ कबीर सतगुर साचा
वां॥ सबद जु बाह्या एक॥ लागत हीं भैं मिलि
पड्या कलेजै छेक॥ कबीर हरि रस जे जन
ष्या॥ सरकु गासी मारि नाहि॥ लागी चोट सर
करक कलेजै मांहि॥ कबीर ज्यूं ज्यूं हरि गु
सलै ज्यूं ज्यूं लागै तीर॥ सांगी सांगीक डि
तास सरीर॥ ज्यूं ज्यूं हरि गुन स

ऌग्रूलागेंतीर॥ लागीचेंभागनही।सोंदनहा
रकबीर॥ सारात्रकूतपुकारिया पीडभूकारेंम्री
र॥ लागीचोटसबदकी रह्याकबीराठौर॥
॥ कबीरजीव
तमतकफेरहे॥ तजेजगतकीग्रास॥ तदहरिसे
वाम्रापरागकेरे, मतिड़षणदेदास॥ कबीरमनम
तकतया ऊरवलनयासरीर॥ तबयेंडेलागाहरि
फिरे कहतकबीरकबीर॥ कबीरमरिमडहाटि
रह्या॥ तबकोईनबूकेसार॥ हरिम्रादरिम्रागेंलीया
ज्यूंगऊवछकीलार॥ कबीर घरजालूंघरऊब
रे॥ घरराषूंघरजाइ॥ एकम्रचंभादेषिया मडाकाल
कोंषाइ॥ मरतांमरतांजगमूवा॥ म्रोसरिमूवानं
कोइ॥ कबीराम्रेसेंमरिमूवा॥ ज्यूं बहुरिनमरनांहो
इ॥ बैदमूवारोगीमूवा॥ मूवासकलसंसार॥ एक
कबीरानांमूवा॥ जिनिकेरामम्रधार॥ कबीरम
नमारयामषितामुई॥ म्रहंगईसबछूटि॥ जोगीथा
सोरमिगया॥ म्रासणरहीबिभूति॥ कबीरजीव
नथेंमरिबोभलो॥ जोमरिजांणेंकोइ॥ मरनेंपहली
जेकोमरे॥ तौकलिम्रजरा ॥ कबीरषरी
कसौटीरांमकी॥ षोटा कोइ॥ रांमकसोटी
सोटिके जोजीवतमत ॥ कबीरम्रापामे
टयांहरिमिले॥ हरिमेटया बजाइ॥ कथकहांनी
ब्रह्मकी कह्यांनकोपतियाइ॥ कबीरनिरगुसां
ईबहिजाइगा॥ जाकेथाघीनींहीकोइ॥ दीनगरीब
बीबंदगी करतांहोइसुहोइ॥ कबीरदीनग
रीदीनकूं दुंदरकूं म्रभिमांन
नरी दीनगरीबीरांम
स कापरदास, कबीरा

हमां मां बा जिया पड्या निसांमें धाव बेलबु हारे सूपि
चे मुक्त मरणां का चाव कबीर मेरे संसा को नहीं
हरि सूं लागा हेत कामक्रोध सूं झूझणां चौडै मा
ड्या खेत कबीर सूरै मारे सबा हिया पटस्या मह
जस जोग सबके घ्यान गया उचलि बैतीपड न का
जोग कबीर सूरा तब ही परषिये लडै धणी के
हेत पुरजा पुरजा ह्वै पडै तऊ न छाडै षेत क
बीर षेत न छाडै सूरिवा झूझे दुल मांहि आ
सा जो बन मरण की मन मैं आंणे नांहि कबी
र अब तौ झूझ्यां ही बणै मुडि चाल्यां घर दूरि सि
र सा हिब के सौं पिये सोचन की जे सूर कबीर अ
ब तौ ऐसी ह्वै पडी मन का रुचित कीन्ह मरने
कहा डराइये हाथि सिंधौरा लीन्ह कबीर जि
स मरनै थैं जग डरे सो मेरे आनंद कब मरिहूं
कब देखिहूं पूरन परमानंद कबीर काइर ब
हुत मावहीं बहकि न बोलै सूर कांम पड्यां
ही जांणिये किसके मुख परि नूर कबीर जा
इ पूछो उस घाइलैं दिवस न पीड निस जाग बो
हणहारा जांणिहै कै जांणै जिस लाग कबी
र घाइल घूमै गहि बस्या राख्या रहै न ओट जत
न कीयां जीवै नहीं बणी मरम की चोट कबी
र ऊंचा बिरष अकास फल पंषी मूये झूरि बहु
त सयानें पचि रहे फल निरमल परि दूरि कबी
र हरि सयां तौ कांम था सिर देने का होइ जब ल
गा सिर सौंपै नहीं कारिज सिधि न कोइ कबी

रयहु घर प्रेम का। षाला का घर नांहि। सीस उतारै
हाथि करि। सो पैसे घर मांहि॥१८॥ कबीर निज घर
प्रेम का। मारग अगम अगाध। सीस उतारि पग त
लि धरै। तब निकटि प्रेम का स्वाद॥२१॥ कबीर प्रेम
न षेतौ नीपजै। प्रेम न हाटि बिकाइ। राजा परजा
जिस रुचै। सिर दे सो ले जाइ॥ कबीर सीस काटि
पासंग दीया। जीव सरभरि लीन्ह। जो हिमा वैसो
आइ ल्यो। प्रेम अघाघ हम कीन्ह॥२२॥ कबीर सूरै सै
स उतारिया। छाडी तन की आस। आगे थें हरि
मुलकिया। आवत देख्या दास॥२३॥ कबीर भगति
दुहेली राम की। नहीं कायर का काम। सीस उ
तारै हाथि करि। सो लेसी हरि नाम॥ कबीर भ
गति दुहेली राम की। जैसी षांडे की धार। जे डो
लै तो कटि पडै। नहीं तो उतरै पार॥२॥ कबीर भ
गति दुहेली राम की। जैसी अगनि की झाल। डाकि
पडै ते ऊबरे। दाधे कौतिगहार॥ कबीर घोडा
प्रेम का। चेतनि चढि असवार। ग्यान षड्ग गा
हि काल सिरि। भली मचाई मार॥ कबीर हीरा
वणिजिया। महिंगे मोलि अपार। हाड गले माटी
गली। सिर साटै ब्यौहार॥ कबीर जे ते तारै
पीके। ते ते बैरी मुझ। धड सूली सिर कंगुरे। तऊ
न बिसारूं तुझ॥ कबीर जेता स्या तो हरि सव
तैं जीत्या तौ डाव। पारब्रह्म कौं सेवतां। जे सिर
जाइ त जाव॥ कबीर सिर साटैं हरि सेविये
छांडि जीव की बाणि जौ...

बुरा बिनसतनां दीवार ॥ कबीर पांणी केरा बुद
बुदा इसी हमारी जाति एक दिनां छिपि जांहिंगे
तारे ज्यूं परभाति ॥ कबीर यहु जग कछु नहीं षि
न षारा छिन मीठ ॥ काल्हि जु बैठे माडियां आज म
सांणां दीठ ॥ कबीर मंदिर आपणे नित उठि क
रता आलि ॥ मड हट देषा डरपता सो चौडे दीन्हा
जालि ॥ कबीर मंदिर मांहि झबूकती दीवा
केसी जोति ॥ हंस बटाऊ चलि गया काढौ घर की
छोति ॥ कबीर ऊंचा भीतहर माडी चित्री पोलि
एक राम के नांव बिन जम मारैगा रोलि ॥ कबीर
कहा गरबियौ काल गहै कर केस ना जानूं कहा मा
रिसी कै घरि कै परदेस ॥ कबीर जंत्र न बाजई टू
टि गए सब तार जंत्र बिचारा क्या करै चले बजा
वणहार ॥ कबीर धवणि धंवंती रहि गई बुझि
गए अंगार अहरणि रह्या ठमूकडा जब उठि
चले लुहार ॥ कबीर पंथी ऊभा पंथ सिरि बुगचा
बांध्या पीठि मरनां मुह आगै षडा जीवण का सब
झूठ ॥ कबीर यहु जीव आया दूर थैं अजौं भी
जासी दूरि बिच कै बासै रसि रह्या काल रह्या सर
पूरि ॥ कबीर राम कह्या तिनि कहि लीया जुरा
पहूंती आइ मंदिर लागी बार थैं तब कछू काढ्यां
न जाइ ॥ कबीर बरियां बीती बल गया बरन प
लट्या और बिगडी बात न बाहुडै कर छिटक्या
कै कठोर ॥ कबीर बरियां बीती बल गया
अरु बुरा कमाया हरि जिनि छाडै हाथ थैं दिन नेड़े

डंग्याया ॥ कबीरहरिसूंहेतकरि । कूडैचितनला
व ॥ बांध्याबरिणटीकके नापसुकितीएकआवै ॥
कबीरबिषकेबनमेंघरकीया ॥ सुपरहेसंपटाइ
ताथैजीवरेडरगद्या ॥ जागतरैणिबिहाइ ॥ कबी
रसबसुभरांमहै ॥ औरउपंझीरासि ॥ सुरंनरमुनि
यरअसुरसब पडेकालकीपासि ॥ कबीरका
चीकायामनअथिर ॥ थिरथिरकांमकरंत ॥ ज्यूंज्यूं
नरनिधडकफिरै ॥ त्यूंत्यूंकालहसंत ॥ कबीररो
वणहारेभीमूये ॥ मूयेजलावनहार ॥ हाहाकरते
तेमूये कासनिकरूंपुकार ॥ कबीरजिनिहमज
जायेतेमूये ॥ हमभीचलणहार ॥ जेहमकूंआगें
मिले तिनिभीबंध्यांभार ॥ [illegible]
[illegible] ॥ जहांजुरामरणाव्यापैनहीं मूवानसु
णियैकोइ ॥ चलिकबीरतिहिंदेसडै ॥ जहांबैद
बिधातहोइ ॥ कबीरजोगीबनिबस्या षनिषाये
कंदमूल नांजांणौंकिसजडीथें अमरभयाअस
थूल ॥ कबीरहरिचरनूंचल्या मायामोहथैंटूटि
गगनमैंमहलआसणकीया ॥ कालगयासिरकूटि ॥
कबीरयहुमनपटकिपछाडिले ॥ सबआपामि
टिजाइ ॥ पंगुलह्वैपीवपीवकरै ॥ पाछैकालनषा
इ ॥ कबीरमनतीषाकीया ॥ बिरहलाइषरसांण
चितचरनौंमैंचुभिरह्या ॥ तहांनहींकालकापांण
कबीरतरवरतासबिलंबिये बारहमास फलं
तै सीतलछायागहरफल पंषीकेलिकरंत
कबीरदातातरवरदयाफल ७

वी चले दिसावरा बिरषां सुफल फलंत
कबीर पाड़ पदारथं पे
लिकंरि कंकर ना या दा पि जो डी अब्बु टी ह
सकी पडु पान गा के साथि कबीर येक अचंभा
तु पिया हीरा हाटि बिकाइ परिष पाहारे बाह
रा कौडी बदले जाइ कबीर गुदडी बीषरी
सोहागयां बिकाइ बोटा बा धणा गाहडी हब
कछु नी पान ज्याइ कबीर पडे मोती बीषरे
अंधा निकस्या आइ जोति बिनां जगदीस की
जगत उलंघ्या जाइ कबीर यहु जग अंधला
सा अंधी गाइ बछा था सो मरि गया ऊभी चाम
चटाइ कबीर जब गु
न कौ गाहक मिले तब गुन लाष बिकाइ जब गुन
कूं गाहक नहीं तब कौड़ी बदले जाइ कबीर ल
हरि समंद की मोती बिषरे आइ बगुला मरम न
जानई हंस चुणि चुणि जाइ कबीर हरि हीरा राज
न जोहरी लेले मांडि महाटि जब रमिलेगा पार
ष तब हीरां की साटि
कबीर नाउं न जाणौ गाउं का मारगि लागा
जाउं काहि जुकौटा पाजिसी पहली कांन षुडा
उं कबीर सीष भई संसार थै चले जु साईं पास
अविनासी मोहि ले चल्या पुरई मेरी आस इंद
लोक अचिरज भया ब्रह्मा पड्या विचार कबी
र राचा ल्या रांमये कौतिग हार अपार कबीर
ऊंचा चढि असमान कूं मेरु उलंघे ऊडि पसुप

बहुजीव जंत सबरहै मेरमैं बूडि ३ सदपांणींप
तालका। काहि कबीरा पीव बासी पावसपडि
म.पे बिरहिन बैजीव।। कबीरसुपिनै हरि मि
ल्या सूता लीया जगाइ आंषिन मींचूं डरपता म
तिसुपिनां ह्वै जाइ ५ कबीर गोबिंद के गुन बहु
त है लिषे जु हिरदै मांहि। डरता पांणीं नां पीऊं
मति वै धोये जांहि ६ कबीर अबतौ ऐसा भया बि
रमोलिक निज नांउं। पहली काचकथीर था फि
रता गांवैगांउं ७।। मौसमद विषजलनस्या मन
नहीं बांधै धीर सबल सनेही हरि मिले तब उ
तरे पारि कबीर ८ कबीर मनासुहै ऊतल्या पू
रा मेरा लाग रांम नांम मनौ का गह्या तब पांणी
में कन लाग ९ कबीर के सौ की दया सेसा घाल्या
पोइ जे दिन गये भगति बिन ते दिन सालै मोहि
१ कबीर जाच गजां इथा आंबो मिल्या ज्यूं जूच
लेवा ल्या घरि आपरौ भारी पाया सच ११
जपणी दया तिहारे ताकी [illegible] १२ कबीर दरिया
प्रजल्या दाझै जलथल झोल बसनां ही गो
पाल सूं बिनसै रतन अमोल १३ ऊंनविआई
बादली बरसन लागे अंगार ऊठि कबीरा धा
हदे दाझत है संसार १४ दाध बली ता सब दुषी
सुषी न देषै कोइ जहां कबीरा पग धरै तहां टु
क धीरज होइ ।। १५ ।। [illegible]
कबीर सुंदरि सूं कहै सुणि ह.
गागिलो तम्ह आइ करि. ज६

बीर जेको सुंदरी नाताकै बिसमार
हिस्मा है परमपुरिष भरतार २ कबीर जे
सांई सेजे तजै ध्यानकी आस नाहिन कबहू
रे पलकन छाडे पास २ कबीर हूसमनके
करूं नान्हंका रै करिपीसि तबसुखपावे सु
बू बस्तकनके मिसि २ कबीर दरियापारि
डोलना मेल्याके तमचाइ साई नामुलब
नितप्रति फूलणां जाइ ॥ २६ ॥ कबीर कसतूरी कुंडलिबसे
मिरग ढूंढै बनमांहि ऐसें घटि घटि राम है दुनि
यां देषै नांहि २ कबीर कोई येक देषे संतजन
जाके पांचों हाथि जाके पांचों बसिनहीं ता ह
रि संगि न साथि २ कबीर सांई तनमें बसै भ्रमों
नजांणैं तास कसतूरीके मृग ज्यूं फिरि फिरि
सूंघे घास २ कबीर षोजी राम का गयाजु सा
तदीप राम तो घटहीमें लारि रमिरह्या जो
आवे परतीति २ कबीर घटि बधिकहीं नदी
षिये ब्रह्म रह्या भरपूरि जिनि जांन्या तिनि
कटि है हरि कि है ते दूरि २ कबीर मैं जा
हरि हरि है हरि रह्या सकल भरपूरि आप
जांणोंबा हरि नेडा हीये दूरि २ कबीर हि
कैवो लैं राम है परनदि रै वाइ सतगुर मि
परचा लया तब हरि पाया घटमांहि २ क
रामनाम तिहूंलोकमें सकल रह्या भरपू
यहू चतुराई जाउ जलि षोजत डोलैं दू

कबीरेजंसनैतेंमेंसूतली। सूषा लिक घटमांहि
मशिवलोगनजाणही। बाहरिदूंढणजांहि
॥१७०९॥ [illegible] ॥ कबीरलोकबिचारा
नीदई। जिनहनपायारपांन। रामनांमरातारहे
तिनहनमांबेग्रांन॥१ कबीरदोषपरायेदेषिकरि
चल्याहसंतहसंत। अपनेचितिनआवहीं। जिन
कीआदिनअंति॥२ कबीरनिंदकनेडारा थियेआ
गणिकुटीबंधाइ। बिनसाबणापाणी बिना। निर
मलकरेसुभाइ॥ कबीरनिंदकइरिनकाजिये
दीजेआदरमांन। निरमलतनमनसबकरै। बकि
बकिआंनहिआंन॥ कबीरजेकोनीदैसाधकूं
संकटआवैसोइ। नरकमांहिजांमैंमरै। मुकति
बकबहूंहोइ॥ कबीरघासननींदिये। जेपांवा
तलिहोइ। उडिपडैजेआंषिमें। षराउहेलाहोइ
॥६॥ कबीरआपनयोंनसराहिये। परनिंदियेन
कोइ। अजहूंलंबेयोंहडै। नांजांणूंक्याहोइ
॥७॥ कबीरआपनसराहिये। औरनकहिपैरंक
नांजांजांणूंकिसबिंतलि। कदाहोइकरंक॥८॥
कबीरआंठगाइये। औरनठगियेकोइ। आपठ
ग्यांसुषऊपजै। औरठग्योंदुषहोइ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कबीरहरियाजांणेरूषडा।
उसपांणींकानेह। सूकाकाठनजांणइ। कबहूं
बूठामेह॥ कबीरकिरिमिरिकिरि॥
या॥ पांहणकपरिमेह। माटीगलि
पांहनवोहीतेह॥ ? कर्ब

सतगुरु सगुरा चुनि लीये
घड वा धामि मराव सतगुरु सगुरा बर षिया
कपडी निगुराव कबीर हरि रस बर षिया । ताकूं
है कूवा रषिराव नीर निबांगो गई रो । नषमषपा
...परहोई कबीर मुठकर मिया । बादयान लागै
...रज्याव बांहन लोराक्याकरे हंथे बिषदे
...पाह कबीर सुरपै हंथ पिलाइपे सरूपे बिषभार
...हजार ऐसा कोई ना मिलै सरलेय डिषजूरि
कबीर जालूं ए देह सडपरा । फल लागे ते हूरि कबीर
पंषी ज्ञांहन वासरे बस बधा पधिकार चेद
कै या कुल के कारनै जस्या सब परिवार कबीर के
न वा मन दे नहीं बूडा बस बडे
दन के बिडे नी बनि चंदन होइ
हता सूजनि के कोइ तो सब बड
कबीर ग्र बके जैसा है मिलै कहै सकद
ग्रावौ राइ चरन ऊपर सी मस धरि पूछि
ताहोइ कबीर साइ सौ मिलिहि । उरग्र
गकुसलाल ग्रा दिसि लिबीक हंगा लैना
की बात कबीर मूलि बिगाड़िया नफर
मेला चित माहि बिहार बाला डिये आ
मिल कबीर करता के रब कलंदन तो सब
कोई नाहि जे दिलबाजो ग्राय गी
रामुक माहि कबीर ग्रैसा रबी ना ग्र
पीब रस्याप रहेस कल के कहता रो के सब
छेम ग्रे हेस कबीर करता है बी नती
बेदेकै परि जोर होत है जम

गुसांई ।। हज्का नै कै कै गया ।। केती बार कबी
र ।। मो रां मुक मैं क्या घता ।। मुषां न बोलै पीर ।। ६ ।। क
र अंमन मेरा तुक सों ।। पूं जै तेरा होइ ।। ता ताले
हाथ मिले सो धिन लषई कोइ ।। ७ ।। [illegible] ।। [illegible]
[illegible] ।। कबीर रूडै रांम कूं ।। सकल सुव
न पति राइ ।। सब ही करि अलगा रहो ।। सो विधि
म हि बताइ ।। १ ।। कबीर जिहि बरियां सांई मिले ता
सन जानै ओर ।। सब कूं सुषदेस बदकरि ।। आप
णी आपणी ठोर ।। २ ।। कबीर मनका बाहुला ।। ऊं
डा बहै असोस ।। देषत ही दह मैं पडै ।। दई किसा
कौ दोस ।। ३ ।। [illegible] ।। कबीर अ
बतो ऐसी कै पडी ।। नां तू बडी न बेलि जा
ण आंणी लाकडी ।। ऊठी कूं पल मेलि ।। १ ।। कबी
र आगे आगे दौ जलै ।। पीछै हरिया होइ ।। बलिहा
री ता वृष की ।। जड का ट्यां फल सोइ ।। २ ।। कबी
र जे काटौ तौ डहडही ।। सीच्यौं तौ कुमिलाइ ।। इस
गुणवंती बेलि का ।। कछु गुण कह्या न जाइ ।। ३ ।।
कबीर आंगणि बेलि अकासि फल ।। अणव्या
वर का दूध ।। ससा सींग की धूनहडी ।। रमै बंक
का पूत ।। ४ ।। कबीर कडई बेलडी ।। कडवा ही फ
ल होइ ।। सीध नांव तब पाइये ।। जे बेलि बिछोहा
होइ ।। कबीर सीध भई तौ का भया ।। चहुं दिसि
फूटी बास ।। अजहूं व. [illegible] गा
आस ।। [illegible]
षी सो की या

...कहै बिक्तो देनहो ॥ १ ॥ को
केकरि छेलि मे। मेरा हितू न कोइ ॥ गुसांई
सिरजनहार बिन ॥ आ हमा
बिरहै नही ॥ स्वाउरि पिव घीरी ॥ कबीर
रस्वेत लौ ॥ आ बिरह सदा सुमंग
कतारका ॥ सेवगानजे तन संग

दुलहनी गाव
उ मंगलचार ॥ हम घरि आये हो राम भरतार ॥ टे
तन रत करि मैं मन रत करिहौं ॥ पंचतत बराती ॥
रामदेव मोरै पाउनैं आये हैं ॥ मैं जोबन मैं माती ॥
सरीर सरोवर बेदी करिहौं ॥ ब्रह्मा बेद उचार
रामदेव संगि भांवरि लेहौं ॥ धनि धनि भाग हमा
र ॥ सुर तेतीसूं कौतिग आये ॥ मुनियर सहस अ
ठ्यासी ॥ कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं ॥ पुरिष ए
क अबिनासी ॥ १ ॥ बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम
पाये ॥ भाग बडे घरि बैठे आये ॥ मंगलचार मा
हि मन राखौ ॥ राम रसांइण रसनां चाखौ ॥ टे ॥ मं
दिर मांहि भया उजियारा ॥ लै सूती अपनां पीव पि
यारा ॥ मैं रनि रासी जे निधि पाई ॥ हमहि कहा
तुमहि बडाई ॥ कहै कबीर मैं कछू न की
न्हा ॥ सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा ॥ २ ॥ अब
तोहि जान न देहूं राम पियारे ॥ ज्यूं भावै त्यूं हो
हु हमारे ॥ बहुत दिनन के बिछुरे हरि पा

बहि घर बैठें आये ॥ चरन निज गहि करो बरियाई
पेस डारि तिराछो उरझाई ॥२॥ इन मन निसं दिरर हौ नि
न चाये । कहै कबीर परख मति धोये ॥३॥ मन के
मोहन मीठुला । यह मन लागो तो हिरे । चरन कव
लमन मांनियां । और न भावे मो हिरे । टे ॥ षट द
लकवल निवासिया । चहु कौं फेरि मिलाइ । दस
के बीचि समाधिया । तहां काल न पासे आइ रे ॥ अ
षकवल दल भीतरा । तहां श्रीरंग केलि कराइ रे । स
तगुर मिलै तो पाइये । नहीं तो जनम अकारथ जा
इ रे ॥ कदली कुसम दल भीतरा । तहां दस आंगुल
का बीच । तहां दुवादस षोजि ले । जनम होइ नहि
मीच रे ॥३॥ बंकनालि के अंतरै । पछिम दिसा की बाट
नीझरैझरै रस पीजिये । नव गुफा के घाट रे ॥ त्रि
बेणी मन न्हवाइये । सुरति मिलै जो हाथि । तहां
न फिरि मघ जोइये । सनकादिक मिलि हैं साथि रे ॥
गगन गरजि मघ जोइया । तहां दीसै तार अनंत
बिजुली चमकि घन बरषि है । तहां भीजत हैं सब सं
त रे ॥ षोडस कवल जब चेतिया । तब मिलि गये
श्री बनवारि । जुरा मरण भ्रम भाजिया । पुनर पि ज
नम निवारि रे ॥ गुरगम ते पाइये । झंषि मरै जिनि
कोइ । तहां कबीरा रमि रह्या । सहज समाधी सोइ
रे ॥ ४ ॥ गोकुल नाइक मीठुला
हिरे बहुत क दिन बिछुरे भये
मो हिरे । टे ॥ करम कौ
ये की आस
रहि पियास रे ॥
बस मोन इहि पदिन रहै

टक्षमिमांतरे नांकतहूंचलिजाइये नामिरि·
लीजेमार रसनारसहिबिचारिये मारगक्षीरण
धरे साधुसिद्धिऐसीपाइये किवाहोइमा·
होइ जेदिनगणतनरूपजे नोऋहिरहेजिति
कोइ एकजुगतिएकैमिले किवाजोगिकिनो
ग इनइानूफलपाइये रामनामसिधिजोगरे
प्रेमलगतिऐसाकीजिये मुक्तिमतबरिषे
चंद आपहीआपबिचारिये तबकेताहोइअंत
दूर तुमजितिजानोमातहै यहूतिजबुस्त
बिचार केवलकहिसमझाइया आतमसाध
नस्मरे बरेकवलचितलाइये रामनाममु
नमाइ कहैकबीरसेसानहीं भगतिमुकति
गतिपाइरे ॥५॥ अबतमेपाइ मेरेपाइ बोबुर
स्तनिपात मदजसमाधेसुषमेरहि बो कोहि
कलपबिश्राम टे गुरकृपालकृपाजनकी
न्हां हिरदैकवलबिगासा भागाभ्रमदसोंदि
सरूज्यापरमजोतिप्रकास ॥ मनकउठपाध
नककरलीये कालश्रहेडीभागा उदयासू
रनिसकीयापयांना सोवनतेजबूजागा अ
बिगतलोकलश्रनूपमदेष्या कहताकसान
जाइ सेनकेरमनहीमनरहसे मूगेजानिमि
ठाइ पहुपबिनाएकतरवरफलिया बिन
करतलरबजाया नारीबिनानीरघटभरिया
हजरूपसोपाया देषतकाचभयातनके
न बिनबानीमनमांनां उड्याबिहंगमषोजे
पाया जूंजल जलहिसमाना पूज्यादेदं
ऊरिनदे न्हायेउदिकमन्होऊ भागा

मे एक ही कहता ॥ आपै वह रिनआंकौ ॥ ७ ॥ आपै
मैं तरया पानि रया अपनमें आपा सूज्या ॥ आपै
कहै तसुनत फुनि अपता ॥ अपनपै आपा रज्या
३ ॥ अपमैं पर चै लागी तारी ॥ अपनपै आपसमां
नां ॥ कहै कबीर जे आप बिचारै ॥ मिटि गया आव
नजांनां ॥ ४ ॥ ६ ॥ नरहरि सहजै ही जिनि जांनां
गत फल फूल ततत रपल व ॥ औकूरबी जनसां
नां ॥ टेक ॥ प्रगट प्रकास ग्यांन गुरगमिते ॥ ब्रह्म
अगनि प्रजारी ॥ ससिहर सूर दूर दूरि तर ॥ ला
गी जोगजुगतारी ॥ १ ॥ उलटे पवन चक्र षट बेधा
मेरडंड सरपूरा ॥ गगन गरजि मन सुंनि समानां
बाजे अनहद तूरा ॥ २ ॥ सुरति सरीर कबीर बिचा
री ॥ त्रिकुटी संगम स्वांमी ॥ पद आनंद काल थैं छू
टै ॥ सुख में सुरति समांनी ॥ ३ ॥ ७ ॥ मन रे मन ही उल
टि समांनां ॥ गुरप्रसादि अकलि भई तोकूं ॥ नहीं
तर था बेगांनां ॥ टेक ॥ नेरै थैं दूरि दूर थैं नीयरा ॥
जिनि जैसा करि जांनां ॥ औ लौं ती का चढ्या बली
है ॥ जिनि पीया तिनि मांनां ॥ १ ॥ उलटे पवन चक्र ष
ट बेधा ॥ सुंनि सुरति लै लागी ॥ अमर न मरै मरै न
ही जीवै ॥ ता हि षोजि बैरागी ॥ २ ॥ अनभै कथा क
वन सू कहिये ॥ है कोई चतुर बमेकी ॥ कहै कबी
र गुर दीया पलीता ॥ सो झल बिरलै देषी ॥ ३ ॥ ८ ॥ इ
हि तत रांम जप हु रे प्रांनी ॥ बूझो अकथ कहांणी
हरि का भाव होइ जा ऊपरि ॥ जाग्रत रैंनि बिहांनी
टेक ॥ डांइनि डारे सुनहां डोरै ॥ स्यंघ रहै बन घे
रै ॥ पंच कुटंब मिलि झूझन लागे ॥ बाजत स
बद संघेरै ॥ रोहै मृग ससा बन घेरै ॥ पारधी बा
ण न मेलै ॥ सायर जलै सकल बन दाझै ॥ मंछ अ

हि राम बेलै ॥ सोइ पंडित सो तत ग्याता ॥ जो इहि पद
हि विचारै ॥ कहै कबीर सोइ गुर मेरा ॥ आपा तिरै
मो हि तारै ॥ ३ ॥ ९ ॥ अवधू ग्यान लहरि धुनि मां
डी रे ॥ सबद अतीत अनाहद राता ॥ इहि विधि
त्रिस्ना षांडी ॥ टे॰ ॥ बन के संसै समंद घर कीया
मछा बसै पहाडी ॥ सुइ पीवै ब्राह्मण मतिवाला
फल लागा बिन बाडी ॥ १ ॥ षाड बुणैं कोली मैं
बेठी मैं षूंटा मैं गाडी ॥ ताणें बाणें पडी अनवा
सी ॥ सूत कहै बुणि गाढी ॥ २ ॥ कहै कबीर सुनहु
रे संतो ॥ अगम ग्यान पद मांही ॥ गुर प्रसाद सूई
के नाके ॥ हसती आवै जांही ॥ ३ ॥ १० ॥ एक अचंभा
देष्या रे माई ॥ ठाढा सिंघ चरावै गाई ॥ टे॰ ॥ पह
लै पूत पछै भई माई ॥ चेला कै गुर लागै पाई ॥ १ ॥
जल की मछली तरवर ब्याई ॥ पकडि बिलाई मुर
गै षाई ॥ २ ॥ बैलहि डारि गूंनि घरि आई ॥ कुता कूं लै
गई बिलाई ॥ ३ ॥ तलि करि साषा ऊपरि करि मूल
बहुत भांति जड लागे फूल ॥ ४ ॥ कहै कबीर या प
द कूं बूझै ताकूं तीन्यूं त्रिभवन सूझै ॥ ५ ॥ ११ ॥ हरि के
षारै बडे पकाये ॥ जिनि जारे तिनि षाये ॥ ग्यान अचे
त फिरै नर लोई ॥ ताथै जनमि जनमि डहकाये ॥ टे॰
॥ धौल मंदलिया बैल रबाबी ॥ कऊवा ताल ब
जावै ॥ पहरि चोलनां गादह नाचै ॥ भैंसा निरति क
रावै ॥ १ ॥ स्यंघ बैठा पान कतरै ॥ घूंस गिलौरा लावै
उंदरी बपुरी मंगल गावै ॥ कछू एक आनंद सु
नावै ॥ कहै कबीर सुनहु रे संतो ॥ गडरी परबत षावा
चकवा बैसि अंगारे निगलै ॥ समंद अकासां धावा
॥ ३ ॥ १२ ॥ चरषा जिनि जरै ॥ कातौंगी हजरी का सूत
... की सूं ॥ टे॰ ॥ जलि जाइ पलि ...

जी॥ ऐसे नगर मैं आपै॥ एक अचंभा देखिया॥ वि
टप जायौ ताप॥१॥ नाव लगे रामा दकरि [illegible]
त्यमले थाहि॥ जब लग बर मांहि नहीं॥ [illegible]
माहिं॥ सुवधी के घरि तुव आया [illegible]
केसा इ॥ चले प्रगनि बताकरि [illegible]
ठगाइ॥१॥ सब जग दीम रिजायो॥ ए [illegible]
निमरे॥ सब काढ पतिकौ साथ॥ पर [illegible]
कबीर सो पंडित भला॥ जो पा प [illegible]
हलै पर से गुर मिलै॥ तौ पी छे सट [illegible]
अब मो हि लेच लि तण दके बी [illegible]
नपेच ति मि लि लूटी हूं॥ कुसंग [illegible]
कागा तीर मोर प्रती बारी॥ जह [illegible]
मातो बिरही मेरी ना पूजे॥ पद [illegible]
कबीर यह अकथ पद थाहे [illegible]
सद उतारजि हि कूप जो॥ ते [illegible]
अब दम सकल कुं स लकरि [illegible]
गोव्यंद नांना॥ टे [illegible] ननमें [illegible]
टि मई सुष सहज [illegible]
राम उप बिमस [illegible]
टि मये हैं मीता [illegible]
॥२॥ आपा जांनि [illegible]
ताप॥३॥ [illegible]
जो ना जी [illegible]
सांऊ॥ [illegible]
इ क्षाइ [illegible]

ी॥ मायारहे नबौ धीर॥ टेक॥ हितचितकी षेपू
ी गियांनी॥ मोहबली डाढूटा॥ त्रिस्नां छातिपरी
र ऊंपरि॥ कुबधिकारसांडा फूटा॥ जोगजुग
तिक भ्रिम तति बांधी॥ तिरचुवे बेपानी॥ केडव
पटकाया कांनिकस्या॥ हरिकी गति जब जांणी॥२
आंधी पीछे जो जल बूठा॥ प्रेम हरी जन भीनां॥ के
हे कबीर भांन के परगाटे॥ उदित भया तम षीनां
॥१६॥ अबघट प्रगट भये रांम राई॥ सो धि सरी
र कनक की नाई॥ टेक॥ कनक कसोटी जैसे क
मिले सुनारा॥ सोधि सरीर भयो तन सारा॥ उप
जत उपजत बहुत उपाई॥ मन थिर भयो तबै थि
ति पाई॥१॥ बाहरि षोजत जनम गमाया॥ उनम
नी ध्यांन घट भीतरि पाया॥२॥ बिन परचे तन क
च कथीरा॥ परचे कंचन भया कबीरा॥३॥१७॥ ि
डोलनां तहां झूलै आतम रांम॥ प्रेम भगति हि
लनां॥ सब संतनि को बिश्रांम॥ टेक॥ चंद सूर दो
चमका॥ बंकनालि की डोरि॥ झूलै पंच पियारी
तहां झूलै जीय मोर॥ द्वादस गम के अंतर
हां अंमृत को ग्रास॥ जिनि यहु अंमृत चाषि
सो ठाकुर हम दास॥२॥ सहज सुंनि को नेव
गगन मंडल सिरिमोर॥ दोऊ कुल हम आ
जो हम झूलन हिंडोल॥३॥ अरध उरध की गंग
नौ॥ मूल कवल को घाट॥ षट चक्र की गा
त्रिबेणी संगम बाट॥४॥ नाद ब्यंद की नाव
तहां के निहार॥ कहै कबीर गुण गाइले

उतरैगो पारं॥१८॥ कोबीनै प्रेम लागो री माई। रांमरस
इरसमाते री माई कोबीनै। टेक। पाईपाई तूं पुतिहाई।
पाईकी तुरियां बेचि षाई। री माई कोबीनै॥१॥ ऐसे पाई
पर बिथुराई। त्यूं रस आंनि बनायौ री माई कोबीनै
।२। नाचै तांनां नाचै बांनां। नाचै कूंच पुरांनां री मा
ई कोबीनै।३। करगहि बैठि कबीरा नाचै। चूहै का
ट्या तांनां री माई कोबीनै।४।१९। मैं बुनि करि सि
रांनां हो रांम। नालि करम नहीं ऊबरे। टेक। दषिन कू
ट जब सुनहां झूका तब हम सगुन बिचारा। लरके
परके सब जागत हैं। हम घरि चोर पसारा हो रांम॥१॥
तांनां लीन्हां बांनां लीन्हां। लीन्हें गोड के पऊवा। इत
उत चितवत कठवत लीन्हां। मांड चलवनां डऊवा
हो रांम॥२॥ इक पग दोइ पग त्रेपग। संधै संधि मिला
ई। करि परपंच मोट बंधि आये। किलि किलि सबै
मिटाई हो रांम॥३॥ तांनां तनि करि बांनां बुनि करि
। छाक परी मोहि ध्यांनां। कहै कबीर मैं बुनि सिरांनां
। जांनत है रघुरांनां हो रांम॥४॥२०॥ तननां बुननां त
ज्या कबीर। रांम नांम लिषि लीया सरीर॥ टेक॥ जब
लग भरौं नली का बेह। तब लग टूटै रांम सनेह। ठा
ढी रोवै कबीर की माइ। ए लरिका क्यूं जीवैं षुदाइ।१।
कहै कबीर सुनहु री माई। पूरणहारा त्रिभुवन राई।२।२१।
॥ जुगिया न्याइ मरि मरि जाइ। घर जाजरौ बलींडौ टेढौ।
औलौती डरराइ। टेक। मगरी तजौ प्रीति पाषैं सूं। डं
डा देहु लगाइ। छींको छोडि उपरहिंडौ बांधौ। ज्यूं जुगि
जुगि रहौ समाइ॥१॥ बैसि परहडी घर मंदावौ॥ त्यारि।

त घरघेरी ॥ जैसी आप सासै पहचौ ॥ ऐसौ जु पिन
आवै फेरी ॥ न डरी आप सै वैकुंठ न बायो ॥ तब हि
बैठन पाइ ॥ कहै कबीर भागा बपुरी को ॥ किलि
किलि सबै चुकाइ ॥ २२ ॥ मन रे जागत रहि भाइ ॥ ग
फिल हो हवसत म सेवावै ॥ चोर मुसै घर जाइ ॥ टेक ॥
षटचक्र की कनक कोठडी ॥ वसत भाव है सोइ ॥
ताला कूंची कुलफ के लागे ॥ उघडत बार न होइ ॥
॥ पंच पहरवा सोइ गये है ॥ बसतै जागण लागी ॥
जुरा मरण व्यापै कछु नाहीं ॥ गगन मंडल लै ला
गी ॥ करत बिचार मन ही मन उपजी ॥ ना कहीं गया
न आया ॥ कहै कबीर संसा सब छूटा ॥ राम रतन धन
न पाया ॥ २३ ॥ चलन चलन सब को कहत है ॥ ना
जानौं बैकुंठ कहां है ॥ टेक ॥ जोजन एक परमिति न
ही जानै ॥ बातनि ही बैकुंठ बषानै ॥ जब लग है
बैकुंठ की आसा ॥ तब लग नहीं हरि के चरन नि
वासा ॥ कहै सुनै कैसे पतिआइ ॥ जब लग त
आपन ही जइये ॥ कहै कबीर यहु कहिये का
साधसंगति बैकुंठहि आहि ॥ २४ ॥ आपनै बिचा
रि असवारी कीजै ॥ सहज कै पाइडै पाव जब दी
॥ टेक ॥ दे मुहरा लगाम पहिराऊं ॥ सिकली जी
गगन दौराऊं ॥ चलि बैकुंठ तोहि लै तारूं ॥ थ
हित प्रेम न ताजन मारूं ॥ जन कबीर ऐसा अस
वारा ॥ वेद कतेब दहूं थै न्यारा ॥ २५ ॥ अपनै
रंग आपन पौ जांन्यूं ॥ जिहि रंगि जांनि ताही कं
नूं ॥ टेक ॥ अभिअंतरि मन रंग समांनां ॥ लोग क

कबीरबीरानी॥रंगनेचीन्हेंमूरिखोजोई॥जिहि
रंगिरच्यासबकोई॥३॥जेरंगकबहूंआवेनजा
ई॥कहैकबीरतिहिरच्यासमाई॥३॥२६॥कग
राएकनबेरोराम॥जिनुसृष्टिपैनेंजनसूंकाम
॥ब्रह्मानंदबडाकिजिनिउपाया॥बेदबडा
किजहांथेंआया॥१॥५॥मनबडाकिजहांमन
मांनै॥रांमबडाकिरामहिजानै॥२॥कहैकबीर
हूंषराउदास॥तीरथबडेकिहरिकेदास॥३॥२७
॥दासरांमहिजानिहै॥औरनजानैकोई॥टेक
कालदेहसबैकोई॥चषिचांहनमांहिबिनाने
जिनिलोइनिमनमोंहिया॥तेलोइनापरवांन॥
॥बहुतसगतमेंसागरा॥नांनाबिधिनांनांना
व॥जिहिहिरदैश्रीहरिभेटिया॥सोभेवककहूंक
हूंगांव॥दरसनसमिकाकीजिपे॥जोगुननहीं
होतसमांन॥सीधवकरकबीरमिल्योहै॥फट
कनमिलैमषांन॥२॥२८॥कैसैहोइगामिलावा
हरिसनां॥रेतूबिषैबिकारनतजिमनां॥टेक
रेतैजोगजुगतिजांन्यांनहीं॥तैंगुरकासबद
मांन्यांनहीं॥गंदीदेहीदेषिनफूलिये॥संसार
देषिनभूलिये॥१॥कहैकबीरमनबहुगुनी॥ह
रिभगतिबिनांदुषफुनफुनी॥३॥२९॥नराज
[illegible]॥कासूंकहियेसुनिरमा॥तेरामरम
नजानैकोइजी॥८ [illegible] ॥क [illegible]
दनखांनांहोइजी॥टे [illegible]सवां
या [illegible] हियांनजी॥

पखिया ॥ जबदेखानैनसमानजी ॥१॥ रामरसोइगा
रसिकहै ॥ अदभुदगतिबिस्तारजी ॥ अमनिसाजो
गतकहै ॥ ताहिसूकैसमारजी ॥२॥ सिवमिनिका
दिकनांरदा ॥ बहिलीयानिजबासजी ॥ कहैकबी
रपदपंकजा ॥ अबनैडाचरननिवासजी ॥३॥१०॥ मेडा
रे डोरे जाकंगा ॥ तोमैबकिरिनमौजलिखांकंगा ॥
टेक ॥ सूतबकृतकछुथोरा ॥ ताथैलाइलेकेथाडो
रा ॥ केथाडोरालागा ॥ तबजुजामरणतेलागा ॥ ज
हांसूतकपासनहेनां ॥ तहांबसैरकमहनां ॥ उसमू
नांसूं चितलांकंगा ॥ तोमैबकुरिनमौजलिखांकंगा
॥२॥ मेरडंडरकेछाजा ॥ तहांबसैरकराजा ॥ तिसराजा
सूं चितलांकंगा ॥ तोमैबजरिनमौजलिखांकंगा ॥३॥
तहांबकृदीराघनमोती ॥ तहांतनलाइलेजोती ॥ ति
सजोतिहिजोतिमिलांकंगा ॥ तोबकुरिनमौजलिखां
कंगा ॥४॥ जहांकगैसूरनचंदा तहांदेख्यारेकअनंदा
कंसअनंदसूं चितलांकंगा ॥ तोमैबकुरिनमौजलि
खांकंगा ॥५॥ मोलबधरकपावा ॥ तहांसिधगोरखदर
रावा ॥ तिसमूलहिमूलमिलांकंगा ॥ तोमैबकुरिन
मौजलिखांकंगा ॥६॥ कबीरातालिबतोरा ॥ तहांहेत
हरागुरमेरा ॥ तहांहेतहरारचितलांकंगा ॥ तोमैबकु
रिनमौजलिखांकंगा ॥७॥२१॥ संतोकागाइयागानहि
नसिगाया ॥ सबदअकहांसमाई ॥ परंसामोहिबिस
दनब्यापे ॥ कोईअकहैसमझाई ॥ टेक ॥ नहीबहा
घंडिंडतिनांही ॥ पंचतत्तभीनाही ॥ इलापिंगलासु
मननांही ॥ गुणकहांसमांही ॥ नहीविदवारकहा

दीनदिखा।रचनहारउतिनांही।जोवनहारथतो
तसदासंगि।एकुगतहांसमांही।१।तूटैबंधेबंधेउ
नितूटै।जबतदहोइनबिनासा।तबकोठाकुरअब
कोसेवग।कोकाकैविसवासा।कहैकबीरयहुगा
गनविनसै।जोअगाउनमांना।सीचेसुनंपटेको
होई।जोनहीपदहिंसमांनां।३३२।तामनकौषोज
हुरेभाई।तनछूटैमनकहांसमाई।टेक।सनक
सनंदनजेदेवनांमां।भगतिकरीमनउनहुनजां
नां।१।सिवविरंचिनारदमुनिग्यांनी।मनकीगतिउ
नहूनहीजांनी।२।ध्रूप्रहिलादबभीषनसेषा।तनभी
तरिमनउनहूनदेषा।३।तामनकाकोईजांनैभेद
रंचकलीनभयेसुषदेव।४।गोरषभरथरीगोपीचंद
तामनसौंमिलिकैरैअनंद।५।अकलनिरंजनसक
लसरीरा।तामनसौंमिलिरह्याकबीरा।६।३३३।भा
रैबिरलेदोसतकबीरके।यहुततबारबारकासौं
कहिये।भांनणघडणसंवारणसंमरथ।ज्यूंराषैत्यूं
रहिये।टेक।आलमदुनींसबैफिरिषोजी।हरिन
सकलअयांनां।छहदरसनछयांनवेपाषंड।आ
कुलकिनहूनजांनां।१।जपतपसंजमपूजाअरचा
जोतिगजगबौरांनां।कागदलिषिलिषिजगतभु
लांनां।मनहीमननसमांनां।२।कहैकबीरजोगी
अरुजंगम।एसबझूठीआसा।गुरप्रसादिरटौच
त्रिगजूं।निहचैभगतिनिवासा।३।३३४।कितेकसि
वसंकरगयेकुंठि।रांमसमांधिजहू
टे।परलोकलकहूंकितेकनाम।।

गानरहैलोभ॥१॥ अलाभोजिपरचोगहिनाल॥ कहैक
बीरवेरामनिराला॥२॥३५॥ अचांतचांतयेमाषैमोसबम
हिसमांना॥ ताहिछाडिजेआनभजैतहै॥ तेसबभ्रमिभु
लांनां॥ टेक॥ ईसकहेमैध्यानन्नजानूं॥ डलभनिजपद
मोही॥ रंचककरुणाकारणिकेसो॥ नावधरयाकोतोही॥
१॥ कहोधौंसबदकहांथैआवै॥ अरुफिरिकहांसमाई
॥ सबदअतीतकामरमनजानै॥ भ्रमिभूलीडनियाई॥२॥
प्यंडमुकतिकहौलेकाजे॥ जोपदमुकतिनहोई॥ प्यंडे
मुकतिकहैतहैमुनिजन॥ सबदअतीथासोई॥३॥ प्रगट
गुपतगुपतपुनिप्रगट॥ सोकतरहैलुकाई॥ कबीरपरमा
नंदमनाये॥ अकथकथ्योनहीजाई॥४॥२६॥ सोकछु
बिचारहुपंडितलोई॥ जाकेरूपनरेषबरणनहीकोई॥ टे
क॥ उजेप्यंडप्रानकहांथैआवै॥ मृवाजीवजाइकहांसमा
वै॥१॥ इंद्रीकहांकरहिबिश्रामा॥ सोकतगयाजुकहैता
रामा॥२॥ पंचततहांसबदनस्वादं॥ अलषनिरंजनबि
द्यानबादं॥३॥ कहैकबीरमननमनहिसमानां॥ तबआग
मनिगमझूठकरिजांनां॥४॥२७॥ जोपैबीजरूपभगा
वांनां॥ तौपंडितकाकथिसिगयांनां॥ टेक॥ नहीतन
नहीमननहीअहंकारा॥ नहीसतरजतमतीनिप्रकार
॥१॥ बिषअंम्रतफलफलेअनेक॥ बेदरबोधकहैतर
एक॥२॥ कहैकबीरइहैमनमांना॥ कहिधूंछूटककवन
उरझांना॥३॥२८॥ पांडेकौनकुमतितोहिलागी॥ तूंरामन
जपहिअभागी॥ टेक॥ बेदपुरांनपढतअसपांडे॥ षरचं
दनजैसभारा॥ रामनामततसमझतनांही॥ अंतिपडेमु
षिछारा॥ बेदपढयांकाइहुफलपांडे॥ सबघटिदेषै

रामै॥ जेनमभरनेतैंतौं नहुंटै सुफलकॊ हिसदकामैं॥
२॥ जीव बधत अरु धरम कहेत है॥ अधरम कहांहैं भाई॥
३॥ आपनतौ मुनिजेन कैबेठे॥ कासनिकहो कसाई॥२॥
नारदकहै व्यासयौ भाषै॥ सुषदेव पूछो जाई॥ कहै क
बीरकुमतितनहुंटै जेरसौं रामल्यौलाई॥३॥ ३६॥ पहि
तबादनहै नेऊरुग॥ रांमकह्यौ तियाप्रतिपावै॥
आंडकह्यौ मुषमाग॥ टेक॥ पावककह्यौ पावजे
दाफे जनांकहि त्रिषाबुझाई॥ भोजनकह्यौ भू
षजेजाजे तौसबकौ इतिरिजाई॥१॥ नरकैसाथि
सवादरिबोलै हरिपरतापन॥ जानें॥ जेकबहू
उडिजाइजंगलमैं बैकुंठिनसुरतैं आनें॥२॥ साची
प्रीतिविषैमाय्यस् हरिभगतिनिसहासी॥३॥ कहै
कबीरप्रेमनहींउपज्यो बाध्यौजंमपुरिजासी॥
॥४०॥ जोपैकरताबरणबिचारे तौजनमतती
निडांडीकिनसारे॥ टेक॥ उतपतिव्यंदकहांथैं आ
या जोतिधरी अरु लागीमाया॥१॥ नहींको ऊंचा
नहीं कोनीचा जाकाप्यंडताहीकासींचा॥२॥ जेतूं
बामनबभनीजाया॥ तौआनबाटकेकहेनआ
या॥३॥ जेतूं तुरकतुरकनीजाया॥ तौभीतरिषतनां
क्यूंनकराया॥४॥ कहैकबीरमधिमनहींकोई सो
मधिमजामुषिरांमनहोई॥४१॥ कहतावकता
सुरतासोई आपबिचारेसोग्यांनीहोई॥ टेक॥ जैसैं
अगनिपवनकामेला॥ चंचल
नवदरवाजेदसउवार बू
धार॥ देहमाटीबोलेपवनां॥

ई है। कोई कहै कबीर कोई कहै राम राई है।
टेक॥ नां हम बार बूढ नांहीं हम नां हम मैं चिलका
ई है। पठए न जाऊं अरवा नहीं आऊं सहजि रहूं
हरि आई है। जोलहा तनि बुनि पान न पावल फारि
बुनी दस ठाई है॥१॥ त्रिगुण रहित फल रमि हम रा
खल तब हमारौ नांउं राम राई है॥२॥ जग मैं देषौं जग
न देषै मोहि इहि कबीर कछु पाई है॥ ५०॥ लो
का जानि न भूलौ भाई षालिक षलक षलक मैं
षालिक सब घट रह्यौ समाई॥ टेक॥ अला एकै नू
र उपाया ताकी कैसी निंदा। ता नूर थैं सब जग की
या कौन भला कौन मंदा॥१॥ ता अला की गति नहीं
जांनी गुरि गुड दीया मीठा। कहै कबीर मैं पूरा पा
या सब घटि साहिब दीठा॥२॥ ५१॥ राम मोहि तारि क
हां लै जैहौ। सो बैकुंठ कहौ धूं कैसा करि पसाव
मोहि दैहौ॥ टेक॥ जे मेरे जीव दोइ जानत हौ तौ मो
हि मुकति बतावौ। एकमेक रमि रह्या सबनि मैं
तौ काहे भरमावौ॥१॥ तारण तिरण जबै लग कहिये
॥ तब लग तत न जांनां। एक राम देख्या सबहिन मैं
कहै कबीर मन मांनां॥२॥ ५२॥ सोहं हंसा एक समा
न काया के गुण आनहि आन॥ टेक॥ माटी एक स
कल संसारा बहु बिधि भांडे घडै कुंभारा॥१॥ पंच बर
न दस दुहिये गाइ एक दूध देखौ पतियाइ॥२॥ कहै
कबीर संसा करि दूरि। त्रिभुवननाथ रह्या भरपूरि
॥३॥ ५३॥ प्यारे राम मन हीं मनां। का सूं कहूं कहन

कौनां है। दूसर और जनां। टेक ज्यूं दरपन प्रतिब्यंब
देषिये आप दवा सूं सोई। संसौ मिटयां एक कौ एकै
महाप्रलै जब होई॥१॥ जो रिझ करै तौ सदा क छिन है
छिन रिझ पै पै सन षोटी। कहै कबीर तरक दोइ
साधै ताकी मति है मोटी॥२॥५४॥ हम तौ एकै एकरि
जांनां। दोइ कहै तिनहीं कौं दोजग जो हिन पहि
चांनां। टेक। एकै पवन एक ही पांनीं॥ एकै जोति संसा
रा॥ एक ही षाक घडे सब भांडे॥ एक ही सिरजनहा
रा।१। जैसें बाढी काष्ट ही काटै॥ अगनि न काटै कोई
सब घटि अंतरि तूं ही ब्यापक॥ धरै सरूपै सोई॥२॥ मा
या मोहे अरथ देषि करि काहे कूं गरबांनां। निरभै
भया कछू नहीं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां॥३॥५५॥
अरे भाई दोइ कहां सो मोहि बतावौ बिचि ही भरं
म का भेद लगावौ। टेक जोनि उपाइ रची द्वै धरनीं
दीन एक बीच भई करनीं।१। रांम रहीम जपत सुधि
गई उनि माला उनि तसबी लई।२। कहै कबीर चे
तहु रे भौंदू बोलनहारा तुरक न हिंदू॥३॥५६॥
ऐसा भेद बिगूचनि भारी बेद कतेब दीन अरु
दुनियां कौंन पुरिष कौंन नारी। टेक एकै बूंद ए
कै मल मूत्र एक चांम एक गूदा॥ एक जोति थैं सब उ
तपनां कौन बांम्हन कौंन सूदा।१। माटी का प्यंड
सहजि उतपनां॥ नाद ब्यंद समांनां॥ बिनसि ग
या थैं का नांव धरिहौ पढि गुनि मरम न जांनां॥२॥
रज गुन ब्रह्मा तम गुन संकर सत गुन हरि है सोई

कहै कबीर एक राम जपहु रे ॥ हिंदू तुरक न को

॥ ३ ॥ ५१ ॥ रागगौड़ी ॥ हमारे राम रहीम करीम के

सौ ॥ अलह राम सति सोई ॥ बिसमिल मेटि बिसं

रएकै ॥ और न दूजा कोई ॥ टे ॥ इनके काजी मुलां

रपैकंबर ॥ रोजा पछिम निवाजा ॥ इनके पूरब दि

सा देव दिज पूजा ॥ ग्यारसि गंग दिवाजा ॥ तुरक

मसीति देहुरे हिंदू ॥ दहूंठां राम खुदाई ॥ जहां मसी

ति देहुरा नाही ॥ तहां काकी ठकुराई ॥ हिंदू तुर

क दोऊ रह तूटी ॥ फूटी अरु कनराई ॥ अरध उरध

दसौं दिस जित तित ॥ पूरि रह्या राम राई ॥ कहै क

बीर दास फकीरा ॥ अपनी रह चलि भाई ॥ हिंदू तु

रक का करता एकै ॥ ता गति लखी न जाई ॥

॥ रागगौड़ी ॥ काजी कौन कतेब बखानै ॥ पढत

ढत केते दिन बीते ॥ गति एकै नही जानै ॥ टे ॥ स

कति सनेह पकरि करि सुनति ॥ यहु न बदौंगा भा

ई ॥ जौर खुदाइ तुरक मोहि करता तौ आपे कटि

किन जाइ ॥ हौं तौ तुरक कीया करि सुनति ॥ औ

रति सौं का कहिये ॥ अरध सरीरी नारि न छूटै

आधा हिंदू रहिये ॥ छाडि कतेब राम कहि का

जी खून करत हौ भारी ॥ पकरी टेक कबीर भग

ति की ॥ काजी रहे झख मारी ॥ ५६ ॥ मुलां कहां पु

कारै दूरि ॥ राम रहीम रह्या भरपूरि ॥ टे ॥ यहु तौ अ

लह गूंगा नाही ॥ देषै खलक दुनी दिल मांही ॥ हरि

गुन गाइ बंग मैं दीन्हां ॥ काम क्रोध दोऊ बिसमल

कीन्हां ॥१॥ कहै कबीर एक मुलना कहौं रांम रहीम
सबनि मैं दोठा ॥२॥ ॥ ३१० ॥ पढिले काजी बंग निवाजा ॥ ए
क मसीति दसौं दरवाजा ॥ टेक ॥ मन करि मका किबला
करि देही । बोलनहार जगत गुर एही ॥१॥ तहां न दोजग
भिस्त मुकांमां । इहां ही रांम इहां रहिमांनां ॥२॥ बिसम
ल तांमस तरमक दूरी । पंचूं भषि ज्यूं होइ सबूरी ॥३॥
कहै कबीर मैं भया दिवांनां । मनवां मुसि मुसि सहजि
समांनां ॥४॥ ३११ ॥ मुलां करि ल्यौ न्याव खुदाई । इहि बि
धि जीव का भरम न जाई ॥ टेक ॥ सरजी आंणैं देह बिनासै
माटी बिसमल कीता । जोति सरूपी हाथि न आया
कहौ हलाल क्या कीता ॥१॥ बेद कतेब कहौ क्यूं झू
ठा झूठा जो न बिचारै । सब घटि एक एक करि जां
नैं भौं दूजा करि मारै ॥२॥ कुकडी मारै बकरी मारै
हक हक करि बोलै । सबै जीव सांई के प्यारे उब
रहुगे किस बोलै ॥३॥ दिल नहीं पाक पाक नहीं ची
न्हां उस का षोज न जांनां । कहै कबीर भिस्त छिटका
ई दोजग ही मन मांनां ॥४॥ ३१२ ॥ या करीम बलि हिक
मति तेरी । षाक एक सूरति बहु तेरी [illegible]
गन मैं नीर जमाया बहुत [illegible]
अवलि आदम पीर मुलतांनां [illegible]
वांनां ॥ कहै कबीर [illegible]
बयारहमार [illegible]
तेरे हीनालिम [illegible]
बांम जलबे [illegible]
परिश्राभि [illegible]
बीरबैग [illegible]

तबैं सुख उपज्या तन की तपति बुझांनी ॥ कहै कबी
र संसै बंधन छूटै जोति हि जोति समांनी ॥३॥१७॥
छाकि परयौ आतम मतिवारा ॥ पीवत रांम रस करत
बिचारा ॥ टेक ॥ बहुत मोलि महंगै गुड़ पावा ले कै
साव रस रांम चवावा ॥१॥ तन पाटन मैं कीन्ह पसारा
मांगि मांगि रस पीवै बिचारा ॥२॥ कहै कबीर फा
बा मतिवारी ॥ पीवत रांम रस लगी खुमारी ॥३॥५२॥
बोलौ भाई रांम की दुहाई ॥ इहि रसि सिव सनकादि
क माते पीवत अजहूं न अघाई ॥ टेक ॥ इला प्यंगुला त
ी कीन्हीं ब्रह्म अगनि परजाली ॥ ससिहर सूर द्वार दस
मूंदे लागी जोग जुग ताली ॥१॥ मन मतिवाला पीवै रांम
रस दूजा कछू न सुहाई ॥ उलटी गंग नीर बहि आया
अंमृत धार चुवाई ॥२॥ पंच जने सो संग करि लीन्हें चलत
खुमारी लागी ॥ प्रेम पियालै पीवन लागे सोवत
नागिनी जागी ॥३॥ सहज सुंनि मैं जिनि रस चाख्या
सतगुर थैं सुधि पाई ॥ दास कबीर इहि रसि माता क
बहूं उछकि न जाई ॥४॥७३॥ रांम रस पाइया रे ता
थैं बिसरि गए रस और ॥ टेक ॥ रे मन तेरा कोन ही
पै चिलै इजिनि तार बिरछि बसेरा पंछिया ॥ ऐस
माया जाल ॥१॥ और मरत का रोइयै जो आपा थि
र न रहाइ ॥ जो उपज्या सो बिनसिहै ताथैं दुख करि
मरै बलाइ ॥२॥ जहां उपज्या तहां फिरि रच्या रे पी
वत मरदन लागा ॥ कहै कबीर चित चेतिया ताथैं
रांम सुमरि बैरागा ॥३॥७४॥ रांम चरन मनि लाइयै रे
अस हरि जाऊं रोड के करहा ॥ प्रेम प्रीति ल्यौ लाइयै रे

गवेलीरे॥हेषुरवटिगयौ रांडकौ करहा। मनह
पाटकौ मेलीरे॥१॥कंकरकुईपतालिपनियां।
सोनै बंदखि काईरे॥बजरपरौ इहि मथुरानगरी
कांन्ह पियासा जाईरे।२।एकदहिंडियाटहीज
मायौ॥डुसरीपरिगईमारीरे।न्हैतिजिमांऊत्र
पनौ करहा।छारसुनमकी दाफीरे।३।इहि ब
निबाजैमदनसे रिरे॥उहिबनिबाजैरराँरे।इहि
बनिछैलेराहीरूकमनि॥उहिबनिकांन्हत्र
हीरारे॥४॥श्रासिपासितरसीकौ बिरवा।मां
हिघारिका गोऊरे॥तहांमेरोठाऊर रांमराइदे
नगतकबीरनोऊरे॥५॥७६॥थिरनरहैचित
थिरनरहै।चिंतामणितम्हकारणिहै।मनमें
लोमैफिरिफिरिश्राइहै।तुम्हसुनऊनऊघविस
रावनहोटक॥प्रेमछटोलवाकसिकसिवांधौ
बिरहबांनतिहिलामहै।तिहिंबदियेदऊकरत
गवसिया॥न्हैतरिनमवाजागूहै॥१॥मदहमछा
मारिनजांनै।गहरैपैगंध्रुईहै।दिनएकमगर
मछलेघैहै॥तबकोरषिहैबंध्रनराइहै।२।मदहू
नाहरईयजांनै।मबदनहूजैबोरा॥चारेलाइस
कलजगष्णायौ॥तऊनसेटिनिसहरादे।३।जोम
हाराजवाटोमदरईये॥तौनाथेपमनदौराहै।ता
रीलाइकेसिहिविचारौ॥तबगहिसेटिनिसहरादे
।टिऊरातईकांन्हकेकारणि॥त्रमित्रमितीरथ
कीन्हहै।सोपटटेडमोहिमदन रःजिहि
पटिहारिमेवान्हांहै।५। :क
मा।हरीकोईमदरोहै।प्र

नारहै कि निरुराहै ॥ ६॥११८ बीनती एक राम सु
निथोरी । अब न नचाइ रामिपति मोरी ॥ टेक ॥ जैसें मंद
ला तुम मंदिरु जाना । तैसें नाचत मैं दुष पावा ॥ जिम
मिलागी सो बहुडावै । अब मोहि जिनि बहुरूप के
छावो ॥ १॥ कहै कबीर मेरी नाचै उगावौ । तुम्हारे
चरनं कवल दिखलावो ॥ २॥ ११९ ॥ मन थिर रहै न घर
कै मेरा । इन मन घर जारे बहुतेरा ॥ टेक ॥ घर तजि ब
न बाहर कीयो बास । घर बन देखौं दोऊ निरास ॥ १॥
जहां जांऊं तहां सोग संताप । जुरा मरण को अधिक
बियाप ॥ २॥ कहै कबीर चरन तोहि बंदा । घर में घर
दे परमानंदा ॥ ३॥ १२० ॥ कैसे नगरि करों कुटवारी । चं
चल पुरिख बिचषन नारी ॥ टेक ॥ बेल बियाइ गाइ भ
इ बांझ । बछरा दूहै तीनूं सांझ ॥ १॥ मकड़ी धरि माषी
छछिहारी । मास पसारि चील्ह रषवारी ॥ २॥ मूसा षेव
ट नाव बिलइया । मींडक सोवै सांप पहरइया ॥ ३॥ नित
उठि स्याल स्यंघ सूं झूझै । कहै कबीर कोई बिरला बूझै
॥ ४॥ १२१ ॥ साईं बेन बिलंटा भाई । बांघ निसंगि सई सब
दिन कै ॥ ससम न से दल लटाई ॥ टेक ॥ सब घर फोरि बिल
टा षायौ । कोई न जानैं भेव । ससम निपूतौ आंगणि सू
तौ रांड न देई लेव ॥ १॥ पाड़ोसनि पनि भई बिरानी मांहि
हूई घर घाले । पंच सषी मिलि मंगल गावैं । यहु दुष
को सालै ॥ २॥ द्वै द्वै दीपक धरि धरि जोया । मंदिर सदा
अंधारा । घर घेहर सब आप सवारथ । बाहरि कीया
पसारा ॥ ३॥ होत उजाड़ सबै कोई जानैं । सब काहू म
नि भावै । कहै कबीर मिलै जे सतगुर । तौ यहु जन्म छुड़ा
वै ॥ ४॥ १२२ ॥ बिषिया अजहूं सुरति सुष आसा । हो

नहेईं हरि कैं चरन निवासा ॥१॥ सुख मांगें दुख पहलें
आवें ॥ तार्थै सुख मांग्या नहीं भावें ॥२॥ जा सुख थैं सिव बि
रंचि डरानां ॥ सो सुख हमहूं साच करि जांनां ॥३॥ सुख
छाड्या तब सब दुख भागा ॥ गुर के सबदि मेरा मन लागा ॥
४॥ निस बासुरि बिषै तनां उपगार ॥ बिषई नरकि न
जातें बार ॥५॥ कहै कबीर चंचल मति त्यागी ॥ तब के
वल रांम नांम ल्यौ लागी ॥६॥८२॥ उस्नगार इ मैं बिष
का माता ॥ काहे न जिवाबो मेरे अमृत दाता ॥ टेक ॥ संसा
र सबूंग मइ सिजे काया ॥ अरु डबद्य रन आपे ते
री माया ॥१॥ साप निय कपि टारे जागे ॥ अह निसि
सोवें ता कूं फिरि फिरि लागे ॥२॥ कहै कबीर को
कोन ही राखे ॥ रांम रसांइन जिनि जिनि चाखे ॥३॥८
३॥ माया तजूं तजी नहीं जाइ ॥ फिरि फिरि माया मो
हि लपटाइ ॥ टेक ॥ माया आदर माया मान ॥ माया
नहीं तहां ब्रह्म गियांन ॥१॥ माया रस माया कर जांन ॥
माया कारणि तजै परांन ॥२॥ माया जप तप माया जो
ग ॥ माया बांधे सबही लोग ॥३॥ माया जल थलि आ
या आकासि ॥ माया व्यापि रही चहुं पासि ॥४॥ माया
माता माया पिता ॥ अति माया अस्तरी सुता ॥५॥८४॥
माया मारि करै ब्यौहार ॥ कहै कबीर मेरे रांम अ
धार ॥ टेक ॥ ग्रिह जिनि जांनौ रूडौ रे कंचन क
लस उठा इलै मंदर रांम कहैं बिन धूरौ रे ॥१॥
इन ग्रिह मन डहके सबहिन के ॥ काहू को पूरौ
न रौरे ॥ राजा रांणां राव छत्रपति जरि बरि भस
कौलाहल रौरे ॥ सब थैं नांकी संतन मैं रि
न गनं निसे रौरे जौ तिह के मन बैठे

देखो रे ॥२॥ ऐसे जानि जप्यो जगजीवन । जम सूं तिन का तो
रे रे ॥ कैहेक बार राम तजबे को । ये क आं के सू रो रे
॥३॥ ८५ रज सिमान देषि बकु पानी । काल फ़ाल की षब
रि न जानी ॥ टेक ॥ गारे गढ़ बो ओघट घाट । सो जल छो
डि बिकांनो हाट ॥१॥ बंध्यो न जांनै जल उदमादि । क
हे कबीर सब मो है स्वादि ॥२॥ ८६ काहे रे मन दहदि
सि धावे । बिषिया संगि संतोष न पावे ॥ टेक ॥ जहां
जहां कलपै तहां तहां बंधना । रतन को थाल क्या पातै
रंधना ॥१॥ जो पै सुष पइत इन मांहीं । तौ राज छाडि
कत बन कूं जांही ॥२॥ आनंद सहत तजौ बिषनारी ।
री । इब क्या झोषै पतित भिषारी ॥३॥ कहै कबीर
यहु सुष दिन चारि । तजि बिषिया तजि चरन मु
राइ ॥४॥ ८७ जीय राजा हिगो मे जांनां । जो देष्या
सो बहुरि न पेष्या । माटी सूं लपटांनां ॥ टेक ॥ बाकु
ल बसतर किता पहरिबा । का तप बन षंड बा
सा । कहा मुगध रे पांहन पूजे । काजल न्हा रेगा
ता ॥१॥ कहै कबीर सुर मुनि उपदेसा । लोका पं
थि लगाई । सुनौं संतो सुमिरौ भगता जन । हरि
बिन जनम गवाई ॥२॥ ८८ हरि बिन गज जग के
व गौरी लाई । हरि के बिछो गिके सेजी के मेरी मा
ई ॥ टेक ॥ कौन पुरिष को का की नारी । अभि अं
तरि उम्ह लेहु बिचारी ॥१॥ कौन पूत को का को
बाप । कौन मरै कौन करै संताप ॥२॥ कहै कबी
र ठग सूं मन मांनां । गई ठगौरी ठग पहिचानां
॥३॥ ८९ सांई मेरे साजि दई एक डोली ।
[illegible] मे तै बोली ॥ टेक ॥ इक कफ़र

तपहोलं। त्रिष्णा बाव बहै दिसि डोला॥१॥ पवन कहार
का मरम न जानं॥ एकैक स्याय कन नहीं मांनां।२।घेत
रथा मउहा रन छाना॥ नेहरै जात बडन उडपा कां
॥ कहै कबीर बरबुज उडमहिये॥ रांमप्रीति करि सं
गहीं रहिये॥४॥ ८०॥ बिन सिजाइ का गद को गुडि
या।जन बल मयवननहैल गनडिया। टेक॥ गुडिया
को सबद अनाहद बोलै। षसम लीयें कर डोरी डोलै
॥१॥ पवन थक्यो गुडिया ठहरांनी॥ सीस धुनै धुनि रो
वै षांनी।२॥ कहै कबीर तजि सारंगपांनीं। नहीं तर वै
है षैंचा तांनी॥३॥ ८१॥ मन रे तन कागद का पुतरा॥
लागै बूंद बिनसि जाइ छिन मैं। गरब करै क्या इतना ॥
टेक॥ माटी षोदहिं भीति उसारैं अंध कहै घर मेरा
आवै तलब बांधि ले चालै। बहुरि न करिहै फेरा
॥१॥ षोट कपट करि यहु धन जोर्यो। लै धरती
मैं गाड्यो॥ रोक्यो घट सास नहीं निकसै॥ ठौर ठौर
सब छाड्यो॥२॥ कहै कबीर नट नाटिक थाके॥
मंदला कौन बजावै॥ गया पषनियां उझरा बाजी॥
को काहू कै आवै॥३॥ ८२॥ झूठे तन कूं कहा गरब
इये॥ मरिये तौ पल लरिरहण न पइये॥ टेक॥ षी
र षांड घृत प्यंड संवारा॥ प्रांन गयें लै बाहरि जारा
॥१॥ चोवा चंदन चरचत अंगा। सो तन जरै काठ कै
संगा॥२॥ दास कबीर यहु कीन्ह बिचारा॥ इ
क दिन ह्वैहै हाल हमारा॥३॥ ८३॥ देषहु यहु तन
जरता है। घडी पहर बिलंबो रे भाई जरता है। टे
क॥ काहे कूं एता कीया पसारा॥ यहु तन जरि ब

रिवरिकै है सारा ।१। नवतनु बादसकोगी आगी ।
सुगधन चेतैन छासिवजागी ।२। कांमकोंधहंकार
विकारा । आपहि आयजरै संसारा ।३। कहै कबीर
हमम्रतकसमांना । रांमनांमछूटै अभिमांना ।४। ।५९।
तनराषनहारा कोनहीं । तुम्हसोचिविचारिदेषोमन
मांही । टेक । जोरकुटंबआपनो करिपास्यो मूडगे
किलेबांदहरिजारयो ।१। दगाबाजलटेअरुरो वे जा
रिमाडिसुरषोजाइमीठे ।२। कहतकबीरसुनहुरे
लोई । हरिबिनराषनहारनकोई ।३। ।६०। अबका
सोचैआइबनी । सिरपरिसाहिबरामधनी । टेक ।
दिनदिनपापबहुतमैकीन्हो । नहीं गोबिंदकी
सकमनी । लेटयो तो मिबहुतपछितानो । लो
चिलागोकरलयनी ।१। कहीकोजअग्निगटय्यो ।
उठिगयोमंदिरछांडितनी । एकल्योहंसजमलेचाल्यो
मंदररोवै नारियनी ।२। कहैकबीररामकिनसुमि
रत । चीन्हत नांहिनएकछिनी । जबजाइआइ
पडोमाथेस्यो । छांडिचल्योतजिपुरिषपनी ।३।
सुवटाडरपतरहुमेरेभाई । तोहिडराइदेतबि
लाई । तीनिबारलहेइकदिनमैं । कबहूंकैषल
षबाई ।१। ।यामंजारीमुगधनमांनै । सबदुनि
याडहकाई ।१।।५। कहतकबीरसुनहुरे सुवटा
उबरेहरिसरणाई । लाछोमांहैलेतअचान
काहूनदेताहिषाई ।६।।६२। कामांयकहूछि
नरहाई । देषतनैनचल्योजगजाई । टेक । इकदे
षतमबालषगती । तातरुनघरिहवारबां

लंकासाकोटसमंदसीखाई।तारावनकीषबरिनयाइ॥आव
तसंगीनंजातसेमाती।कहालयोंदरबांधेहाथी॥३॥
कहैकबीरअंतकीबारी हाथझाडिजैसैचलेजुवा
री॥४॥६८॥रामथोरेदिननकोंकाधनकरनां॥धंधाब
हुतनिहाइनिमरनां॥टेक॥कोंईधजसाहदसतीबं
धराजा कियानकोंधनकोंनैकाजा॥१॥धनकेगर्बि
रांमनहींजानां॥नागाहैजमपैगुदरांनां॥२॥कहै
कबीरचेतहुरेलाई हंसगयाकछुसंगिनजाई
॥३॥६९॥काहेकूंमायादुषकरिजोरी हाथिचून
गजपांचपछेवरा॥टेक॥नांकोबंधननाईसाथी बांधे
रहेउरंगमहाथी॥१॥मैडीमहलबावडीछाजा छा
डिगयेसबभूपतिराजा॥२॥कहैकबीररांमल्योलाई
धरीरहीमायाकाहूषाई॥३॥१००॥मायाकारसषांणन
पाया नवलराजमबिलवाकैआवा॥टेक॥अनेकज
तनकरिगाडिदुराई काहूसांचीकाहूषाई॥१॥तिल
तिलकरियहमायाजोरी॥चलतीबेरतिणाज्यूंतोरी
कहैकबीरहूंताकादास मायामांहैरहैउदास
॥२॥१०१॥मेरीमेरीदुनियांकरते।मोहमछरतनधरते
आगेमीरमुकदमहोते वेभिगयेयोंकरते॥टेक॥
किसकीममांचचापुनिकिसका॥किसकापंगुडा
जोई यहुसंसारबजारमंड्याहै जांनैगाजनकोई
॥१॥मैपरदेसीकाहिपुकारों इहांनहींकोमेरा य
हुसंसारढूंढिसबदेख्या एकभरोसातेरा॥२॥षा
हिहलालहरांमनिवारे
पैसेनतकामरमनजांनै दोऊ

ऊटवकारणिपायकमावै ञ्जाणोघरमेरा एस
बफिलेञ्जापमवारथ इवानदीकोतेरा॥ माय
रउतरोपथसवारे बुरानकिसीकाकारणकदे
कबीरसुनऊरपंते जातसमसकोतरणा॥१०
॥रयामेक्यामेराक्यातेरा लाजनमरहिकहत
घरमेनाटेका॥चारिपहरनिमतोरा जैसेतरवर
पंखिबसेरा॥१॥जैसेबनियेहाटपसारा सबजग
कासोसिरजनहारा॥२॥येलेजारेवेलेगाडे इदि
उभिडनिदोऊधरछाडे॥३॥कहतकबीरसुनऊ
रेलोई हमतुमविनसिरहैगासोई॥४॥पु०३॥
नरजानेऊमरमेरीकाया घरघरवातउपहर
कीछाया॥टेक॥मारगछाडिकुमारगजोवै
ओरणामरओरकोरोवै॥१॥कछुयेककीयक
छुयेककरणा॥मुगधनचेतैनिहचैमरणा॥२
जेजलहूंदतेसोसंसारा॥३॥उजतबिनसतलागैन
वारा॥४॥पंचपहुरीएकसरीरा कृस्नकवलद
लभवरकबीरा॥५॥पु०६॥दहदहदहदहदहहरती
है दिवानपनाक्याकरतीहै आडीतिरछीफिर
तीहै क्याचोंचोंम्योंम्योंकरतीहै॥टेक॥क्यातू
रंगीक्यातूचंगी क्यासुखलोडेकीनो मीरमुक
दमसेरदिवानी जंगलकेरखजीना॥१॥ नलेभूमि
कलतुमरावे क्यामडमातेमाया॥रामरंगमे
दामतिवाले कायादोइनिकाया॥२॥कहत
कबीरसुहागसुंदरी हरिभजिकेनिसतारा एक
रामलकमरावैकीया है मानसकहाविचारा॥३॥

हरिकेनांइगहरन्निनिकरऊ॥रामनांमचितगुषां
नधरऊं॥१॥जैसेंसतीतजैसंघार।ऐसैजीयराकमंनि
वार॥२॥रामदोषदसोमेंएकनलाघि कदाचितपैजे
तौचितानरांषि॥३॥मूलेबिमरिगहरओहोई कहै
कबीरक्याकसिहेमोहा॥३६॥१०६॥मनरेकांगदकी
रिपराया॥कहाभयोब्योपारउम्हारे कलतरबढै
सवाया॥टेक॥बडेब्योहरैसांठोदीन्हैं कलतरका
टेंघोटे॥चारिलाषअरुअसीठीकदे जनमलिषो
सवचोटे॥१॥अवकीवेरनकागदकीस्यो तोधरमराइ
सूंटूटै॥पूंजीवितडिबंदिलेदेहै तबकहैकोनकेछूटे
॥२॥गुरदेवग्यांनीभयोलगनियां सुमिरंनदीन्हेंहीरा
बडीभिसुरतीनांवरांमको चढिगयोकीरकबीरा॥१०॥
॥३॥धागाज्यूंटूटैतंज्योरि॥टूटैटूटनिहोइगीरे॥नांऊं
मिलैवहोरि॥टेक॥उरज्योसूतपांणनहीलागो कूच
फिरैसवलाइ।छिटकैपवनतारजवछूटै तवमेरोक
हावसाई॥१॥सुरज्योसूतगुढीसवलागी पवनराषिम
नधीरा॥पंचूंभइयाभयेसनमुषा॥तवयऊपांनकरील
॥२॥नांन्हीमैदापीसिलईहै छांणिलईहैबारा॥कहैकबी
रतेलजवमेल्या॥बुनतननलागीबारा॥३॥१०॥ऐसा
औसरवहुरिनआवै। रांममिलैपूराजनपावै॥टेक॥
जनमअनेकगयाअरुआया॥कीबेगारिनसाऊ
पाया॥१॥भेषअनेककयेकथकैसे। नांनांरूपधरे
नटजैसा॥२॥दांनयेकमांगौकवलाकंत॥कबीर
केउघहरेनअनंत॥३॥१०॥हरिजेमनी
तेरा कोहेनओगुणवकसऊमेरा॥

थके दिन केते जननी के चितिर है न तेते करग
हि कैसकरे जो घाता तऊन है तऊ ताैर माता
क है कबीर एक बुधि बिचारी बालिक दुख दुखी
महतारी ॥२॥१०२॥ गोबिंदे तेम पैंडरयो नारी सर
णाई आयो कहा गाहिये एक कौन बनत महारी
धूपदा ऊ तेकोई हत काई मतित रव रस चपाऊं त
रव र माहै ज्वाला निकसै तो क्या लेइ बुझाऊं
जे बन ज तेत जल कै धावै मति जलसीतल होइ जल
ही माहि आगनि जे निकसै औरन इजा कोई ॥१॥ तारण
तिरण तिरण तू तारण औरन इजा जानो कहै कबी
सरनाई आयो औन देव नहीं मानो ॥३॥१०३॥ मे गुल
म मोहि बेचि गुसाई तन मन धन मेरा राम जी के ताई
आनि कबीरा हाटि उतारा सोई गाहक सोई बेचन
हारा ॥१॥ बेचै राम तो राखै कौन राखै राम तो बेचै कौन
॥२॥ कहै कबीर मै तन मन जार्‍या साहिब अपणा छि
न न बिसार्‍या ॥३॥११०॥ अब मोहि राम भरोसा तेरे
और कौन को करौ निहोरे जाके राम सरीखा सा
हिब भाई सो क्यूं अनत पुकारन जाई ॥१॥ जा सिरि तीनि
लोक को भारा सो क्यूं न करै जन की प्रतिपारा ॥२॥ कहै
कबीर सेवौ बनवारी सींचौ पेड पीवै सब डारी ॥३॥११
॥ जियरा मेरा फिरै रे उदास राम बिन निकसि न
जाइ सास अजहूं कौन आस जद जब गा
राम मिलन कै कहै संतो कैसे जीवन होई जो
सरीर एक तन कोई न बुझावै औरन कहै निसनी
न आवै ॥२॥ चंदन घसि घसि अंगि लगाऊं राम बि

दास नें दुख पोवें। संत संगति सत मनां करि धीरा मद जिजा
निरास। दिनं जे दि कदीरा॥३॥१२५॥ रांम कछू अजहू के तदि
नां॥ जब के देखा न प्रभु तुम लीनां॥टेक॥ मो त्रमन अने
क दिन गये। उमद रसन गोविंद लिजन नया॥ ॥ श्रमे त
लिप मे। मेमागरा। कछुन व माइ वृमो धरा॥२॥ कहे
कवीर उपब जगा॥ कसि दया उरि तनि कें दनो॥३॥१२६॥
हरि मेरा पीव माई हरि मेरा पीव॥ हरि बिन रहन सकें
मेरा जीव॥टेक॥ हरि मेरा पीव में हरि की बहुरिया। राम
बडे मैं छूटक लहुरिया॥ काया सिंगार मिलन के ताई। कोहेन
मिला राजा राम गुसाई॥१॥ अब की बेर मिलन जो पांऊं। कहे क
वीर भौजल नहि आऊं॥२॥१२७॥ रांम बान अनयाले तीर। जो
हिलाम सो जांने पीर॥टेक॥ तन मन पोजो चोट न पांऊं। ओष
दि मूरी कहा घसि लांऊं॥ एक ही रूप दीसे सब न्यारा॥ नां जां
नूं को पिव है प्यारा॥१॥ कहै कबीर जा मस्तक जागा॥ नां जांनों
काहि सुहाग॥२॥१२८॥ आप नहीं पूरियारे। रांम बिन को क्रम
काटणहार॥टेक॥ जल सर जल प्रपूरता॥ चात्रग चित दुक
दास। मेरी विषम कर्म गति के परी॥ नां पैं पिया न पियास॥१॥ मि
ध मिले सुधि नां मिले। मिले मिलावे सोई॥ सूरमि धजननि टिपे
त बडप आपन को इ॥२॥ चीक्वे जल जैसे मछिका। उदर न नई
नीर संत पुकार निके सवा। जनता जांने लिकवार॥३॥१२९
रांम बिन तन की ताप न जाई। जल में अगनि उठी अधिकाई
॥टेक॥ तुम्ह जलनिधि मै जल कर मीनां। जल में रहौं जल हि बि
न पीनां॥१॥ तुम्ह पिंजरा मै सुवनां तोरा। दरसन देहु भाग व
ड मोरा॥२॥ तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला। कहै कबीर रांम रमूं
अकेला॥३॥१३०॥ गोविंदा गुण गाईये रे।
पन्य लिधांत॥टेक॥ ऐकारे जाग उपजे।

अनहदबेनबजाइकरि रह्यो गगनमठछाइ ॥ ऊठेजगु
कुहकाईयारे ॥ कासीवासीकीआस रामरमाईजानिपी
या ॥ तिनकौबजरिनलागीरपीयास ॥ अरधषिनजीव
नभला ॥ भगवंतभगतिसहेत ॥ कोटिकलपजीवनविरथा
नाहिनहरिसौहेत ॥ संपतिदेषिनहरषिये ॥ विपतिदेषिनरोइ
ज्यूंसंपतितूंविपतिहै ॥ करताकरैसुहोइ ॥ अगलोकनबांछि
ये ॥ करियेनमरकनिवास ॥ जांणांथासोकेरहा ॥ मनजनकीजेऊ
दीआस ॥ काजपकातपसंजमां ॥ कातीरथब्रतअस्नान ॥ जो
पैजुगतिनजांनिये ॥ भावभगतिभगवान ॥ सुनिमंडलमैसोधि
ले ॥ परमजोतिप्रकास ॥ तहांरूपनरषहै ॥ विनफूलनफल्योरे
आकास ॥ कहैकबीरहरिगुणगाइले ॥ सतसंगतिरिदामंझ
रि ॥ जोसेवगसेवाकरै ॥ तासंगरमैरमुरारि ॥ मनरेहरि
भजिहरिभजिभाई ॥ जादिनतेरकोईनांही ॥ तादिनरामसहा
हाई ॥ तनजांनौमनजांनूं ॥ जांनूंसुंदरकाया ॥ मीरमलि
कछत्रपतिराजा ॥ तेभीषायेमाया ॥ बेदनजांनैभेदनजांनै
नौ ॥ जांनूंएकेरांमां ॥ पकितदिसिपछिवाराकीन्हौ ॥ मुषकी
न्हौजितनांमां ॥ राजाअंबरीककेकारनि चक्रसुदरसनजा
रै ॥ दासकबीरकौठाकुरऐसौ ॥ भगतिकीसरणउबारे ॥
रांमभणिरांमभणिरांमचिंतामणि ॥ भागबडेपायोछा
डैजिनि ॥ असंगसिंगजिनजाइरेभुलाइ ॥ साधसंगतिमि
लिहरिगुनगाइ ॥ रिदाकंवलमैराषलुकाइ ॥ प्रेमगांठिदेजि
छुटिनजाइ ॥ अठसिधिनवनिधिनांउमंझारि ॥ कहैकबी
रभजिचरनमुरारि ॥ निरमलनिरमलरामगुनगावै ॥ सो
भगतामेरमनिभावै ॥ जेजनलेहरांमकौनाम ॥ ताकी
मैबलिहारीजाऊं ॥ जिहिंघटिरामरहैभरपूरि ॥ ताके
रह्योकीधूरि ॥ जातिजुलाहोमतिकौधीर ॥ हरिषिहरि

तारैसै कबीर॥४॥१२२॥ज्ञानरहंमनगतिनहीसाषी॥ सोजनम
तंकोहेनमुषांअपराधी॥टेक॥गरभकचेमुक्तिनईकिनवांक॥स्व
करस्रूपफिरेकलिमांऊ॥१॥ जिहिकुलिपुत्रनज्ञांनविचारी॥वा
वांकाविधवाकाहेनभईमंहतारी॥ कहेकबीरनरसुंदरसरू
प॥रांमनगतिबिनअचलकरूप॥३॥१२३॥रांमबिनांघिरगधि
गनरनारी॥कहांतेआइकीयोसंसारी॥टेक॥रजबिनांकेसोर
जपूत॥ ज्ञांनबिनांफोकटअवधूत॥१॥गनकाकोपूतपिता
कासोंकहैगुरबिनचेलीज्ञाननलहै॥२॥कंवारीकिन्याक
रसिंगार॥सोभनपावेबिनभरतार॥३॥कहेकबीरहूंकरता॥
मेरी॥सुषदेवकहैतोमैक्याकरौं॥४॥१२४॥जेरिनांउऐसाजी
वनां॥राजारांमसोंप्रीतिनहोइ॥जनमअमोलिकजातहै
बीतिनदेषेकोइ॥टेक॥सुधुमापीधनसंपदौ॥मषियामधुले
जाइरे॥गयोगयोधनमूढजनां॥फिरिपीछेपछितांइरे॥१॥
विषियासुषककारने॥जाइगनिकासूंप्रीतिलगाइ॥२॥अंधे॥
आगिनसूझई॥पढिपढिलोकबुझाइ॥३॥एकजनमकेका
रने॥कतपूजोदेवसहैसो॥काहेनपूजोरांमजी॥जाकोभ
गतमहेसो॥कहैकबीरचितचंचला॥सुनोमतिमोरी॥वि
षियाफिरिफिरिआवही॥राजारांमनमिलेबहुजोरी॥६॥१२५॥
रांमनजपैकहाभयेअंधा॥रांमबिनांजमभेलेफंदा॥टेक॥
सुतदाराकाकीयापसारा॥अंतकीबेरभयेबटपारा॥१॥मा
याऊपरिमायामांडी॥साथिनचलैषोपरीहांडी॥२॥जपोरां
मंजपअंतिउबारे॥ठाढीबांहकबीरपुकारे॥३॥१२६॥गमग
छाडिदेमनबौरा॥अबतोजरेबरेबनिआवे॥लीनोहाथि
सिंधौरा॥टेक॥होइनिसंकमगनहैनाचो
लोभमोह
लोकलाजकुलकीमरजादा॥इहै॥

के पाछे फिरि ॥ हूं इ जात मेंहास ॥ ९ ॥ यक संसार सकल
मैला ॥ राम कहत सुचा ॥ कहै कबीर नांउ न हीं छाडो ॥ गि
तपरत चढिके चा ॥ ३ ॥ १२ ॥ का सिधि साधि करूं कछु नाही
मरसां छून भरी रसनां मांही ॥ टेक ॥ न ही कछु ग्यांन ध्यान सिधि
ग तप्यि उपजै ना रोग ॥ १ ॥ का बन मैं बसि न्य उदासा जे
मन नही छाडे आसा पासा ॥ २ ॥ सब कृत काल हरी हित सार
कहै कबीर तजि जग ब्यौहार ॥ ३ ॥ १३ ॥ जौ तर सनां राम कहि
बो ॥ तौ उपजत बिनसत नर मत रहि बो ॥ टेक ॥ जेसी देखि त
रवर की छाया ॥ प्रान गये कछु का की माया ॥ १ ॥ जीवत कछु
न कीया प्रवांनां ॥ मूवा मरम को का करि जांनां ॥ २ ॥ कै धिक
लसु पिको हूं न सोवे ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोवे ॥ ३ ॥ हंस सरी
वर कंवल सरीरा ॥ राम रसां इन पीव कबीरा ॥ ४ ॥ १४ ॥ का
नां ग ॥ का बंध चाम ॥ जौ नहीं चीनसी आतम राम ॥ टेक ॥ बाग
रेलागजी होई ॥ बन का मृग मुकति गया कोई ॥ १ ॥ बिदरा बिध
लिहे नाई ॥ तौ षुसरे कौं न पूरमा तिपाई ॥ २ ॥ पट गुन उपजे
हंकारा ॥ अध फर दूबे वार न पारा ॥ कहै कबीर सुनौं रे भ
ई ॥ राम नाम बिन किन सिधि पाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ हरि बिन भरम बिग
तेगंटा ॥ जापे जाऊं आपा पो छुडावा ॥ तही धवज प
धा ॥ टेक ॥ जोगी कहै जोग सिधि नीका ॥ और न दूजा भाई
लुंचित मुंडित मौनि जटा धर ॥ राजु कहै सिधि पाई ॥ १ ॥ ज
का ऊपज्या तब बिलांनां ॥ हरि पद बिसर्यो तब ही ॥ २ ॥ पं
तगुनी मूरिख बिदाता ॥ राजु कहै हम दांनी ॥ २ ॥ कार प
का षबरि न जांनी ॥ फिरे सकल बन ऐसे ॥ ३ ॥ यक मन
हष के कथा न्यू रहो व तो मौ बैसे ॥ ३ ॥ तजि बाद रहि
बिकार ॥ हरि पद दिढ करि गहि ए ॥ कहै कबीर संग
कहै ना का कहिये ॥ ४ ॥ १६ ॥ चलो बिचारी रहै

होसेंनारी॥ कहै ताजुपुकारि॥ रांमनांम अंतरिगतिनांही
तौजनमैमुयासंहारी॥ टेक॥ मूरि मूरिफूलिकरिबैठे॥ क्यों
नि निपदहरिमनुसा॥ नाह रिदैदेषेह्लपटांनी॥ मीतरि बिसे घर
मूसा॥१॥ गारंबनगारी गांइवसाया॥ हूंमें कांमअहंकारी॥ घा
लिरसलिया भवनमेपैचे॥ तबकापत्तिरहैउम्हारी॥२॥ छाडि
कपूरगांठि विषबांध्यो॥ मूलनहूवानलाहा॥ मेरेरांमकोअ
भैपदनारी॥ कहैकबीरजुलाहा॥३॥१३३॥ कौंनविचारकरत
होपूजा॥ आतमरांमअवरनहीं दूजा॥ टेक॥ बिनप्रतीतैपातीतोडै
ग्यांनबिनादेवलसिरफोडै॥ लुचरीलपसीआपसिधारै॥ द्वारै
ठाढारांमपुकारै॥२॥ परआतमजोततबिचारै॥ कहैकबीरता
केबलिहारै॥३॥१३४॥ कहाभयौतिलकगरैजपमाला॥ मरमन
जांनैमिलनगोपाला॥ टेक॥ दिनप्रतिपसूकरैहरिहाई॥ गरेकाठ
बाकीबांनिनजाई॥१॥ स्वांगसेतकरणीमनिकाली॥ कहा
भयौगलिमालाघाली॥२॥ बिनहीप्रेमकहाभयौरोयें॥ भीतरि
मैलबाहरिकाधोयें॥३॥ गलगलस्वादभगतिनहींसांधी॥ ची
करचंदवाकहैकबीर॥४॥१३५॥ तेहरिकेआवहिंकिहिकामा॥
जनहींचीन्हेआतमरांमा॥ टेक॥ थोरीभगतिबहुतअहंकारा॥
ऐसेभगतामिलैअपारा॥१॥ भावनचीन्हेहरिगोपाला॥ ज्ञांन
किअरहटकैसीमाला॥२॥ कहैकबीरतिनिगयोअभिमांन॥
तेभगताभगवंतसमान॥३॥१३६॥ काहेरेनयेरचित्स्वागवन
पौ॥ अंतरजांमीनिकटिनआयौ॥ टेक॥ बिषैरूपलिपैदिष्टि
गावै॥ रांमनांममनिकबहुंनभावै॥१॥ पापीपरलैजाहिअ
भागे॥ अंम्रितछाडिबिषैरसिलागै॥२॥ कहैकबीरहरि
भगतिनसाधी॥ भगमुषिलागिमूयेअपराधी॥३॥१३७॥ जोपै
फलकेमनिनहींसाये॥ तौकापारोसनिकैजलगीयौ॥ टेक॥ क
हाजनपापीस्नानकरता॥ कहाजगयो नावनकांपै॥१॥

का हा का जरस पूछै केहां॥ सोलह सिंगार कहा भयो कीयें॥ ४॥ अं
जन मंजन करै ठगौरा॥ का पचिमरै निगोडी बौरा॥ ३॥ जो पै पतिब्रता है
नारी॥ कैसें हां रहौ सो पीवहि पियारी॥ ४॥ तन मन जोबन सौंपि सरीरा॥
ताहि सुहागनि कहैं कबीरा॥ १२८॥ हरजन्म नियामत्या न जाई॥ अ
षिकट षा हरि बिन न बुझाई॥ टे०॥ कुपरि नारि लेज तरि हारी॥ कैसें
नीर भरै पनिहारी॥ १॥ उधस्यो कूप घाट भयौ भारी॥ चली निरास पंच
पनिहारी॥ २॥ गुर उपदेस भरी लै नीरा॥ हरषि हरषि जल पीवै क
बीरा॥ ३॥ १२९॥ कहौ भाई पा अंबर कासूं लागा॥ कोई जानैगा जा
नन हारसु भागा॥ टेक॥ अंबरि दीसै केता तारा॥ कौन चतुर
ऐसा चितरन हारा॥ १॥ जे तुम देषो सो यहु नांही॥ यहु पद अगम
अगोचर मांही॥ २॥ तीन हाथ एक अरधाई॥ ऐसा अंबर चीन्हौं
रे भाई॥ ३॥ कहै कबीर जे अंबर जानें॥ ताही सौं मेरा मन मानें॥ ४॥
१३०॥ तन षोजो नर करौ बडाई॥ जुगति बिना भगति किनि पा
ई॥ टेक॥ एक कहावत मुलां काजी॥ राम बिना सब फोकट बा
जी॥ १॥ नव ग्रह बांमन भानन हाता रासी॥ तिनहू न काटी जम की पा
सी॥ २॥ कहै कबीर यहु तन काचा॥ सबद निरंजन राम नाम साचा॥
३॥ १३१॥ जाइ पर्यो हमारो का करि है॥ आप करै आपै दुष भरि है॥ अ
ऊ जातो बाट बताव॥ जो न चलै तौ बकुत षपावे॥ टे०॥ अंधे कूप
कहो यो बताई॥ तरकि परै पुनि हरि न पत्याई॥ १॥ इंद्री स्वादि बि
षरसि विष दिहै॥ पंच सषी मिलि मतौ उपायो॥ जम की पासि हंस
बंधायौ॥ २॥ कहै कबीर परतीति न आवै॥ पाषंड कपट इहै जी
य भावै॥ ३॥ १३२॥ ऐसे लोग निसूं का कहियें॥ जे नर भये भगति थैं
न्यारे॥ तिन थैं सदा दुरांतर रहियें॥ टेक॥ आपन देह चरवा पांणी
ताहि निंदै जिनि गंगा आंणी॥ १॥ आपण बूडै और कौं बोवै॥ अ
गनि लगाइ मंदर मैं सोवै॥ २॥ आपन अंध और कहूं कांनां॥ तिन
कौं देषि कबीर डरानां॥ ३॥ १३३॥

फुनिगांकैसेगरडुमपतेहै॥टेक॥ग्रविगतएकदेषऊ संसारा॥
सुनहापैऊऊरग्रसवारा॥१॥ग्रसाएकग्रचंभादेषा॥ जंवक
करकैहरिसैंलेषा॥कहैकबीररांमभजिभाई॥दासग्रधमग
तिकबऊनपाई॥२॥१४७॥हेहरिजनथैंचूकपरी॥जेऊछ्या
ढुग्रस्तैरीहरी॥टेक॥मोरतोरजबलगमैंकीन्हां॥तबलगात्रास
बऊनउपदीन्हां॥१॥सिधिसाधिककहैहमसिधिपाई॥रांमनां
मबिनसबैगवाई॥२॥जैबरागीग्रासपिग्रासी॥तिनकीमां
या कदैननासी॥३॥कहैकबीरमैदासतुम्हारा॥मायाषंड
नकरैहमारा॥४॥१४८॥सबऊनीसयानीमैंबौरा॥हमबिगरेबि
गोजिनिग्रौरा॥टेक॥मैंनहींबौरारांमकीयाबौरा॥सतगुरजारि
गयाभ्रमभोरा॥१॥बिद्यानपढ्ंबादनहीजानूं॥हरिगुनकथत
सुनतबौरांनूं॥२॥कांमक्रोधदोऊभयेबिकारा॥ग्रापहिग्रा
पजरैसंसारा॥३॥मीठाकहांजाहिजोभावै॥दासकबीररांम
गुनगावै॥४॥१४९॥रमनजाहिजहां तोहिभावै॥ग्रबनकोईतेरैंग्र
ऊसलावै॥टेक॥जहांजहांजाऊतहांतहांरांमा॥हरिपदचीन्हि
कीयाबिश्रांमा॥१॥तनरंजिततबदेषियतदोऊ॥प्रगटैग्यां
नजहांतहांसोऊ॥२॥लीननिरंतरबपुबिसराया॥कहैकबी
रसुषसागरपाया॥३॥१५०॥ग्रऊंरिहमकाहेकोग्राबहो॥बिछु
रेपंचततकीरचनां॥तबहमरांमहिपावहिगे॥टेक॥प्रथीकागुन
पांनीसोष्या॥पांनितेजमिलावहिगे॥तेजपवनमिलिपवनसबद
मिलि॥सहजसमाधिलगावैंगे॥१॥ग्रैसेहंमलोकबेदकेबिछुरे
सुनहीमांहिसमावहिगे॥२॥ग्रैसेंजलहितरंगतरंगनी॥ग्रैसेंहंम
मुदिदिखलावहिगे॥३॥कहैकबीरस्वांमीसुषसागर॥हंसहिंहंसमि
लावहिगे॥४॥१५१॥कबीरासंतनदीगयोबहि रे॥बाहीमाऊक
रंरैटेर॥टैसोहल्यौबैगाहि रे॥टेक॥ १८
न्हिा॥बरिसग्रंमृतधारा॥सबधानारं

न ऋंमरा ॥१॥ जहां बदिलागे सनक मनंदन । रूद्र ध्यान धरि बै

ठे ॥ सुषमन का सभ्यानंदन मेकमैं । घन कंबर कै पेठे ॥२॥ धर्म

अबध्दकाम धन गहि बांधोरे । जाडा नंज्ञन केरे सब दिन का । क

छून म के आधारे । [illegible] जो भ्या लेतो हधन देई । त्यागन अमृत

सरवे । कोली घाल्या बीड रिचाले । ज्यूं घरूत पदरवे ॥ ॥ तिहि

घे नये अन्नका पूगी । पाक डिष्ट बांधी । ग्या झाभे है आनद

पनो ॥ सूटदो कंचाक्ष्री ॥२॥ साईमाई सासपुनिसाई । साईघर

की नांरी । कहे कबीर अम पद पाया । संतो लेहु बिचारी ॥ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ जगत गुरअनहद की गुरा बाजे । तहां दीरघ नाद

ल्यो लागे ॥ [illegible] ॥ त्री अस्थान अंतरि रिष छीला । गगन मंडल

सींगी बाजे । तहां वारो कहू कान रच्यो है । निराकार खुत सौंजे

॥१॥ गगन हि माव सीगी करिलूरी । कनक कलहू कपावा

तहां वा च्चुवे अमृत रस नीझर । रदी मेर सच्चुसावा ॥२॥ अबतो

एक अनूप बात भई । पवन पियाला साजा । तो त्रिभुवन मे एके

जोगी । कहो कहां बसे राजा ॥३॥ बिंनर जो निप्रवांप्रसो तम

कहि कबीर रगि राता ॥ [illegible] ॥१॥ ऐसा ग्यान बिचारि ले लेला इले

ध्यांना । सुनि मंडल मे घर कीया । जैसे रहे सिचांना [illegible] । उल

टि पवन कहां राषिये । कोई मरम बिचारे । साधि तीर पताल कूं

फिरि गगन हि मारे ॥१॥ कैसा नाद बजाई ले । धुनि निमसले

कैसा । कैसा फूटा पिंजरा । पंधुनि कहां निवासा ॥२॥ पिंजर

रजीव का दारहै । कोई मरम लषावे । आवन जिस घर जाई

री । उधै मुषि न आवे ॥३॥ सतगुर मिल्या तपाईया । ऐसी अकथ

कहांनी । कहे कबीर संसा गया । मिलि सारंगपाणी ॥४॥ है

कोई संत सहज सुष उपजै । जाको जगपति देऊंखलाली । ए

कबूदन्तरि देह राम रस । ज्यूं तरिदेहू कलाली ॥ ॥ काया

कलीजीलोंहन्यकरिहे।।गुरूसबदगुडकीन्हां।।कांमक्रोध
मोहमदलहुरा।कोटिकोटिकसदीन्हां।। पवनचत्तरदसग्रा
दीपुरई।ब्रह्मग्रगनिपूजारी।मूंदेमंदरसहजधुनिउपनी।सु
मानपीतनहारी।।१।।नोफरजैरैस्यामीरमनिकैसे।।तिहिमदिरा
वलछोकी।कहकबीरयकांवासविकटग्राति।।ज्ञांनगुरू
लेबोकां।।२।।ग्रकथकहांनीप्रेमकी।कछूकहीनंजाई।गू
गेकेरीसरकरा।बैठेमुसकाई।टफनामिबिनांग्रस्वीनबिन।त
स्वरएकनाई।।ग्रनंतफलपकामिया।गुरिदीयावताई।।मन
थिरमिविचारिया।रांमहिल्योलाई।भूठीग्रनभैविसतरी।स
वथोथीबाई।।कहैकबीरसकतिकुनांही।गुरभायासहाई।
यांतांगजांणामिटिगई।मनमनहीसमाई।।२।।संतसोग्रन
नैनरूगहिये।कलाग्रतीतग्रादिनिधिनिरमल।ताकोंसदा
विचारतरहिये।।३।।सोकाजीजाकोंकालनव्यापै।सोपंडितप
दबूफै।सोब्रह्मांजोब्रह्मविचारै।सोजोगीजगसूफै।।।उदग्र
स्तसूरनहीससिहर।ताकोंनाव्नजनकरिलीजै।कायाथेक
छूरेविचारै।तासगुरुमनधीजै।।४।।जासोनैरनकाथेसूफै
उतिपतिपरनग्रावै।निराकारग्रघडमंडलमैं।मांचोततस
गावै।।५।।लोचनग्रछतसबैग्रंधियारा।बिनलोचनजगसू
फै।पडदाषोलिमिलेहरिताकों।।जोयाग्रस्थदिवूफै।।५।।
ग्रादिग्रनंतउनपपुनिरमल।दिष्टिनदेष्याजाछैं।ज्वालाउठीग्र
कासप्रजल्यो।सीतलग्रधिकसमाई।६।एकनिगंधवासनां
प्रगट।ग्रगोचरहैग्रकेला।प्रांनपुरससंकायाथैविछुरे।रापि
लेकगुरचेला।।७।।भागांग्रमनयामनग्रस्थिर।निद्रानेहन
सोने।।घकीजोतिजगतंप्रकाश।।
कूंनीलिगिसभिकरिरोपै।।
२फलिलदरिप्रगटी।

गोव्यंदपेट्याषफिर। नैराकौंनगुरूकौंनचेला। आपनैरूपैकौंआप
टिगौंनै। आपैरहैअकेला। टेक। बांझका पूतबापबिनजाया।
बिनपांवतरवरचढिआया। असबिनपाषरगजबिनगुढिया। बिनषांडै
संग्रामजुडिया॥१॥ बीजबिनअंकुरपेडबिनतरवर बिनसाषातर
वरफलिया। रूपबिननारीपुहपबिनपरमल। बिननीरैसरवरभ
रिया॥२॥ देवबिनदेहुरापत्रबिनपूजा। बिनपंषांभवरांबिलंबि
या। सूराहोइसपरमपदपावै। कीटपतंगहोइसबजरिया॥३॥ दी
पकबिनजोतिजोतिबिनदीपक। हदबिनाअनहदसबदवागा।
चेतनांहोइसुचेतिलीजे। कबीरहरिकैअंगिलागा॥४॥ पि
डतहोइसुपदहिबिचारै। मूरिषनांहिनबूझै। बिनहंथनिपां
वनबिनकांनि। बिनलोचनजगसूझै॥५॥ बिनमुषिषाइचर
नबिनचालै। बिनजिभ्यागुणगावै। आछैरहैठौरनहीछांडै
दहदिसिहीफिरिआवै॥६॥ बिनहीतालांतालबजावै। बिनमं
दिरपटसाला। बिनहीसबदअनाहदबाजै। तहांनिरतत हैं
गोपाला॥७॥ बिनांलोचनबिनांकंचुकी। बिनहीसंगसंगहै
ई। दासकबीरऔसरभलदेष्या। जांनैगाजनकोई॥८॥ दे
कोईजगतापुरजांनी। उलटिबेदबूझै। पांनीमैंअगनिजरै। अं
धरेकूंसूझै॥ ९ ॥ एकनिरांइरिषांइपंचभुवंगा। गाइनाहर
षायोकाटिकाटिअंगा॥१०॥ बकरीबिघारषायौ हरिनषायौ
चीता। कागलगरफांधिया। बटेरैबाजजीता॥११॥ मूसमंजार
षायौ। स्यालषायौस्वांनां। आदिकूंआदेसकरत। कहैकबी
रग्यांनां॥१२॥५॥ ऐसाअदबुदमेरगुरैकथ्या। मैरह्याउमेषै। मूसा
हस्तीसोंलडै। कोईबिरलापेषै॥टेक॥ मूसापैठावांबिमै। लारसां
पनिधाई। उलटिमूसैसापणिगिली। यहअचिरजभाई॥१॥ चीं
टीपरबतऊषण्यां। लेराख्याचौडै॥ मुरगामिनकींसोंलडै। जैल
पांणीदौडै॥२॥ सुरहीचूषैबछतलि। बछादूधउतारै। ऐसानव

सगुणीनिया। मारहूत हिमौरें।४। मीलतु क्यावनवीझैमे स।
सासिरमौरे। कहै कबीर नागुंरकरौ जो पद हि विचारै॥६॥
अवधू जागत नींदन कीजै॥ काल न षाइ कलप नहीं ब्यापे दे
ही जुरा न छीजै। टेक उलटी गंग समद्र हि सोषै। ससिहर सूर गि
रासे। नौ ग्रह मारि रोगिया बैठा। जल मै बिंब प्रकासै।१। डाल
गह्या थै मूल न सूझै। मूल गह्या फल पावा। बंवई उलटि स्रप कौं ला
गी। धरणि महारस पाया॥ बठि गुफा मै सब जग देष्या। बाहरि कछू
न सूझै। उलटे धनकि पारधी मार्यौ। यहु अचरिज कोई बूझै
२। औंधा घड़ा न जल मैं डूबै। सूधा सू भरि भरिया। जाकूं यहु जग
घिण करि चाले। ता परिसादि निसतरिया।३। अंबर बरसै धरती
भीजै यहु जांणे सब कोई। धरती बरसै अंबर भीजै। बूझै बिरला
कोई।४। गांवण हारा कदे न गावै। अणबोल्या नित गावै॥ नट
वर पेषि पेषिनां पेषै। अनहद बेन बजावै।५। कहणी रहणी नि
जतत जांणै। यहु सब अकथ कहांणी। धरती उलटि अकासहि ग्र
सै॥ यहु पुरिसा की बांणी।६। बाझ पियाले अंमृत सोष्या। नद
नर नीर भराष्या। कहै कबीर ते बिरला जोगी॥ धरणि महारस
चाष्या।७।१४। राम गुण न्यारौ न्यारौ न्यारौ। अबधू गोरष नांथ जांणी
तिसरूप न छाया जाकै। बिरध करं बिन पांणी। टेक बेल
डुयां थैं अपणी पतंती। गगन पतंती सैली। सहज बेलि जल फू
लनि लागी। डाली कूल न मेली।१। मन कुंजर जाइ बाड़ी बिलंब्या
सतगुर बाहि बिली। पंच सषी मिलि पवन पयंप्या। बाड़ी पांणी
ली।२। काटत बेली कूपले मेली। सींचंतड़ां कुमलांनी। क
हे कबीर ते बिरला जोगी। सहज निरंतर जांणी।३।१५। राम र
स्स्र अंबगति वि। तिन जांने। क[illegible] : ग।
[illegible]मिगामन नि। पुहमि। प्रथम निपनु।
[illegible]

थमे प्रान कि पिंड प्रथमे ब्रह्म प्रथमे रवि कि न किरैन ।प्रथमे
रष किनारि प्रथमि ब्रह्म । प्रथमे बीज कि षेत ॥२॥ प्रथमि
वृस कै रैणि प्रथमि ब्रह्म । प्रथमि पाप कि पुंनि ॥ कहै कबी
जहां बसऊ निरंजन ॥ तहां कछू अहै सुनि ॥३॥१२॥ अवधु मे
जोगी गुर मेरा । जो या पद का करै नबेरा ॥टेक॥ तरवर एक
पेड बिन ठाढा । बिन फूलां फल लागा । साषा पत्र कछू
नही वाकै ॥ अष्ट गगन मुष बागा ॥१॥ पैर बिन निरति क
रां बिन बाजै ॥ जिभ्या हीणा गावै । गावणहारे कै रूप न रे
षा ॥ सतगुर होइ लषावै ॥२॥ पंषी का षोज मीन का मारग
कहै कबीर बिचारी ॥ अपरंमपार पार परसोतम ॥ वा मू
रति की बलिहारी ॥३॥१३॥ अब मै जांनि बौरे केवल राइ की
कहांणी ॥ मंझै जोति राम प्रकासै गुर गमि बांणी ॥टेक॥ तरव
र एक अनंत मूरति सुरतां लेहु पिछांणी ॥ साषा पेड फूल फल
नांही ताकी अमृत बांणी ॥१॥ पुहुप बास भवरा एक राता ॥
बारा लेउरि धरिया । सोलह मंझै पवन झकोलै आकास फ
ल फलिया ॥२॥ सहज समाधि बिषय जसींच्या । धरती ज
ल हर सोष्या । कहै कबीर तास मैं चेला ॥ जिनि यह तरव
र ॥३॥१४॥ राजा राम कवन रंगे ॥ जैसे परमल पुहुप संगे ॥टे
पंच तत को तन बांध्यौ । चौरासी लष जीव समांन ॥१॥ बेगर
बेगर राषिले भावै । तापै कोन आप कौं गावै ॥२॥ जैसे पाव
क मन बसेष । घट अनमान काया प्रवेस ॥३॥ कहां चार
कहां न जाइ ॥ जल जीव कै जल नही बिगराइ ॥४॥
आतम वरतै जे ॥ छल बल कौं सब चीन्ह बसे ॥५॥ ची
चीन्हि त चीन्हि लैसे ॥ तिहि पीछै पिय लइ काक
आपा प्रस बापक समांन ॥ अब हम पाया पद निरबांणा
कहै कबीर मनि भया संतोष ॥ मिले भगवंत

पदेस्या॥३॥१५॥अंतरगतित्रनित्रनिर्वांणी॥गगनमुषनसकरमकपी
वंतं सुगतिरसस्त्रिवजांणि॥टेक॥ त्रगुणत्रिविधितलपतनिमरातन
ततीततंमिलांणी॥१॥मोगभरमनोयेंनमये नारी॥ विधिविरचिपु
पिनांणी॥२॥वरनपवनअवरविधिपांवक॥ अकलअमरमेरेपाणी
॥दिससिमुनगरहिमदिसवघटि॥संचदसुनिथित्यमाही॥३॥संकटस
कतिमकलमुषपोष॥उदिधमथतसवहारे॥ कहैकबीरअगमपुर
भुरपटा॥प्रगटसुरातनजारे॥४॥१६॥ना॥धौहैकवलाधौहै॥तां
कापारपकोनलहै॥अबरनऐकअकलअविनांसा॥घटिघटिआ
परेहै॥टेक॥ तोलपमोलमापकछुनांही॥गिनती ग्यांननहोइ
नांसोनारीभांसोहलवा॥ ताकीपारषलेषेनकोई॥१॥ जांमेह
मसोंईहमहीमे॥नीरमिलेजलएकहवा॥यूंजांणेतोकोई
नमरिहै॥विनजांणेथेवकतमूवा॥३॥१७॥रामकहीरेप्रमरसपी
या॥पीवनहारनपोंकं॥ विधनांवचनपिछांणतनांही॥कहैं
कांकारिदिपांक॥ हरिहिरदैरेअनंतकतचाहै॥भूले
भ्रमदुनीकतबाहै॥टेक॥ जगप्रमोधतनराधाली॥करतेउदरउ
पाया॥आतमरांमनचीन्हैसंतो॥क्यूंरमिलैरांमराइ॥१॥लागैप्यास
नीरसोपीवे॥विनलागैनहीपावै॥पोजततमिलेअविनांसी॥वि
नपोजेनहीजीवै॥२॥कहैकबीरकठिनयहकरणी॥जैसीपांने
कीधारा॥उलटीचदीचालमिलैवहसाकूं॥सोंसतगुरहमारा
॥३॥१८॥रेमनवठिवितैनिनजासी॥हिरदैनरो[illegible]विनासी॥
टेक॥ कायामधेकोटितीरथ॥कायामधेकासी॥ कायामधे
वंलापती॥बैकुंठवासी॥१॥उलटिपवनषट[illegible]
अंमीतरवासी॥२॥गगनमंडलविसिमटे[illegible]
लागीकिवारा॥३॥ कहैकबीर[illegible]
सोनिरारा॥४॥१९॥ रांम[illegible]
सदअरमरपति॥नरमतलामर्येह[illegible]

तजैवक सकलसुषसुषकारी॥ अवतसुनिरखिससिचूमि क्रं
कलसुरिबपलनारी॥१॥ अंतरज्ञानहैांत अंतरभ्रम सि॥ बिनसासे
निहैसोई॥ चोरतमबदसंमगलसबघाट॥ बिदनबदेकोई॥२॥ पौ
तीपवनअवहिनतिपावक॥ तिनसंगिसदाबसेरा॥ कहैकबीरम
नमनकरिबेधा॥ बऊरिनकीयापेरा॥३॥२०॥ नरदेहीबऊरिनपाई
ये तापैहरिसिहरिसिहुनगा॥ टेक॥ जेमनवहीतजेविकारा।
तोकंतिरियमैपारा॥ जबमनकफक्कटलाई॥ तबआइमिलेराम
राई॥१॥ जपतंजामा॥ जपमेरा॥ यक्ति तावाकलूनकरना॥ जो निमरत
कोई तौबऊरिनघरनांहोई॥ गुरबचनांमेकिसमावै॥ तबरांमनां
मल्यौलावै॥ जबरांमनांमल्योलागा॥ तबभरमगयाजेनागा॥२॥ रि
सहरसूरमिलावा॥ तबअनहदबेनबजावा॥ जबअनहदबाजाबा
जे॥ तबसांईसांगिबिराजे॥३॥ होहसंतजनकेसंगी॥ मनराच्यिरंगहै
रिरंगी॥ धरोचरनकंवलबिसवासा॥ जनहसनिरेपदवासा॥४॥ य
जवाचाषेलनहोइ॥ जनघरनमषेलेकोई॥ जबघरतलषेलमचा
वा॥ तबगगनमफलमठछाया॥५॥ चितचंचलनिहचलकीजे
तबरांमरसाइनपीजे॥ जबरांमरसाईणपीया॥ तबकालमिट्या
जनजीया॥ यूंदासकबीरगावै॥ तापैमनकौमनसमझावै॥ जब
मनहीमनसमझाया॥ तबसतगुरमिलसचुपाया॥६॥२१॥ अवधुआ
निजरकैकाठ॥ पूछौपंडितजोगीसिन्यासी॥ सतगुरचीन्हे
बाट॥ टेक॥ आगनिमवनमैपवनकवनमे॥ सबदगगनकेमवनो
निराकारप्रकृतिअरिदि निरंजना॥ कतरवतेमवतेमवनो॥१॥ उति
पतिजोतिकवनअंधियारा॥ घनबादलकोबरिसा॥ कृपाजोज
धरनिअतिअधिके॥ पारब्रह्मनहीदृषा॥ मनांमेरेनगदेसके
भरणा॥ हरिनिनेरा॥ हाटसहाटसमुषदेश॥ आपेआपअकेला
॥२॥ जेबांध्यातेछुटमुकता॥ बांधनहाराबांध्या॥ जो
मुकताबांध्या॥ तिनपारब्रह्महरिलाधा॥३॥ जोजातारे

देंद्र प्रेते किनिराधा॥ अमृतरूपांना विषमेंनांनां॥ विषमेंअ मृतरूपंवाप्पा॥ ५ कहेकंबीरविचारिविचारी॥ तिलमेंमेरस मांनां॥ अनेकजनमकागुरगुरकरता॥ मनगुरतबनेटांसां॥ ८॥ २२
अवधूऔसा ज्ञांनविचारां॥ मेरेचंटेमुअधधरबहै॥ निराधारत्त चपारां॥ टेक॥ ऊघटचलेमुनगरिपहुंते॥ वाटचलेतेलूटे॥ पे कजेवडीसबलपटांनें॥ केबांधिके छूटे॥ १॥ मंदरमसिचक्र हिमजीरो॥ आइरिदेतेसूका॥ सरिमारेतेमदासुषारे॥ अनमा रेतयेदूपा॥ २॥ विनदेनेनकेसवजगदेषे॥ लोचनअछतअंधा॥ कहेकबीरकछूसमझिपरीहे॥ यहजगदेष्याधधा॥ ३॥ २३॥ ज गधंधारेजगाधंधा सबलोकनजांनेजगधंधा॥ लोतमांहेजवूड़ त्यरटांनी॥ बिनहीगांठिगयो फंधा॥ टेक॥ ऊबेटचिमंछवस्त रे॥ संसीबसेजलमांहीं॥ १॥ परबतउपरिलोकनृविमूवां॥ नीरमूवां म्रुकाई॥ २॥ जलेनीरतिनषड़सबकेरे॥ विमंदरलेसीचे॥ ऊपरिमु लफलतिननीतरि॥ जिनजांण्याजिननिके॥ कहेकबीरजांनदी जांने॥ अननानतअनारी॥ हारीवाटबउरीअजीत्या जांनतकी बलिहारी॥ ३॥ २४॥ अवधूबरसैंगेतबरिजाई॥ काहिजुतेरीबछरियाछी नी कहांचरांवेगाई॥ टेक॥ तालचुगेवनतीतरलवा॥ परबतच रेसोरांमछा॥ वनकोहिरनीकूंबेवियानी॥ ससाफिरैअकासा॥ १॥ क टमारिमैंचोरेलवा॥ हंसतीतरभवादेई॥ बादरकाडरिया वनसी लेरू॥ मंथिरानकिन्हकिषाई॥ २॥ आवकेबेरिचरासलकारहल त्रि बियाकलिफूलिपाई॥ मोरआंगणिदायदगोवल॥ कहेकबीरसम झाई॥ ३॥ २५॥ कहांकरौकैसे तिरौं॥ भौजलअतिभारी॥ तमसरनां गतिहौंसदा॥ रामिरामिमुरारी॥ टेक॥ घरतजिवनषंडजाईये॥ षौ नषाइकंदा॥ बिषविकारनछूटेई॥ असामनमंदा॥ १॥ विषविषिया कीवासनां॥ तजतजीननाई॥ अनवस ॰ २॥ फुनि फिरकरि ई॥ जीवअंगलतहीलागाई॥ क

तजैबंक सकलसुषसुषकारा॥ अव्रत स्रुतिरविससिश्र मिचमल
कलपुरिषपलनारी॥१॥ अंतरजोगनहोतअंतरभ्रमली॥ बिनसां
निहेसोई॥ चारनसबदसंमंगलसबघाट॥ बिंदलबदेकोई॥२॥ पा
णीपवनअवनिनतिपावक॥ तिनसंगिसदाबसेरा॥ कहैकबीरम
नमनकरिबेध्या॥ बहुरिनकायाफेरा॥३॥२०॥ नरदेहीबहुरिनपाई
ये ताथेहरिहरिसिमिरन॥ टेक॥ जेमनन्हीतजेबिकारा॥
तौक्यूंतिरियेभौपारा॥ जबमनकाफजकटलाई॥ तबआइमिलेराम
राई॥१॥ ज्यूंजांमणाज्यूंमरणा॥ पछितावाकछूनकरना॥ जोलिमरजे
कोई॥ तौबहुरिनमरनांहोई॥ गुरबचनांमेंकिसमावे॥ तबरांमंनां
मल्यौलावे॥ जबरांमनांमल्यौलागा॥ तबभरमगयाभौभागा॥२॥ सि
सहरसूरमिलावा॥ तबअनहदबेनबजावा॥ जबअनहदबाजाबा
जै॥ तबसांईसंगिबिराजै॥३॥ होइसंतजनकेसंगी॥ मनराच्यौरअह
रिंगी॥ धरौचरनकवलबिसवासा॥ ज्यूंहोइनिरभैपदवासा॥ य
जवाचाषेलनहोइ॥ जनषरतरषेलेकोई॥ जबषरतरषेलमचा
वा॥ तबगगनमंडलमठछावा॥४॥ चितचंचलनिहचलकीजे
तबरांमरसाइनपीजे॥ जबरांमरसाईणपीया॥ तबकालमिट्या
जनजीया॥ यूंदासकबीरागावे॥ ताथेमनकौमनसमझावे॥ नब
मनहीसमझाया॥ तबसतगुरमिल्यासचुपाया॥५॥२१॥ अवधूआगि
निजरकेकाग॥ पूछौपंडितजोगीसिन्यासी॥ सतगुरचीन्हौ
बाट॥ टेक॥ अगनिसबदनमेंपवनकवनमें॥ सबदगगनकेपवना॥
निराकारप्रभुआदिनिरंजन॥ कतरवैतेभ्वैतेभवनां॥१॥ उति
पतिजोतिकवनअविचारा॥ घनबादलकौबरिषा॥ प्राणपोसत
धरतिअतिअधिके॥ पारब्रह्मनिहदिष्टा॥ मरनांमरैनादेसके
मरणाहरिनैनेरा॥ नादसबादसमुषदेस॥ आपेआपअकेला
॥२॥ जेबांध्यातेछूटमुकता॥ बांधनहाराबांध्या॥ जो
मुकताबांध्या॥ तिनपारब्रह्महरिलाध्या॥३॥ जेजानतहै

रहैघनेकिलिराष्या॥अमृतस्मांना विषमेंनांना॥बिषमें अ
मृतसूंचांष्या।४ कहैकबीरविचारिविचारी। तिलमेंमेरस
मांनी॥अनेकजनमकागुरगुरकरता।सतगुरतबसेटांनो॥६॥२२
अवधूऐसाग्यांनविचारां।जैरेचढेसुअधधरवूडे॥निराधारस
यपारां॥टेक॥ऊबटचलेसुनगरिपहूंते॥बाटचलेतेलूटे॥ऐ
कजेवडीसबलपटांनें।केबांधेकेछूटे॥१॥मंदरपैसिचहू
दिसभीगे॥बाहरिरहेतेसूका॥सरिमारेतेसदासुषारे॥अनमा
रेतयेदूषा॥२॥बिनैनेननकेसबजगदेषै॥लोचनअछतअंधा
कहैकबीरकछूसमझिपरीहे॥यहजगदेष्याधंधा॥३॥२३॥ज
गधंधारेजगाधंधा सबलोकनजांनेजगधंधा॥लोलमोहजेवूड
लपटांनां॥बिनहीगांठिगह्योफंधा॥टेक॥ऊंचेटीबेमंछबसत
है॥ससीबेसेजलमांही॥१॥परबततउपरिलोकमबिमूवा॥नीरमूवा
मूकाही॥२॥जलेनीरतिनषड सबकरै॥बेसंदरलेसीचै॥ऊपरिमु
लिफललतिनसीतरि॥जिनजांन्यातिननीके॥॥कहैकबीरजांनहि
जांने॥अननानतअमनारी॥हारीबाटबटाऊजीत्या जांनतकी
बलिहारी॥३॥२४॥अवधूबठलंमैतैधरिजाऊं॥कालहिजुवेरीबछरियाछी
नी॥कहाचरावेगाऊ॥टेक॥तालचुगेबनतीतरलवा॥परबतच
रैसोरांमछा॥बनकोहिरनीकूंवेबियानी॥ससाफिरअकासा॥१॥ऊं
टमारिमेचारैलवा॥हंसतीतरमचूदेई॥दांवूरकाउडिया बनसी
लेहु॥सीयूरासूंकिनूकिषाई॥२॥आवकेचोरैचरहलकरहल बि
बियाफूलिफूलिषाई॥मोरेआगनिदाधदखल॥कहैकबीरसम
झाई॥३॥२५॥कहाकरौकैसेतिरौ॥भौजलअतिभारी॥तमसरनां
गतिकेसव॥राषिराषिमुरारी॥टेक॥घरतजिबनषंडजाईये घ
नषाइकंदा॥बिषबिकारनछूटई॥असामनांदा॥१॥
कीबासधं॥तहतजीनजाइ

रसगासोपरहस्या ॥ त्रिडुवानापंगारे ॥ आमित कतनदेषिहूं ॥ दिननां कहुं मा
रे ॥१॥ साचौसगाईरांमकी ॥ सुनिआत्मभेरे नरकिमडे नरनापुडे गाहकंज
मेतेरे ॥२॥ हूंसवड्या चित चालिया ॥ सगपन कछु नांही माटी मैं माटी मलिक
रि ॥ पीछै अनबांही ॥३॥ कहै कबीर जग अंधला ॥ कोई जन सारा ॥ जिन्हि हिसिरंमन
जांणियां ॥ तिनकी यापसारा ॥४॥ ३८ ॥ माधौ मैं असा अपराधी ॥ तेरी लगनि हित
नहीं साधी ॥ टेक ॥ कारनि कवन आई जग जनम्यां ॥ जनम कवन सचु पाया ॥ भौ
जल तिरण चरण चिंतामणि ॥ ता चित घडी न लाई ॥१॥ परनिंद्या परधन परदा
रा ॥ पर अपवाद सूरा ॥ ताथै आवागवन होत फुनि फुनि ॥ तापरसंग ति चुरा ॥२॥ का
म क्रोध माया मद मंछर ॥ ए संतति हम माही ॥ दया धरम ग्यांन गुर सेवा ॥ ये प्रभू
सुपिनै नाही ॥३॥ तुम कृपाल दयाल दमोदर ॥ भगति बछल भौ हारी ॥ कहै क
बीर धीर मति राषौ ॥ सासति करौ हंमारी ॥४॥ ३९ ॥ रांम राइ कासनि करौ पु
कारा ॥ असे तुम साहिब जांननिहारा ॥ टेक ॥ इंद्री सबल निबल मैं माधौ ॥ ब
हुत करै बरयाई ॥ लै धरि जांहि तहां दुष पइये ॥ बुधिबल कछु न बसाई ॥
१ ॥ मैं बपुरौ का अलप मूढमति ॥ कहा भयौ जे लूटे ॥ मुनि जन सती सिध अरु
साधिक ॥ तेऊ न आये छूटे ॥२॥ जोगी जती तपी संन्यासी ॥ अहनिस षोजै का
या ॥ मैं मेरी करि बहुत बिगूते ॥ बिषै बाघ जग षाया ॥३॥ एकत छांडि जाहि
घर घरनी ॥ तिन भी बहुत उपाया ॥ कहै कबीर कछु समझि न परई ॥ बिष
म तुम्हारी माया ॥४॥ ४० ॥ माधौ चलै बुनांवन माहा ॥ जग जीते जाइ जुलाहा ॥ टे
क ॥ नव गज दस गज गज उगनींसा ॥ पुरिया एक तनाई ॥ सात सूत दे गंड बहत
रि ॥ पाट लगी अधिकाई ॥१॥ तुलह न तोली गज न मापी ॥ पहजन सेर अढाई ॥ अ
ढाई मै पाव घटै ॥ तौ करकस करै बजहाई ॥२॥ दिन की बैठि षसम सूं कीजै ॥ अ
रज लगी तहां ही ॥ भागी पुरिया घर ही छाडी ॥ चले जुलाह रिसाई ॥ छोछी न
ली कांमि नही आवै ॥ लपटि रही उरझाई ॥ छाडि पसारौ रांम कहि बौरे ॥ कहै
कबीर समझाई ॥३॥ ४१ ॥ बाजै जंत्र बजावै गुनी ॥ रांम नांम बिन भूली दुनी ॥
टेक ॥ रजगुन सतगुन तमगुन तीन ॥ पंच तत ले साज्या बीन ॥१॥ तीन लोक पूरा
पेषनां ॥ नाच नचावै एकै जनां ॥२॥ कहै कबीर संसा करि दूरि ॥ त्रिभुवन

न॰ पारह्योजरपरे।२।४०।जंत्रीजंत्र अनूपम बाजै।ताका सबदगगन मैं
गाजै।टे॰ सुर की नालि सुरति का तूंबा।सतगुर साज बनाया।सुर नर गण
गंध्रप ब्रह्मादिक।गुर बिन तिन हूं न पाया।१।जिभ्या तांति नासिका क
रही।माया का मैण लगाया।गमा बतीस मोरणां पांचौ।नीका साज बना
या।२।जंत्री जंत्र तजै नहीं बाजै।तब बाजै जब बावै।कहै कबीर सोई जन
साचा।जंत्री सौ प्रीति लगावै।३।४१।अवधू नाद बिंद गगन गाजै।सबद अ
नाहद बोलै।अंतरगति नहीं देषै नेडा।ढूंढत बन बन डोलै।टेक।सालि
ग्राम तजूं सिव पूजूं।सिर ब्रह्मा का काटूं।सायर फोडि नीर मुकलाऊं।कू
वा सिला दे पाटूं।१।चंद सूर दोऊ तूंबा करिहूं।चित चेतन की डांडी।सुष
मन तंती बाजण लागी।इहि बिधि त्रिष्णां षांडी।।परम तत्त आधारी मेरे
सिव नगरी घर मेरा।काल ह्रिषै मौ मीच बिहूं नौं।बहुरि न करिहूं फेरा।।
२।जपूं न जाप हरूं नहीं गूगल।पुस्तक लेन पढाऊं।कहै कबीर परम प
द पाया।नहीं आऊं नहीं जाऊं।३।४२।बाबा पेडि छाडि सब डाली लागे
मूढे जंत्र अभागे।सो इसो इस बराणी बिहाणी।मोर न येते बजागे।टेक
देवल जांउ तो देषी दिषूं।तीरथ जांउ त पाणी।वोछी बुधि अगोचर बाणी
नहीं परम गति जांणी।१।साध पुकारैं समझत नांहीं।आन जन्म के सूते
बांधे ज्यूं अरहट की टींडरियां।आवत जात बिगूते।२।गुर बिन इहि जग
कौंन भरोसा।का के संगि ह्वै रहियै।गनिका के घरि बेटा जाया।पिता
नांव किस का कहियै।३।कहै कबीर यहु चित्र बिरोध्यां।बूझौ अंम्रित बां
णी।४।४३।भूली मालनी है गोब्यंद जागतौ जगदेव।तूं करै किस की से
वा।टेक।भूली मालनि पाती तोडै।पाती पाती जीव।जा मूरति कौं पाती
तोडै।सो मूरति निरजीव।१।टांचणहारै टांचिया।दे छाती ऊपरि पाव।
जे मूरति सकल है।तौ घडणहारे कौं षाव।२।लाडू लावण लापसी पू
जा चढै अपार।पूजि पूजारा ले गया।
सा पुहप बिसन।मूल फल महादेव।।
कौसैव।

सकबीरा जाकेरामअधारा ॥४॥६९॥ मनमनसमकिसतथसरनांतो
जाकी आदिअंतिमधिकोईनपावे ॥ कोटिकारिजसरदेहुनसबजोरे
नेकजोनावपतिबूतआवे ॥ टेक ॥ आकारकोवाटआकारनहीबर
सिवबिरंचिअरुविसनताई ॥ जासकासेवगतासकोपाइहै ॥ इष्टकोछा
ड़िआगैनजाही ॥१॥ गुणमइमूरतिसेविसबसेषमिलि ॥ निरगुण
निजरूपविश्रामनांही ॥२॥ अनेकजुगबंदगीबिबिधप्रकारकी ॥ अं
तिगुणकागुणहीसमाही ॥३॥ पांचततनतीनगुणजुगतिकरिसानिया
अष्टबिनहोतनहींक्रमकाया ॥ पापपुनिबीजअंकूरजामेमरै ॥ उपजि
बिनसेजेतबमाया ॥४॥ क्रतमकरताकहै परमपदकोलहै ॥ भूलि
भरमपडुआलोकसारो ॥ कहैकबीररांमरमताभजे ॥ कोईएकजन
गएउतरिपारा ॥५॥६॥ रामराइतेरीगतिजाइनजाणी ॥ जोजसकरैहै
सोतसफलहै ॥ राजारामनेआई ॥ टेक ॥ जैसीकहैकरैजोतैसी तोतिरत
नलागेबारा ॥ कहताकहिगया सुणतासुणिगया ॥ करणीकठिन
अपारा ॥१॥ सुरहीतिणचरिअंम्रतसरवे ॥ लेरभुवंगहिपाइ ॥२॥ अनेक
जतनकरिनिग्रहकीजै ॥ विषैविकारनजाई ॥३॥ संतकरैअसंतकीसंग
ति ॥ तासोंकहाबसाई ॥ कहैकबीरताकेभ्रमछूटे ॥ जेरहेरांमल्योला
ई ॥४॥७॥ इतिरागरामकलीसंपूरण ॥ सबद ॥१९॥ [illegible]
[illegible] ॥ ऐसीरेअवधूकीबाणी ॥ ऊपरिकूवटातलिभरिपांणी ॥ टेक ॥ ज
बलागगनजोतिनहीपलटै ॥ अबिनासीसूंचितनहीचिहुटै ॥ जबलागभ
वरगुफानहीजानै ॥ तौमेरामनकैसैमानै ॥१॥ जबलगत्रिकुटीसंधिन
जानै ॥ ससिहरकैघरिसूरनआनै ॥ जबलगनाभिकवलनहीसोधै ॥ तौ
हीरैहीराकैसैबेधै ॥२॥ सोलहकलासंपूरणछाजा ॥ अनहदकैघरि
बाजैबाजा ॥ सुषमनिकैघरिभयाअनंदा ॥ उलटिकवलभेटेगोब्यंद
नां मनपवनजबपरचानइया ॥ झूलेराषीरससमइयो ॥ कहैकबीरघ
टिलहबिचारी ॥ औघटघाटसींचिलेक्यारी ॥३॥१॥ मनकारेखका
नहीतजभा ॥ सहजरूपमनषेलणलागा ॥ टेक ॥ मैतेतैमेएकेनांही

रत्नसमकलघटमांहि॥ १ ऊंचवैठनिमनउनमनिजानं तबरू
हिंजेहांनां॥ २ तनमनमनतेएकसमांनां॥ कूनअनत्तमांहै
गांनां॥ ३॥ आत्मलीनअषंमतरांमा॥ कहैकवीरहरिमाहिसमानां॥ ४
॥ आत्मांआनंदीजोगी॥ पीवैमाहारसअंमृतनेभोगी॥ टेक॥ ब्रह्मअग
निकायापरजारी॥ अजपाजापउनमनीतारी॥ १॥ त्रिकुटीकोटमेंआस
णमांडै सहजसमाधिविषैसवछांडै॥ २॥ त्रिवेणीबिभूतिकरैमनमंजन
जनकबीरप्रभुआदिनिरंजन॥ ३॥ २॥ याजोगियाकीजुगतिजुबूझै
ताकोंतीनूंत्रिभुवनसूझै॥ टेक॥ परगटकथागुपतअधारी॥ तामैमूरति
जीवनप्यारी॥ १॥ हैप्रभुनेरषोजेहूरि॥ ग्यानगुफामेसींगीपूरि॥ २॥ अमर
बेलिजोछिनछिनिपीवै॥ कहैकबीरसोजुगिजुगिजीवै॥ ३॥ धाअवधूसो
जोगविचारी॥ जंबकरिनैसंसारी॥ टेक॥ चांनसोजुधितबिनचितै
वै बिनननसमनहोइ॥ अपाजैपसुनिअलिअंतरिपक्रतउनसोई॥ १॥ क
[illegible]
[illegible]
नगमिसारचिसाविमेले॥ टेक॥ बिनतरवापवनेषदासहजमूलबाधा॥ थांन
धनकजोगकरमपांनबोनसाधा॥ १॥ षटचक्रकवलबेधा॥ जारिउजारिकीन्हो
कांमक्रोधलोभमोहहाकिस्याबनदीन्हो॥ गगनमंडलरोकिबारा तहांदिवसन
राता॥ कहैकबीरछाडिचलाबिछूरेसीपा॥ ५॥ धासाधनकचंदहरिनतारै॥
अनभैव्हैअरूअरथबिचारै॥ टेक॥ बांणीसुरंगसोधिकरिआणों आणोनौरंग
धागा॥ चंदसूरएकंतरकीन्हां सीवतबकदिनलागा॥ १॥ पंचपदारथछोडिसमा
नां॥ हरिमोतजडिया॥ कोडिवरसलौंकचूंसीया॥ सुरनरधंधैपडिया॥ २॥ निस
बासुरिजेसोवैनांहा॥ तानरकालनषाइ॥ कहैकबीरगुरप्रसादैं सहजैरह्यासमा
[illegible]
[illegible]
रूमैरांम॥ हरिमैछाडिबिषैरमिमातां॥ २
नामिहरिसागिंजोरा॥ ३॥

सबै सुरि मन रहै न दासा । तौ भी चात्रग नांर बिवासा ॥२॥ कहै हैं कबीर क्र
मिआन्तर तांई । हम कौ बिसिमि लैं रांम राई ॥२॥१९॥ मैं सबसुलि पाया गुन
हंनै आई । सांई संगी साधन हीं पूगी । गयौ जोबन सुपिनां की नांई ॥ टे०॥
पंच जनां मिलि मंडप छायौ । तीन जनां मिलि लगन लिखाई । संषीस
हेली मंगल गावैं दुख सुष माथै हलद चढाई ॥१॥ नांनां रंगैं भांवरि फेरी
गांठि जोरि बांवैं पति तांई । पूरि सुहाग भयौ बिन दूलह चौक कै रंग
मधस्यां सोंपे घाई । अपनौं पुरिष मुष कबहूं न देष्यौ । सती होत समझी
समझाई । कहै कबीर मैं सर रचि मरिहूं तिरूं कंत ले तूर बजाई ॥२
॥२०॥ हरि सुष और सबै दुषमाई । काहू हरि कहू कह्यान जाई ॥ टेक॥
सब डाल फूलै फूले । मधुकर देषि कवल भूले ॥१॥ जैसे कंचन
लिके फल फीके । बाषत जहर न जर के नीके ॥ कहै कबीर हर जा कूं सर
नां जोवन कूं वसा चे हे मरना ॥२॥२१॥ मन को मैलो बाहरि उजलो किसौरे
षांडा की धार जन कौं धरम इसौ रे ॥ टेक ॥ हिरदा को बिलाव नैन बग ध्यांनी ।
ऐसी भगति न होइ रे प्रांनी ॥१॥ कपट की भगति करै जिन कोइ । अंति की ब
रब फूंकतउ पछै होइ ॥२॥ छाडि कपट भजौ रांम राई । कहै कबीर तिहूं लोक
बड़ाई ॥३॥२२॥ चोवो बिनजब्यौ पार करीऔ । आयेनै दिसावरि रे राम न
पिछाणो हे लीजे ॥टेक॥ जब लग देषौ हाट पसारा । ढिगौ ढिगौ बणियारे क
रिले बणिज सवारा रे ॥१॥ ढिगे होड भलाटल दीनां । औघट घाट रे च
लनां हूं रिपयानां रे ॥२॥ परां न षोटा नांप रिषानां । लाहा कार ननि रे स
बमूल हिरांनां रे ॥३॥ सकल लगु नि मैं लोन पियारा । मूल जुरापै रे सो
ई बनिजार ॥४॥ देस न लोप मैं लोग बिरांणां । जन है चाहि नरे पू
सा धसयां नां रे ॥५॥ सा दूर तीरा वार न पारा । कहै दिस मका हूं रे क बीरा
बणिजारा रे ॥६॥२३॥ जो मैं ग्यान बिचार न पाया । तो मैं यूं ही जनम
गुमाया ॥टेक॥ यहु संसार हाट करि जांनौं । सबको बणिजन आया ।
चेति सकै तौ चेतौ रे भाई । मूरिष मूल गंवाया ॥१॥ थाकै नैन बै
न भी थाके । थाकी सुंदर काया । जांमण मरण ए द्वै थाके नैक

नधरकीमाया॥२ चितिचेतिमेरेमन चंचल॥जबलगघटमेसासा॥
भगतिजोवंतीभावनजहूहरिकेचरणनिवास॥३॥जिजनकांनि
अपजगजीवनतिनकाग्यानननोसी॥कहैकबीरतेकबहूनहारे॥
जेजांनिकारपासी॥४॥२४॥प्रांनीकाहेकेलोभलागी रतनजनमषोयो
बहुरिहीराहाथिनआवैरामबिनारोयो॥१॥जिनिबूंदथैंजलप्यंड
बांधा अगनिकुंडरहाया॥२॥एकपलजीवनेंकीआसनहीजमरि
नहीरसासा॥बाजीगरसंसारकबीरा॥जांनिढारौपासा॥३॥२५॥जो
पूरेदिनहीदिनदेहा॥करिलैबौरीरांमसनेहा॥टेक॥बालापनगयोजो
बनजासी॥जुराम्रणभौसंकटआसी॥१॥पलटेकेसनयनजलछा
या॥मुरिषचेतिबुढापोआया॥२॥रांमकहतलज्याक्यूंकीजै॥पलप
लआवैघटतनछीजै॥३॥लज्याकहैहूंजनकीदासी॥एकहाथिमु
गधरदूजेहाथिपासी॥कहैकबीरतिन्हूसबहास्या॥रांमनांमजिन
हूनबिसास्या॥४॥२६॥मेरीमेरीकरतांजनमगायो॥जनमगयोपंगि
हरिनकह्यो॥टेक॥बारहबरसबालापनषोयो॥बीसबरसकछूतपन
कीयो॥तीसबरसकछूरांमनसुमस्यो॥फिरिपछितानोबिरधभयो
॥१॥सूकेसरवरपालिबंधावे॥लुनेषेतहठिबाडिकरे॥आयोचोरतुरंग
मुसिलेगायो॥मोरीरायतमूगधफिरै॥२॥सीसचरनकरकंपनलागे॥
नेननीरअसरालबहे॥जिभ्याबचनसुधनहीआवै॥तबसुक्रितकीब
तकहै॥३॥कहैकबीरसुनौरेसंतो॥धनसंच्याकछूसंगनचल्यौ॥आ
इतलबरोपालराइकी॥मेडीमंदरछाडिचल्यौ॥४॥२७॥जाहिंजंतीनां
बूनलीया॥फिरिपछितावोरेजीया॥टेक॥धौकरतवरनकरषांठ
दैहघटीतनछीनां॥बिषेबिकारबहुतरूचिमानी॥मायामोहचित
दीन्हारे॥जागितागिनदकाहैसोवो॥सोइसोइकबतमारे॥जबघट
भीतरचोरपैठेगे॥तौआंचलिकिसकेलागेगा॥कहैकबीरसुनौरे
संतो॥करिल्योजेकछुकरणां॥चौरासीलषजोनिफिरोगे॥बिनां
रांमकेसरणांरे॥३॥२८॥मायामोहिमोहितकीन्हा॥ताथैमेरोग्या

न ध्रंनद रिलीन ॥ टेक ॥ अगाजी क्रन अैसा सुपिनै जैसा ॥ जीवन सुपिनस
मांनै ॥ साच करि नरगां विबांध्यौ ॥ छांडि परमनिधान ॥ १ ॥ नैननेह पतंग
जू पलैसे ॥ पसुन पैषै अगि ॥ काल पासि जु मुगध बांध्यौ ॥ कनक कामि
नी लागि ॥ २ ॥ करि बिचार बिकार परिहरि ॥ तिरण तारण सोई ॥ क
हे कबीर रांम नाम भजि ॥ दुतिया दिन कोई ॥ ३ ॥ २९ ॥ अैसा ते रांम्ह गा
मीठा लागै ॥ नाथै सांचे सो मन लागा ॥ टेक ॥ रूरे के घरि रूवा आया ॥
रूवा पाणि पकाया ॥ रूरी सनक रूगा बाहा ॥ रूवे रूगा षाया ॥ १ ॥ रू
वा ऊठा रूवा बैठा ॥ रूरी सब सगाई ॥ रूवा के घरि रूगा राता
सांच कोन पतिजाई ॥ २ ॥ कहै कबीर अलहे का पुगड़ा ॥ सांचे सो मन ला
वो ॥ रूरे केरी संगति त्यागो ॥ मन बंछत फल पावो ॥ ३ ॥ ३० ॥ कोंण कौ
ण गया रांम कोंण कौ जासी ॥ पड़सी काया घट माटी था सी ॥ टेक ॥ इंद्रस
रीषे गए नर कोडी ॥ पांचो पांडव सरीषे जोडी ॥ १ ॥ ध्रू प्रहिलाद ब्रंनदी रह
सी तारा ॥ चंद सूर ता आदसी बारा ॥ कहै कबीर जग देषि संसारा ॥ पड़
सी घर रहसी निराकारा ॥ २ ॥ ३१ ॥ तोपै सउ न मारा उरणां ॥ पंडित मेरो नंदे
या करनां ॥ टेक ॥ जो तुम्ह पंडित पढि गुनि जांनो ॥ विद्या ब्याकरना ॥ तंत
मंत सब औषदि जाणौ ॥ अंति तऊ मरणां ॥ १ ॥ राज पाट सिंघासन आस
न बहु सुंदरि रमणां ॥ चंदन चीर कपूर बिराजत ॥ अंति तौ मरणां ॥
॥ २ ॥ जोगी जती तपी सिन्यासी ॥ बहु तीरथ भ्रमणां ॥ लुंचित मुंडित
मूनि जटाधर ॥ अंति तऊ मरणां ॥ ४ ॥ सोचि बिचारि सबै जग देष्या ॥
कहूं न ऊबरणां ॥ कहै कबीर सरणाई आयो ॥ मेटि जनम मरणां
॥ ४ ॥ ३२ ॥ पांडेन करिसि बाद बिबादं ॥ या देही बिन सबद न स्वादं ॥ टेक ॥
अंड ब्रह्मंड षंड भी माटी ॥ माटी नौ निधि काया ॥ माटी षोजत सत गु
र पाया ॥ तिन कछु अलष लषाया ॥ १ ॥ जीवत माटी मुवां भी माटी ॥ देषो
ग्यांन बिचारी ॥ अंति काल माटी मै बासा ॥ लेटै पांव पसारी ॥ २ ॥ मा
टी का चित्र पवन का पंथा ॥ ब्यंद संजोगि उपाया ॥ भांन घडै संवार
सोई ॥ यह गोबिंद की माया ॥ ३ ॥ माटी का मंदर ग्यांन का दीपक ॥ प

वनबा तिउ जियारा। ति हिउ जियार सब जोमा सुके कहा रयपान विचारा
॥३३॥ चिंतन देखो रेजग धंधा। मनां सकामर मन जांनै। मायाके
रति अधरी टेक। जनमत हीरक हाले आयो। मरत कहालेगा सी॥
जैसे तरवर खत पेथे रू। दास चारिके बासी॥१॥ आपाथापि अवर न
हीजां ण्यो। जनमत ही जड़ काडू कांटी हरिकी नग मि बिनांय ऊदे
ही। धन लौटैही फाटी॥२॥ कांम क्रोध सो हमद मं कुरे। अन्ध पवादन
मुगिरि। कहै कबीर साधकी संगति। राम नांम गुण लिये॥३॥३४॥
अरेहम नांहिं नै दे ब्योपारी। जि धरही जग तिउ मारी॥ टेक॥ बसुधा छाफि
बणिज निज कीन्हों। लादो हरि को नां ऊ। रांम नांम की गुणि लदो कहे
रिकैरा डे जाऊ॥१॥ जिनि के अरे सो रांनी क हि ए तमो हजा हे मया सा
अबै अ हरा क रू बस नांही। कहै कबीर दासा॥२॥३५॥ मीयां तुम्हसों बो
ल्या बनि नही आवै। हम मसकीन खुदाई बंदे। तुम्हरा जस मंनि नावै॥ टेक॥
अलह अवलि दीन का साहिब। जोर नहीं फुरमाया। मुरिसिद पीर तुम्हारे
हैको। कहो कहां थे आया॥१॥ रोजा करे निवाज गुजारे। कलमे भिसत न ही
ई। सतरि काबा इक दिल भीतरि जिकरि जांनै कोई॥२॥ मसका पिछांनि तरस क
रि जीय मैं। माल मनी करि फीकी॥ आपा जानि अवर कों जांनैं। तो है भिसत सरी
की॥३॥ मांटी एक भेष धरि नांनां। ता मैं ब्रह्म समानां। कहै कबीर भिस्त छिटका
ई। दोजग ही मन मांनां॥४॥३६॥ रिदिल षोजि दिलह र षोजि। नां पर परेसांनी मां
हि। महल माल आजी जैहै। को दस्तगीर मांहि॥ टेक॥ पारां मुरांदा काजियां॥ मु
लां अरदरवेस। कहां थे तुम्ह किनि कीया। अकलि है सब नेस॥१॥ कुरांनां क
तिबां। असु पढि पढि फिक रया न ही जाइ। टुक दम करारी जे करे। हाजिरां
सुर षुदाइ॥२॥ दरोगा बकि बकि हूंहि षुसिया। बे अकलि बकहि
पुंना हि। मचु साच षलक षालिक। मैं लसुरति मांहि॥३॥ अला पाक तूं नां पा
क कां। इह सरनां ही कोइ। कबीर करम करीम का। करणी करै जांणै सो
इ॥४॥३७॥ मालिक हरि के दरहाल।
...॥ ...कौ जर्द हरजगमजोल॥

समा। सुरदासमां हि मियार। हम जानी अस्मानषालिक
ला। काल। २। असमान म्याने लहंगदरिया। गुसल करदा बूदक
फिकर दद साल कजस्म। जहांसुत हा मुझौ दा। ३। हम चिकूद नि
षालक। ग। रक हम अस्म पेस।
नेस। ४। ३०। अलह राम जीके तेरे नेका। बंदे प्रेम हर करो मेरे सांई। ते
का लिबौरी हवे संपट के। काजल दे ही न्हवाये। जो रकरै मसकी न
संतो वे पुन हीर रह छिपाये। राजा करनि वाज गुजार। क्या हज कों बे
ये। १। बांसन अपारि सि करै चोबी सो। काजी मसूदं मंजाना।
मांस कहो कों षाली। एक हिमा हि समाना। २। जोरपुदा कमसी तिब
सतहे। ओरमुलि कर के मकेरा। तीरथ मूरति राम निवासा।
कं हूं नहेरा। ३। पूरब देस हरी का बासा। पछिम अलह मुकामा।
दलही षोजि दिल दिल भीतरि। इहां राम रहमाना। ४। जेती औरति
मरदां दीसे। ग्रक सब रूप तुम्हारा। कबीर पुंगरा अलह राम का
रि गुर पीर हमारा। ५। ३१। मैं बड मैं बड मैं बड मांटी
दसगांठी। टेक। मैषा बाके ओध कहांऊ। अपणी मारी गंदचला
ऊ। १। इहिं अहंकार षणे घर धाले। नाचत कूदत जम पुरबाले।
रक रता का बाजी। एक पलक में राज बिराजी। २।
राम बिसायो। कहि बिधि रहणि रह्यो। दयाल से जैरहै
यउ अपकासों कहूं। टेक। मांस की उपी सुस करकी पारी। जे बके तरसि म
रूरे। नाद समेल्ली गरबा गेल्ली। दिवर के विरह जरूरे। १।
कोकरे लराई। माया दसम ति वारी।
पिया हीप्पारी। २। सो चित बिनार देषो मन माही। ओ सरूसा इबन रू रे।
कहे कबीर सुनो मति सुंदरि। राजा राम रमूरो। ३। ४। दास्की
कोमन करै राम गुन गावै। टेक। एक सेरपी सोंद सू।
। चूंफ रहिक रियार दन न पावै। १।
रियो बाट। २। मुफ मुटा टेराष चोटी।

रगरद निमोटी।३।गोटी बीस पंकोरी ती४। एमुफि एमं स्यूं बिगर्दा स
३॥ सोकलेउजाबमी सापोवा। बिरहा न सयै सुफियन कोरोवा।४। अ
पुनमंत मिहरा घरि साकंत। सुफियन देषि हरन जैसे डाकन।५। मि
हरीन हो नैनौ सुण संले षोनी। राकै एकै सुफिय सभ रिचारि लवती
६॥ कहै कबीर सुन कैरे लोई। एन सुफियन बिन सगति न होई। धर
राजा रांम बिनां तैरे कती षेषे। रांम बिनां नर क्यूं छूटै रे कांगो। अम करे
नग षेषे षे टेक। सुफा पर स्यां जोग न होई। घट का ढाउ सती न
कोई।१। माया के संगि हिलि मिलि आया। फोकट साटै जनम गंवा
या।२। कहि कबीर जिनि हरि पद चीन्हां। मलिन प्यंड थैं निरमल कीं
न्हां।३।४३ अवधू ऐसा ग्यांन बिचारी। ना थें नर पुरष थें नारी। टेक
।। नांहीं बाह्मन नांही कंवारी। पूत जणौं दौ हारी। कालीमुडि को एक
ऊन छो पै।। अजहूं अकन कंवारी।१। बांमण कै बंमणी कहि
ये जोगी कै घरि चेली। कलमां पढि पढि भई तुरकणी। अजहूं फिरौं
अकेली।२। पीहरि जांऊं न रहूं सासरै। पुरषै अंगि न लाऊं। कहै क
बीर सुनौं रे संतो। अंगै अंगि छुडाऊं।३।४४ ऐसें धीरैया इबौ अनतन-
जाएबो। रांम रांम रमिबो। टेक।। पहली पाई आई माई। पीछै पहं सगा
ज बाई।१। घाया टेबर याया जेग घाया सगा सुसरा को बेटा।२। घाया पं
च पटण का लेगा। कहै कबीर तब पाया जोगा।३।४५ नां मैं थे मन लां
गौ रांम तोही।। करौ क्रिपा जिनि बिसरौ मोही। टेक जननी जठर बकत
उपतारी। सो संक्या नहीं गर्भ हंमारी।१। दिन दिन तन छीजै जुरा जणां
वै। केस गहै काल बिरदंग बजावै।२। कहै कबीर करुणामैं आगै। तु
म्हारी क्रिपा बिन बिपति न भागै।३।४६ मीठी मीठी माया तजणी न
जाई। अग्यांनी पुरष को भोलि भोलि षाई। टेक। निरगुण सगुण नारी
संसार पियारी। लषिमण त्यागी गोरष निवारी।।
भ्यारही समाई।।
बीपद लोक बिचारी। संसा रिज्याई माया।क

जोगी जो के मन मै मुद्रा। राति दिवस न करनकै रे
रा। मन मै रहणां। मन का जप तप मन मै रहणां। १॥ मन मैं षपरा म
न मैं सींगी। अनहद बेन बजावै रा॥२॥ पंच परजालि भसम करि
भूका॥ कहै कबीर सो लहसै लंका। ३।४
ल्यावै॥ सो सब कोण मति आवै कंता। टेक। उरल्यो पुर
च बिधि मनु हिरदै गों सोई। सो स्याव जकि न मारै कंता। जाकै
रा तर मांस न होई। १। षेली पार कै पारधी। ताकी धुणही पुणि चन
ही रे। ता बेली कौं ढूक्यौ मिरगलौ ता मिरग कै सीस न ही रे।
कबीर स्वांमी उनमनि मिलन्न कौं। बेली है पणि पात न ही रे।३।
। जोगीया तन कौं जंत्र बजाई। ज्यूं तेरा आवागवन बिलाई।
तंत करि ताति धरम करि डांड़ी। सत की सार लगाई। मन करि निहुच
ल आसण ल्यौ चल रसनां रस उपजाई।१। चित करि बटवा तु
चा मेषली। सम सभ भसम चढाई। तजि पाषंड पांच करि निग्रह षो
जि परम पद पाई।२। हिरदै सींगी ग्यांन गुणि बांधौ। षोजि निरंजन सां
चा कहै कबीरा।३।४०। [illegible] ॥ हरि कौ नांव ले ज्यां
वारो। काम मैं चवारं वारा। टेक। पंच चोर गढ मंझा गढ लूटै दिवस अ
रु संझा। जो गढपति मबला होई। तो लूटि न सकै कोई।१। अंधिया
र दीपक चहिए। तब बस्त अगोचर लहिए। जब बस्त अगोचर पा
ई। तब दीपक रह्या समाई।२। जो दरसन देष्या चहिए। तो दरपन मंज
त रहिए। जब दरपन लागै काई। तब दरसन कायान जाई।३।
हिरा का गुनि हरि का बद पुरां ना सुनि। पट गुन मति होई। मैं सहजै पा
या सोई।४। कहै कबीर मैं जांनां मैं जांनां मन पतियांनां।
जो न पतीजै तो अंधे कूं क्या कीजै।५।४१। अंधे हरि बिन को तेरा को
न सो कहै मेरी मेरा। टेक। तजि कुलाकरम अभिमांनां। झूठे नरसै क
हा रे भुलांनां। जे लिमषमा हिकार जाहै।
ज बल सम न हरि कारी

विज्ञांनो॥तवन्निमलमांहिसमांनो॥२ ब्रूदाग्रगनिब्रूससोई॥छव
हूटेविनग्रौरनकेई।पापपुनिभ्रमजारी॥तवजयौप्रकासमुरारी
३॥कहैकवीरहरिऐसा॥जहांजैसांतहांतैसा॥भूलेभ्रमपरैजिनि
कोई।राजारांमकरैसुहोई॥४॥२॥मनरेसरयोनयेकोकाजा॥तांथै
भज्योनसूवपतिराजा॥टेक॥वेदपुरांनसुम्रितगुनपढिकरि॥पढिगु
निमरमनपाया॥संध्यागायत्रीअरुषटक्रमा॥तिनथैदूरिबतावे॥
वनखंडिजाइबहुततपकीन्हौ॥कंदमूलषनिषावा॥ब्रह्मगियानी
अधिकधियानी॥जमकेपटैलिषावा॥१॥रेजाकरैनिवाजगुजारै॥वा
हैलोकसुनाई॥हिरदैकपटमिलैकासांई॥कौहैजकावैजाई॥२॥पदस्यांक
लसकलजगऊपरि॥माहिलिषिसबपानी॥कहैकबीरतेनयेषालैसे
रामजगतिजिनिजांनी॥३॥६॥मनरेजबतेरांमकह्यौरे॥पाछैकहिबेकौ
कछूनरह्यौरे॥टेक॥कांमक्रोधदोऊनेरै॥तांथैगुरप्रसादिसबजरे॥१॥
काजोधजगितपंदांली॥जौतैरागरांमनहीजांना॥१॥कहैकबीररमनं
सी॥सग्रारांमिलेअविनासी॥२॥७॥रांमराइऐसैसोअनअनूपअनूपम
तेरोअंगनसैथेतिरिगा॥टेक॥जेतुमकायाकरौजगजीवन॥तौकतकू
लिनपरिये॥टकालदरिपटऊलतनग्रामअरोचर॥कथियाउरगमि
विचार॥जाकारणिहैमदूतफिरते॥आपिनसोसंसारा॥१॥प्रगटी
जोतिकपाटपोलिदे॥दगेधजनमउपदारा॥प्रगटेविस्वनाथजगजीव
न॥हैमपायाएककरतविचारा॥२॥दिपतएकअनकंनोतिदौलपरतति
अजाती॥३॥कहैकबीरकस्रणंभैकीया॥निरगलियाबहुविस्तारा
रांमकैनांऊपरमपदपाया॥छूटेविघनविकारा॥४॥५॥रांमराइकोअ
सोवैरागी॥हरिमनिरहैसगानविषत्यागी॥टेक॥ब्रह्माएकजिनिसिरि
उपाई॥ ॥

पारनपाया॥४॥तवरएकनांनाविधि ॥
ग्रेगलम्लिरव्यारिषाणा॥सोफलवदेनचाषा॥
रवंतम्हैतकरै।अोरसंगनियान्नाथी॥

सबसुखकासाथी ॥३॥ ६॥ नैकु निहारि हो माया बीनती करै
न बोले कविजा रि फु निफु निपाइपरे ॥ टेक ॥ कनक कलेऊ लेत मंमसि
वे कांम निलयौ मनहरनी ॥
धरनी ॥१॥ अथ्र्य सिध्लि जंत्र मद दि केजनी ॥ नो नि धि देउ मम आगे ॥
नरस कजनवन केरूपति तिऊ लंद नमागे ॥२॥ तिपापनि सब सिघारे
कोको जनयासे ॥ जिनि ढिंनिमेगा कायो हेतरे ॥ को बेसा सिनमा सो
॥३॥ दासकबीर राम के सरनै ॥ छाडी कूडी माया ॥ गुरप्रसा
दि ता हिपरमपद पाया ॥४॥ ७ ॥ उमध दिजाऊ हंमारी बंनी ॥ विषला
गे तु माकेसे ॥ मा ॥ टेक ॥ अंजन छाडि निरंजन राते ना किस ही का देनां ॥
लिजा कत्ताकी उभपठाई ॥ एक मा एक बहाना ॥१॥ रातीषडी देषि क
बीघा देषि हंमारा सिंगारो ॥ अरगलोक सौं हम चलि आई ॥ करन कु
बीर भरतारो ॥२॥ सम्राजो कंमे क्या उषपढिया अम्रू आई कलि माही
जाति जुलाहा नाव कबीरा अजहुं पत्नी जे नांनांही ॥३॥ ॥ नहीं ज जाउं द
पाट परेबर ॥ अगर चंदन घसि लीना ॥ आइ हमारै कहा करौगी ॥ हंम
तौ जाति कमीना ॥४॥ सा हिब मेरा लेषा मांगे लेषा क्यूं करि दीजे ॥ जि
मजतन करि रीझ बझेरा ॥ तौ मां हैं ता नीरन भीजै ॥ ॥ जि सिंहंम साज सा
ज निवाजे ॥ बांधे कांचे धागे ॥ जिउ मजतन करी बझेरा ॥ तौ पांगा आ
गिन लागे ॥५॥ जा का मेरी लूंसो मेरा मंदा ॥ सो मेरा रषवालू ॥ दु
के कउ भास हाथ लगाकै तौ राजा राम दिसा लू ॥६॥ जाति जुलाहा नां
म कबीरा बनि बनि फिरै उदासी ॥ आसि पासि तुम फिरि फिरि बैठो
एक माइ एक मासी ॥७॥ ८ ॥ रिसुष मे हि विषै नरि लागे ॥ इ हि सुषर्से दु
ऊकै मोट मोट छत्रपति राजा ॥ अपजै बिनसै जाइ बिलाई ॥ संपति कांहू
के संगि न जाई ॥ टेक ॥ धन तो बनारसी अमसारा ॥ युक्त नन रिबरि कीट
गारा ॥ चरन केवल मनराषि ले धीरा ॥ राम रमत सुष कहे हो कबीरा
॥२॥ ९ ॥ रवन रहै मो माटी के घर मै ॥ इबमै जाइ रह्यू मिलि हरि मै ॥ टेक ॥
उन हरघर अरस फिर हरटाट ॥ धंन पर जतन कंपेत मेरे ॥ कांम ॥ टमो

ढुवा रिता गिरि ईता डरी॥ दूरि गाइ न आव अनयो सारा॥४॥ सकादि सिवे
मेचा रिपै दरवा। जगठम सिगये मोर मंगरसा॥३॥ कहै तक बीर सुन
करे लोई। नांनाप घड़ गसंवारा गासो ई॥४॥१०॥ कबीरो बिग सोरां
मउहाई। तुम्ह जिनि बिगारो मेरे साई। टेक॥ चंदन की ढिग बिरष जुहो
फूला। बिगरि बिगरि सो चंदन ई ला॥१॥ पारस कौं जे लोह लिवेला.
बिगरि बिगरि रिस कंचन भेला॥२॥ गंगा कौं जे नीर मिलगा। बिगरि
बिगरि गंगो दिक लेला॥३॥ कहै कबीर जे राम कहैगा॥ बिगरि बिग
रिसो राम हि हैला॥४॥११॥ रामराइ भई बिकल मति मोरी। के यह जग
दिसा वा तेरी। टेक॥ जि पूजा हरि नहीं भावे। सो पूजण हार चढावे। जिहि
जा हरि न लमानें सो पूजण हार न जांणें॥१॥ भाव प्रेम की पूजा। पैं नयो देवै
कुया कीनें बहुत पसारा। पूजा जे पूजण हारा॥२॥ कहै कबीर मैं गावा मैं गावा
आपा पलवाचा। जोइ हि पद मो हि समांनां। सो पूजण हार समांनां॥३॥१२॥ राम र
ह्न ईम्पा ग सत्नारी। चले इन पांन न थेंम सारा॥ टेक॥ इक तन फीर थ ओ गौं
इक संग नमं सत कैं चौदे। इकै मैं मरा मैं बी के। इक अदं मे बमे मेग्बे॥१॥ इक
थि कथि मम लगावे। से मिताभी बहुत न पावे॥ कहै कबीर क्या कीजे
हरि सू जै सो अजन दीजै॥२॥१३॥ कायां मंज सि कोन गुनां। है घट नीर्न
मल पाणीं। टेक॥ नहीं अ‌ऋसिधि तीरथ न्हाई। कड चापण कर दन जाई।
जेउ रि दसु धमन र पांनी। तो कहा बिरो ले पांनी॥१॥ कहै कबीर बिचारी
जो सा गार ता रिमुरारी॥२॥१४॥ कैसे उ हरि को दास कहाये॥ करि बहु
भेष जन मंगवाये। टेक॥ सुध बुध हो सम्यान नहीं सोई। काछ्ठ जा मन
उदर कता ई॥१॥ हिरदे कपट हरि सौं नहीं साचो। कहा भयो जे अनहद
नाच्यो॥२॥ झूठे फोकट कलू मंझारा। राम कहै ते दास निनारा॥३॥
गति नौरदी मगन सरीरा। इहि विधि सौ तिरि कै है कबीरा॥४॥१५॥ रां
मराइ इहि सेवग न समांने। जे को इ राम नाम तत जानै नेटे। कहा बिन ति
कपट अराधे॥ का जल पै सिक तामन साधे। रे नर कहा पषाणे काय
सो [illegible] माया॥

बीर त्रिहूं लोक पियार ॥ १८ ॥ दुहि बिधि रांम सौं ल्यौ लाइ ॥ चरन पूरै
निरंतर करि ॥ जिभ्या बिनां गुन गाइ ॥ ८८ ॥ जहां स्वांति बूंद न सीप साइ
र सहज मोती फूटि ॥ अनमोल तिय न मनीं रयौ पायौ ॥ पवन अंब्र बर धोइ ॥ ८ ॥ जहां
धरणि बरसै गगन भीजै ॥ चंद सूरज मिले दोइ ॥ महल तहां जुड़ लागौ ॥
हंसा करहिं केलि ॥ ९ ॥ बिरष मांहि एक नदी चाली ॥ कनंक कलस समाइ ॥ पं
च सूवटा आइ बैसे ॥ उदै भई बनराइ ॥ १० ॥ जहां को बिछुरयौ तहां लागौ ॥ ग
गन बैठौ आइ ॥ जन कबीर बटाऊ बा ॥ जिनि मारिग लीयौ चाइ ॥ ११ ॥
तापै मा हिनाचर बोन आप ॥ मेरौ मन मदला न बजावै ॥ ८० ॥ कर्म रेष
तासु सरिस रिया ॥ त्रिष्णा गागरि फूटी ॥ हरि चित मेरौ मदला जीभौ
नरम चुय न गयौ छूटी ॥ १ ॥ ब्रह्म अगनि मैं जारी ममता ॥ पाषंड अरू
अभिमांनां ॥ काम चोलना भया पुरांनां ॥ मो पै होइ न आंनां ॥ २ ॥ जे बहु रू
प कीया ते कीया ॥ अब बहु रूप न होई ॥ थाकी सौंज संग के बिछुरे ॥ रा
म नांम सिधि होई ॥ ३ ॥ जे था मै चल अचल थाके ॥ करते बाद बिबाद ॥
कहै कबीर मैं पूरा पाया ॥ भया रांम प्रसाद ॥ ४ ॥ ९० ॥ अब क्या कीजै ग्यांन बिं
चारा ॥ निज निरषत गत ब्यौहारा ॥ ८० ॥ जाचग ब्याराक पाया ॥ धन
दीया जाकौ षाया ॥ कोई लेभ रिसके तसका ॥ अरनि पैजानां चूका ॥ ति
सवाकनिजी वनजाई ॥ आमिलनै पालेषाई ॥ दोजी वन न लाक हाई ॥ बिं
नम्रवांजीवननांहीं ॥ १ ॥ घसि चंदन बलषफ बोला ॥ बिन नैननि सि रूपनि
हाला ॥ तिहि पूत बाप एक जाया ॥ बिन बादर नग्र बसाया ॥ २ ॥ को
ड़ी ब्रत हीम रिजांनै ॥ जो पंच सयल सुष मांनै ॥ कहि कबीर सो पाया
प्रभू लेटत आप गंवाया ॥ ३ ॥ ९१ ॥ अब मै पाये रांम सनेही ॥ जा बिन दुष पा
वै मेरी देही ॥ टेक ॥ बेद पुरांन कहत जाकी साषी ॥ तीरथ ब्रत न छूटै जम
पासी ॥ १ ॥ जा थे जनम लहत नर आगै ॥ पाप पुनि दोऊ भ्रम लागै ॥
२ ॥ जुरा मरन चंडजन का छोडै ॥ को आगै कोटिन दस पाछै ॥ २ ॥ कहै क
बीर को इतनत जागा ॥ मन त्यां मैं ध्यांन प्रेम रस लागा ॥ ३ ॥ ९२ ॥ बिरहणी
फिरै है नाथ अधारा ॥ जपजी बिना मजलसं मजिन परेई ॥ को कन

ओनैपीरा। टेक थारू विथा सोई सुलजानै। रांम बिरह सिसि मारी। के
सोजांनै जिंनि अकुलाई। कि जिनि चोट सहारी॥१॥ संग की बिछुरी मि
लन न पावै। सो चक्कै रूकरु हे। जतन करै अरु जुगति बिचारै। रटै रां
मकों चाहे। २। दीन भई बूझैं सब सियनकों। कोई मोहि रांम मिलावे।
दास कबीर मीन ज्यूं तलपैं मिले भलस चुपावै। ३। २१ तेरा हरि नो म्हैमै जुलाहा
मेरा रांमरमा गकाजुलाहा। टेक दस सेसुत्र की पुरिया पुरी। चंद सूर दोइ
साथी। अनंत नांव गिणि लई मजुरी। हिरदा कंवल मैं राषी॥१॥ सुरति सुम्रि
ति दोइ षूंटी कीन्ही। आरंभ कीया बेमेकी। गम्य नतत की नली भराई। बुण
ते आतमां पेषी॥ अबिनांसी धन लई मजूरी। पूरी थापणि पाई। रस बंस सो षि
सो षिस बआये॥ निकटै दीया बताई। २। मन सूधा कौ कूंच कीयौ है। गयान
बिथारी पाई। जीव की गांठि गुढी सब भागी। जहां की तहां ल्यौ लाई। ३। वि
छिवेगार बुराई थाकी। अनंत वेपरुब कासी। दास कबीर बुणत सचु पाया। 5
षसंसार बनांसी। ४। २२ साइ रिस कजतन तगि बुणि लि कैसे। पोछैं रांम न देख
सनेहू कैरे। टेक करता है एक बिनांनी। ताजीत ही पंच षैं परांनी॥ तामाहे
एक उदासी। तिलिंत निबुनि सेवे बिनांसी॥ जेरू चो सठि बरियां धवा। नदे
हो पंच सों मिलावा। जौ तेया से छोंभेतांनी। तो रुसुष सूं रहे परांनी। ४। पद्म
त नियेतानां। पछिं बुनियेबांनां। जबत निबुनि म्हुरबकान्ह। तब संमरा
मूरदी न्हो। २। राछ जरत नई मंका। तासागि त्रयां मेंनं बंधा। कहे कबी
बिचारी। उबको कीन्ही है मारी। ३। २३ वेको कासी तजे हिं मुरारी। तेरी
सेवा चोर भयो बनवारी। टेक जोगी जती तपी सिन्यासी। मंठ देवल बसि प्र
में कासी। १। चरण बिछुर कासी कैं न दस्तो। कहै कबीर भल नरक हिं जे
रू। २४ तब काहे दलों बेगि जारो। अब आयो चाहे संग हमारो। टेक जब
म बैंगज लोग सपारी। तब तैं काहे न बेन जी मारी। १। जब हम बन आ पम
लकस्तरी
स्लोक मकरि मूलवैं गावाया। ३:

हमारा ॥ टेक ॥ लवानी लिनंतरक मेभिकारि ॥ जेत्राएकनलसाजा ॥ सति
असतिकछूनहीजांनूं ॥ जैसैबजायातैसेबाग्या ॥ १ ॥ मैं तुमस्यूं तुमहारा
आगया ॥ सुसियतनमैंतुमहारा ॥ इनकेमनहदंमहेकापकरो ॥ कामप
रायहंमारा ॥ २ ॥ मैं तुमपैसेईहमएकेकहियत ॥ जबआपापनहींजांना ॥
जलमैजलवैसिननिकसै ॥ कहै कबीरमननमांनां ॥ ३ ॥ २६ ॥ राजीव
आदसैकहाकीयो ॥ मो हिवैरागनयो ॥ टेक ॥ पंचततलेकायाकीन्ही
ततकहालेकीन्हो ॥ करमबसियजीवकहैतहै ॥ जीवकरमकिनै
दीन्हो ॥ १ ॥ आकासगगनापातालगगनारहाइले ॥ आंनदमूलसदापरसो
तमघटबिनसैगगननजाईले ॥ २ ॥ हरिमैतनहैतनमैहरिहै ॥ हरिनाहीमो
ई ॥ कहैकबीररामनामनछाडौ ॥ सहजैहोइसुहोई ॥ ३ ॥ हमारकौनं
हसिरिसांरो ॥ सिरकौसोनासिरजनहारा ॥ टेक ॥ टिढोपागबडजूराज
तिनैयेससमकाकूरा ॥ १ ॥ अनहदकीघरीवागी ॥ तबकाहूंपैजांगी
कहैकबीररामराया ॥ हरिकेरंगेमूडमुडाया ॥ ३ ॥ २७ ॥ धंनधंधैब्यौसो
सब ॥ मायामिथ्याबादसांरा ॥ निरस्थिरजंप ॥ हरिनावबिनाअपवाद
टेक ॥ इकरांमनांमनिजसाचा ॥ चितचेतिचतुरघटकाचा ॥ इनसम
भूलिमिचोली ॥ विधनाकीगतिओली ॥ १ ॥ जोवंतेकूंमारा ॥ ध्यावै ॥ म
तेवैबेगिजीलावै ॥ जाकेरूहिजमसबरी ॥ सोकूंमावनीदषणर
॥ २ ॥ जिहिजागनीदउपावै ॥ तिहिसीवकोंनजगावै ॥ जलजंतनदेष
प्रानी ॥ सबदीसकूवनिदांनी ॥ ३ ॥ तनदेवलजूं धजआछै ॥ पडियाप
छितावैपाछै ॥ रामनामनिजसारै ॥ मायालागिनषोइ ॥ अतिकालसिर
पोटली लेजातनदेष्यौकोइ ॥ ४ ॥ कोईलेजातनदेष्यौ ॥ बिलबिक्रमभोर
गुरु ॥ काहूकैसंगिनराषी ॥ दीसैबीसलकीसाषी ॥ ५ ॥ जबहमपवनलै
मेले ॥ मसमोहाटकजलमेलै ॥ मोनिषजनमअवतारा ॥ ६ ॥ नांकुकेहै
रबारा ॥ कबकैकिसाबिहांगा ॥ तरंमपनिभजहगा ॥ ७ ॥ मूकि
मांनिधजनमगंवारा ॥ नरकोंडांजमेंइहकाया ॥ जिहितनधनजूंगु
माया ॥ जगतघ्योपहरमाया ॥ ८ ॥ जलकंअमरजीवनजेसा ॥ हाकाके

तामेरामा। कहै कबीर जग अंधा। कोहै न चेत अंध धंधा॥३९॥ रे चित चे
तें चेत लेतौ है। आं अंतर आपा पर नाहीं। टेक। हरि हिरदा एक ग्यान उपा
यो थे छूटि गई सब माया। जहां नारद न बिंद दिवस न ही राती। नहीं नर नां
नहीं कुल जाती॥१॥ कहै कबीर सरब सुषदाता। अबमत अलष अभेद विधा
ता॥४०॥ अंजन कौ पीर राजा राम सेल नां नै। कहौ को हि को मांने॥ टेक॥ नैन का
नैन जांनै बैन का सुष स्रवणां। प्यंड का सुष प्रांण जांनैं सुंणा का सुष मरणां
ज्ञा स्वास का सुष प्यास जांनौं प्यास का सुष नीर। मूल गत का सुष रांम जांनौं द
दास कबीर॥२॥४१॥ गोविंद॥ ऐसा ध्यांन धरौ नरहरी। सबद अनाह
द चिंतन करी। टेक। पहली षोजौ पंचौ बाइ। बाइ बिंद ले गगन समाइ। गग
न तित तहं त्रिकुटी संधि। रवि ससि पवनां मेल्हौं बंधि॥१॥ मन थिर होइ तौ
वल प्रकास। कंवला माहि निरंजन वास। सतगुर संपट षोलि दिषावै। नि
रा है सत कहा स्वर पावै॥२॥ सहज लषि न लेत जो उपाधि॥ आसन दिढ नि
रा साधि। पुहुप पत्र तहां हीरा मंणी। कहै कबीर तहां त्रिभवन धणी॥३॥
पूछहि बिषि सब कथी नरहरी। मन की उलटि ध्यान मन धरी। टेक। जहां नहीं ज
न्हां तहां कछ जांणि। जहां नहीं वहां लेउ पछांणि॥१॥ नांहीं देषि न ज
इए जांइ॥ नांही तहां रहिए लागि॥२॥ करि मंन मंजन दसवैं द्वारि। गंगा ज
मु न संधि बिचारि। नांद हि बिंद का बिंद ही नांद॥ नांद हि बिंद मिले गोबिंद॥
दीवा न देवा पूजा न जाप।४२॥ नांइ बंध माइ नहीं बाप। गुणा अतीत जेसे नि
गुण आप॥ अतजे वड जग की योसाप॥१॥ तन नां है कब जब मन नां है
मन परतीत ब्रह्म मन माहि। परहरि बकुला ग्रहि गुण डार। निरषि देषि
धवा रन पार॥६॥ मन करि पूजा मन करि धूप। मनहीं सेवा सहज सरूप
मन आवमन रहै हिवि मिजाद। जे न मन रहै तौ वा लन षाइ॥७॥ कहै कवी
गुर प्रमैं गियांनं। सुनि मंडल मधि धरौ धियांन॥ प्यंड परे जी वै जैहै जहां। उ
तहीं लि राषे तहां॥८॥४३॥ तहां जो रांम नांम ल्यौ लागै

पदुमेडुलमंहितमंड ॥ श्री अस्थानकस्त्रीयपान ॥ अनअगोचरअनेअंत

रा ताकोपारनपावधरणीधरा ॥ ४ आधदरपबिचित्रफटकैअकास ॥ त

अवर्जोतिकोपरकास ॥ टारापटरनआवैजाइ मरहमुनिमेरह्योसमाइ

॥ अबरणबरणस्यास्नहि ताहि हाजा हिनगावणति ॥ अनहदसब

दसेवेकजाकार ॥ तहांपरबैठेश्रीगोपाल ॥ ॥ कदलीदीपपञ्जपपर

कास ॥ रिदाधंसअमेलीयोनिवास ॥ हादसदलअस्तिकंतरोमंति ॥ तहां

प्रभुमाइमकरिलैचीत ॥ ॥ अमलनिमलनिधामनहोछाया ॥ दिवस

रातिनहींहे तहां ॥ तहांनकोमूरनचंद ॥ आदिनिरंजनकरआनंद ॥

ब्रह्मंडसोप्यंडजाणि मानसरोवरकरिअसनान ॥ सोहंसाजकोजा

प ॥ ताहिनलिपेपुनिनपाप ॥ ॥ कायामधेजानेकोय ॥ जेबोलेसोआपेहो

इ ॥ जोतिमाहिजोमनथिरकरै ॥ कहेकबीरसोईप्राणीतिरे ॥ ॥ २ एक

अचंभाअसीतया ॥ करणीथिकारणमिटिगया ॥ ॥ करणीकापाक

रमकानास ॥ पञ्जपमाहिपावकप्रकास ॥ पञ्जमाहिपावकघरजर ॥ त

बपामपुनिकमदोकजर ॥ ॥ ॐ मजीबासबासनाधेइ ॥ ॐ लक्षाधी

ऊलघायोभोइ ॥ अपणीच्यंतच्यंतामिटिगई ॥ तेवमनागाअसीलई

॥ जटीगगनरकोचली ॥ धरताउलटिआकासहिमिली ॥ दासक

बीरततअसाकहे ॥ ससिहरउलटिराहकोगहै ॥ ॥ हेहजदेखाइ

रिबताये ॥ इंद्रबाधसुदरपावै ॥ ॥ छामसलमानजुननसोलवे ॥ अ

निसकालचक्रमूलिरे ॥ कालचक्रकामरदमान ॥ ताथुसलमानेको

सदासलाम ॥ सोकाजीजोकायाबिचारे ॥ अहिनिसब्रह्मअगनिपरजारे ॥ सु

पिनेबांदनदेहझरेना ॥ ताकाजीकोजुरानमरना ॥ ॥ जोसुलितानजुदेसु

रतानो ॥ बाहरिजाताभीतरिआने ॥ गगनमंडलमेलसकरकरे ॥ सोसुलिता

नछत्रसिरिधरे ॥ ॥ जोगीगोरषगोरषकरे ॥ हीदूरामरामउचरे ॥ मुसल

मानकेएकषुदाइ ॥ कबीरकोस्वामीघटघटरह्योसमाइ ॥ ॥ ले

गाकदेगोवरधनधारी ॥ ताकामाहिब्रचलोसारी ॥ ॥ अष्टकुलीन

बनताकेपाकोरसना ॥ सावोसाहरअंजननैना ॥ ॥ पारब्रह्म

कोतिएकवोपै। अनेकभेरनपउपलिरोपै।।२। धरणिअकासअधरजिनि
रपी। ताकोमुखअलहैनहीसापी।।३ मिथ्याविरंचिनारदजसगावै। कहैकबी
ताकोपारनपावै।।४।।८। अजंअलपनिरंजनसार। दृष्टीनहिनरकरऊविच
ार।टेक।अजनउतिपतिवरननहोइ।बिंदनिरंजनमुक्तेनिदोइ।।१।अंजनआवै
अंजनजाइ। निरंजनसबघटिरह्योसमाइ।।२।जोगध्यानतपसबैविकार,
कहैकबीरमेरेरामअधार।।३।।९।। एकनिरंजनअलहमेरा। हींदूतुरकदु
हनहींनेरा।टेक।राषोंबरतनमहरमजांनां तिसहीसुमरूंजुरहैनिदांनां।
।१।पूजाकरोंननिवाजगुजारूं। एकनिराकारहिरदैनमसकारूं।।२।।नं
हजजाउनतीरथपूजा। एकपिछांणांतौक्यादूजा।।३।।कहैकबी
रमैसबभागा। एकनिरंजनसौंमनलागा।।४।।१०।। तहांमुझगरीबकीकोपु
छावै। मजलसदूरिमहलकोपावै।टेक। सतरिसहंससिलारजाकें। असीला
षपैकंबरताकेसिरछत्रकहियसहससअठासी। छपनकोटिषेलतिषवासी।।१।।
कोटितेतीसौंअरूलषपांनां। चौरासीलषफिरदीवांनां। बाबाआदंम
केजविदिलाई। नबीभिस्तिघणेरापाई।।२। तुमहसाहिबदंमदहंमिषारी।
देतजुबाबहोतबजगारी।जंनकबीरतेरीपनहिंसमांनां।।भिस्तनजीक
रापिरहिमांनां।।३।।११।। जौजाचूंतौकेवलरांम। आनदेवसौंनांहींकांम।टेक
जाकेसूरिजकोटिकरप्रकास। कोटिमहादेवगिरकैलास। ब्रह्माकोटि
वेदउचारै। दुर्गाकोटिजाकेमरदनकरै। कोटिचंद्रमागहैचिराक।।१।।सु
रतेतीसौंजीवैपाक। नौग्रहकोटिठाढेदरबार। धर्मराइपौलीप्रतिहार।।२।।
कोटिमरजाकैतरसंकारै। लषमीकोटिकरैसिंगार। कोटिपापपुनि
व्योहारै इंद्रकोटिजाकीसेवाकरै।।३।। जगिकोटिजाकदरबार। गंध्रप
कोटिकरैजैकार। बिद्याकोटिसबगुणकहै पारब्रह्मकोपारनलहै
।।४।।बासिगकोटिसेजबिसतरै।पवनकोटिचौबारैफिरै। कोटिसमुंदरज
केपणिहारे। रोमावलीअठारभार।।असंषिकोटिजाकेजमावली।

छूटी पैलैलि कराल ॥ अनंत कला नटवर गोपाल ॥ ५ ॥ कहै पका हूँ
कै लाव निकरै ॥ घट घट भीतर मंतं साहै ॥ दास कबीर सर्जि सारंगपा
नि दैऊ अैसे पदमाणो दान ॥ १० ॥ मनन किगना थै तन नडराई कव
लरामरहै यो लाइ ॥ अति अथाह जल गहर गंभीर ॥ बांधि जंजीर सा
लि बोरि है कबीर ॥ जल की तरंग उठि कटि है जंजीर ॥ हरि सुमिरण
न टिबि बुझि है कबीर ॥ कहै कबीर मेरे संग न साथी ॥ जल थल मैं राखै
गमापध ॥ मलनी दो मलनी दो मलनी दासैं लोग ॥ तन न न्न
रांम पियार जोगि ॥ मैं बपुरो मेरे रांम सरतार ॥ नाकार लिमुरि करो सिग
र ॥ जैसे धुवरिया जल मै धोवै ॥ हस्त परस्त सब वनप दक पोवे ॥ निंद
क मेरे माई बाप ॥ जनम जनम के काटै पाप ॥ निंदक मेरे प्रान अधा
र विन बेगा स्वि लाव लार ॥ कहै कबीर निंदक बलिहारी ॥ आपन
है जंनमा रिखि तारी ॥ १२ ॥ जेमै बारा नो रांम तारा ॥ लोक मरम को जेमो
रा ॥ माला तिलक पहरि मन मांमां ॥ लोक नि रांम मिलै नां तां मा
॥ पाखंड लगति तजत अहंकारा ॥ अैसे भगता मिलै हि अपारा ॥ लौं
कहै कबीर बौरांनां ॥ कबीरा कामसंम रांमन ले जांनां ॥ हरि
न हंस दसा लीला डोले निमल नांव चवें अनबोले ॥ मानसरोव
टकै बासी ॥ रांम चरण चित आन उदासी ॥ मुकताहल बिन चं
न लावै ॥ मूनि है के हरि गुण गावै ॥ कहै कबीर सोई जन तेरा ॥ बी
नीर का करन बेरा ॥ मति रांम सत गुरु की सेवा ॥ पूजो रांम नि
न देवा ॥ जल कै मंजन जो गति होई ॥ मीनां नित ही न्हावै जा
नां ते मानरा ॥ फिरि फिरि जोनी आवै ॥ मान मैं मैला तीरथ न्हा
निवे ऊठ न जांनां ॥ पाषंड करि करि जगत भुलांनां ॥ नां हित रां
यानां ॥ हिरदै कठोर मरै बानारसी ॥ नरक न बंच्या जाई ॥
दास मरजे मगहर ॥ सेनां सकल तिराई ॥ पाव पुरां न वेदन है
न नहां बसै निरकार ॥ कहै कबीरा कही धावे ॥ बादलि
रति गाया दसु लिजि निमाइ ॥ मनिमा जेनमवे

लाहूंहरिकेप्रेमवाकरितनतिकमाईतौनैमनिपायेहीपाई।याहीकौं
लैचैदेवा।सोहरीहरिहरिकीसेवा।४॥जबलगजुरारोगनहीआया।
जबलगकालग्रसीनहीकाया।जबलगहीणपडैनहीबांणी॥तबल
गभजिलसारंगप्रांणी।२।अबनहीभजसीभजसिकबभाई।आव
गाअंतभज्योनहीजाई।जेकछुकरैसोईसबसारै।फिरिपछितावोगे
पारनपारे।३।सेवगसोजेलागासेवा।तिनहीपायौनिरंजनदेवा।गुरमि
लितिनकेषुलेकपाट।बहुरिनआवैजोनीबाट।४।यहतेराओसर
यहतेरीबारा।घटहीभीतरिसोचिविचारि।कहैकबीरजीतिभावह
रि।बहुविधिकहैयोउकारिपुकारि।५।१६।ऐसाग्यानविचारिमनां।ह
रिकैनसुमिरउपवंजनां।टेक।जबलगमैमेरीकरै।तबलगकाजिएकै
नसरै।जबयहमैमेरामिटिजाइ।तबहरिहरिकाजसंवारैआइ।१।ज
बलगसिंघरहैबनमाहि।तबलगयहबनफूलैनांहि।उलटिस्यालसिंघ
कौंषाइ।तबयहफूलबनराइ।२।जीत्याडूबहारयौतिरैगुरप्रसादिज
वनहीमरै।दासकबीरकहैसमझाइ।कैवलरांममरहैल्योलाइ।३।१७।जा
रेजीवजागिरे।अबकासोवतजागिरे।टेक।चोरनकौंमरबकुतकहतहै।उ
ठिपहरैलागिरे।१।रोवतरियोलैमैमोकरिवातर।गयोनरतनकरिभाग
ऐसेजोअजरांमुलमारे।मतिगआवैभागरे।२।ऐसीजागतिजेकोजा
नाहरिदेषुदागरे।कहैकबीरजायपादौनचहिए।क्यागृहक्यावैरागरे
।३।१८।जागोरेनरसोवोकहा।जमबटवारेरुंधेपाहा।टेक।जागिचेतिक
रौउपाइ।मोटादुषहैजमराइ।१।सितकागआयोवनमाहि।अजहुंरे
चैतौनांहि।।कहैकबीरतबैनरजागै।जबजमकैडंडमूडमैलागै।२।१
जागिसमनीदनसाइ।चितचेत्योचितामनिपाई।टेक।सोवतसोवतब
हिनबीते।जनजमपातसकसायेरीते।१।जनजागेकाऐसनांण।विषसे
गोबरघुरांन।२।
२०।जतनएकअरैसालाधा
पासैथेरैधा।रहयेतसबनिकाचरिगा।

आपै ग्याति और कौ ता

षषा धारा षेसा ।कहै कबा...जा चू मोरे ।आपै ग्याति औरकौ ता

१ ।हरि कौ बिजोवनो बिलो हमेरा माई ।जो मै बिलई जो से तेतन जाई ।३

२ तनक रि मटकी मन हि बिलाई ।ता मटकी मय पवन समाई ।रह्या पिउ

लासु षमन तारी ।बलि बिलो हराटी छछि हारा ।४ ।कहै कबीर गुजरी बा

रानी ।मटकी फूटी जोति समामी ।५ ।२५ आसन पवन कीरा दिढि रहा ।म

नकामैं ला छाडि दे बौरे ।८१ ।क्या सींगी मुद्रा चमकाये ।क्या बिभूति सब

अंगे लगाए ।१ ।साहि हूमा मुसलमाने ।जाका हरई महे हमाने ।रामनाम जपि

जोकपौ वस्त्र गियाने ।२ ।कहै कबीर कहु आनन कीजै ।राम नाम बिन कपे मा डारा ।

लाहा लीजै ।३ ।२६ नाथे कहि लोकाचारा ।मटकी तन कटे भैहारा ।जीव पित्र

टै कैसरि बारि करि आवेषे हा ।तक न ल्याहे पाति सनेहा ।१ ।जीवत पित्र चिरज आवे

रह्या मुवा पित्र हि बालगाया ।२ ।कहै कबीर माहि भ्रम्या ।तुम्ह सो प्र

वापा पित्र कैसे पावे ।३ ।२७ पाना बापरा मत सुनि बीनती मोरी ।तातें कछू भ

लोगान मेचोरी ।टेक ।पहली काम मुगध मति कीया ।पहले बकसि दूबले षं

या ।१ ।राम राइ मेरा कहा सुति लीजै ।पहलै बक सिद्रबले ष ।२ ।५ ।आ

हे कबीर बापरा मराया ।अब हूं मरति तुम्हारी आया ।२ ।हैक हम

चके भेटेस मनतारा ।बिनदे समन मनमाने क्यो मारा ।१ ।तुम्ह कहि

ति ग कि तुम्ह हौ अजान ।दतु मैं दास करु कि राम ।१ ।२ ।कहै कबीर हरि

पतिरा जा ।मन बछित पुरवो सर्व काजा ।२ ।२८ आक गान

बारा ।हम दिकु लावो कि तुम्ह चलि आवो ।२ ।टेक ।आपक

गान जोगा ।गुरु के सबद मे रसिर भिर हूगा ।आपे नी ब ।

री ।आपे पुरष आपेनारी ।आपे सद फल आपेनी ब

न आये हि ह ।१ ।आपे मछ कछ आपे जाल ।आपे जीवर

२ ।कहै कबीर हम नाही रे नाही ।नाहम जीवत न मूए

पाती तैप्रमट लाई चतुराई ।गुरु प्रसाद भ्रम निछिपाई

मैं मैं ।ताकि पाती पाती कौ माहि ।१

ताकि पाती मै पिंड उपाय

गाया॥१२॥ऐसेज्ञांन्यांनी कावो नणवांग्णा ज्ञांनी संकटवैनी आंरणा टे
उतपतिथंदेखहौतेआंरिया। जो तिधरी अरूलाईमाय॥१॥ नहीकाकन्चन
कोकनीचा॥ जाको प्रिंडनाहुकासीचा॥२॥ जेहूवो नागवंभणनीया
ग्रानथाटहेकोहेआया॥ कहैकबीरमधिमनंहांकोई॥ मधिम आतुप
मनहोई॥३॥१४॥ अलाअलषनिरंजनदेवा॥ किनविधिकरौतुम्हारीसेवा॥
क॥ बिसनसोईजाकोविस्तार॥ सोईक्रिसनजिनिकीयोसंसार॥ गोब्यंदते
ब्रह्मंडगहै॥ सोईरांमजेजुगिजुगिरहै॥१॥ अलासोईजिनिकमतिउपाई॥ दर
दरषोलेसोईषुदाई॥ लषचोरासीरबपरवांरै॥ सोईकरीमजोइतिकरै॥२॥
गोरषसोईग्यांनगमिकहै॥ महादेवसोईमनकीलहै॥ सिधसोईजोसाधैइ
ती॥ नाथसोईजोत्रिभुवनधपती॥३॥ सिध साधुपकंबर हूवा॥ जपेसुएक
भेषन्यूताजुवा॥ अपरंमपरकानांमअनंत॥ कहैकबीरसोईभगवंत॥४॥
१७॥हंमसवमांहिसकलहंममाही॥ हंमथेओरदूसरानांही॥टेक॥ तीनलो
कमेहंमरापसारा॥ आवागवनसवषेलहंमारा॥ षटदरसनकहियत
हंमभेषा॥ हंमहीअतीतरूपनहीरेषा॥२॥ हंमहीआपकबीरकहा
वा॥ हंमहीआपणंआपलषावा॥३॥ अबहुंमहोहिरूंअपनोंकरिकरि
लीनों॥ प्रेमभगतिमेरोमनभीनों॥टेक॥ जरमरीरकोअंगनहीमोरो॥ प्रांनजा
इतोनेहनतोरू॥१॥ च्यतामणिक्युपाइएओछी॥ मनदेरांमलीयोनिरमो
ली॥२॥ ब्रह्माषोजतजनमगुमायो॥ सोईरांमघटभीतरिपायो॥३॥ कहेक
बीरछूटीसबआसा॥ मिल्योरांमउपज्योबिसवासा॥४॥३॥ आइसेंहोकंव
लैनेनराजारांमकेपदहिकाआगतदांनदेतकठअनेने सोप्रसादलेआंर
हेक॥ नीतविमहलजेतेकंवलापति॥ नराजाप्रेगावा॥ सोवतथेप्रभुचम
कैवो॥१॥ कोईदामबंदीआवा॥ करिमनुहारिमंहंमांसौपठवा॥ कहु
मकोंदीजे॥ हसनाहीस्वारथकेलीजी॥ जातिदांनमोहिदीजे॥२॥ बांहेप
रिजीतरिलआवा॥ सबअध्यानदिषावा॥ भगतिकबाइतिलकदेम
[illegible] नकबीरथकिरावा॥ [illegible] वारहरि
[illegible] आदितथौरनगतेआरवे॥

काया मंदिर मन साधन ॥ अष्ट अग्नि मिस लिषा जाइ ॥ अनहद बजै
सहज में चाइ ॥ १ ॥ सोमवार ससि अंम्रत झरै ॥ चाषत वेगि सबै बिस हरै
बांणी रोक्यां रहै दुवार ॥ मन मतिवारा पीवणहार ॥ २ ॥ मंगलवार ले
माहीं व ॥ पंच लोक की छाड़ो रीति ॥ घर छाडे जिनि बाहरि जाइ
नहीं तौ घेरै रिसा व राइ ॥ ३ ॥ बुधिवार करि बुधि परकास ॥ हिरदा कं
वल मैं हरि का वास ॥ गुर गमि दोऊ एक समि करै ॥ उरध पंकज तैं सूधौ
धरै ॥ ४ ॥ ब्रिसपति बिषिया देइ बहाइ ॥ तीन देव एकै संगि लाइ ॥ ती
नि नदी जहां त्रिकुटी माहिं ॥ कसमल धोवै अनिस न्हाइ ॥ ५ ॥ सुक्र सु
धा ले इहि ब्रत चढै ॥ अनिस आप आप सौं लरै ॥ सुरषी पंच राषिये सबै
तौ दूजी द्रिष्टि न पैसै कबै ॥ ६ ॥ थावर थिर करि घट मैं सोइ ॥ जोति दी
वटी मेल्है जोइ ॥ बाहरि भीतरि भया प्रकास ॥ तहां भया सकल करै
म का नास ॥ ७ ॥ जब लग घट मैं दूजी आंण ॥ तब लग महलि न पा
वै जांण ॥ रमिता राम सौं लावै रंग ॥ कहै कबीर तहं निर्मल अंग ॥ ८ ॥ २ ॥
राम तजे से जांणि रे जे आतुर नांही ॥ सुष संतोष लीयें रहै धीरज म
न मांही ॥ टे० ॥ जन कौं कांम क्रोध ब्यापै नांही ॥ त्रिस्नां न जलावै ॥ प्र
फुलित आनंद मैं गोब्यंद गुण गावै ॥ १ ॥ जन कौं पर निंद्या भावै नहीं ॥ अ
रु असति न भाषै ॥ काल कलपना मेटि करि ॥ चरनौं चित राषै ॥ २ ॥ ज
न सम द्रिष्टि सीतल सदा ॥ दुबिध्या नहीं आनैं ॥ कहै कबीर ता दास
सौं मेरा मन मानैं ॥ ३ ॥ २ ॥ माधौ सो न मिलै जासौं मिलि रहिये ॥ ता कार
णि बरु दुष सहिये ॥ टे० ॥ आगम आगौ चरन षीन जाइ ॥ जहां कांम तहां
जाफिरि तहां समाइ ॥ १ ॥ कहै कबीर क्रूजा अति मांन ॥ मैं तुम सेती भए
क समान ॥ ४ ॥ २ ॥ अहो मेरे गोब्यंद तुम्हारा जोर ॥ काजी बकिबा हस्ती
तोर ॥ टे० ॥ बांधि भुजा भलैं करि डार्‍यौ ॥ हस्ती कोपि मूंड मैं मार्‍यौ ॥ भा
ग्या हस्ती चीसां मारी ॥ वा मूरति की मैं बलिहारी ॥ १ ॥ महावत तोकौं मा
रौं साटी ॥ इसहि मरांऊं घालौं काटी ॥ हस्ती न तोरै धरै धियान ॥ वाकै
हिरदै बसै भगवान ॥ २ ॥ क्या अपराध संत है कीन्हां ॥ बांधि पोट कुंजर कूं दीन्हां ॥

रकौंदान्हीं।ऊजरपोटनकौंबंदनकरै।अजहूंनचेतकाजीअंधरे।३।ते
नबारंपतिदाराकीन्हां।अनेकठौरंअजहूनपतीनां।कहैकबीरदे
म्हैसोबांदा।चौथांपटमैजनकाअंदा।४।ऊसलपेमअरूसहा।सर
सति:दुहेकाकौदीन्हीरे।आवतजातऊघालैरे।अवतंतहरिलीन
रे।टेक।मायामोहमटमैपाया।मुगधकहैयहमेरारे।दिवसचारि
हैमनरहौयऊनाहीं।किसकेरारे।१।सुरनरमुनिजनपीरअवलिय
मीरापैदांकीन्हारे।कोटिकनेयकहांलौंवरनौं।सबनिपैया।नादी
रे।२।धरतीपवनअकासजाहगा।चंदजाइगासूरारे।हमनांहीतु
मनांहीरहसी।रहैरामभरपूरारे।३।ऊसलदिकसलकरतजगपी
पर्डौकाललेपापीरे।कहैकबीरसबैजुगविनस्या।रहैरामअवि
सोरे।४।१३।मनवैरागीनाराजागिरेनसोइ।लाहाकारणिमूलनषोइ
टेक।लाहाहेदेपिकहीगरबांनां।सबनकोजिमुरिषअयानां।१।गि
निधनसंचमासोपठितांनां।साथीचलिगयेहमतीनांनां।२।लि
अंधियारीजीगऊबंदे।छूटगालागेसबहीसंधे।३।किसकाबधूकिर
जोइ।चल्याअकेलीसगानकोइ।४।टहिगएमंदरटूटेबंसा।सूकेसरव
उडिगयेहंसा।५।पंचपदारथंनारिहैंषैहै।जरिबरिजाइगाकंचनस
देहा।६।कहैकबीरसुनऊरेलोई।रांमनामबिनअौरनकोई।७।४
नपतंगचेतनहीं।जलुअजुरीसमानं।विषियालागिसुषचितै।छाडि
हरिनिदांनां।१।टेक।काहेनैनअनंदिएजेसूझैतनांही।आगि।जनमअक
रथषोइए।सांपगिसंगिलागि।१।कहैकबीरचितचंचला।गुरकह
समझाइ।जगतिहालतरेहीजेरे।नोवेतहांजाइ।२।१४।स्वादपतंगपरज
जाइ।अनरटसौमेराचितनरहाइ।टेक।मायाकेमदेचेतिनदेष्या।३
ध्याभोहिएकनहीपेष्या।१।जेमअनेककाकीयेछकऊकीन्हां।अकल
रसएकनहीचीन्हां।२।कितेमूएमैरेगकेते।कितेकमुगधअजहूंनहीं
इतनेमनसबदेषिदिमाया।कहलरामकबीरदिपढाया।३।

रोवै। उसरूपवालाऔरनहोवै। रूपवालेकाहोइविनास उतहिनरकै
इतनोमाविलास।१। सुहागनिगलिसोहैहार। संतनिकोविषवेलससे।
सार। पतिकैलामीफिरैपचिहारी। गुरकैसबदैमासोढेरै। सापितकै
वापिंडपरांन। हमारा छिडिपरैवाकाहूँइन।२। इनदंमइसकापायाले
वै। होइक्रोपालमिलैगुरदेव। कहैकबीरइबबादहिपरी। संसारीकै
आचलिटिरी।३।१। पारोसनिमागैकंतहमारा। पियकीबारीमिलिहै
उक्षरा। टेक। मासामागैरतनदेऊं। घटैमेरापीवतोकासनिलेऊं।। रा
षियेरोसनिलरकामोर। जेऊढंपांचसऔधनतार।१। वनवनढूंढीनैनज
रिराऊं। पावनमिलैतोविलषिकरिराऊं।२। कहैकबीरइसहजसहंमार
विरलीसुहागनिकंतपियार।३।२।१०। रागबिलावल। मांजेगाजाकैसद
जताइ। अकलप्रीतिकालोंष्याषाइ।।टेक।। सहजअनाहदसीगीनाद। का
मक्रोधविषियानबाद। मनमुकूजाकैगुरकोग्यांन। त्रिकुटीकोट
मधरैधियान।१। मनहीकरणकोकेरस्नांन। गुरकौसबदलेहधरैधि
यान। कायाकासीषोजेवास। जोतिसरूपभयोप्रकास।२। ग्यांनमे
षलीसहजताइ। बंकनालिकोरसषाइ। जोगमूलकोदेइबंद। कहैक
बीरथिरहोइकंद।३।१। मेरोहारहरानौमैलजाऊं। सासकासनिपी
वडरां।।टेक।। हारगुहोमेरोरामताग। बिचिबिचिमानिकएकलाग।
रतनपवालेपरमजोति। ताअंतरिअंतरिलागेमोति।१। पंचसषीमिलि
हैसुजानि। चलहुजइयेत्रिवेनीन्हांनि। न्हाएधोइकैतिलकदीन्ह। ना
जांनौहारकिनहूंलीन्हं।२। हारहेरानौजनविमलकीन्ह। मेरोआ
हिपारोसनिहारलीन्ह। तीनलोककीजानैपीर। सबदेवसिरोमनिक
हैकबीर।३।२। नदीछाकौंबाबारामनांम मोहिऔरसकनसौं कूनकां
म।। प्रहलादपधारेपढणसाल। संगसषालीयेबहुतबाल। मोहिकहा
पढावैआलजाल। मेरीपाटीमैलिषिदेस्रीगोपाल।।टेक।। तबसनांमुरगां
कह्योजाइ। प्रहलादबंधायोवेगिआइ। तूरांमकहणकौछांडिबा
णि। बेगिछुडाऊंमेरोकह्योमानि।१। मोहिकहाडरावैबारबार।

ॐनिजलथलगिरकैकोकीयो वहार रांमतजौमेरेगुरदिगारि आरिबारि
जौवैभारिकरि ॥२॥ जबकाठिपड्याकोप्पाविसाइ तेरोराषणहारोमो
हिबताइ॥ थंनमा हैंप्रगटजागिलारि॥ हरनांकसमास्यानपछिारि॥
॥४॥ माहापुरसदेवाधदेवा॥ निनितगतिहेतधरयोनरसिंघभेव॥ कहैकबी
रकोइलहैनपार॥ प्रहलादउनायोअनेकबार॥५॥३॥ हरिकौनावत
॥ त्रिलोकसार लेलीनजम येतऊ रटेक॥ इकजंगमइकजटाधार॥ इक
अंगबभूतकेरेअपार॥ इकमुनियरइकमनांली॥ ऐसेहोतहोतजुगजा
तंधीन॥१॥ इकआराधेसकतसीवइक पदातेबधेजीव॥ एकअलदेक
नौजेपेजाप॥ त्रिभुवनपतिभूलेटविधिताप॥२॥ इकअनहेजडिकरिपा
वैहहैधजाकोंहरिना॥ टमिलेबिनहेदेसूदि॥ कहैकबारकोलेदेनपार॥ या
लावतहारोअनेकबार॥३॥७॥ हरिकौनांवततत्रियटलोकसार॥ लेल
नमेयेसेउतरेपार॥ टेक॥ इकजंगमएकजटाधार इकअंगविभूतिकरअ
पार॥ इकमुनिएरएकमनहीलीन॥ ऐसेहोतहोतजगजातषीन॥१॥ इ
कआराधसकतिसीवएकपडदादेदेबधेजीव॥ इककुलदेव्याकोज
पजाप॥ त्रिभुवनपतिभूलेत्रिविधिताप॥२॥ इकअनहिदाफिकरिपी
हूध॥ हरिनमिलेबिनरिदेसुध॥ कहैकबीरऐसाविचार रांमबिनाकोउ
रयपार॥३॥५॥ हरिबोलिसुवाबारबार॥ तेरीढिगमींनाकछुकरिपूक
रटेक॥ अंजनमंजनतजिबिकार॥ सतगुरसमझायोततसार॥१॥ साध
तिमिलिकरियसंत॥ सोबंधनछूटजुगिजगत॥२॥ कहैकबीरमिलिम
आनंद॥ हरषिमिलेरजारांमचंद॥३॥६॥ बनमालीजानैबनकोआ
द रांमनांमबिनजनमबादि॥ टेक॥ फूलजुफूलेरुतिबसंत॥ मोहि
सबजीजंत॥१॥ फूलनिमैजेसेपकुपबास घटिघटिगोविंदहरि

नमपयादे सगिल्हान तीनजगत करत रारि। चल्योवे निजवांवनिजठा
रि। बन मगुटाभोपूजा टूटि। मांहू दूंद दिसि गयो छूटि ॥२॥ कहै कबीर य
यक जन मवाट। सहज समा नोरहा लाट ॥३॥ साधो ब्यरन उपसस्रान
जाइ। भरी चपल बुधि तासों कहा बसाइ ॥ ननमन जातरि वेसमर
नू चोर। ग्यान रतन हरि लीन मोर। मैं अनाथ प्रभु कहूं काहि अनेक
विगूते मैं को आहि ॥१॥ सनक सनंद सिव सुकादि। आपनि कंवलापति
भए ब्रह्मादि। किंव जोगी जंगम जती जटा धार। अपने औसर सब गाये
हारि ॥२॥ कहै कबीर रह संग साथ। अभि अंतर हरि सौं कहौं बात ॥ म
न ग्यान जानि करि करि विचार। रांम रमत भौ तिरिबो पार ॥ ४ ॥ उकरी
डर कंचन कर गुहारि। उर्वि वैनपचानन श्रास्रु तारि ॥२॥ तन मीतर बंब
समद न चोर। तिनि श्रवर सूलीनौं छोरि मोर। मागे दून बिनै माने
भकिमारे रिदा भै। कामबान ॥१॥ भैकिं दिगुद्र रांऊं श्राप लागि। उकरी
डर बने गयलागि। ब्रह्मा बिसन अरु सुर मयंक। किहि के हिन हालवा
कलंक ॥२॥ जपतप संजम सुचि ध्यान। बंदि परे सब सहित ग्यांन। कहै
कबीर उबरे तीन। जा परि गोब्यंद कृपा कीन ॥३॥ ऐसो देषि चरित म
नमोह्यो मोर। तायै निसबासुरि गुन रमूं तोर ॥ टेक॥ एक पढहि पढहि एक
सुनि दास। एक निरंतर रहै उदास। एक जोग जुगति तन हैं हि
षीन ऐसे रांम नांम सेरि रहे न लीन ॥१॥ एक हूं दीन एक देहि दांन एक
करै है कलापी सुरापांन। एक तंत मंत्र औषद बांन। सकल सिध रापै
अपमांन ॥२॥ एक तीरथ ब्रत करि काया जीत। रांम नांम सम करत भ्रीति।
एक धूम घोटि तन हूंहि स्याम। मुकति नहीं बिन रांम नांम ॥३॥ सतगुर
तत कह्यो बिचारि। मूल गह्यो अनभै विसतार। जुरा मरण थैं भए धीर।
२ रांम कृपा भई कहै कबीर ॥४॥ १० ॥ सब मदिमाते कोई न जाग।
तायैं संग हि चोर घर मुसन लाग ॥ टेक॥ पंडित माते पढि पुरांन जोगी माते
धरि धियांन। संन्यासी माते अहंमेव। तपा जु माते तप कै भेव ॥ १ ॥ जा
गे सुषदेव औ अकूर। हणवंत जागे लै लंगूर। संकर जागे चरन सेव। क

लितागेनांमांजदेव।।ध यजंत्र निमांनसबमनकोकांम।यजंत्र निमांन
महारदेगोठांस।आतमरांमकोमन विश्राम।ताथैकैहैकबीरलजिरं
मनांम।।३।।१।। आंगंदादारो।मारसुषपाईएरे।सुमिरंसजआतमरांम
बनहेंमैबसेकाकी जियो।जोमननदीतजे विकार।षरैदैनततसंमजे
कियातैबिरलासंसार।टकजटालंसमतेपनठाये।कहागुफामैबा
स।मनजीत्याजगजीतियो जिविषियारैउदास।।१।कहेकबीरकिर
पालईसुरगपानकरसौसमका।दिरदेरबाहरिनिरटियाजेननअंनतेम
हजाइ।२।।१।चलेसषमईएतहा जहांगोपालउपरेमांनंद।रेकीय
ऊमनप्रेमांगाहमंगो मेरोतनम्छीजेनितआइ चिंतामणि चितचोरियो
ताथैकछूनसुहाइ।।१।सुनिसषीसुपिनांकोगतिऐसी।हरिआएहंमपा
स।सोवतहीजगाईया।जागतहैभैगयेउदास।।१।चलुमषीबिलमनकी
जैये।जबलासासससरीर।मिलिरहियेरजरांमसूं।यूंकेहेदासकबीर।
२।२।मेरेतनमनलागीचोटसठोरी।बिसरेग्यांनबुधिसबनाठी।भईबिक
लतिबोरी।१।देहबदेहगलितगुनतीनूं।चलतअचलतएबोरी।इतउत
जितकितद्वादसचितवत।यकतईगुपतठगोरी।।१।सोईपैजानैपीरहम
री।जासरीरयऊवोरी।जेनकबीरठगठगयाहैबापरो।सुन्यसमोनीत्यो
री।२।।३।बलियालंकबदेषोगेतोहि।अनिसिआतुरदरसनकारेनि
ऐसीव्यापेमोहि।टलेनदमारतुमकोचाहेरतीनममनेहारी।बिरह
अगनितनअधिकतरावे।ऐसीसेजबिचारी।।१।सुनोजहमारीदादि
गुसांई।अबजिनिकरोबधेरो।तुमसाधजमेआतुरस्वांमी काचेभांडेनीर
।२।बहुतदिननकेबिछुरेमाधो।मननहीबांधेधीर।देहछितांतुमभि
लो जिऐपाकरि।आरतिवंतकबीर।३।४।बाल्हाआवहमारेघेहरे
तुमबिनदुषियादेहरे।टकसबकोकहैतुम्हारीनारी।मोकोंएहअदेह
रे।एकमेकहैसेजनसोवे।तबलगकेसानेहरे।।१।अनननभावनी
दवल्यावे।गिहबनधरैनधीररे।जंपंकामीकोंकामपियारा।सुप्यासेकें

त्नाहीमंवार जोजलत्रऔधेपरणा किरहेरे बडेबक्रतत्रपार ॥२॥ मोहि
आगपाईदयालदयाकरि काहूंकेसमझाइ कहैकबीरमैकहि
हिंहांसो ऊबमोहिटोसनलाइ ॥१४॥ एककोसबंनिमिलाननिमेस
बकुतंकलातिकरफुरमाउस देत्रसवारत्रबेला ॥३०॥ जोरतकटु
बरतधरंतसबगढ करतबजलोकेला जोस्फिटकबाटतोरियातस
मेलचल्याएकबेला ॥३१॥ कबमूकोमजोगाकेघरमे कबएकयोस
फटानो आसनिरपिबिनूतिमापिटके निलेपटोउडानो ॥३२॥ पाजो
गीकोजुगतिजुजाने सोसतगुरकाचेला कहैकबीरउनगुरकोकी
पापे तिनिसबत्तमपेला ॥३३॥ बदिनकबआवैगोमाइ जाकारणि
हैं मदेहधरीहै मिलबोअंगिलाइ ॥३४॥ हूजाणौजेहिलिमिलिषेलो
तनमनप्रांनसेमाइ याकामनाकरोपूरण समयहेरामराइ ॥ मा
हिउदासीमाधोचाहै चितउत्तरैनिबिहाइ सेजहमारीसिंघनहैहै ज
बसोउत्तबघाइ यात्रऔरदासदासकीसुनिइ तनकोतपतिबुझाइ
कहैकबीरमिलजसांई मिलिकरिमंगलगाइ ॥३५॥ हैदरितजननकै
घवान नीचपावकचपदई बाजतेनिसाण ॥३६॥ नजनकोप्रतापत्र
सोतिरजलपाषाण अधमनीलत्रजातिगिनिका चढेजातबिवान
नवलषतारचलेमंडल चलेसिहरनाग दासधूकोत्रटलपदई
रामकेदिवाण ॥ निगमजाकोसाषिबोले कहैसंतसुजाण कहै
कबीरतेरसरणिआयो राषिलेजगवान ॥३७॥ रेमनरामनामहि
जांनि थरहरीथूनीपस्यामरदन सूतोषूटीतानि ॥ संनितेरीको
नेसघके जीमयकरीत्राणि पांचगजदोवटीमागी चूनदीन्होसाति
बसंदरषोपरीहांडी चल्योलादिपलाणि नाऽबंधवबोलाइबकोरे ॥
काजकीन्होत्राणि कहैकबीरयामेकूवनाही छोडिजायकोल
नि रामनामनिसकनजिरे नांकरिकुबकोकानि ॥
मनारेरामसुमरिसमसुमरिरामसुमरिनाई रामनामसुमिरनोबिन
बडतऋधिकाई दारासुतनेहमेसंपतिऋधिकाई पाम

कछुनंहितेमौ।कालअवधिआई।१अजामेलगजगनिकापतित
करमकीन्हा।तेनउतरियापारिगये।राममनामलीन्हा।२।स्वानसूकरका
गकीन्हें।मेउलोअनआई।राममनामअंप्रतछाडि।काहेबिषषाई।
तजिभ्रमकरमविधिनषेद।राममनामलेई।जनकबीरगुरप्रसादि।राम
करिसनेही।४।१राममनामहिरदेधरि।निमोलिकहीरा।सोभात्रिहूंलो
कतिमरताइ।विविधपाराटि।त्रिस्नानेलोनहरिष।कामक्रोधनीरा।
मदमछरमैंछकछहरयसोकतीरारे।।१।कांमनीअरस्कनकसुंदर
बोराववजातबीरा।जनकबीरनवकाहरिषेवटगुरकोरा।।२।चलिमे
धमंधोहि।बोलगणेरामराया।जबतबकालबिणासैलोकाया।टे
जबलगलोतमेहकोदासी।जीरथबरनकूटेजमपासी।१।आवैगे
जंमकेघालेगेबाटी।यहतनजारिवरिहोइगामाटी।२।कहेकबी
जेहरिरंगराता।पायोराजारामपरमपददाता।।३।रागगौड।।१।।
रूपाकुपञमांनंदे।पीरमेकंबरपनहउम्हारीमेंगरीजकद्यांगेदे
।।४।।उम्हदीरियामवरदिलजीतरिभ्रमांनंदपियारे।नकनजरि
हमउपरिनांही।क्यांकमबपतहमारे।।कहिकमतिकरेहलालबिचारे
आपकहावैमोटे।चोकरीचोरबोवालेहंतिर।सांईसेताषोटे।।२।।
स्मउवाकरदवजावे।मैक्याकरोंतिष्मारी।कहेकबीरमैंवंदातेरा
षालिकपनहेंउम्हारी।।३।।अबहंमजातहैतैलागो।जगकोटेषि
जुगतिरंमहिदूरितोलो।टेक।आयानपनेथवऊबोरांनें।संमकिपरी
तबफिरिपछितांने।।१।।लोगकहैजाकैजेमनिसावे।स्नेहकुवपामे
कोनडसाव।।२।।कबीरबिचारिहिजिएडुरैरो।कहेंकांहोइहोनैंम
रियें।।३।।गगौडी।।पिंडुरामन्निरंजिनाजगतिहितप्योलाडूरा।प्रे
मप्रीतिमोपालभजिनर।औरकारणिकारीं।।टेक।दांमछेपणि
कांमिनांही।ग्यांनछैपणिधंधरे।श्रवणछैपणिसुरतिनांही।नैण
छैपणिअंधरे।।१।।जाकैनाभिपदंमसुउदितब्रह्मा।चरणगंगतरंगरे
कहेकबीरहरिभगतिबांछै।जगतगुरगोव्यंदरे।।२।।बिश्रयांन

तो मोतिऊलहोचोकपूराइ रतनकरोनोछावरी मिलिहेमोहिगरापतिरा
इ पंआगतिवाक्लोलचो कौलेनागरवेलि आलेअनंतसुनपाऊणो
म्हारांदिणडारकूपलमिलि ब्रह्मावंनरलियादीनो रूडोरजमुनाको
रा सहजेगगचरावंहो मुषवजावेवेन ब्रह्मावनसबदूरते दूदजामु
नोकोतार रामभिलाकेकारौ जनषाजतषोजतफिरकबीर नलि
पढितावेगअधा चेतिदषिनलजमपुरिजेहै क्यूंविसरयोगोबिंद
गिरा ऊंडनलजतूविसा उरधध्यानत्योलाइ उरधध्यानचित्तमफि
लआया नरहरिनांवचुलाया बालबिनोदछहूरसलीना छिन
छिनमोहबियापे बिषअमृतपछानननलागौ पांचभांतिरसचाषे नर
नेतनपरत्रियमुषजोवे रसअपरसहाअंते अतिउदिमादिमहामदिमाते
पापपुनिनपछाने पंडरकेसकुसमभेवमुषबोला भतपलटिगईवांनी
गइपोकोधंमनमयोमुपास कामपियासमसदानी छूटीगतिदयाधरमउपजो
कायाकवलकमिलानां मरतीबेरबिसुरणलागा फिरिपीछेपछितानां
कहैकबीरमुनोरेसंतो धंनमायाकछुसेगिनगाया आईतलबोगोपालराइ
को धरतीसैनआया नकछूलेनकछूरामबिना मरोरधरकोइदीअम
ति माधसंगतिरहनां मंदरपंचतमासदमलोगे बिनसतएकछिनां छूठहु
षकैकारनिआनी अपचकरतघनां तातमातसुतलोककुटंबमे फुले
फिरतमनां कहैकबीररामभजिबौरे छाडिसकलभ्रमनां लोकारे
तिकेतारारे जोकासीतनतजकबीरा तोरामकिहकोननिहोरा जे
पेत्रगतिनगतिरहिजाने मिलेतोअचिरजकहारे जैसेजलहिजलदुरिमि
यो पूदुरिमिलियाजुलाहारे कहैकबीररामभैजानू अमिलोलि
कोई तमकामातसउमरमगहर छिदेरामजोहोई
अैसोआरतीत्रिभवनतारे तेजपुंजतहांप्रानउधारे पातीपांच
पकरिपूजा देवनिरंजनओरनदूजा तनमनसीससमरपनकीन्हा प्र
टजोतितहांआपसलीना दीपकग्यानसबदधुनिघटा परमपुरिषतहा
परमपंकासमकलउजियारी कहैकबीरमेदासतुम्हारा

५ गोपालरा ऐसैं आरती ए कैसैहै संत प्यौ लाउ टेक मनकरि स्मृत काया
करि प्याली ब्रह्म ग्यानकरि बाती पंचतत ले दीपक जोया ॥ बलै है अ
खंड दिन राती ॥१॥ चित संचंदन ध्यान सुगंधवा अनहद घंट बजा
इ ॥ अजपा धुनि मालूक रिसी जंन मनसा भोग लगाइ ॥२॥ खंवरंसप
वन अषंत तांबूल नेवक पटा लगाइ ॥ सीत दिवारि पूजि प्रेम स्वार अ
नप जपचं अगु ॥३॥ संबद रंग गाहर धुनि उपजौ अनहद बाजै बेन
सुरा बिसन सदे सवर नारद सकल साध ल्यौ लीन ॥४॥ काल रि
केदन सुरनर मंजन संतनि प्राण अधार ॥ कहै त कबीर सगति
रांमांगौं आवागवन निवारि ॥५॥६॥